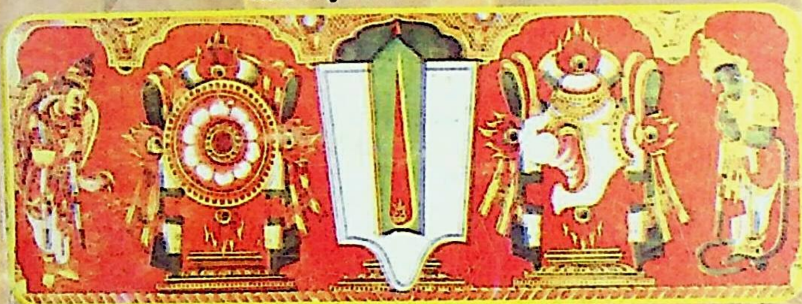
2·4

!!श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः!!



!!श्रीमते रामानुजाय नमः!!

आराधनम्

प्रकीर्ण काव्यम्



आराधकः

रामनारायणाचार्यः

सहयोग राशि : 275/-



श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे। हे नाथ नारायण वासुदेव।।

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणत क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।।

परम श्रद्धेय: प्रो० श्री वशिष्ठ त्रिपाठी जी के कर कमलों में सादर समर्पित – रामनारायणाचार्य:

!!श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः!!



!!श्रीमते रामानुजाय नमः!!

आराधनम्

प्रकीर्ण काव्यम्.....

आराधकः

रामनारायणाचार्यः

सेवा निवृत्त प्रोफेसर –
(राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्)
मानित विश्व विद्यालयीय –
आचार्यचरः
तीर्थराज प्रयागस्थः

माघ शुक्ल
श्री बसन्त पञ्चमी महापर्व 2064
विक्रमाव्दीयम्
11.02.2008 ईश्वीयाब्दः

आवास :
श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिरम्
11/90, गायत्रीपुरम्, पिड़रा, दक्षिण मार्ग, देवरिया (उ०प्र०)–274 001

आवरण एवं पृष्ठ संयोजन
पंकज तिवारी, देवरिया
मो0 : 9838107124

मुद्रक :
प्रभाकर आफसेट प्रिन्टर्स
भास्कर प्रेस की गली, स्टेशन रोड, देवरिया
फोन : 9335157742 मो0 : 9839971952

प्रथम संस्करणम् 1000 प्रति

सेवा निवृत्त - आचार्यःतीर्थ राजप्रयाग विद्यापीठीयः

आरधन प्रस्तुतिकर्त्ता
रामनारायणाचार्यः
भारतीय संस्कृति-संस्कृत निःशुल्क सेवा प्रतिष्ठानम्
11/90 गायत्रीपुरम् देवरिया (उत्तर प्रदेशः)

चल सम्पर्क साधनम्
मो0 : 9451802926, 9450682178

आराधनम्

"प्ररोचना"

लोके वनस्पति बृहस्पति तारतम्यं
यस्याः कटाक्ष परिणाममुदाहरन्ति
सा भारती भगवती तु यदीय दासी
तां देव देवमहिषीं श्रियमाश्रयामः।।

मज्जन्मनः फलमिदं मधुकैटभारे
मत्प्रार्थनीय मदनुग्रह एष एव
त्वद् भृत्य भृत्य परिचारक भृत्य भृत्य
भृत्यस्य भृत्य इति मां स्मर लोकनाथ!

नमो नमः कारणवामनाय
नारायणामितविक्रमाय
श्रीशार्ङ्गचक्राब्ज गदाधराय
नमोऽस्तु तस्मै पुरूषोत्तमाय।।

समस्त सुरभारती सेवापरायण भारतीय संस्कृति संस्कृत सेवा निष्ट विद्वद्वरेण्यों के पादारविन्दों में सादर प्रणामाञ्जलि समर्पित करता हुआ कुछ निवेदन करने का साहस यह अल्पज्ञ कर रहा है -

वस्तु-अलंकार-रसादि ध्वनि उत्तमकाव्यों की शक्ति निपुणताभ्यास की कसौटी व सूक्षम बुद्धि से रहित सहृदय हृदय को चमत्कृत करने की काव्य प्रतिभा की योग्यता न होने के कारण भयग्रस्त व पूर्णतः संकोच से ही किसी प्रकार कुछ तुच्छ शब्दों की किसी प्रकार योजना बनाकर पर-विभु-विभव-अर्चा व अन्तर्यामी श्रीमन्ननारायण कि दिव्य देशों में दिव्य विग्रह में आज भी पूर्णतः प्रतिष्ठित मंगलमय स्वरूप के दर्शन-अर्चन पूजनादि से वंञ्चित होकर यह पामर जन किस प्रकार कुछ भक्ति भाव का गर्व कर पद्य-गद्य रूप में शब्दमयी अराधना कर सकता है?

परब्रह्मपुरुषोत्तम श्रियःपति श्रीमन्नरायण तथा जगज्जननी महालक्ष्मी जी की अराधना सरल नहीं है। कहाँ अनन्तानन्त गुण सागर करुणावरूणालय दया दाक्षिण्यौदार्य वात्सल्य गुण निधान प्रभु महा महिमामयी भगवती जगज्जननी

माता लक्ष्मी अपार शक्ति सामर्थ्य सौन्दर्याधिष्ठातृ वरदायिनी, भू नीला-श्री देवी स्वरुपा जो आज भी दिव्य देशों में दिव्य विग्रहा सुप्रतिष्ठित हैं।

उनकी आराधना बड़ी कठिन है। मुझ जैसा अनादिकाल से भवाटवी में भटकते विषय जंगलों में अटकते पामर द्वारा कैसे सम्भव है?

केवल सेवा भावना से ही यह करग्रह कलम सोची कुछ प्रयास कर रुखे सुखे सरस-लालित्य भाव रहित शब्द योजना मय स्तुति-रूप आराधना करने का प्रयास किया है जिसे आप सभी विद्वद्वरों भक्तजनों की पवित्र दृष्टि से सुसंस्कृत हो जाय इसी भावना से प्रस्तुत है। स्वीकार कर कृपया इस जन के अयोग्यता को क्षमा प्रदान कर अनुग्रहीत कर कृतार्थ करें यही प्रार्थना है।

विनीत :-
रामनरायणाचार्य
भारतीय संस्कृति-संस्कृत निःशुल्क
सेवा प्रतिष्ठान, 11/90 ग्रायत्री पुरम्
देवरिया (उ0प्र0)

विशेष निवेदन्

सौभाग्य से आज दिनांक 5/3/2008 को एक आवश्यक कागज के ढूंढते समय स्वर्गीय आचार्य पं० श्री विद्यानिवास मिश्र जी का शुभाशींवादमय पत्र सुलभ हो गया। 3 वर्ष लगभग पूर्व दर्शन कर संस्कृत - आराधनम् - व हिन्दी भजनमाला स्वरचित पाण्डुलिपि को सादर समर्पित किया था कि कृपा कर हमारी त्रुटियों को क्षमा प्रदान करते हुए आवश्यक सुधारार्थ आदेश के साथ-साथ आशीर्वचन प्रदान कर अनुग्रहीत करें तथा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के अधिकारी वर्ग से एवं अन्य किसी भी स्रोत से अर्थ सहयोग प्रदान करेने की कृपा कराकर अनुग्रहीत करें जिससे प्रकाशन कराने में सुविधा होगी।

यह प्रार्थी सेवानिवृत्त होने से स्वयं समर्थ नहीं है प्रकाशन व्ययभार वहन में। प्रार्थी पुनः प्रयास कर भेंट किया तो आचार्य जी एक साल बाद पाण्डुलिपी व शुभ मंगल कामना युक्त पत्र उक्त दोनों ग्रन्थों के लिए प्रदान कर अनुग्रहीत किया है मिला।

दुर्भाग्य से आचार्य प्रवर स्वर्ग पधार गये नहीं तो बहुत ही उनकी सेवा भारतीय संस्कृति संस्कृत के लिए पूर्णतः प्राप्त होती। आचार्य जी ने श्री वै० नाथ प० सं० म० विद्यालयीय सेवा में पूर्ण सहयोग किया था। मैं भगवान से प्रार्थी हूँ श्री बैकुण्ठनाथ अपने धाम में नित्य दर्शन प्रदान करें आचार्य जी को अनुग्रहीत करें।

अराधनम्

आराधनमिति भक्ति प्रधानं स्तोत्र प्रकीर्णकाव्यं श्रीराम नारायण मिश्र विरचितं सम्यगवलोक्य महती प्रसन्नता जाता। कार्यमिदं भक्त जनानां कल्याणाय परमोयोगीति निश्यचः। परम सात्विक भावाभि निवेश प्रवर्धनाय मिश्र वर्येणानुपमः प्रयासः प्रशंसनीयः।

मिश्र वर्येणानेके ग्रन्थाः गद्य-पद्य मया विरचिता पूर्णोपयोगिनः भारतीय संस्कृति संरक्षण बद्ध बहूद्देश्य पूरकाः।

हिन्दी पद्यात्मकमपि भगवतो नारायणस्य जगज्जनन्याः भक्तिभाव भजन पूर्णभव लोकितम्। यदि समृद्धवर्गेणराष्ट्रीय संस्कृत संस्थानेनार्थ सहयोग प्रदानं विधाय प्रकाशने कृपा विधेया चेत् प्रकाशितं द्वयमपि काव्यमुपयोगितां भजिष्यति।

मिश्रवर्यो दीर्घायुः स्वस्थश्चभूयात् येन संस्कृत जगतः सेवायाँसंलग्लोभुत्वा महत्कार्य विदध्यादिति प्रार्थयामः

श्रीमन्नारायणम्

शुभेच्छु :

विद्यानिवास मिश्रः

1.03.04

विषय सूची



श्रीकृष्ण लीलानुभवः

कृष्णन्दधाना हृदये प्रसन्ना सादेवकी कंसभयाद् विक्षुब्धा।
पुत्रान् हतान् वीक्ष्य मुमोह सद्यो नारायणो नैव मनोऽनुभूतः।।1।।
लब्धावतारस्स चतुर्भुजस्सन् मातुः समक्षं कृपयानुबद्धः
दत्तोवरः पूर्व युगानुरूपो मात्रापिदृष्टः परमार्थ भाग्यः।।2।।
मुक्तामयं स्त्री कुच शायिनं स्वं विन्दुं समीक्षेव स कृष्णमेघः
तद्देवकी जाठर पुण्य पुंजाच्छीकृष्णमुक्तामयता मयाऽऽसीत्।।3।।
सादेवकी नीलममोघलीलं सम्पादयामास सुदर्शनापि
लीलायमानं नु चतुर्भुजातो बालस्वरूपं जननी ददर्श।।4।।
गर्भे समग्रं भुवनं दधानो गर्भं विवेशापि स पदम्गर्भः
नेदं विचित्रंहि विचारणीयं सोऽयंजगच्चेतयते यदन्तः।।5।।
क्षीरं समुद्रस्य न पावनं तद् विचार्य हित्वाब्धिमवापगोपीम्
तद्देव की पुण्य पवित्र भावः पोतायितः सागरतारणाय।।6।।
प्रादुर्भवन् सन्नपि तात पादं कर्तव्यमार्गेऽप्यनियोजयद्यः।
सश्रीपति गोंपिकयाकयाचिद् भाण्डीरकं वैप्रणयीवनीतः।।7।।
यन्नाभि पंङ्.केरुहनाल मूलं ब्रह्मापि न द्रष्टुमहो समर्थः
गोपाङ्गना तस्य सुनाल भेदं कृत्वाविमुग्धा नु विचित्रमेतत्।।8।।
नामस्मृतिर्यस्य पुनाति लोकं तस्याद्य देवस्य हिताय सर्वे
आधान संस्कार विधान रक्ता, प्रेम्णा सदादान रता बमूवुः।।9।।
यश्चामृतैस्तर्पयति स्वलोकं सोऽयंजलासिक्त इवास्तितृप्तः
लीलैव तस्य प्रणतार्ति नाशे केनानुभुयेत विवित्रमेमतत् ।।10।।
यश्चाधिशिश्येवटपत्रमादौ तत्सूतिकागारमिहापि शेते
यश्चापि पीताम्बर भासिताङ्गः सोऽपि प्रजाजीर्णपरावधानः।।11।।
योब्रह्मरन्धांतरभासितस्सन् सोऽयंस्वमूर्ध्नि प्रणिहारवस्त्रः
यद्योगिभिर्योगकलाधिरूढ़ः सोऽयं प्रयातिप्रणिधान योगम्।।12।।
शेषेशयानोपि च मातृ कुक्षौ शेते कथं पूर्ण निमीलिताक्षः?
वेदान्त वेद्योहि जगद्धितार्थे विद्यां ग्रहीतुं गुरूधामयाति।।13।।
कस्तूरिका चन्दन चर्चितांग स्तैलाद्र देहो व्रजगोपिकाङ्.कः
प्रारब्ध भोगे स्वजन प्रबोधे दुःखं सुखम्बा सहते रमेशः।।14।।

वैश्वानरी भूयचतुर्विधान्नं नारायणः सर्वगतः पचन् वै
सक्षीर पाने पचने विभीतो मात्रादृतो दध्नि कृत प्रयासः।।15।।
त्यक्त्वा नुदूग्धाब्धुधिमाशु देवो दूग्धार्थमत्रापि रूरोद भीतः
मातुः सकाशमधिगम्यमाण्डं दूग्धस्य भेत्तुं धृतहस्तदण्डः।।16।।
लीलायमानस्य चरित्रमेतद् गोपी यशोदा ममतानुबद्धा
दूग्धाम्बुधिस्वामिहठं विसृज्य प्रीत्याल्पदूग्धं भयतोददाति।।17।।
कोवाकलौ कृष्ण समान लीलो यः कालकूटं जगति प्रवृद्धम्
मोहान्धकारानुगतं प्ररूढ़ं पीत्वा जगद् दुःखहरो विमृश्यः।।18।।
गोपी जनैस्साध्वस लोलदृग्भिः संस्तूयमानः श्रुतिभिःविमृग्यः
गोपालबालः प्रणतान् जनान् स्वान् सम्पातु सद्यः करूणानिकेतः।।19।।
यन्नामरूपं कवचं विदग्धो भूतादिभीतिप्रशमाय धत्ते
तस्यैव सन्त्राण कृते तु गोपी मन्त्राभिषेके गुरूमभ्युपेता।।20।।
लक्ष्मी कटाक्षावलिरश्मिबद्धा पद्मोद्भवेन प्रतिसन्दधाना
श्रुत्यन्त डोला शुशुभे न यस्मै तं वालगोपाल हरिं नमामः।।21।।
निःश्वासवातेन समग्र लोकान् यः कम्पयामास विनाशलीलः
झूलोद् बलं कर्तुमशक्त देहः सोऽयं रूदन्नस्ति विचित्र लीलः।।22।।
या देव की कंसभयाद् विमुग्धा यस्यात्मजेनाखिललोकरक्षः
त्रस्तं च नष्टं च सुदर्यमूलं सा कंस कारागृह दुःखतप्ता।।23।।
यः सर्वमेतद् भुवनं विधाय गर्भेऽधिशिश्ये जगदेकनाथः
तंहर्तुमज्ञो मथुराधिनाथः कंसोमदेनाहित शक्ति मूढ़।।24।।
दैत्याधमाः कंस नियुज्यमानाः त्रैलोक्यनाथं घृतबाल रूपम्
घर्तुं विनाशाय हि कंस कालं मायाविनो मा पतिना प्रणष्टाः।।25।।
आसाद्यकृष्णं मथुराधिपेन प्राणान् हर्तुं शकटो विभग्नः।
दीपंयथा भोग्यमितिभ्रमेण घृत्वापतङ्गः समुपैतिनाशम्।।26।।
तामासुरीमेष विनाश्यमायामानन्दमामीलितलोचनोऽगात्
एवं जपन्तं प्रभुपादकजं(सुसमाधिमीशं) भक्ता प्रपन्ना कलयाम्बभूवुः।।28।।
देव प्रसादाच्च सुमन्त्रयोगादाचार्य विद्याऽभयदानबालः।
ब्रह्मानभिज्ञो हिसगोपसंघस्तत्वं विचार्येत्यविवक्षायाऽऽहो।।29।।
यो गोपबालो ब्रजराजराजो नन्दात्मजेनाखिलोक पालः
माता यशोदानिजबालमङ्.कं नीत्वानुगोपायतिकंसभीता।।30।।

यो गोप गीपीजन सर्वपालः सोऽयं हिलीलाश्रयणीय बालः
गोपाङ्गना नेत्रकुटीररोधो मायाधिमानस्यकथं प्रबोधः?।।31।।
गोपीजनस्तन्यपयोघ्युदंच्चंछीतांशुरेखेव मुखेव लग्ना
गोपीचकोरी नयनातिमोदं लब्ध्र्वा शिशोर्वासकला निमग्ना।।32।।
वाभासमानों हृदयावकाशे यद् योगिनांयोगपथे प्रभातः
सोऽयं यशोदाङ्कगतो विमुग्धः सुस्वापनेत्रार्पित योग मार्गः।।33।।
कारागृहोवा मथुराधिराज्ये मातुर्यशोदाहृदयाधिराज्यम्
जन्माङ्गलीला ललिता यदीया तस्याधुनानीतिरगम्यपारा।।34।।
मालायितापूर्ण पवित्रगाथा लीलानवीनेव कला विशेषा
ब्रह्मातथा शम्भु मनीन्द्रलोकाः पारंन याता हरि भक्ति लीनाः।।35।।
श्रीकृष्णलीलामय सर्वमेतज् ज्ञानांजनेनैव मुनीन्द्रदृष्टम्
ब्रह्माण्ड भाण्डमखिलं विचित्रं भाग्येन भक्ता अपिदृष्टवन्तः।।36।।
ज्ञानेन वेदान्त विद्यावदातं यस्यांघ्रिगन्धं भ्रमरायमाणाः
जिघ्रातुमेव प्रणताः प्रपन्नाः पादाम्बुजंस्वाश्रयपूर्णकामाः।।37।।
पौराणिकी संस्कृति सार्वभौमा लीलामयस्याल्पकलाकवीन्द्रैः
व्यासादिभिर्भाव भरी सपर्या नारायणीवान्यतमा विभाति।।38।।
गोलोक धामा धवला धुरीणाः धर्मार्थमूला प्रणय प्रधाना
श्रीराधिकेवाश्रयमादधाना भक्तिप्रिया काचिदत्रानवद्या।।39।।
विद्याप्रपत्ति प्रसवार्थधन्या श्रद्धामयी तच्छरणागतिस्सा
श्रीवैष्णावाचार दिशा प्रसादा श्रीकृष्णासाक्षादिहमन्त्रामूला।।40।।
गोलोक साकेत महाविभूतिर्वैकुंठनाथोऽसिसदानुभूतिः
सत्येगुगे द्वापरमभ्युपेतस्त्रेतायुगाभ्यन्तरवन्दनीयः।।41।।
श्रीविष्णुरामोवरचक्रवर्ती श्रीद्वारकाधीशपदाभिधानः
भूलोकलीलामयदर्शनीयो भाग्योदयेनात्र सतांप्रसन्नः।।42।।
दासस्त्वदीयः कलिकालदृष्टः सृष्टश्चपापान्धइवात्रमुग्धः
धर्मच्युतोवा भवतो वियुक्तस्त्वां वै च विस्मृत्य न कोपिमुक्तः।।43।।
नैवात्र नैराश्य कृपात्वदीया त्राणाय वात्सल्य मयीप्रधाना
सत्यं यदि प्रेममयी मनोज्ञा मुक्तोजनोनात्र विवादकालः।।44।।
भक्तो न पूजा विधि मर्मयोगी धूर्तोधराधामगतश्च कोपि
सद्धर्म सत्कर्मरतः कथं स्यात्?

नाथत्वदीया न कृपा यदिस्यात् ।।45।।

वाचा मनोहरि परोपदेशः सौरव्यप्रधाने न विचित्रवेशः
शास्त्रानुसारी नहि कर्मयुक्तः संसार सिन्धो र्नहि कोपिमुक्तः।।46।।

हे नाथ! हे भक्त वशः कृपालो! पापाधमस्यापिकृतेदयालो।।
पादाश्रितं धारयदीनबन्धो! दुःखाम्बुधेस्तारयधर्मसिन्धो !47।।

कोपित्वदन्योहि कथं दयावान्? देवास्स्वयंयस्यकृपाभिभूताः
दैत्यैस्सदाप्लावित देवलोकाः शोकापनोदेनहिते समर्थाः।।48।।

विचार्य सर्वंभुविभारतस्य धृत्वावतारं हरिराम रूपम्
कृष्णं नृसिहं ननु वामंनं वा धर्मार्थ शिक्षां स्वयमाच चरन् वा (रन्वा) ।।49।।

सम्पूर्ण लोकस्य सुशिक्षणाय ज्ञानायलोकाम्युदयाय सत्यम्
नारायणत्वं करूणावतंसः स्वार्थान्धदीनं कृपया गृहाण।।50।।

दौर्भाग्यतो मे न पिता विधिज्ञो
माता न सा प्रभुपाद द्रष्ट्री
भ्राताऽयं किं न विचार्य कर्म
कृत्वा कृतीवा कथमत्र जाने?।।56।।

सौभाग्यमेतन्ममपूर्वजा ये
श्रीवैष्णवाधर्मरता बमूवुः
तेषामहोवंशकुटीर वासी
रामानुजाचार्य पदाश्रयोऽभूत्।।57।।

दासस्त्वदीयोहिमृषापवादे
ग्रस्तस्सदादुःख भवाब्धिमग्नः।।58।।

या या विपत्सा कलिकाल योगात्
लोकेऽनुभूता तव दृष्टि पूता
रासायनीव प्रवरौषधीव
भक्तिर्भवित्री यदि ते कृपास्यात्।।59।।

संसार सारोऽस्ति तवाश्रयोहि
प्रेम्णादराभीष्ठ दयावधानः
रामानुजाचार्य मतं गृहीत्वा
ये चात्र भक्ताः महिमा हितेषाम्।।60।।

अर्चावतास्तवनाथ लोके

धर्म प्रतिष्ठापन हेतु जातः
श्रीरामकृष्णादि रूपेणयोवै
सम्पूजयामास जगद्धितार्थम्।।61।।
सोऽयं प्रभुर्दीव्य विभूतिमूलः
श्रीवेंकटाद्रौकलिदोष शान्त्यै
श्रीरंगनाथोपिसपार्षदोऽसौ
कावेरिमध्येकृपयावतीर्णः।।62।।
श्रीद्वारिकाधीश दयाऽभि धानात्
श्रीधाम वृन्दावन नाम दीव्यम्
लोकेऽधुना श्रीवृषभानु पुण्या
राधा भजन्ती प्राणिधान गम्या।।63।।
योगीश्वरैरद्य कला विशेषो
बाभासमानः प्रणयेन बन्धः
सद्यस्तु वृन्दावन भक्तिलम्यो
गीतो मुनीन्द्रैरपि वेद वेद्यः।।64।।
बालोहरिर्भुवन सुन्दरदिव्यमूर्तिः गोपाङ्गनानयन भासित मन्त्रमुग्धः
मोहान्धकार पटलीं विलयं निधाय संगीयते मुनिवरैरपि वेदबन्द्यः।।65।।
गोपीगृहेनु दधिभाण्ड हरोऽभिजातः ज्ञातः कदम्बतरू गोपि पटाभिहारः।
जारश्च रासरसिकश्श्रुतिभिर्विमृश्यो
दृश्यः कथं स्वजन मानस मध्यरम्यः?।।66।।
भूयाद् भवाब्धि तरणाय पदाश्रितानां
प्रारब्ध भोगभजतां करूणालयेशः
सम्प्रार्थितो भुवनमण्डल मण्डनार्हो
नारायणः कलियुगे मम नासिदृश्यः?।।67।।
कोवाशरण्यमधुना कलिकोप भाजां
भोगापवर्ग विधया भव मुक्ति दायी
नाथ! त्वदन्य वसुधा वसुता श्रयाणां
जन्मान्त योग हरणे कृपया प्रसीद।।68।।
चाणूर मुष्टिकबलग्रसने मुरारे
दावाग्निपान पथिको ब्रज गोपसंघैः

गोचारणाय विदितो बहुदूर यातो
ब्रह्मापि मोह महिमानुमतश्च चौरः।।69।।

गोपाल बालनिखिलं सहवत्सराड्.गं
नीत्वागुफामधिगतोधृतमाययातः
मायापतिं न खलु कालवशश्चबुद्धवा्
तत्तर्हि क्षुद्रपुरूषैः कथमत्र गम्यः।।70।।

यःपूतनास्तनपयोऽमृतमेव कुर्बन्
पीतुम्मुदा विषहरो जननी मिवास्याः
प्राणान् हरन्नपि विमुक्तिपथं प्रदाय
प्रेमप्रणाम भजतां स कथं न हृद्यः?।।71।।

यो राजसूयं यजनेकृतविप्रपूजः
सर्वाग्रपूजनवृतः शिशुपालदृष्टः
निन्दाऽऽहितस्सहनशक्तिघरश्शतं वै
क्षित्वाशिरस्स मनसा महिमान्वितोऽभूत्।।72।।

यस्सर्वदेवविदितोभुवनाधिपो वै
सोन्तर्हितो कुरूराज सुयोधनस्य
दम्भाभिमान भजतस्सहज प्रकृत्या
दूतोयुधिष्ठिर हिते दययानुबद्धः।।73।।

श्रीनन्दनन्दन वरो भुवने प्रधानः श्रीराधिका नयन गोचर मंगलश्रीः
गोपाङ्गना हृदय मन्दिर नृत्यलीलः श्रीमाधवोविजयतां प्रणतार्तिहारी।।74।।
श्रीशंङ्.करार्चित पदो भुवनाधिपोयो योगेश्वरो जगतिधर्महितेऽवतीर्णः
विध्वंसनायनिखिलासुरयोनिभाजां सोऽयं दयामयदृशापरिपातु लोकम्।।75।।
नाहम्भवाब्धितरणेऽपर नाविकेन प्रारिप्सितेनविदितः कृपया च नीतः
पारं महोदधिवरस्य निमज्यमानो धार्यस्त्वयैव भगवन्! भवभाग्यदात्रा।।76।।
वृद्धाश्रमेविचरतां चरतान्धकारं कल्याण मार्ग पततां बहतांचभारम्
कोवा? सहायपथिको मम भारवोढुं ज्योत्स्ना करस्तिमिरनाशनशक्तिमान्वा।।77।।
कोवा? समग्र परिताप हरो जगत्यां? यो मोह मुग्धमनसाहृतधर्म सर्व।
सोऽयं स्वयं तव कृपाऽभय पाद मूलं लब्ध्याकृती ममकृतेऽपि तवैव योगः।।78।।
नाथ त्वदीय महिमा मम भाग्यहेतुः स्वर्गापवर्गनयने नहि मेऽभिलाषः।
दासस्सदा चरणापङ्कज मेवलब्ध्वाजातः कृतार्थ इति याचनमेव मुख्यम्।।79।।

मोहान्धकार विषयी प्रणयीत्वदीयो भावाभिधान वशगोनयनाभिरामः

ध्येयः प्रसाद कलया करूणानिमेषः श्रेयस्सदासपदिभाग्यवर प्रणम्यः ।।80।।

नित्यानवद्य रसराज महाधिराजः श्रीकृष्ण रास रसिको व्रजधाम धन्यः

श्रीराधिका रमण रूक्मिणिवन्द्यनीयो भूयात् सदैव शरणागत गौरवाय।।81।।

लीलाललाम नवधार्चनभक्ति गम्यःपूर्णावतार विदितो व्रजधाम गीतः।

श्रद्धालुभिः परममन्त्र मनीषितार्थो वेदान्त वेद्यमहिमामुनिभाव नीतः।।82।।

श्रीरामकृष्ण पदवारिधि मग्न देहो राधा पदाम्बुजरतो भ्रमरायमाणः

साकेत धामवसतिं प्रणि धायनित्यं गोलोक धाम महिमावशगोऽभिजातः।।83।।

बैकुण्ठ धाममयतां भुवि दिव्यदेशाप्राप्तावतार विदिताःकालि काल मुग्धान्।

त्रातुं सनाथ कलया नयनाभिरामाः भक्तार्तिनाशनकराः करूणादयार्द्राः।।84।।

ये पूर्ण भक्ति पथिकाः हरिपाद पद्मे नित्योत्सवेनिमिलिताक्ष निमग्न चित्ताः।

ते सर्व भाग्य कलिता फलितार्थलाभाः लब्ध्वापि मानवतनुं भवभीतिमुक्ताः।।85।।

जन्मापि यद्यपि सदा निजकर्म योगात् भोक्तुं समग्रसुखदुःख मयेन लब्धम्।।

प्रारब्धतोनिखिलयोनि गतस्यजन्तोस्त्रातापि मानवतनुवर्हु भाग्यतस्यात्।।86।।

योमानवः प्रणतपालकृपालु दासो धर्मानुराग रमणे हरिपाद युग्मे

कैंकर्य्य भावमनुभूय विरक्तमायः सोऽयंसदा सुखद मार्गमनाः प्रसन्नः।।87।।

धर्मार्थकाम मनसावृत देह दासा भोक्तुं समग्र फलमाशुकृत प्रयासाः

मायामनोहरपथे सततं प्रयाताः दुःखाग्निदग्धहृदया नहिशान्तिमाप्ताः।।88।।

तेनैव सर्व सुखदायिफलं विसर्ज्य प्राधान्यतो हरिपदाब्जनिमग्नभावाः

सेवामयानिखिलधर्मपथानुकूलाः लब्धादरासकलसौख्यरता भवेयुः ।।89।।

त्रिभुवन पति रूपं वेंकटेशं दयालुं सहज सुखद राशिं रंगनाथं कृपालुम्

।। श्री महालक्ष्मी पद्मावतीप्रपत्तिः ।।

पद्मावती परमपुज्यवराविधात्री
लीलावती शरणसन्धि धरा धरित्री।
माता मुदा स्वजन संस्तुति दुःख हन्त्री
श्री वेंकटेश दयिता भव भाग्य भर्त्री ।।१।।

विष्णुप्रिये! हृदयवासिनि!हे रमे! त्वं
मायापनोदिनिवरे!शरणागतस्य।
व्यामोह गन्ध पटली करुणादयातः
मातस्त्वया विघटितास्तु भवप्रसन्ना ।।२।।

श्री शारदा सहजशान्ति करी कला ते
मन्दाकीनीव विमला मतिमानदा या
भक्तार्तिहारिणिनवा नयनाभिरामा
श्री रंगनाथमहिषी प्रभु विष्णुवामा ।।३।।

लक्ष्मीकटाक्ष कलिता कलिजन्म भाजां
भक्तिप्रपत्तिरसिता लसितार्थकामा।
दृष्टिस्त्वदीयमहती शरणागतानां
श्रीवेंकटेशसविधे नयने प्रसक्ता।।४।।

पक्षी यथा सयुज पंख बलेन लक्ष्यं
प्राप्य प्रसन्न मनसा सफलः कृतार्थः
ज्ञान स्वकर्मविधया भुविजन्मलब्ध्वा
भक्तोऽपि याति पदवीं भवदीयतायाः।।५।।

दैवार्थतः कमलकुञ्ज परागलुब्धो
देहादिपुष्पविरतो यदि भक्तिभाग्वा
जीवोजघन्य पथिकश्शरणन्त्वदीयं
यायात्तदा भवतु सेवक एव मातुः।।।६।

श्री भक्तिधाम्नि नियते परम प्रसादे
रामानुजार्य पदवीकवरे सुपीठे।
सिद्धस्सदाश्रय धरो विबुधोमनस्वी
स्वामीशुभासन गुरुर्जयतिप्रसन्नः।।७।।

काषाय वस्त्र कटिसूत्र पवित्रभालः
सत्यं त्रिदण्डमिव मान्यविधिं त्रिसन्ध्यम्
कर्माखिलं प्रतिदिनं विधिवद् विधाय
रामानुजार्य गुरुवर्य इह प्रसन्नः।।८।।

देवाधिदेवहरिपादसरोजगन्धो
लब्धस्स्वभाग्य विबुधैशरणागतैर्यै :
रामानुजार्य पदसंगति साधनैस्ते
धन्यामुदादधतिमानवताभिधानम्।।६।।

श्रद्धाहिता सपदि देवरिया नगर्य्यां
भक्ता भवाब्धितरणे शरणोपनीताः
गीतास्स्वयं सहजभाव दयोपनीताः
श्रीकृष्णपारथ रथी वचसापुनीताः ।।१०।।

पद्मावती प्रणयवन्दितवेंकटेशः
सन्तारणाय जगतः कृतदिव्यदेशः
श्री रंगराजनगरीव महाभिशेषः
यत्रास्ति पार्षदगण प्रथितोपिशेषः।।११।।

मातुःपदामिनमनं शमनंक्षुधार्तेः
संसारिणां विचरतां सुपथ प्रदाने
मायापहारविधयानियतासपर्या
रामानुजार्यकृपया भवति प्रधाना ।।१२।।

हे मानवाः मधुर भाषण सत्य शीलाः ।
दानोपदानमहिमान्वित कर्मयज्ञे
द्रव्य प्रदान विधिना भुवि जनभाजः
शुद्धा भवन्तु कलिदोष मुचःप्रपञ्चात् ।।१३।।

जन्मावधे र्यदपि योग्य यतीश्वरस्य
सन्दर्शनं कठिनमेवपुराण गीतम्
सौभाग्यतस्तदपि भक्त वरैस्सुलब्धं
रामानुजार्य शरणं शुभदं नगर्य्याम् ।।१४।।

श्रीवेंकटाद्रिसदृशे प्रथितेऽम्बरेऽत्र
हैमान्तिके पवनपूतवरेसुरम्ये
देवर्षि देव परिभाषित मण्डलेऽस्मिन्
श्रीवेंकटेशगुरुपादयुगं नतास्मः ।।१५।।

सर्वोत्सवो हरिपदाब्जदयानुरूपः
श्री रंगनाथमहिषीवरदानधूतः
धर्मार्थ मोक्ष पुरूषार्थ हिताय पूतः
प्रावर्तते नियमतो गुरुवर्य नीतः ।।१६।।

मोहान्धकार पटली नटिनी जगत्यां
मायानुरक्त सुधियां ग्रसिनीव सद्यः
यायात्कथं विलयतां सततं विचार्य
रामानुजार्य चरणौ शरणंप्रयान्तु ।।१७।।

भारायिता भगवती कलिकालघोरे
ग्रोब्राह्मणाय हित साधन धर्म नाशात्!
या दानवी प्रकृति पामर पापमूला
शूलायिताहृदयमातृदशामिथा सा ।।१८।।

नियोत्सवस्स्वजन मानस मंगलाय
नारायणेनविहितो भुविदिव्य देशे
भक्ताभिभूत हृदयेन दयावधानः
प्रावर्ततेऽत्र नगरे गुरुवर्य गीतः ।।१६।।

ये मानवा नयनयो र्हरि भक्तिदायाः
सर्वोपचारविधिना प्रणतारमायाः
रामानुजार्य गुरुलब्धकृपावधानाः
ते वै प्रियाभुवनभारहताविमुक्ताः ।।२०।।

श्री नन्दनन्दन मुखेन कृतार्थ देहाः
सर्वात्मना सपदिपादयुगं तदीयम्
सन्त्यज्य धर्म निखिलान् शरणागताये
ते सर्वदुःख विगताः प्रणताः प्रसन्नाः ।।२१।।

धर्माखिलं भगवतः प्रतिपालनाय
प्राणाधिकेन मनसा वचसा विचार्य
ये पालयन्ति निज धर्म गृहीतपक्षाः
ते यान्ति विष्णु शरणं भवभीति मुक्ताः ।।२२।।

राजाधि राजकरुणावरदिव्य दृष्ट्या
श्री वैष्णव प्रवरताभुवि भाग्य लब्धा
कैं कर्य्य साधन कृते निजजन्महेतोः
रामानुजार्य शरणागत पुण्यदेहैः ।।२३।।

श्रीस्वामि पादयुगले विबुधाः प्रपन्नाः
शक्ता विनम्र मतयोधृत धर्म भावाः
सेवार्थ मेव सहजां वसुतासपर्या
नित्यं समर्प्य हरि भक्तवरा भवन्तु ।।२४।।

सेवार्थमेव नर देहदयाभिभूतो
नारायणो भुवि भवार्ति हरोऽभिजातः
सर्वार्थतस्सकलसृष्टिकृते वराया
लक्ष्म्याः प्रासदकलया करुणानिकेतः ।।२५।।

श्री भूमिनायकहरिः कलिदिव्यदेशं
नैकं विधाय मुनिमानस दिव्य रूपम्
श्री वेंकटाद्रिवर हस्तिगिरि प्रधाने
श्री रंगधाम्नि विजयी विदितो मुनीन्द्रैः ।।२६।।

श्री सूरिभिः परम भागवतप्रधानै
राल्वारकल्प निवहैरभवैरनाप्यम्
वैकुण्ठनाथ नगरं नवधामरूपं
देवार्यकं भवतु पावननाम धन्यम् ।।२७।।

यस्योदिते विलसिते समतानुरूपे
श्रीरंगधामनि महोत्सव मानमूले
दिव्येपि देशनिखिले विहितेऽर्थलाभे
या याक्रियासविधि सा विहिता विभाति।।२८।।

नाना निदानमिव भागवती सपर्या
शास्त्रनुरोधिविदिता विहितायदाऽत्र
श्री स्वामिवर्य चरणैरखिल प्रसंगै
राराध्यते प्रतिदिनं प्रणयानुरक्तैः।।२९।।

नारायणी भगवती करुणा दयार्द्रा
लीलामयी त्रिजगतां परिपालनाय
श्री स्वामिवर्यमधुना प्रति भावयन्ती
रामानुजार्य पदवीवरमाविभर्ति ।। ३०।।

श्री कृष्ण पावन करे करुणा प्रसादः
दीनार्तिनाशन करः प्रणताय लभ्यः
श्री मञ्जद्गुरुकृतः शरणागताय
मन्त्रप्रदेन विदितो भवमुक्तिकाय ।।३१।।

नारायणी स्वयमिह प्रथिता प्रभावा
पद्मावती परम पूज्य पदा प्रसादा
धर्मार्थ मोक्ष गतिका कलिता कला या
सा शाश्वती भगवती भवतु प्रसन्ना ।।३२।।

श्रीमद्रामानुजार्य प्रणति वरवृतो राजनारायणश्री
पदमावत्यादयायाः परमगुणयुतो यज्ञसेवा निमग्नः
ब्रह्मानन्दप्रसूतो हरिपदयुगलेलब्ध भावाभिभूतः
भक्त्युद्याने महर्षि निखिल जनहिते वर्धतां मंगलाय ।।३३।।

सिद्धस्साधुर्नगर्य्यां प्रभुवर कलयासर्वतीर्थानुबन्धः
लक्ष्मीनारायणाद्यापरिमितवचनानन्दितोदारधर्मी
कोऽपि प्राधान्य योगस्स्वगुरुवर कृपालब्ध विद्या विनीतः
नीतस्सार्वत्रिकालो नयन पथगतो वेंकटेशप्रियेण।। ३४।

धर्मद्वार प्रकाशे प्रकृतिपरवशः कोपिरामानुजार्यः
सिद्धस्सत्संप्रदाये कलिमलहरणे धर्मकर्माभिलाषी
शिक्षारक्षाहिताय प्रगतिपथविधा वैष्णवी बीज मूला
यस्यानन्ता प्रकर्षा प्रभुपदयुगलेलभ्यतेसोऽत्रवन्द्यः।। ३५।।

सर्वासिद्धिर्यदीया प्रभुवर कृपया लभ्यतेऽनन्तकालात्
भुक्तिर्मुक्तिः करस्था नव नव निहिता दृश्यते लीलया वा
वीणावादीदयालुस्सुरमुनिविदितो यस्य माया महीय्यां
सोऽयं लक्ष्मीप्रसाद्योभवभयनिकरं नाशितुं प्राथ्यतेऽत्र ।।३६।।

श्री श्री रामानुजार्यैः प्रभुपदनिरताः भक्तयूथाः प्रपन्नाः
श्रद्धाभक्त्या प्रपत्त्या श्रुतिरवविविधै र्विष्णुपूजावसाने
भक्त्युद्याने समेताः सहज (मधुर) रससुधा स्रोतसासिंच्यमानाः
धन्या मान्यावदान्या भवभयरहिता भान्तुधर्म प्रियार्थाः।।३७।।

राधाकृष्णानुबन्धो ब्रजभुविविहितो यादृशोभावपूर्णः
वेदे वेदान्त गम्ये नवरसरुचिरे ब्रह्मविद्या प्रकाशे
लीनःकोपि प्रवीणः कथमिह मनसा चक्षुषा वा प्रणीतः
गीतस्याद् वा विनीतो बुधवरनिवहैस्स्वामिपादस्तथैव।।३८।।

पूर्णः पूर्णार्थकामो नवनिधिसहितो वेंकटेशोदयालुः
लीलाभूमौ वरिष्ठः स्व सहजकृपया मंगलाय प्रसन्नः
ब्रह्माण्डप्राणिहेतोः प्रियवरवचसानन्यभक्तिप्रधानः
श्रीमद्रामानुजार्यैः प्रणतिजनकृते प्रार्थितोऽत्रापि सद्यः।।३९।।

सोऽयं श्रीवेंकटाद्रिर्नवयुगमहिमामण्डितो मण्डलश्रीः
देवार्ये सिद्धपीठं मुनिवर निवहै वर्णितं तथ्य कल्पैः
तेनैवात्रत्रिदण्डी यतिवर चरणोबोधयित्वा सहर्ष
कञ्चिद् भक्तं (शिष्यं) प्रपन्नं प्रभुवर भवने प्रेरयच्चापिपूर्वम्।।४०।।

सिद्धावाणीतदीया गुरुवर (यतिवर) विहितो वेंकटेशप्रसादे
जातेनिर्माणकार्ये स्वयमपिकृपयागत्यवेदशास्त्रानुमत्या
प्रोक्तादेव प्रतिष्ठा विधिवदधिगता वैष्णवैर्यज्ञपूता
शिष्योयोग्योवरेण्यस्सबुधगुरुवरो भातिकर्म प्रधानः ।।४१।।

भक्तानन्ताः कथायां कतिपय (श्रुतिवर) वचनैरर्थपूर्णप्रधानैः
शिक्षा दीक्षाप्रसंगेनयनपथ गता बोधिता यज्ञपूर्त्यै
मन्ये सत्यं भवित्री सुरमुनिवचसा सिद्धिरेषा प्रधानाः
सेवाभाव प्रभावा प्रतिपदविहिता राजनारायणस्य।।४२।।

सिद्धस्स्वामीत्रिदण्डी जगदखिल गुरुस्सार्वभौमस्तपस्वी
भक्तयुद्यान प्रसंगे स्वहृदिगत हरेः प्रेरणालब्धविद्यः
श्रीमन्नारायणस्य प्रबलमतिरतैःपूजनोद्देश्यलक्ष्यं
सद्यस्संभाव्य भावं जनपदमधुना शासितं सद्वचोभिः।।४३।।
मांगल्यंप्राप्यवाचो यतिवर विदुषां धर्मधन्याः धरण्यां
विद्यारण्य प्रधाना निखिल मति मतां सर्वशास्त्रार्थपूर्णा
सत्यागीर्वाण वाण्यो विमत मतिहराभासमाना जगत्यां
शास्त्रोद्धारेप्रवादे विजय पथदृशा संस्तुता विज्ञवर्गैः।।४४।।
रक्ष्यादक्षाः प्रपन्नाःभवविभवयुतैः पूर्णभाव प्रधानैः
भक्तैराराधनीयाः स्वजनइव सदा कर्मभूमौ दयार्द्रैः,
सेवासंसारसिन्धोः तरिखिविदिता सर्वशास्त्रप्रबुद्धैः
देवार्ये धाम्नि सर्वे प्रभुपदरसिकैः सर्वथापालनीयाः।।४५।।
श्रद्धाबद्धाभयार्ता नहि महि मलिनाः केऽपिदोषाभिभूताः
दृष्टास्सृष्टिप्रवाहे प्रभुवरकृपयाप्राप्तसेवाधिकाराः
मुक्ता युक्तास्स्व धर्मे कतिपय दिवसैः पूत देहास्समर्थाः
भक्ता भव्याभवाब्धौबहुजन गतयो धर्मरक्षाव्रतास्स्युः ।।४६।।
मायामुग्धा न के वा ? नरतनुविधया ये स्वयं धर्मनिष्ठाः
दोषामुक्ताः कथंस्युः? भवभयविगताःभक्तसेवा वरिष्ठाः
मुक्ताः के न प्रपञ्चात् ? निजहितनिरतालब्धलक्षाः कनिष्ठाः
भक्ताः के वा प्रियाः स्युः? परहितनिरताश्शान्तभावा जविष्ठाः ।।४७।।
माया का वविधातः?भवदधिगतिका लब्धदेहाभिमाना?
कालातीता मनीषा हरिपद विमुखी सर्वथाहेयताया
नीताभीताजनाली कलिमल कलया लालिता मोहदात्री
धात्री भक्ति र्यदिस्यात् हरिपदयुगले सर्वमायाविहन्त्री ।।४८।।

देशो सर्वत्र साक्षी गुरुवरवचनं नैव तर्क प्रकाशः
वेदान्ते वेद तथ्ये सविधिकृतमनो भाव भक्तिप्रधाने
मन्येमायापनोदे सकृदपिमनसा वेंकटेशो दयालुः
ध्येयोगेयःप्रपन्नैः सहज भवभयं नश्यते नात्र दोषः ।।४६।।
सिद्धान्ते प्रेमवाणी गुरुवर कृपयाश्रूयमाणां हेरेर्वा
स्वान्तर्यामी गुरूणां श्रुतिगण विहितस्सर्वसाक्षी स्वयं सः
नित्यानां चेतनो वै प्रकृति तनु धरो वात्र सर्वप्रमाणं
शास्त्रं वेदान्त रूपँ नियतिकृतहितँ ध्यायताँ सर्वदेव।।५०।।
एवं भक्तिप्रसादात् कविवरवचसा गीतिका गौरवार्था
नीतागीताभियुक्तै र्ब्रजभुवि पथिकैः प्रेमभावाभिधानैः
गीतं गोविन्दमान्यै रपि रसरसितं गीत गोविन्द पद्यैः
प्रेम्णा प्रेमार्थ भूम्नो गुरुवरमहिमा ज्ञायतां शुद्धभावैः ।।५१।।
आकल्पादद्य यावत् विविध कुपथगःपूर्ण मिथ्याभिमानी
दम्भाऽसूयाभियुक्तो न कलह निपुणो?भक्तिभावान्तको वा
नित्योजीवोऽविनाशी नरतनुनिलयः कामनासक्तिबध्दः
राधाकृष्णप्रसादं कथमिह पतितः प्राप्य यायात्प्रसन्नः।।५२।।
भक्तिः प्रेमस्वरूपा न च निखिल जने कृष्ण भक्ते सुसेवा
लब्ध्वा सामर्थ्ययोगं स्वजन निरतया मोहमाया निमग्नम्
तृष्णाबध्दस्य नित्यं ननु कुटिल मनो यस्य पापाधमस्य
तस्योद्धारः कथंस्यात? यदि हरिकृपया नास्ति भक्ति प्रकाशः।।५३।।
गत्वा तीरं नदस्य प्रवलतमतरी नैव लम्यायदिस्यात्
पारं गन्तुं समर्थो वहुविधवचनैः किं जनः कोऽपि यायात्
एवं पुण्य प्रबन्धैः श्रवणपुटगतैर्लब्ध सत्यप्रबोधः
कृत्वाकर्माभि सन्धिं जलनिधितरणे जायतां ते दयातः।।५४।।

जीवो जीवेत् कथं वा ? कलियुग गलितः पूर्णकायः कथंचित्
धर्मभ्रष्टः प्रणष्टःप्रभु पद विमुखः सर्वथा दुःख युक्तः
सक्तस्संसार भोगे पतित पथगतो धर्म कर्माभिमानी
नानावाद प्रवादे भवभय विकलस्त्रायतां दीन बन्धो?।।५५।।
कृत्वा संकल्पमल्पं हरिपदयुगले भक्तिभावच्युतोवा
नीत्वा (मिथ्या) गीत्वा सहर्षं निजकुलचरितं सर्वथा प्रेरणायै
सत्यं यद्यस्ति मान्यं तदपि कलियुगे गोपनीयं विचार्य
दासोयाचे प्रसादं प्रभुवर पदयो दर्शनार्थी कृतार्थः।।५६।।
मायानीते प्रपञ्चे प्रतिपदनिरतः स्वार्था सिद्ध्यै विमुग्धः
क्षुब्धोलुब्धः प्रकामी हरिपदविमुखोमूर्ख दासानुभासः
श्रीश्रीरामानुजार्य प्रथितगुरुवरे पूर्णभक्ति प्रपत्या
सेवा भावाभिभूतः प्रणतिपरजनः स्यात् कथं बोधनीयः।।५६।।
देवास्सर्वे सपर्या कृतविधि विहिता मन्दिरे स्थापिता वै
श्रीमन्नाराणोवा भवभयहरणेप्रार्थितस्स्थापितो वा
सर्व धर्मानुकूलं नरपशुरधुना नैव जानाति सत्यं
पूजा सेवा विधानं कथमिह सहजं जायतां नैव बोधः ।।५७।।
श्रद्धा भक्त्यायदर्थं स्वजन परहिते चापि भावानुबद्धो
भक्तः कोपि प्रपञ्चे चरणकमलयोस्ते कृपाललब्धलाभः
जातोधन्योधरण्यां निहतकलिमलो नैष्ठिकः किं स्वतोवा?
नायं भक्तस्तथापि प्रणतिपरवशो याचते ते दयार्थम्।।५८।।
ध्यानं ज्ञानं महर्षेर्युगयुगनियतं नैवलब्धं कथञ्चित्
गंगातीरे निवासोब्रजमहिवसति नैंव तीर्थ प्रवासः
धर्मः पूर्णार्थकामः कठिन कलि युगे पालनीयः कथं स्यात्?
राधाकृष्णप्रसादो यदि नहि विहितो जीवनं नैव धन्यम्।।५९।।

सीताराम श्शरण्यं पतितजनकृते दण्डकारण्यकल्पं
तीर्थीभूतं नगर्या प्रभुवर कृपया मन्दिरायत्त धाम्नि
लक्ष्मीनारायणस्य व्यथित जनकृते कोपि वात्सल्यभावः
प्राथ्र्योदासानुदासैरभयवरवृतो योगिवर्यानुभाव्यः।।६०।।
रामोराजाधिराजोऽवधभुवि महिमामण्डितो मंगलाय
राधाकृष्णावतारो ब्रजभुवि विपिने गोपवालैः कृपालुः
वृन्दारण्ये प्रशस्ते प्रणय पथगतो गोपिकाभिस्सराधः
हृद्याकाशे निलीनो नयन पथगतः प्राथ्र्यते दर्शनाय।।६१।।
पापीपाप प्रभावात् कुपथ मत्तिवृतः सर्वथाज्ञान शून्यः
शिक्षा दीक्षा प्रतिष्ठा प्रणवपरिमिता नैवलब्धा विशिष्टा
धर्माऽऽभासश्शरीरे भवभयनिहिते दृश्यते स्वल्प कालात्
बुद्धश्शुद्धः' कथं स्यात् प्रणतजनकृते दीयतां दर्शनन्ते।।६२।।
ध्येया सापि प्रणम्य ब्रजभुवि वनिता राधिका भक्तिगम्या
कृष्णेनापि प्रसाद्या जगदभिलषिता लालिता लीलया या
प्रेमप्राधान्यप्रीत्या मुनिगणमनसां रासलीलारसा सा
व्यक्ताशक्तासमीहासदसि विजयतां वैदिकी विष्णु (कृष्ण) जाया।।६३।।
व्यक्तस्सर्वत्र कृष्णः कृतवर वचनः पालनाय प्रजाना
मन्तर्यामी विभुर्यः प्रकृतधरवपुः पूर्वप्रेम्णाप्रसन्नः
लीलालीनः प्रपञ्चे प्रणतजनकृते सर्वथा शान्ति दायी
सोऽयं स्वामी जगत्याः धृतनरकलया सेव्यते सम्प्रदायैः ।।६४।।
क्षुद्रो जन्तुः कृतघ्नो विगतभवभयो मोहमायानुबद्धः
दम्भीसामर्थ्यमानी स्वपर कुल कला कुण्ठितः कर्ममुक्त :
जानन् दोषं स्वकीयं निखिल जन रिपुस्त्रासकः कर्मभाजां
सर्वं प्रारब्ध भोगं वदति भुविसदा प्राणिनां प्राणदाने।।६५।।

भक्तस्सक्तो यदि स्यात् स्वशरणभजतां सेवयालब्धभाग्यः
राधाकृष्णप्रसादात् नरवरवपुषा भूषितो धर्मयुक्तः
मान्यो लोके प्रबुद्धैर्निखिल कृतिकरः पूर्णकामः प्रकृत्या
शिक्षापूर्णातदा वै जगति सहजता तस्य मान्याप्रतिष्ठा।।६६।।
कृष्णो लीलाविभूतौ व्रज भुवि रसिको राधिकारञ्जनाय
प्रेम्णाभावाभिभूतो गुरुजन वशगोनैव कोपि प्रवादः
कंसः कालो विधात्रा मुनिवर वचसा वोध्यमानोऽवतीर्णः
नाशंनीतः कलातो निशिचर निखिलं हन्तुमेव प्रतिज्ञः।।६७।।
नानादैत्या इदानीं प्रगतिपथभिदः केचनान्तरूपाः
गेहं देहं प्रयाताः प्रतिपदमधुना त्रासका दृष्टिनीताः
सर्वेषामेवलोभात् धन जन हरणे नैव संकोच लेशः
तेषामेव प्रवोधः प्रभुवर कृपया प्रार्थ्यते धर्मधीरैः।।६८।।
योगारूढास्समाधौ कृत युग नियतावेदविद्यावभासासाः
भक्तिज्ञाने प्रसादौ यतिवर निवहैः प्रार्थिते कर्म भूमौ।
त्रेतायां द्वापरे वा कलियुग वशगैः किन्तु नारायणार्थे
सर्वात्मानः समर्प्या इति विबुधगणै र्दर्शितोंदारपक्षाः।।६९।।
संसारेसार हेतु र्मनसि वचसि वा पूर्णतो धर्म दृष्टिः
स्यायस्ति प्राण विद्या श्रुतिमत पथगा गौरवाय त्रिलोक्याः
मूलं धर्मस्य सत्यं जगदखिलहिते सर्वदैव प्रसिद्धं
रक्षातस्य प्रधाना मुनिवरवचनै रर्थितासर्वशास्त्रे।।७०।।
मायामोह प्रकाण्डः कुपथ पथगतो नास्ति मोक्षाय योगः
यस्यानन्ता विकाराः स्वजनवशतया दुःखदाः दृष्टि कोपाः
सृष्टा दृष्टाः प्रचण्डा यम निलयकरा वारणीयास्स्वधर्मैः
तस्यैवास्ति प्रभावः स्वजन सुखकरो नैव सन्देहलेशः।।७१।।

श्री श्री रामाजार्यैः श्रुतिवर वचनैरावर्णिताधर्ममूला
सिद्धान्ताः पूर्णशुद्धास्त्रिभुवन सुखदास्सारभूता जगत्याम्
ध्येयाा गेया मुनीन्द्रैः शुभमति कलिता वेद वाणीव युक्ताः
भक्तिज्ञानप्रसादाः प्रणत जनवरै र्धारणीयाः प्रपन्नैः।।७२।।

पद्मावती स्वजन मुक्तकरी प्रधाना
नारायण प्रणयिनीशरणागतानाम्
धर्मार्थ मोक्षभरणी प्रणतार्तिनाशा
श्री विष्णु पाद वरणेदयया सहाया।।७३

अष्टोत्तराधिकशते प्रभुदिव्यदेशे
स्वार्चावतार निखिले भवमुक्ति हेतोः
नारायणेनसहिता महती प्रतिष्ठा
मातस्त्वदीय महिमा प्रथितो जगत्याम्।। ७४।।

नष्टास्मृति र्न च तपः कलिकालघोरे
विद्या न शास्त्र विधयाशुभ कर्म भूमौ
श्रीवैष्णवोपि सततं गृह भार भूतः
त्रस्तोऽधुनाचरणयोस्तव देवि! लग्नः।।७५।।

भग्नास्समग्र विधयो भवसिन्धु पारं
नेतुं कथं सुमतिनां भवदीयतायाः
दृष्टेः कृपा वरमये करुणालयायाः
सूक्ते र्विनानु सरलं भवतीह सत्यम्।।७६।।

तीर्थार्धिवास वरणे शरणन्त्वदीयं
यज्ञक्रियाप्रणयने वरणन्त्वदीयम्
दान प्रसंग निखिले स्वधनं यदिस्यात्
सेवा तदैव सहजा भुवि वैष्णवानाम्।।७७।।

मातस्त्यवदीयकृपया कठिनं ब्रतं वा
तीर्थप्रयागनगरे सहि कल्पवासः
देवार्चनं प्रतियुगं सफलं तदैव
प्राधान्यतो भगवती स्मृतिमागतास्यात्।।७८।।

पाषाण कल्प पतितोपि सदा कृपायाः
मूढ़ाति मूढ़ पुरुषोमतिमान् भवत्याः
चैतन्यतामधिगगतो हरिभक्तिधामा
नीतस्वपार्श्व गतिकः प्रवर प्रसादात्।।७९।।

धन्यात्वदीययधरणी जननीव मान्या
यस्यां रमेश महिषी महिमावधाना
पूजोपचार फलिताऽवनिनाम संज्ञां
लब्ध्वादराविजयते हरिपूजनात्प्राक्।।८०।।

सर्वत्रदिव्य नगरे महि पूजनान्ते
रक्षाकरं सहज नामधराऽवनेवैं
श्रद्धास्पदैर्विहित कर्मपथ प्रसंगे
गीतं सदा बुधवरै र्भवभीति मुक्त्यै।।८१।।

लक्ष्मीस्स्वंय प्रभुवरं करुणावतंशं
लीलावतार समये सहजस्वभावा
संसारसिन्धुतरणे प्रणतागर्तिनाशे
वृत्वा सहायमखिलं प्रणता प्रबुद्धैः।।८२।।

सीतास्वयम्वरदिशाप्रभु रामचन्द्रं (प्रभुराघवेन्द्रम्)
वृत्वात्वमेव जननीजनकात्मजा वा
त्रेतायुगे जगति राक्षसमूलनाशे
जाता निमित्त गतिका श्रुतयः प्रमाणम् ।।८३।।

राधा च कृष्ण वनिता ललिताऽथवा वा
श्री रूक्मिणी नु कलया धरणींगता या
सर्वास्वरूप निलया विगतार्थ मोहाः
श्रीनन्द नन्दनवरं प्रणताः कृतार्थाः ।।८४।।

वेदेष्वनन्यमतयो धृत धर्म भावाः
देवर्षि नारदमुनिस्सिसनत्कुमारः
अन्ये च पुराणमतयशरणन्त्वदीयं
वाञ्छन्ति शुद्धमनसा नहि तत्रवादः।।८५।।

याचे त्वदीय शरणं नयनाभिरामं
लोकाभिराम वरणं भवसिन्धु पोतम्
श्रद्धाविवेक रहितस्सहितोऽपराधैः
धर्माभिसन्धिरहितो गलितस्स्वपापैः।।८६।।

नारायाणी त्वमसि सर्वहिताय लोके
स्वार्चावतारवपुषा प्रतिमानवद्या
विष्णोः समीपनयने स्वमुपायमूला
गीता पुराणनिखिले श्रुति सम्मतात्वम्।।८७।।

ब्रह्मागिरीश मुनिभिः सुरसाध्य वर्गै
राचार्य विग्रहधरैर्भुविदिव्य देशे
सर्वोपचार विधिना त्वमसि प्रपूज्या
विज्ञापयन्ति मुनयः प्रतिभायुषस्ते।।८८।।

श्री वैष्णवैः प्रतियुगं शरणागतैस्तैः
रामानुजार्यपथिकै रघुनापि भक्त्या
श्री रंगराजमहिषीवरपादपद्मे
नीतम्मनो भुवन पावन पर्व मूले।।८९।।

श्री वेंटेश गृहिणी नगरेऽत्रबन्द्या
श्रीभक्तिवाटिकभुवि प्रभुतामुपेता
रामानुजार्य गुरुवर्यमतानुरूपा
संराधिता विजयते प्रभुसंगता वै।।९०।।

नित्योत्सवे प्रथम दर्शन भक्तिभाजां
शास्त्रानुमोदितधिया हरिभक्तिधाम्नाम्
सद्यः प्रसन्न हृदया जननीव मान्या
दोषापराधनिखिलान् शमितुंसमर्था।।९१।।

ये मानवा प्रतिदिनं भवभीति युक्ताः
शक्ता न धर्मवरणे कलिदोष भाजः
अत्रागताः विनयपूर्वानताश्च भक्त्या
यास्यन्ति ते हरिपदं जननी दयातः।।९२।।

मान्यास्त्रिदण्डिमुनयो यतिराजभाजः
स्वप्नेपि दर्शनदिशा कृपया गृहीत्वा
मूढ़ जनं कमपि कार्यमिदं प्रबोध्य
पद्मावती स्वजननीति कृतः कृतार्थः ।।९३।।

स्वर्गापवर्ग विषये न कृत प्रयासः
मातुः कृपावर कृते सरलस्स्वभावः
सेवाविधिं कथमहो प्रणिधान शून्यो
जाने जनो नयनमार्गगताकृपा स्यात्।।९४।।

रात्रिन्दिवं प्रथमपूजनमेव याचे
दिव्यानुदृष्टि कलया जनमानसे त्वम्
भूत्वा प्रसन्नहृद्दयाकरुणा प्रसादात
दत्तावलम्बनकरा प्रणतान् गृहाण।।९५।।

श्रद्धातिरेकहृदयैः प्रतिवासरे यै
राराधिता सहज भाव मयैः सुपुष्पैः
संसार सार निखिला प्रणता सहर्षं
तान् देवि दिव्य कृपया सततं पुनातु।।९६।।

जन्मान्तहानिवरदे! प्रभुपादयुग्मे
भक्तिं प्रदाय सहजां भवसिन्धुनौकां
सायं प्रभातसमये निजपादयोश्च
येनप्रपञ्चविरतोनिरतश्च भूयात्।।९७।।

नैवास्ति भक्तिरघुनापि तवसू प्रसादे
दृष्टन्नरूपममलं जननि! त्वदीयम्
ध्यानं न कर्म शुभदं तव दर्शनार्थं
स्वप्नायितं निखिलमेव हरेर्विधानम्।।९८।।

सौभाग्यदं जगति जन्म यदा गृहीतं
दौर्भाग्यतो निहत धर्मपथो मदीयः
रामानुजार्य चरणौ शरणं विचार्य
मातस्त्वदीय कृपया यदि रञ्जितं स्यात्।।९९।।

मन्ये नु जन्म सफलं हि यशस्त्वदीयं
गोवर्धनो व्रजभुवि प्रणतार्तिहारी
श्री कृष्णचन्द्ररसिकस्य कला विशेषः
साक्षात् स्वयं यदुपतिःपतितान् प्रपञ्चात्
उध्दर्तु मेव विहितः श्रुतिभि र्विमृग्यः।।१००।।

हे कंस नाशन विभोः करुणादयाते
पापाधमे नहिकथं मयि सावधाना(सानुकम्पा)
किम्मेऽपराधघटमद्य मितं विचार्य
प्राणान् जुगोप मम पापमवेक्षणाय।।१०१

यद्येवमस्ति भवभोग दशा विचित्रा
धर्मप्रथा नियमतो भुविरक्षणीया
येनापराधशमनं सहजं भवेच्चेत
प्रोक्तं तवैव वचनं नहि किं विरुद्धम्? ।।१०२।।

यावन्न पापकलशः परिपूर्ण जातः
तावन्न हन्तुमिहमां भवतास्वयं वैः
लब्ध्वावतारविधया क्रियते प्रयासः
पुण्यञ्चनैव विहितं तव दर्शनाय ।।१०३।।

कंसोन रावण निशाचर शक्तिशाली
वाणासुरो न शिशु पाल वरोपिबाली
ज्ञानी न कर्मनिरतो नहि भाव भक्तः
लब्ध्वानुमानव वपुः प्रयतेत्वदर्थम् ।।१०४।।

याचे नु दर्शनमहो भवतः प्रधानं
त्रस्तो भवे भययुतो नयन प्रसादम्
येकेऽपि कर्म विधयो भवसागरेऽस्मिन्
त्यक्ताश्च ते कथमहो तव दर्शनं स्यात्? ।।१०५।।



।। श्रीराधास्तवः ।।

ब्रह्मशक्ति परब्रह्म परत्त्वपराम्बिका
साक्षिणी सर्वसामर्थ्या पुरुषोत्तमवल्लभा ।।१।।
वन्दे राधामिहप्रीत्या मनसाकर्मणाधिया
यस्याः ध्यानप्रपूतावै योगिने यान्ति सत्पथम् ।।२।।
ज्ञानगौरवसम्भारा नैष्ठिकास्साधवोध्रुवम्
भुवं सर्वा विचिन्वानाः पावयन्ति जनानिह ।।३।।
धन्या राधाव्रजाधिष्ठा प्रतिष्ठा ब्रह्मवादिनी
भूविष्ठा सर्वभूतीनां कलौलोकोपकारिणी ।।४।।
कर्मयोगवती शक्तिः भक्तिर्भुवनव्यापिनी
सम्पत्तिः सर्वसिद्धीनां विपत्तेर्नाशिनी मता ।।५।।
शास्त्रसन्दर्भधात्रीव रक्षिणी परमात्मिका
सर्वानन्दप्रदामूर्तिः कामधेनूपमास्मृता ।।६।।
कृष्णाराधानुसन्धाना ब्रह्मानन्दसहोदरी
परमानन्दमयी कान्ता विष्णोर्लीलावतीकृपा ।।७।।
रञ्जनीरंगभूमीनां भञ्जिनीविपदां सदा
सर्वथात्र प्रपन्ननां शरणागतिराश्रया ।।८।।
नर्मदागण्डकीरेवा नारायणी सरयुदया
परात्परा मनोभासा सर्वतीर्थाधिदेवता ।।९।।
कलाकुञ्जधराधीरा सुन्दरीराशमन्दिरा
वृन्दावनेश्वरी लीला शीलासौभाग्यवर्द्धिनी ।।१०।।
मालिनीमन्त्रराशीनां पालिनी स्वजनायुषाम् ।
ब्रजमण्डलभूतीनामीश्वरी प्रणपालिनी ।।११।।
कलिकोपसुरक्षयै जनानामाशु सर्वतः
गोवर्धनधनश्रीश्च सृज्यते कृपया तव ।।१२।।

वराऽऽभरणभूषाढ्या ब्रह्माणीव दयावती
शास्त्रोदधिसुरत्नानां संगमाऽनन्तरूपिणी ।।१३।।
भारतीभरणावाचां प्राचामपि चिरायुषाम्
नियताऽनर्थरूपान्तकारिणी जन्ममोचिनी ।।१४।।
जनोऽयं लोकशोकार्तः प्रारब्धपरिभावितः
राधाराधेति संकीर्त्य कथं स्याद दर्शनोत्सुकः ।।१५।।
भजन्नपक्वधीश्चायं सायंप्रातस्तवाऽमलान्
नामधामगुणानन्तान् परित्यज्य विमूढधीः ।।१६।।
कथञ्जायेन्मनोबुद्ध्या कर्मणाकायधर्मतः
सर्वात्मभावधारायां निमग्नस्तेकृपार्थतः ।।१७।
जन्मसाफल्यसंसारी प्रहरीव धनायुषाम्
सेवाभावमुपोष्यैवं व्रतीव तव संस्तवे ।।१८।।
नियोज्यात्मानमासन्नां हृदिधाम्निपरां श्रियम्
भवेयं हि कथं देवि ! त्वामेवजपतां पथे ।।१९।।
भजनं भक्तिभावेन यजनं याजनन्तथा
यमुनातीरतीर्थार्थी याचतेविनयीरुदन् ।।२०।।
सात्त्विकोदात्तवृत्तीनां क्लेशोऽधिकतरः कलौ
वृत्तिभ्रष्टस्य मे सत्यं गतिर्नास्तित्वयाविना ।।२१।।
गौरतेजो विनायस्तु श्यामतेजः समर्चयेत्
पुण्यात्मा स कथं वाच्यः शिवस्सत्यमुपादिशत् ।२२।।
नायमात्मा प्रवचने स्वस्याद्यापिप्रतारणे
समर्थोवासदर्चायां हरे स्तेपि कदाचन ।।२३।।
ममभाग्यवतीवाणी नवा सेवापरायणा
मनो न रमते नित्यं तव पादाम्बुजद्वये ।।२४।।

विषयाऽऽसक्तदेहीकः ? स्वयं मुक्तः प्रजायते
इति न संश्रुतः कश्चित् सच्छास्त्रप्रथयाऽधुना ।।२५।।

हरत्यवश्यन्तव भक्तिभाविता
कृपावलिष्ठा जगदार्तिमन्तरा
राधेति नामाऽमरवाणिमान्यता
मयाऽधमेन प्रणतेन याच्यते ।।२६।।

सदर्चनं सद्वरणञ्च तावकं
प्रपञ्च नैसर्गगतेर्विशोथकम्
कृपावलेशेन तवैव, सम्भवं
न कोपिपन्थाः मम मुक्तिदायकः ।।२७।।

न साधुनाम्नस्तवधाममूलकं
जपेन संकीर्तनकर्मणादृतम्
यशोवितानन्नधृतं हृदिस्वके
कथम्भवच्छेदपथं समाश्रये ?।।२८।।

करावलम्बं ममदेहि सत्वरं
त्वमेवमातः ! श्रुतिसार सञ्चया
प्रगीयते मन्दिरवाटिकायती
सदौषधीवान्यतमा प्रभाविनी ।।२९।।

दयावली दृष्टिरपारकन्दरा
शुभौषधीनाममिताजनिश्श्रुता
पवित्रदेहाद्रितपस्थलीभृता
सदात्मना पुण्यवलेन लभ्यते ।।३०।।

त्वदीय मायानुमता मनःस्थिति -
रबोधसत्त्वस्य सुखाय कल्पना
प्रसादनाय प्रणतस्सपर्यया
भवेदवश्ययं भवमुक्तिदायिनी ।।३१।।

वृन्दावन श्रीरधुनाऽवधारणा
वैकुण्ठनाथस्य मुदामनीषया
राथावधानाश्रयदिव्यधामतो
भक्तिप्रिया प्रार्थनया प्रसीदताम् ।।३२।।

न वेद विद्याऽध्यनैर्न दानतो
नवातपः पूतमनः क्रियावतः
निसर्गतो भक्तिमती मयिप्रभा
यदि प्रसीदेच्च्वतदा शुभोदयः ।।३३।।

पराश्रितो व परतन्त्रपारगः
श्रियः पतेरेव च दासवृत्तिकः
अनन्यताया भवदीयता वृतो
भवाम्बुधेः पारमितो गमिष्यति ।।३४।।

राधास्वयं श्रीः परमात्मनः स्थितिः
नीला च भूदेविदयावरेश्वरी
कारूण्यभावाभिमता जनेस्वके
लोकोपकाराय सदाऽवतीर्यते ।।३५।।

तेनैव मानेन मनस्विताऽखिला
लीलाविशेषेण विभूतिदस्सदा
प्रासाद्यमाना विधिशम्भुदेवताः
पूर्णार्थकामाः भुवने जयन्ति ते ।।३६।।

रक्षाविधाशास्त्रपुनीतभाषया
गीतामहाभारत भाग्यहेतवे
सर्वान्तरात्मा हरिरेवराधया
चराचरं भावयतीह लीलया ।।३७।।

कृष्णावतारे भुवनप्रपावनी

श्रीरेव साक्षात् सहजानुकम्पया

गोपाङ्गनाभिश्श्रुतिभिस्समाहिता

जेगीयमाना मुनिभिस्सुभाषिता।।३८।।

नमे स्वभावोभवतीं प्रसाद्य वा

रमाश्रयं कृष्णमभीष्ट पूरकम्

शुचिस्मितेनार्थवरेण्यकर्मणा

प्रकीर्तितोऽस्तिप्रणयावधानतः।।३९।।

कथम्भवे भाग्यनिदाननिर्णय -

स्त्वदीय भक्तेरवधारणादृतः

सहिष्णुताभाव्यदयालुता यदा

भवेन्मयिप्रेमवती तदा क्रिया।।४०।।

सर्वार्थदायिप्रथितो दयावरो

मातस्त्वदीयोऽनुमतोमहात्मनाम्

वेदान्ततत्त्वात्मभराकृपाकला,

सम्भावनीया मनसि प्रकाश्यताम्।।४१।।

श्रीनाथ पादाम्बुजभूमिपाविता

राधारमायाः प्रतिरूपभाविता

गोलोकधामाश्रय भावभासिता

रक्षाधिपा मे भवतु दयादृता।।४२।।

कुटुम्बसेवाऽवसरप्रदानतः

प्रपत्तियोगस्य विधाविधानतः

प्रणम्यदेवस्य दयानुरोधतः

सुसाधिका मे भवमुक्ति राधिका।।४३।।

सतीर्थवासीव भवाटवीभ्रमन्
यतीश्वरो मान्यगुरूपदेशतः
समाहितो मन्त्रयुतश्च भक्तितः
कथं दयादृष्टिपथं गतो भवेत् ?।।४४।।
तवैवमातः ! चरणाम्बुजश्रिया
प्रसादितस्सर्वगतिर्जगद् गुरुः
स्वधर्म रक्षाधृत दिव्यविग्रहः
कलावपि प्रार्थित धर्मरक्षकः।।४५।।
हे राधिके ! योगिवराधिदेवते ?
कृष्णप्रिये ! देववराभिवन्दिते ?
समस्तसंसारसदादृते ! शुभे !
दयाविधाने कथमाकुला न किम् ?।।४६।।
राधावाधाममों धाम्मे पूर्वजन्मकृतामिह
दूरीकरोतु संराध्या ममभोग्यांप्रपञ्चतः।।४७।।
कष्टापन्नजनेस्य सर्वथाघप्रणाशने
त्वमेव माता इष्टासि सृष्टानां परिपालने।।४८।।
ऋद्धिसिद्धिप्रभावोपि स्वभावात्ते प्रवर्धते
प्रवर्तते च निखिलं धर्मकर्मदयादृशा।।४९।।
अनाथानां सनाथासि सुपथासि कुपथायिताम्
कृपाकारुण्यभावासि दयामूर्तिः सदार्थिनाम्।।५०।।
दुःखदारिद्र्यनाशाय ब्रजमण्डलदेवता
प्रार्थनामृतपूर्णेन्दुर्वृषभानुसुतोदया ।।५१।।
शुकशौनकसिद्धानां महर्षिणां प्रसादने
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्राणां सुराणाञ्चस्वतश्श्रुतिः।।५२।।

गोपगोपीश्वरी देवी देवताव्रजवासिनाम्
परमाल्हादसक्तीनां बीजनमलयोगिनाम् ।।५३।।
परमानन्दभावानां वाचामखिलशक्तिधीः
त्रय्यास्तन्त्र प्रमात्रीव धात्रीवविबुधात्मनाम् ।।५४।।
लीलापांग विभूतीनां प्रणवोपास्य मन्त्रणा
लोकत्राणकरीमाता सदाऽऽनतक्षमायुषाम् ।।५५।।
कल्पकोटिप्रमाणानां शास्त्रबोधितकर्मणाम्
पुण्यराशिरिवप्रभा विदितासि दयाद्युतिः ।।५६।।
जरामरणमोक्षाय धेयागेया सदासुरैः
व्रजधाम दयाधाम्नि परमात्मेव वन्दिता ।।५७।।
परब्रह्म महाशक्तिः प्रीतिप्रवणमानसैः
वेददेवान्तनिष्णातैर्ध्यायते चिरकालतः ।।५८।।
प्रतिकल्पयुगेगीता निगमागमूर्तिभिः
परब्रह्मस्वरूपाभी रासेश्वरी कलावती ।।५९।।
बैकुण्ठाधिपलीलायां कृष्णकान्ताकृपावती
राधारभणरक्षायां वृषभानुसुतास्मृता ।।६०।।
बाललीलाऽऽवृताविद्या दानलीलावती मुदा
रासलीलालयालीना प्रवीणासिमहाव्रता ।।६१।।
योगिनी वल्लभाप्रीता सीतायितेव भावतः
भगवतीभवाब्धेर्हि तारणाय सदात्मनाम् ।।६२।।
वियोगयोगमानेन महिमान्वितकृष्णधीः
वृष्णीनां परमार्थस्य कृष्णस्य पूर्णकामना ।।६३।।
राशरासेश्वरीकृष्णा कृष्णायितकलामयी
कालव्यालमुखग्रासान्मोचिनीब्रह्मवादिनी ।।६४।।

जाताऽवन्यां मुकुन्देन समं लीलापरायणा
माधवी राघवी वाणी वीणापाणिरथप्रभा ।।६५।।
पूर्णकामामहामाया दयादाक्षिण्यभाविनी
ज्ञायतेध्यायते नित्यं ब्रह्माशम्भुमनीषिभिः ।।६६।।
समाधिनिष्ठै रमारूपा संस्तुता निगमागमैः ।।६७।।
रूक्मिणी सत्यभामेति जामवन्ती सखीवरा
नित्यानन्दस्वरूपात्वं गोलोकधामदायिनी ।।६८।।
दिव्याऽदिव्यस्वरूपात्वं परब्रह्मोपकारिणी
प्रणवातीतमाहात्म्या कलाषोडशधारिणी ।।६९।।
आत्मयोनिस्स्वधा स्वाहावषट्काराजपाकृतिः
मारणमोहनस्तम्भ सर्वविद्यावधिस्मृता ।।७०।।
पूर्णकामा दयाधामा रामरामा महाधवा
सदाऽच्युताऽच्युतप्रार्थ्या वृन्दावनप्रवासिनी ।।७१।।
रमेव रमतां लोके शोकसन्तापनाशिनी
योगिनां योगसंसिद्ध्यै धृतपावनविग्रहा ।।७२।।
चन्द्रावली सपत्नी च प्रबुद्धोद्धबतोषिणी
कृष्णैकप्राणसन्त्राणा कृष्णैकत्वकलाऽमला ।।७३।।
मोहान्धकारनाशाय भासमाना व्रजेस्तुता
मुरारिचरणाम्भोजे भक्तिभावाभिमानिनी ।।७४।।
कल्याणकारिणीलीला लीना भक्तिपथेचिरात्
मायेशानी समाख्याता विज्ञातानर्थनाशिनी ।।७५।।
श्रद्धाबद्धमयीभावा भूर्भुवस्स्वस्स्वरूपिणी
ब्रह्माधिष्ठानदेवीच गीयते धर्मपावनैः ।।७६।।
योगविद्याऽनवद्यांगी प्राणायाम प्रवर्तिनी
शुद्धबुद्धमनःपूर्णा पर्वपुण्यमयीमता ।।७७।।

सर्वबाधाप्रशान्त्यर्था सर्वमन्त्राधिदेवता
व्रजेश्वरी महानन्दा वन्द्याऽमरगणैस्सदा।।७८।।
सर्वशास्त्रप्रथाधीना निधीनां नित्यदायिका
कलासाहित्यश्रृंगारा शास्त्रसारावलीदुधा।।७६।।
जपाकुसुमसंकाशा सुधासिन्धुविधूदया
रममाणा त्रिलोकीसु भ्रममाणा भयान्तिका।।८०।।
रावणापराधानां वै रामभृकुटिमन्त्रिणी
नाशाय द्रुतवाणौधा ध्यानसंगरसंस्थिता।।८१।।
कलिकल्मषकंसादेर्हासाय व्रजमन्दिरा
इन्दिरैव हरेश्शौरेरवतारार्थसाधिका।।८२।।
बाधिकाऽमंगलप्रौढेर्भासिकानन्तकलाभृताम्
शाश्वतीयं मतिस्सन्ध्या सावित्रीविजयाजया।।८३।।
शिक्षादीक्षा प्रतीच्छाया धर्मशास्त्रभृतां सताम्
स्वेच्छाप्रेच्छावराधीशा ईशैश्वर्यकरी ध्रुवम्।।८४।।
कृपालवनयेनात्र ब्रह्माण्डाखिलदर्शिनी
भक्ताधीनमनोभावा कृष्णवश्यत्वकारिणी।।८५।।
समाधानप्रभावश्रीरज्ञानपथसन्तते:
जिज्ञासूनामथोद्धारा प्राणवीजावधिश्शुभा।।८६।।
कल्याणाय कलादिव्या यस्या अद्यापिभासते
लोकत्रयविभूतिस्सा राधाऽऽराध्यासदाभुवि।।८७।।
सर्वरत्नप्रसूमातः ! भुविदिवि महौजसाम्
तेजोबुद्धिकरीदेवी त्वमेवासि सनातनी।।८८।।
सुषम्णामार्गसंचारि ब्रह्मरन्ध्रक्रियावर्ता
नवधा भक्ति संवेद्या सर्वविद्याऽमलाश्रया।।८६।।

अष्टसिद्धिवराऽऽराध्या साध्याशुद्धाऽनघादया
आद्यशक्तिर्महालक्ष्मीः सन्ध्यासर्वार्थपूरिणी ।।९० ।।
ब्रह्माज्ञानदयादृष्टिः सृष्टेरखिलमंगला
तन्त्रमन्त्रमहायन्त्र साधिकेवाधिदेवता ।।९१ ।।
स्वक्षा दक्षा पराविद्या शास्त्रारण्यभिभासिका
वशीकारा नृपादीनां समाहाराऽस्त्रधारिणाम् ।।९२ ।।
पापागारनिवद्धानां प्राणिनां पूर्णमुक्तिदा
मुक्तिदा चापि कल्याणी सद्वाणीवमहाबला ।।९३ ।।
कृपावती प्रपन्नानां शरणागतवत्सला
श्रद्धावनिर्भवानीत्वं देविद्रविणरत्नपा ।।९४ ।।
नन्दाभद्राजयापूर्णा प्रणतार्तिहरा क्षुधा
सर्वमंगलदात्रीत्वं कृपासिन्धुवराऽधुना ।।९५ ।।
द्वापरान्ते कलेरादौ साक्षिणीव सुकर्मणाम्
नारायणो पराविद्या ब्रह्माण्डप्रबोधिनी ।।९६ ।।
धर्माऽधर्मपरामर्शे मानमूर्तिस्वतः स्वयम्
भोक्ताभोग्यप्रसादार्थं बन्द्यतेऽचिरकालतः ।।९७ ।।
श्रद्धावद्धविनीतानां धर्मिणां धैर्यधारिणी
हारिणीवाद्यपंक्तीनां प्रार्थ्यते भवमोचिनी ।।९८ ।।
सत्यव्रतवतीप्राणा गायत्रीविजयाजया
मानापमानभावानां मर्षिणीव महाद्युतिः ।।९९ ।।
शब्दमूर्तिधरात्वञ्च शक्तिपीठेश्वरी ध्रुवम्
नामानन्तसुरूपात्वं कल्याणगुणशालिनी ।।१०० ।।
योगियोगीश्वरैस्त्वैः प्रार्थ्यमाना युगे युगे
सेवकेनापि संवेद्या संस्तुतास्तु प्रतिक्षणम् ।।१०१ ।।
स्तवेनात्र सुसंशुद्धिर्मनोवाक्काययोगतः
सर्वशान्तिसुधाधामा मनोमन्दिरराजताम् ।।१०२ ।।

।। श्रीराधा बल्लभस्तोत्रम् ।।

राधाबल्लभवैभवोऽत्र विबुधैराराधितो वर्धितः
भक्तिज्ञान नवाभिधान नयने नानाविधे नन्दने।
गोपीनां मणिमञ्जुला विलह्रसिता हारावली लालिता
लीलालीन लतेव वाहु वलिता कापि प्रिया वन्द्यते।।१।।

वृन्दारण्य विहारिणीव वनिता राधासखी चन्द्रिका
कालिन्दी करुणार्द्र केलि ललना गोपाङ्गनाप्राङ्गणे
प्रेमानन्द निदानमेव सहजं श्रीकृष्ण लीलायितं
ब्रह्मानन्द विभावनं विदधती भक्तिप्रियावन्द्यते।।२।।

गोलोके भुविभूरि भाग्य भवने भावान्वितो विद्यया
विष्णोर्वन्द्य विभूति पावनपरः प्राणाधिकः प्रीतिदः
राधाऽऽराधित रम्य रास रसिको ब्रह्मद्रवोदारधीः
लीलाभूमिवरोऽभिराम रचितोहृद्यो निधिर्जायताम्।।३।।

श्रीनारायणनामधामवशगो भक्तिप्रियो यो जनः
सारासारविवेक धर्म पथिकः श्रीद्वारिकाधीशतः
लब्ध्वा मोक्षपदं प्रसादमखिलं नायाति शान्तिंस्वतः
सेवा भाववशीमनाः प्रमुदितो भावातुरो भाव्यते(भासते)।।४।।

राधारक्षितवल्लभस्य हृदये काव्ये कला कौमुदी
विद्याकाशकलेवरं रुचिकरं सम्भासयन्ती स्वयम्
अज्ञानान्धपटं निगीर्य सततं कृत्वा च कान्तिं चिरं
यस्याद्यास्ति वचस्सुधा प्रणयिनी वन्द्यस्स कोपि प्रभुः।।५।।

साहित्य प्रणिपातपावनपथे परार्थ्य शिक्षाव्रती
सद्यस्स्वामि पदाभिवन्दनमिव प्रेम्णाप्रियाप्रीतिदम्
कल्याणाय समस्त भारत भुवि प्रेमास्पदं भावयन्
लीलालेसकरं हरेःसहजतो विस्तारयन्वर्धताम् ।।६।।
राधावल्लभ एव मन्त्रमखिलं लीलावधानालयः
संसारे शुभमंगलाय विदितो राधारथी मानसः
राधावल्लभ रूप रक्षित तनु गीर्वाणवाणी प्रियः
गीत्यानन्दमहोत्सवं विजयते मन्ये ध्रुवं भाग्यतः।।७।।
राधामाधव भक्तिमार्ग विविधे भक्तभ्रमोमोहजः
ध्येयो गेयनयो महाशयहिते संसारिको वाऽपरः?
पक्षः कः? परमार्थ साधन करो नारायाणो वाऽपरः?
देवोमोक्ष विधावधान विषये वैधानिको वन्द्यते ।।८।।
श्रीविष्णुः प्रतिकल्पकार्य विधया कृत्वावतारं नवं
सर्वान देवगणान् प्रसन्नमनसा सम्पूजयन् भक्तितः
पुण्यं पूर्ण विधिं स्वधर्म विहितं सम्मानयनशिक्षयन्
धर्मं शाश्वतवेद शास्त्रनिहितं सन्दर्शयनूवन्द्यते।।९।।
प्राप्यो देववरो दयामय हरिः संसारिकैस्सर्वथा
देवैरर्थ परैरपीहवहुधा सम्पूज्यते कल्पतः
सत्यं यद्यपि वेदशास्त्रफलितं प्राधान्यतोनिश्चितं
किन्तु प्राणि समग्र शान्ति निलयः कृष्णस्स्वयं कर्मकृत।।१०।।
श्रीरामः प्रतिकल्पमेव कथितो राजेश्वरो मूलतः
सर्वस्यार्तिहरो दयापरवशो नान्योऽस्ति भावोऽपरः
धर्मप्राणपणप्रभाववसुधा संरक्षकस्सम्मतः
लोकाराधनमेव यस्य विदितं लीलाधरोऽसौवृतः(स्तुतः)।।११।।

काव्यानन्दनय प्रमोद मुदितो राधाप्रियो माधवः
आचार्यप्रवरोऽधुना भुक्षिगतो मन्येदयादृष्टितः
लीलाविग्रहपूर्ण काव्य कलयाऽऽह्लादाञ्चितस्सर्वतः
प्रेम्णा पावन पंकजे पदयुगे तस्यैवलीना वयम् ।।१२।।
कृष्णो गोकुल गोपवाल मिलितो गोपेश्वरी संगतः
सर्वानन्दपथप्रसाद सहितो दध्यागंणे प्रेमतः
मायातीत निपीत दूग्ध वसति र्यस्यास्ति भाग्येन सः
राधावल्लभपाद पद्म युगले लीनस्सुधीः कोऽपरः ।।१३।।
यद्वा माधव माधवी प्रणतिको भृंगायितः प्रेमतः
कालिन्दीतट गोपमण्डित पथे गोचारणे चर्चिते
मुग्धस्मेर मुखाम्बुज प्रणयिनः कृषणस्यकश्चित् सखा
श्रीमानेव मया प्रधानपुरुषः प्रावोधि मन्त्रा हितः ।।१४।।
धन्योमानस हंस वंशः विबुधः कल्याण कल्पद्रुमः
भूर्लोके भवभीतिवारणपटुः काव्यात्म लीलार्थिना
मायायाग्रस्त सचेतसां सहजतः सर्वप्रियः प्रार्थितः
राधावल्लभ एव हृद्य विषयस्सभ्भासते साम्प्रतम् ।।१५।।
गोविन्दोब्रज गोप गोकुलधनं संसरिणांरक्षकः
धर्माधर्मपथ प्रकाशनिलयो योगेश्वरः पूर्णतः
गीताज्ञान नदी प्रवाह कलया मोक्षप्रदोलीलया
तेनैवात्र समग्र संस्तुतिपदे दैवाधिकं पूज्यते ।।१६।।
प्रेमानन्द तटी कलाधर नटी लीलावती नर्तकी
जिह्वाग्रे वसतिः समादरकृतिः काव्यंगनाकञ्चुकी
नीतायस्य मनोऽभिरामरसिता वाणी नवामाधुरी
सोऽयं ब्रह्मसहोदरोविजयतां कृष्णायितो लक्षितः ।।१७।।

राधारासविहारराजिञ्जतपदे श्री कृष्णलीलायिते
श्रीवृन्दावनवन्दिते सुमतिभिः कीर्तिप्रभामण्डिता
ईशस्यापितथा च भक्ति भजतां गीर्वाणवाणी युषां
सर्वार्थ प्रतिपादिनी नयनयोःसम्भाव्यते तावकी ।।१८।।
नैराश्यं नहि भक्ति भावितपथे जीवेश्वराऽऽह्लादिनी
शक्तिस्संगतिसाधिनी सकरुणा काव्यार्थसारावली
मुग्धानां भव वारिधौ निपततां सन्तारणाय ध्रुवं
नौकेवाश्रितदुःखदोषदलनी रासायनी शोधिता(ते कृपा)।।१९।।
राधारासविहारिणे विहसतां केषां मनस्सुस्थिरं?
ये सन्ति प्रतिवादिनः विलपतां लब्धादरा भूरिशः
अज्ञानेन सदास्वधर्मरहिताः कायेन्द्रियैः प्रेरिताः
ते सत्यं निज पापपुञ्ज वशगाः दुःखाम्बुधिं प्रस्थिताः।।२०।।
कृष्णोविष्णुरवश्यमेवविदितो वेदैः पुराणैरहो
तत्रैव प्रभु योगिवर्यविहितो लीलाश्रयोमाधवः
गोपीप्रेम पयोधि पावनतटे भक्तैस्सदाऽऽराधितः
प्राप्तोब्रह्मरसानुभूति सुखदो योगश्वरो वन्द्यते।।२१।।
तस्यैव प्रथिते प्रभो विलसिते भक्तिप्रिये संगमे
मुग्धाः केचन कामिनो विरहिणो धर्मच्युताः चञ्चलाः
मग्ना भग्न विवेक मार्गपतिता भ्रष्टास्स्वयं दुःखिताः
श्रेयो मार्गमवेक्ष्य शान्तहृदयै नीर्ता विनीता ध्रुवम्।।२२।।
शोभाधाममये ब्रजेश्वरप्रदे वैकुण्ठनाथालये
गोलोके मणिमण्डिते प्रवरधीः को वा कविः? कर्मणा?
शान्तानन्द विभूति भूषित तनुर्लीनः कला कर्षितः
राधावल्लभएव मान्याविबुधोहृद्यः कथा शेषतः।।२३।।

धैर्य यस्य महीसमं प्रगुणितं (सुविदितं) संसारिणस्सक्षमं
विद्यौदार्य हरिप्रसाद विविधो ध्यातश्च सर्वार्थदः
श्रद्धाभावरतस्य पुण्यवसतिर्मान्ये प्रदेशेऽधुना
राधावल्लभहृद्यमन्त्रमहिमा विज्ञस्सवन्द्यो गुरुः(प्रभुः)।।२४।।
को वा कल्पलता प्रसून सदृशस्सौगन्धिना सर्वतः
स्वर्लोक प्रतिमान मंगलकरो दृग्वाक्कलामोहितः
काव्यं किं कवि कर्म मर्म निहितं कृत्वा प्रशस्यो भवे
राधावल्लभ एवभासित तनुः कोऽन्यो? वदान्यस्स्तुतः?।।२५।।
राजारंक नयाभिमान विधुरश्श्रीकृष्णराधासखा
गोपः कोऽपि मनोऽभिलाष विदितः सत्यं कविः वाक्पतिः
सर्वोपाधिमयाऽऽवृतः प्रतिपदं धन्यः कविः कश्चन
प्राथम्येन पुराणपावन पथे प्रासंगिको वन्द्यते।।२६।।
नानाभाव विभाव भावनकरी काव्ये नवे नित्यशः
छन्दोमुक्त कला कलेवरकृतिः काव्यात्मना निष्ठया
यस्याशुप्रतिभा विलक्षण विधा शिक्षा प्रदा पूर्णतः
तस्यैवाद्यबुधैरहर्निशमहो मांगल्यमाकांक्षते।।२७।।
शास्त्रं काव्यमपि प्रबुद्धमतिभिराभाश्यते युक्तितः
येनानन्दमयो रसस्सहृदयैराराधितः प्रेमतः
सर्वस्वार्थ पथे प्रधानपुरुषो वेदान्तविद्योदये
याथातथ्यमिवात्र संगतिकरः सन्धार्यते नापरः।।२८।।
राधामाधवपादपद्मयुगले प्रेम्णा सपर्या न वा
काव्योद्भावित भक्तिभासित कृतिः शिक्षा द्युतिः सर्वथा
धर्मार्थप्रति पादिनी सुकविता सालंकृतिः संगता
श्रद्धेयाश्रमसाधन प्रणयिनी प्राणाधिका वर्धताम्।।२९।।

वाचस्पत्य गणाभिवन्दिततमा माया न कापि प्रभा?
राधापादपदारविन्दमधुपैः संलक्षितावीक्षिता?
कालातीत कवीश्वरप्रखरथीः नीता न गीता प्रिया?
यैरद्यापि नवाभिधान रचिता न प्रार्थिता तेऽबुधाः ।।३०।।

यद्यप्येवमभीष्ट काव्यगरिमा छन्दश्शिश्रतो नार्थतः
पूर्णाऽपूर्ण पथप्रभावविहितः काव्यात्मना कष्टतः
ना भाषि प्रतिभान्वितैः कविवरैः सारार्थ आशान्वितैः
मन्ये सत्यमहो तथापि सहजः साधारणीकृतपथः ।।३१।।

नक्षत्रेश्वरचन्द्रमौलिमहिमा भागीरथी संगतः?
श्रीकृष्ण प्रणयेन गोपि गरिमा नन्दादिवंशाश्रितः?
राधारासरसीवरार्थ वसुधा किं वा स्वयं मण्डिता?
सर्वं विज्ञ कवीश्वरार्पित यशः संसेव्यता मृष्यताम् ।।३२।।

सारासार समीक्षणं प्रतियुगं नाद्रियते वास्तवं?
ज्ञानं कर्म तथा च साधु समिति र्ना सेव्यते संयतैः?
स्वस्योद्गारमयी कलाप्रवणता सिद्धाधिकारा न किं?
वैमृश्यं विबुधै र्मुधा नियमतः तथ्यंन जानीमहे ।।३३।।

विज्ञाः काव्य कथावधान मतयो लोकार्पिता दृष्टयः
सद्यस्संयमितानुबन्ध घटनां कर्तुं प्रवृत्ता न किम्?
व्यामोहप्रतिकारकारण दृशा प्रारिप्सितार्थे रताः
दृष्टालब्धवराः सुभाषितपदाः सन्तु प्रणम्याबुधाः ।।३४।।

साहित्योदधि रत्न राजितकराः के सन्ति कृष्णार्पिताः?
भक्तिप्राणपणावधावधानमनसा नित्या न वा भासिताः
भावा भाग्य विधेर्विचारवयसां जन्मान्त लीलाधराः
भव्या भारतभूमि भूषण मिव प्राधन्यतः प्रस्तुताः ।।३५।।

विद्यादान दयादशाकलिमलप्राध्वंसने प्राहिता
कारुण्येन यदागुरोः सुविदिता शिष्यप्रबोधेध्रुवम्
प्रारब्ध प्रतिवाद वारणपरा रासायनीवादृता
सभ्यास्तेपि तदा तपोभिरभितो लब्धादरा मन्त्रिताः ।।३६ ।।
हृद्याकाव्य कला सतां सहजतः पद्यानुगद्यात्मिका
मुग्धानामपि मोहिनीव सरसा भाषाभिव्यंग्याप्रिया
राधामाधवमन्दिरावधिवरा दृश्याश्रुता वावृता
स्वान्तश्शान्तिकरी सदाविजयतां कापि सुधावर्षिणी ।।३७ ।।
दृष्टादृष्ट फल प्रदान निहिता नारायणीवादृता
भक्तानां भुविभाग्य भावित पदे श्रद्धास्पदे शाश्वते
साक्षात् प्रेमगवी विलास रचना सायुज्य मुक्तिप्रदा
केषान्नास्ति मनोऽभिलाषदयिता देवांगनेवार्चिता ।।३८ ।।
मुर्तिश्शब्द मयीवमानसतटे संपूजिता कल्पिता
काव्यात्मानमिवात्र पूर्ण कलया बाभ्राजमानामुदा
हर्षामर्षनिदान दीनवशगा गंगा तरंगायिता
धाराधर्म धुरीव वा विलसतां यद यद्धि कामानुगा ।।३९ ।।
सद्यस्संकट शोषिणीवपरितः पापात्मनां मंगला
काव्यालाप पवित्र भावमिलिता देवस्तुतिस्सर्वदा
ध्येया गेयविधा न कापि कविभिः सत्कर्मणांज्ञापिका
पुण्यापुण्य विवेक बोधन करी सम्मान्यते पूर्णतः ।।४० ।।
यत्रोदारकृतिः कथा मयमता मन्त्रार्थ भाषा यथा
भावोद्यान लतापथप्रवरधीः धर्मायुषां कर्मणा
सिद्धार्थ प्रणिधानदर्पण मिव प्रासंगिकी कल्पना
तत्रोद्धार परायणाविजयतां सर्वाथदा माधुरी ।।४१ ।।

दृष्टिस्सृष्टि करी कथावनिवरा मानाभिमानावती
पुष्टिः पुण्य परावराधरधृता श्रीशारदासाक्षिणी
शुद्धान्तः करणे पदाभिलषिते जीवात्मनि प्रार्थिता(प्रापिता)
यस्यानन्दमहोत्सव प्रणयिनी तस्यैव धन्या जनिः।।४२।।
शास्त्रानन्तकथा प्रवाह महिमा नानाविधो वर्णितः
सत्त्वोद्रेक रसप्रसंग गदितो भावो ध्वनि र्धामतः
नीरक्षीर विवेक कारणकृतिंप्रामाणिकीं वाश्रितः
विद्वन्मासनसहंस वंश विहितः किन्नास्ति मुक्तिप्रदः?।।४३।।
मायावादइव प्रबोधसरसः सामान्यतः साधनं
संसारार्ति निवारणाय विहितं श्री शंकरेणस्वयम्
यस्याद्यास्तिसमग्र भारतभूवि सत्यं विदेशेस्वपि
प्राधान्येनविमर्शनं प्रतिपदं सोऽद्यास्तु प्रासंगिकः।।४४।।
योगारूढयतीश्वर प्रणिहितं तत्त्वं परं प्रार्थितं
काव्यात्मानमिवात्र शुद्धवचसा संबोधितं नार्थितम्?
यद्येवं प्रतिवादवादि विदितं तत्तर्हिमायावृतं
को जानाति परात्परं श्रुतिमतं संज्ञाप्यतां युक्तितः।।४५।।
सारल्येन कवीश्वर प्रवचनैः काव्यादिभि र्भावितं
सत्यं ब्रह्मपदं प्रपञ्च विरतैर्मोहान्धकारापहम्
भुक्तिर्मुक्ति महोत्सवे नियमतः संसाधिनी दर्शिता
शास्त्रेष्वन्यतमा सदा विलसतां यावद्धि धात्राहिता।।४६।।
धीरा धर्मपथे प्रकाश किरणं सन्धारयन्तो ध्रुवं
दुःखं दीर्घममीष्ट मापक करं सम्मानयन्तस्स्वयम्
धैर्यं धर्मरथं नयाधिकरणं सौख्यप्रदं सर्वतः
ज्ञात्वा सिद्धसमाधि साधनपरं शान्ताः प्रसन्ना स्स्तुताः।।४७।।

ज्ञातारस्सुख सम्पदां सुमनसा सम्मानितास्सत्त्वरं
सर्वैर्विज्ञवरैः प्रभावनिपुणैराराधिता नित्यशः
सेवासन्धि समाधि धन्य धरणी धार्या ध्रुवं धार्मिकैः
सत्यं शान्ति करी तपोवन मही गार्हस्थ्यजीवाऽवनिः ।।४८।।
केवा काव्यकलाप्रिया न विदिताः वादापवादेरताः
प्राङ्नव्य प्रतिमान मानमतयो माया ध्वनि प्रांगणे
धावन्तः कविकल्प जल्प वचनाः जाज्वल्यमानाबुधाः
राधावल्लभपादपद्मशरणं प्राप्ता न वन्द्याःकथम्? ।।४६।।
दिष्ट्या प्रार्थितमाधव प्रणिहिता जीवा नु केपि प्रभुं
जानन्तोपि हितं सदाश्रुतिमतं नैवाश्रिता मोहिताः
यैश्चाद्यापि कुतर्क कर्कशपदैःसंव्याहृतो माधवः
गोपो गोपिगणैस्समाहितमनाः सर्वेश्वरः किं स्वयम् ।।५०।।
(तैर्वृतः)
हा कष्टं कलिकाल कल्पित कविः शास्त्रप्रथावर्जितः
धर्माचार पथ प्रयोग वहतां श्रेष्ठः प्रविष्टस्सुधीः
सर्वाधार सुशास्त्र मार्ग भजतां निन्दैवभाग्योदयं
मत्वा कीर्तिकथा मुखेन विहिता यैस्तेसदावन्दिताः ।।५१।।
हे नाथ प्रणिपातपावनकरं राधापते! माधव ।
राधावल्लभनाम धाम भजतां किं नास्ति कोपि प्रियः?
सद्यस्ते करुणामयी ननु दयादृष्टि र्न मायाहरा?
जानेनैव तवप्रभाव विविधं प्रज्ञावतंश प्रियम् ।।५२।।
सीताराम पदारविन्द मधुपो राधारमेशाश्रितः
ज्ञाताज्ञातसमस्त पाप पवनैरान्दोलितो मोहितः
कस्याद्यप्रतिपाद्य सर्वशरणं जायाज्जनो मन्दधीः
त्वामेव प्रणमाम्मि माधवविभो! पापी खलो वञ्चकः ।।५३।।

निन्द्यानन्तजनिः स्वकर्मवशगैर्लब्धानुबन्धाश्रितैः
भोगैश्वर्य विमुग्ध मानसततैरद्यापि नीता नवा
बुद्धिर्माधवभक्ति भावगहने शक्ता न भक्ता यदि
दृष्टिः कापि भवे त्त्वदीय महती त्वन्नाम माहात्म्यतः।।५४।।

रक्ष्या राष्ट्रहिताय मानववरा ये सन्ति सन्तः स्वयं
यानाश्रित्य समस्त मानव गणा धर्मद्रुमं श्रद्धया
प्रारूढाः सुखसम्पदां नियमतो बीजं सहर्षं मुदा
पात्रेभ्यः प्रतिपादितुं भवभय प्राध्वंसनायवृताः।।५५।।

धात्राा धर्मधुरीण धावन पथे प्रारब्ध बीजाङ्कुरः
लोके सर्व समीहितार्थ रचितो जन्मान्त लीलामयः
मायामुग्ध सचेतसामभिमतो मोक्षाय भोगाश्रयो
देहोदुःखसुखावधि प्रगुणतःप्रासंगिकस्सार्थकः।।५६।।

राधावल्लभमंत्र मंगलदिशा सम्भाव्यमाना जनिः
धर्मज्ञान सुकर्म पालन हिते देवैरहो प्रार्थिता
भोगासक्त सुरेश्वरोपि मनसा संसारसार ग्रही
तामेव प्रतिमाधरां विगणयन् सम्मानयन् वर्णितः।।५७।।

यात्रा सर्वजन प्रहर्ष नियता भाग्येन लब्धादरा
केषाञ्चित् प्रतिवाद भावितपथे निन्दा स्तुतिः कल्पिता
स्वर्गादि प्रदर्शिनीव विदिता धर्मार्थदा संस्तुता
या वा धर्म विरुद्धकलिता सा दुःखदा भासते।।५८।।

तस्मादद्य विचार्य पुण्य जनकं कर्मैव शान्ति प्रदं
सवैस्सर्व हिताय सादरमिह प्रावर्तनीयं शुभम्
मांगल्य प्रतिमान मूर्ति मानव नव प्रारब्ध बीजद्रुमो
हृद्यःकिन्नहहि रक्ष्यतां नियतिदो धर्मार्थ मोक्षप्रदः।।५९।।

एवञ्चेदवधारणा मतिमतां दौर्लभ्यता हीयते
स्वान्तस्सौख्यनिधेः कला विरहिणां संगीयमानाऽथवा।
पूर्णाऽपूर्ण सुधासुविन्दु सहितस्संसार सारस्स्वरः
कण्ठस्थो भुवि भारतस्य सहजः संवर्धतां प्राणदः।।६०।।
नाऽहं रावणकुम्भकर्ण सदृशो विद्याबल प्रांगणे
दीर्घायु र्निज दीर्घ तापस पथे शम्भोस्समाराधने
लंका नागरिको न वा निपुणता मायाधरश्शक्तितः
शत्रोर्भावगतोपि रामचरणौ दृष्ट्वा न तृप्तः स्वयम्।।६१।।
धन्यौ रावणकुम्भकर्णविजितौ रामेण युद्धे ध्रुवं
मारीचस्सगणोपि मेघनादसहितः पाताललोकाश्रितः
सर्वोप्यत्र सदा विधर्म निरतो दृष्ट्वा च रामं प्रभुं
सवर्लोकं रणभूमि भासिततनुः र्जातोध्रुवं भाग्यतः।।६२।।
त्रेता धर्मयुगे हि लब्धतनवः सत्यादृता राक्षसाः
मायाचार कलावधान निपुणा धर्मद्विष स्संगताः
मोहाज्ञान युतास्त्रिलोक विजये वद्धप्रतिज्ञाभराः
ब्रह्मा विष्णु महेश संगतिकरा स्स्वार्थ प्रिया मोहतः।।६३।।
दृष्टास्सृष्टिपथे पराभवयुताः सम्पाद्य पापं महत्
कृष्णं द्वापरकाल कल्पितरिपुं सम्मानयन् ध्यानतः
ये चान्ते समरांगणे विनिहताः कृत्वाति वैरं सदा
तेऽप्यत्रासुर दानवा हरिकृपा मोक्षाधिकारे भृताः।।६४।।
नाऽहं कंस कठोर शात्रवविधाध्यानावधाने सदा
श्रीविष्णोः परमार्थ भाव वशगो जातो न भक्ति प्रियः
या कापि प्रभु भक्ति भावन कला कल्याण कीर्ते र्नवा
सा पि प्राणवियोग पावन करी दृष्टा न लब्धाऽधुना।।६५।।

धन्याश्शिशुपाल शाल्व सहिता रुक्मीगणा भूभृतः
ये वा शत्रु समूह पद्धतिपराः कृष्णस्य निन्दाश्रयाः
गोभूमि प्रतिपालने द्विजवरास्तेषां सदाधर्षणे
दृष्ट्यस्तेपि दयानुदान मुदिता मुक्तिं गतालक्षिताः ।।६६।।

(भाग्यतः)

ये वा गोप गणास्सदाहरिकृपालब्धास्पदा गोकुले
गोपीयूथवरा भयार्त हृदया संरक्षितास्संकटात् ।
कंसप्रेषित राक्षसैः प्रतिपदं सन्त्रासिताः सर्वथा
भीताः कृष्णमवेक्ष्य रक्षणकृते संप्रार्थयन्तोमुदाः ।।६७।।

जाताश्शान्ति पथ प्रहर्षमभितस्सन्निर्भया भक्तितः
श्री नन्दादि दयोदिता ब्रज भुवि येऽन्येपिकृष्णप्रियाः
राधामाधव माधुरी प्रणयतः प्रेम्णा महामोहतः
ते सन्तोषभृतस्सदाऽवनिगताः पूज्यामयावन्दिताः ।।६८।।

भासन्तः प्रतिवासरं मधुवने नीतानुगीतास्पदं
सर्वेषां नवनीततस्करकला लीलावसाना प्रिया
भक्ति प्राणपथ प्रदेशमहिमा मोहान्धकारापहा
सौलभ्योभूवि भाग्य भोग भजतां केषाञ्चिदेव ध्रुवम् ।।६९।।

तस्मादत्र सदार्त मानस तटे कारुण्य लीलाभृता
श्रीकृष्णेन सहार्जुनो कलिमल प्राध्वंसने प्रार्थितः
श्रीरामानुज पादपद्म युगले भक्ति प्रपत्ति प्रदः
योवा कोपि दयानुसन्धि सहितः संस्तूयते सादरम् ।।७०।।

नायं सत्य युगो न धर्म कलितस्त्रेताऽथवाद्वापरः
पूर्णः पाप परायणः कलियुगो दुःखानुबन्धीकृतः
धर्माधारविचारपावन पथस्त्यक्तो ऽधुनामानवैः
कल्याणं खलु कृष्णनाम जपतां दाने च पूर्णाक्रिया ।।७१।।

राधावल्लभलब्ध भक्तिनियताशक्ति स्सुधापावनी(संगमा)
संसाराय शुभाप्रसाद मधुरासन्तारणे शाश्वती
वेदार्थ प्रणताय बोधनकरी रासायनी मंगला
गंगाधार इव प्रशान्ति निवहा मुक्तिप्रदा जायताम्।।७२।।
संस्काराहित जीवनं यदिसतां पूर्णायुषां कल्पितं
राधामाधव मूर्तिमानसहृदयस्सौजन्यता संगतः
विद्यावेग परिक्षितस्समुदितो यो कोपि दीक्षाव्रती
सोऽप्यद्यैव निवेद्यते सविनयं भक्त्या प्रपत्या मया।।७३।।
विद्यादानरतस्य कापि कलुषा भारावती भारती
वृत्याधार सुसेवया श्रुतिमता लब्धास्तुतिर्मध्यमा
संसिद्धा बुधवन्दिते गुरुकुले या राजसीसत्क्रिया
कालेनाद्य दयावती हरिकृपा सम्प्रार्थ्यते सात्त्विकी ।।७४।।
नालंकरकला प्रसाद निलया माधुर्य मालायिता (गुणगुम्फिता)
काव्यालंकृति भाव भूषितः गुणाः किं सन्ति सर्वांशतः?
गोपीरीतिदशापराभव दिशां मल्लेखनी नग्नता
दृष्टाकाव्य कबन्ध कल्प घटिता नैसर्गिकी दुःखदा।।७५।।
हे राम! प्रणिधान पूरण विभो! हा कृष्णा! राधावर!
हे मातः जगदम्बिके!स्वकृपया सन्दर्शने मादृशः
पापात्मा नहि तारणीय पथिकः संकल्प्यते वा कथं ?
ब्रह्माण्डे ननु कास्ति! मातृ सदृशी ज्ञातादया तावकी।।७६।।
नानापर्वत पुञ्ज कुञ्ज निखिले पापोन्नते गह्वरे
पातो यस्य कुमार्ग धावनमिव प्राणान्तकं कारणम्
दृष्टसर्वयुगे समाहितधिया संसारसाराकुलं।
व्याप्तं दिक्षु समीरतो रुचिकरं किं तत्त्वमाविष्कृतम्।।७७।।६

तस्यैव प्रणिपात पंगुचरणे शक्तिस्तव ब्रातिका
लक्ष्मी र्लक्ष्य लव प्रभाव वशगा संप्रार्थ्यमाना न वा
राधाराधित कृष्ण पादयुगले या माधवी लालसा
पूर्णा पूर्ण कलायुषां नियमतः प्राप्या कथं सा काऽधुना।।७८।।

को जानाति विभोःप्रभाव विहितां शक्तिं परां वैष्णवीं
या नन्दांग यशोदयाप्रकटिता या विन्ध्य मालाश्रया
कालातीत कलापि कार्यमखिलं संसाधयन्ती ध्रुवं
भक्तानां कलिकाल कल्मषकषा सा मे सदा साक्षिणी ।।७९।।

भावाभास विभाविनी सुजनता श्रीवैष्णवी योगिनी
लक्ष्मी र्लक्ष्यविकाशिनी मुनिवृता मन्त्रार्थ पाथेयदा
ऐश्वर्य प्रति पादिनीव नियता धात्रा सदा वन्दिता
वाणी वेद भवापि मानवहृदि प्रार्थ्या कथं दृश्यताम्।।८०।।

नानारण्य पशु प्रकाण्ड महिषः संस्कार सारच्युतः
भोगासक्त विलुप्त बोध निखिलोलज्जा न संगीकृता
धर्माचारविधौ पराभव मुखो मुर्खो महादाम्भिकः
भीतस्त्राण करीं कलामय दयां मातस्तव प्रार्थये।।८१।।

लक्ष्मीस्त्वं वरदायिनीव जगति प्राधान्यतस्संस्तुता
सर्वैर्देगणैरुपासित पदा विष्णु प्रिया सिन्धुजा
माता सर्वजन प्रसादन करी कल्पादितस्साधिका
सर्वार्थस्य नवोदितानयनयो मे दर्शनं दर्शय ।।८२।।

यावत् पर्वत पापपुञ्जमखिलं नानाश्यते सत्त्वरं
यावञ्जंगम जन्मयोगमधुना व्यामोह पाशायितमम्
संशोध्याशु भवाब्धि तारणकरी कारुण्यता कापि वा
तावन्ते चरणारविन्द युगलं सन्दृश्यतां पावनम्।।८३।।

थावन्नीरसरोवरो नयनयो र्धारायितं लक्ष्यत:
यद्हालाहल भोग रोग विषयो में मानसे भासते
भक्तिज्ञान विवर्धनाय सहजा कारुण्य भाताब्धिजा
सम्भाव्यास्तु विषोपशान्ति निलया शुद्धा कृपा तावकी ।।८४।।
भक्तयुद्यानमहोत्सवे प्रतिदिनं ये भक्तिभावातुरा:
श्री विष्णोश्चरणारविन्द युगले श्रद्धानता सादरं
राधा वल्लभ एव कोपि मतिमानूसच्छास्त्र सेवादृत:
वृन्दारण्य विहार वन्दितपथे विठ्ठलप्रिय: पूजित:।।८५।।
सारासार विवेक काव्य निखिले लब्धादरोभासित:
आचार्य प्रथिते प्रबन्धविविधे सम्मानितो वर्धताम् ।
आचार्य प्रवरो महारथिवरो पुण्य प्रदेशेऽधुना
विद्यादान रतोबुधवरो रत्नाकरे सागरे
लब्ध्वाकौस्तुम रत्नमेव शुभदं मन्येकृती वार्थत:
राधावल्लभनामधाम फलितं यस्याधुनावर्ण्यते।।८६।।
सोऽयं संस्कृत रक्षणे कृतमना: प्रद्योतमानोरवि:
सर्वत्रप्रभाया विराजितकर: साहित्यसेवाभर:
काव्यश्रोत इवात्रपावनतट:सम्प्राप्य मान्योबुधै:
साक्षात्संस्कृत तीर्थ पुण्य पथिकोविद्याव्रती वर्धताम्।।८७।।
नानाशास्त्रकथावधान रुचिरं काव्यंकला कौतुकं
सत्यानन्द विभावने नवरसे यस्याखिलं नैष्ठिकं
कार्यं पुण्य निदानमेवसततं प्रावर्त्य मानं मुदा
शास्त्रोद्धाररतस्य पादयुगलं वन्दामहे नित्यश: ।।८८।।
काव्यं चम्पु सुपद्य गद्य विविधं विद्योदयं भास्करं
मोहाज्ञान तमो विपाटनपरं विद्यार्थि विद्या प्रदम्
शिक्षोदारपथप्रकाश विविधो यस्याधुना ध्वन्यते
सोऽयं काव्यकलाश्रयो विजयतां विद्वद्वरेण्यो ध्रुवम्।।८९।।

शास्त्रामोघ पथे प्रमेय रुचिरे सर्वार्थ साक्षी यथा
सेवाभावकृते सदाश्रुति वरे वाक्ये रहस्ये नवे
शोध व्याजकृतौ प्रमोद विशदे ज्ञानाश्रिते ब्रह्मणि
रम्ये रासरसे यतः प्रमुदितो धन्यस्समान्यो गुरूः ।।६०।।
प्राज्ञेष्वन्यतमो निबन्ध रचने शोधार्थिलब्धादरः
पूर्ण प्रेम पथावलम्बनकरो विद्यांगणे प्रांगणे
राधारासइवात्र हृद्यविदितो नारायणो नाऽपरः
ब्रह्मानन्दसहोदरस्सहृदयः कोपिप्रियो वन्द्यने ।।६१।।
साहित्ये प्रतिमान शोधसरणिर्विज्ञैर्नवाधैर्यतः
छन्दश्शास्त्रदिशाऽनुबन्धरहितासंलालितालक्षिता
काव्यालोडन नैकनीति नियता संवेद्य धारायिता
विद्वद् गोष्ठि गरिष्ठ भाव भणिता काव्यात्मनिप्रागदा ।।६२।।
नैकादृक्प्रथिता प्रभाव निहिता सम्पादिता साक्षिका
हिन्दी संस्कृत वाणि भासितवरा वैधानिकी भावना
भव्याभाव मणि प्रवाल विथिका काव्यात्मतत्त्वाश्रया
सद्यस्संस्कृति सार साधनकरी विद्याविधावर्धने ।।६३।।
यस्योदारकृतिरमोघ फलदा विद्यावतां शिक्षिका
छन्दोबद्ध विमुक्तवारिधितटा प्रासंगिका संस्कृतिः
लीलायास नवाङ्कुराकविकला सम्मानिता सर्वतः
सोऽयं काव्य कथोपदेश विबुधोहृद्योऽभिवन्द्यो ध्रुवम् ।।६४।।
शाब्दे काव्यनये च तर्क निपुणश्शास्त्रेष्वपि प्रीतिमान
जिज्ञासाप्रतिभोन्नतेः प्रणयिनां वादे प्रवादेसुधीः
शास्त्राचार विचार भूषणकर श्शास्त्रेण युक्तयापि वा
योऽद्यापि प्रथितः प्रभाव कलया विद्वज्जनेष्वादृतः
राधावल्लभ एव कोपि कलितोहृद्यो वरण्योबुधः ।।६५।।

तस्यैवं प्रतिमान पावन पथे नैका दृशः पूर्णतः
श्रद्धावद्ध नयोपहार युधतां पीयूष पाथेयकाः
गीताऽधीतनवामलार्थ सहिता राधेवमान्याश्शुभाः
वन्द्या विज्ञगणा समादरधिया राधान्वितो वल्लभः ।।६६।।

भक्तिर्नास्ति रमेश पादयुगले भक्तेस्वपि प्रर्थिता
शास्त्रे सर्व विधे प्रबुद्ध निवहे सामिक्षिके मौलिके
काव्ये कल्पित रत्नसारमहिते सम्बर्धिते प्रस्तुते
येनाद्यापि विभावये प्रभुयशसंसारसिन्धोत्सवम् ।।६७।।

भजत रे मनुजाः कमलावरम्

विधिहरार्चितपादयुगं युगे
सुरमुनीशगणैरपि वन्दितम्
प्रकृतिपुञ्ज निकुञ्ज विहारिणं
जपत रे मनुजाः कमलावरम् ।।१।।
कमलनेत्र कलान्वित विग्रहं
भुवनधामसुरेश्वरमानदम्
सहज शान्ति निकेतन कामदं
भजत रे मनुजाः कमलवरम् ।।२।।
स्वजन सौख्य समादरसागरं
बिबुध बोधकरंश्रुति शारदम्
प्रणतपालवरं करुणाकरं
जपत रे मनुजाः कमलावरम् ।।३।।
नियति नाभिधरं ममता भरं
सजलमेघमिवाम्बुसुतर्षणम्
नयनवारिधरं दयया ऽनिशं
यजत हे मनुजाः कमलवारम् ।।४।।
मुनिमनोहरदेहमिवाम्बुदं
निखिलजन्मजरान्तकरं वरम्
तरुणतापहरं भुविकर्मजं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।५।।
कठिनकालकरालभयातुरं
प्रतिजनं परिपाति सदा हि यः
तमधुना न कथं सुखदास्पदं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।६।।

मधुरमूर्तिमनोहरमन्दिरं
लसितवेश कलेवरसुन्दरम्
व्रजभुविप्रयणतार्तिहरं परं
जपत रे मनुजाः कमलावरम् ।।७।।

द्रुपदराजसुतापटवर्धकं
कुरुवराधिप पुत्रविकर्षितम्
प्रणतपालदयार्द्र विलोचनं
जपत रे मनुजाः कमलावरम् ।।८।।

पवनपुत्र पवित्र करार्चितं
ललितपादयुगं भवतारकम्
पतित पावनरामवरस्य वै
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।९।।

परम धाम दयामय दर्शनं
सविधि कर्म फलावधि हर्षणम्
नियत संयम शंसितमानसं
यजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।१०।।

पतितजीवगणोद्धरकारणं
नियत मोह घटाभयवारणम्
सपदि संकटमेघविदारणं
जपत रे मनुजाः कमलावरम् ।।११।।

मलिनदेहदशाहरवैद्यकं
जनक राज्य सुपूज्य सुतावरम्
नरहरिं रघुनायकमाश्रयं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।१२।।

दशरथेन कृताध्वरभासितं
भरत पूज्य तपोनिधिपादुकम्
अवध भूमि सुपूजितसादरं
यजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।१३।।
निगमराशि रसं तपसार्जितं
सविधि योगगतिं गगनायितम्
प्रबलमोहघटान्तकरं वरं
जपत रे मनुजाः कमलावरम् ।।१४।।
स्वजन संकटसिन्धुसुनाविकं
प्रबलमोहमहामकराग्रहै-
र्ग्रसित दासजनस्य सुतारकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।१६।।
भुवनवीथिनितान्तमनाश्रयं
भ्रमितबुद्धिविलासकलादहम्
निखिल लोक विशोकमिवस्वतः
नयतु नाथ! निजाश्रयधामकम् ।।१७।।
यदपि नाथ तवेह दयालुता
विहित कर्म फलामल कल्पना
सहज सन्तशिरोमणि वन्दिता
तदपि भाग्यवतामिह भाव्यते।
(तदपि शान्तिकरीव विभाव्यते) ।।१८।।
सहजनाथत्वमेव जगद्गुरु-
र्निगमतत्व विभावनि मण्डपे
इति मुदा सततं हृदि धारणं
भवति यस्य सदा स हि भाग्यवान् ।।१९।।

कुपितकालभयग्रहवारणं
कुपथगामिजनाऽवनभावनम्
कुमतिनाशकरं सुमतिप्रदं
भजतरे मनुजाः कमलावरम्।।२०।।

जगति जन्म निमित्त विनाशकं
नियति नीति जनाऽभय शासकम्
सविधि भक्ति विबोधविधायकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।२१।।

नियति दुःख दवानल शामकं
द्रुपदराज सुताऽभयदायकम्
विपदि भोज्य मनीश्वर तोषक-
मभयदानकरं भगिनीहितम्।
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।२२।।

निविडमोहतमोहरनायकं
सविधि सन्त मनोरथदायकम्
पतितपावन नाम रघूत्तमं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।२३।।

जननि कुक्षिगताऽभयदायकं
सपदि चक्र सुदर्शनरक्षकम्
विपदि पाण्डुवधुप्रणपूरकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।२४।।

जननि कुक्षिगताऽमरतायुतं
निखिल जन्तु दयाञ्चित विग्रहम्
प्रणय पूर्णपयोधरमातृकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।२५।।

करुणकण्ठरवोद्धतशब्दगं
गरुडवाहनधावन सत्वरम्
विपदमोघघटाघननाशकं
सहजकष्टविनाशनतत्परम् ।।२६।।

भ्रमर पुञ्ज निकुञ्ज निषेवितं
कमल कुञ्ज मनोहरताश्रयम्
मदनमोहनशावन माधवं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।२७।।

विपदिगेहलत्रसुदादिभि-
र्विरतभावभवाब्धि रक्षकम्
सपदि सन्तगुरूत्तम शिक्षया
जपत रे मनुजाः कमलावरम् ।।२८।।

यदपि भक्तजनेष्वधिकं मनो
विधिहरार्चितपादपपंकजम्
तदपि तस्य कृपावधिसंगता
जपत रे मनुजाः कमलावरम् ।।२९।।

शरणमागतमीक्ष्यदयातुरं
प्रणतपालनधर्मदयाकुलम्
सकलपापघटाघननाशकं
जपत रे मनुजाः कमलावरम् ।।३०।।

धृतमनोहरपावनविग्रहं
कृतसदाऽघ विभावन निग्रहम्
वरदभक्तिकरं समनुग्रहं
जपत रे मनुजाः कमलावरम् ।।३१।।

श्रुतिरवादृतपूर्णपयोधरं
कृषिसुभूमिविधामृतवर्षणम्
विविधभोग्यवसूत्तमदायकं
भजत रे मनुजाः सुखदायकम्।।३२।।

परमपुण्यघनं प्रभुतावरं
हृदय मन्दिरधाम विराजितम्
असुर कोटि गणैरपराजितं
जपत रे मनुजाः सुरपूजितम्।।३३।।

यदपि जन्म ममेह नृयोनिजं
निखिल कर्महितं श्रुतिमोदितम्
तदपि मोहमहाभयदुःखितं
शरणगं ननु मामभिरक्षय।।३४।।

सकृमिकीटपतंगकलेवरैः
पतनकारणमत्र विमर्शितम्
स हि नृदेहमिहात्र सुकर्मणा
हरिगृहं शुभगं भुविकामये।।३५।।

ननु वृथा मम जन्म जरान्तकं
भवति कर्म यदि प्रभुवर्जितम्
प्रतिपदं मद मोहतृषार्जितं
कथय नाथ! तवापि न किं दया?।।३६।।

नयननीरनिरन्तरमन्ततो
विपदमोघमहाभयबन्धने
स्रवति नाथदयार्द्रकृपादृशः
स्वजनदुःखभवाम्बुधिमज्जताम्।।३७।।

कथय नाथ! तवानन मायया
जनिभृतामथवा प्रतिजल्पनम्?
हरिवशा जनजीवनयात्रिणो
जनवशो हरिपादपमाश्रितः।
(जनवशो हरिरेव दयादृशा)।।३८।।

प्रणतपालनमेव कृपाधरं
युगयुगान्तरमेव जनाश्रितम्
सकल शोकनशावन संस्तुतं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।३९।।

स खलु जन्मकृतार्थ इव प्रजा-
जनहितः परमार्थकृतव्रतः
मनसि वाचि सदा शुभ कल्पना
भवति यस्य स मान्यवरस्स्वयम्।।४०।।

वियति चान्द्रमसीव विभा दिवा
नियति लक्ष्यकृतीव कलाधरः
विविधकीर्तिधरः कलितोपि यैः
त इह शाश्वतशान्तिपथाश्रयाः।।४१।।

स्वजनधामगतो हरिरहंसा
प्रभुमताश्रयणं भुवि जन्मनाम्
किमिवभासितमेतदहोऽनिशं
भवति साक्षिमतमवधारणम्।।४२।।

कलिकलाऽऽकलितोऽमलदहेजः
प्रतिपदं पतितपावनकर्मणा
द्विजगणोपि दयावसुता युतो
जयति कृष्ण इवात्र महेश्वरः।।४३।।

बलय बन्धनमेव सुरक्षणं
प्रणय मन्दिरमत्र न भाग्यतः
मधुरमञ्जुलमन्त्रमनोहरं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।४४।।

व्रतकरं समताकरमन्दिरं
हितकरं ममताभरभारतम्
श्रुतिगतं श्रुतिसाररसान्वितं
रसरसं रसनायितमाश्रये।।४५।।

विधिमतं प्रभुताऽमलमानसं
रुचिकरं प्रणताऽभयदायकम्
क्षमितपापमहाशयनाशकं
जपत रे मनुजाः कमलावरम्।।४६।।

द्रवितमूर्तिधरार्पितधर्मकं
ग्रसित दोष समूह निवारकम्
जगति जन्मभृतामघशोषकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।४७।।

सहज शब्दमयी प्रतिमा नवा
श्रुतिसुधन्यतमाऽमरमन्दिरा
विबुधबोधकरीव कलाप्लुता
द्रुतमहोजयति प्रभुभारती।।४८।।

निखिल लोकगुरोः प्रणधारिणी
सुरगवी करुणामय मोहिनी
परम तन्त्रविधा भुवि यस्य वै
भजत तं परमं कमलावरम्।।४९।।

मलिनदेहदरीपथपावनं
कुटिलभावहरं भवभावनम्
प्रबलमोहमहानलशामकं
प्रणतजन्मभृतामहमाश्रये ।।५०।।

जगति जन्महितावह भासकं
निगमगम्यगतिप्रतिपादकम्
परमयोगियतीश्वरसंस्तुतं
भजत रे मनुजा कमलावरम् ।।५१।।

यदपि मानसमन्दिरमाश्रयं
दधति सर्वजना अपि पावनम्
परमबोधविभेदनदर्शना-
स्तदपियान्तु तवामलधामकम् ।।५२।।

इति सदा तव नाम दयालुता
श्वपचयोनिगतैरपि मर्शिता
विविधपापपथाऽऽकुलजन्तुभि-
र्भवतुलभ्यकृपादरदर्शिता ।।५३।।

कमलकुञ्जमनोहरताध्रुवं
विवशकारि मनोभवमोहिनी
मधुरमुग्धदृशाऽमलभासिता
तव दया जडताहरणीयते ।।५४।।

यदि जडे भवतो विहिता दया
पशुगणे श्वपचे कृमिकेष्वपि
कुपथगं सुपथं नयतीह या
ममकृते भविता नहि सा प्रभो! ।।५५।।

यदि दया भवतो भवति ध्रुवं
पतितमार्गमितो मम बन्धकम्
विविध योनिगतस्य विमोच्यतां
तदिह भाग्यवती शुभकारिणी।।५६।।

गजपतेर्मकराधिपभीतितः
सरसि दुःखयुतस्य विमोचक-
मुभयशापशुभोदयकारणं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।५७।।

ललित कान्तिकलामय दैवतं
विबुधवन्द्य महामुनिवन्दितम्
कमलनेत्रविभाऽवनिमञ्जुलं
सदयबन्धु दयाभरणं भजे।।५८।।

सरसमञ्जुलभावभराऽऽकुलं
चरणपंकजधूलिधरार्पितम्
परमपर्वपरायणयाजनं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।५९।।

भुवनभासितदिव्य दयेव किं?
तव कृपावलिलम्बितमन्दिरा
धरणिधर्ममयीव कलावतो
जगति सिन्धुसुता वरदायिनी।।६०।।

प्रलय मेघघटाऽध्वनिगर्जनं
निखिल दैत्यकुलाञ्चलतर्जनम्
सकल दोषमहावन गर्जनं
जपत रे मनुजा हरिमाश्रयम्।।६१।।

भुवनभोगभवाटविनन्दनं
सजलमेघमिवामलवर्षणम्
प्रणतपालदयावनिचन्दनं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।६२।।
धवलधामधुरीणधराग्रहं
निशिचरैरवताडितमानवान्
सपदिरक्षितुमेव नराकृतिं
सुधृतवन्तमिह प्रवरं भजे।।६३।।
परमधर्म सुकर्मसु पावनं
जपतपोवरपुण्य पथेष्वपि
प्रथमवेद्यहरिं ममताहरं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।६४।।
मुनिवरार्चित पादयुगं शुभं
सुरहितायकृत भुविपौरूषम्
स्वजनहेतु नराकृति दर्शनं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।६५।।
भुजवलार्जित गौरव गौरवं
मतिमतामपि मन्त्रितमन्त्रजम्
परमतीर्थतपोमयविग्रहं
जपत रे मनुजाः कमलावरम्।।६६।।
चरण पंकजपूत जगत्त्रयं
शपित गौतमपत्नि सुधारकम्
ध्रुवशिशोरपि बुद्धि विकाशकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।६७।।

परमपूज्यपदं जननायकं
त्रिविध दुःखहरं सुखदायम्
नरक भेदन भक्ति भवार्थकं
चरणसेवनमेव सदाव्रतम्।
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।६८।।

कलशकुण्डसरोवरसिन्धचगं
विविधकर्मविथासु समर्चितम्
सकलशास्त्रदिशाऽवनि शाश्वतं
गुरुकुले विनयानतमस्तकम्।।६९।।

व्रजभुविप्रणतार्तिहरं विभुं
तमसुराधिपकंसगणान्तकम्
निखिल गोपवधूदयमंगलं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।७०।।

श्रुतिहिताय सदाचरणं वरं
विविध दर्शन तत्त्वपरं नवम्
निमिष मंगलकारिदयावधिं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।७१।।

नयनवारिसुधामयवर्षणं
सुभगवेषमनाश्रितहर्षणम्
सकलदोषनिवारणभूषणं
परमपुण्यपथाश्रित सादरम्।
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।७२।।

द्रुपदगेह धनञ्जयधीधनं
सबलभूपति गर्व सदाहरम्
परमचापशरासनतोलने
विजयमाल सुकण्ठदयार्जुनम्।।७३।।भजत रे०।।

विगत राज्य पथच्युत कानने
विपपि भोग्यवरे समयेऽध्वरे
सदय पाण्डुसुतोदय साधनं
नियति धैर्य करं प्रभु माधवम्।।७४।।भजत रे०।।
निहत पार्थसुते समरांगणे
कुरु महारथि सप्त सुयोधनैः
त्रसित पाण्डुसुताऽभयदायकं
द्रवित कृष्णकलाऽध्वनि धावकम्।।७५।।भजत रे०।।
परमवंश परीक्षित कुक्षिगं
सदय चक्रसुदर्शनधारिणम्।
सपदि रक्षितुमेव दयाभरं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।७६।।
विशद कौरवसंगरसागरे
कुटिलनीतिमतां प्रणदारुणे
त्रिविधतापघटा भयनाशकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।७७।।
जगति सर्वजनस्य हिताहितं
नियत भोगगतेरवभासकम्
फलति धर्मकृतामितिबीजकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।७८।।
जपति नश्वरमीक्ष्य कलेवरं
नरहरिं करुणाकरमाधवम्
विबुध मान्यवरोऽमरताकृते
तमिहभावय मानसमन्दिरे।।७९।।

अवधधाममुनीश्वरवन्दितं
दशरथेन कृताध्वर सत् क्रियम्।
हरिपदाश्रितभूमितलं ध्रुवं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।८०।।

परमपावनमन्दिरमाश्रितं
यजनयाजनतो वरदाश्रयम्
स्वजन भावविभावति सत्त्वरं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।८१।।

जगति संकटसागरमध्यतः
सपदितीरमनाथजनाश्रयम्
गुरुवरार्चितपादसरोजगं
नयति यश्शरणं भुवि तं भजे।।८२।।

परम धर्म धूरीण मनोहरं
सुपथमिष्टमनन्य दयावरम्
शमित मोहमहाभयसंगरं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।८३।।

दलितदैत्यकुटुम्ब मनोबलं
त्रसितलोक विलोचनताञ्जनम्
सुरगुरोरपि पूजित सादरं
जपत रे मनुजाः कमलावरम्।।८४।।

जननिबोधितपावनकाननं
जनक सत्यवचो हृदिभावनम्
मुनिगणैरभिवन्दिततापसं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।८५।।

शतक योजन सिन्धु सुसेतुकं
सहजपर्वत खण्डविनिर्मितम्
भवति यस्य कृपालवलीलया
तमीह रे भजतां कमलावरम् ।।८६।।

त्रिदशरक्षणमेव महाव्रतं
सुरमुनीश्वरयोगि दयानिधिम्
दनुजवंशविनाशनविग्रहं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।८७।।

ललितदेहदयावनिशासकं
निखिल दिव्यगुणावलि भासकम्
अवधभूमि महाव्रजराजकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।८८।।

मगधराज पराभवकारणं
नयनगोचरमाशुकृपाधारम्
सहजभक्तिवृतं जनतारकं
नयनवारि धरायित वर्षणम् ।
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।८९।।

कपिलरूपधरं परतत्त्वकं
शुभद सांख्यमतायित देशिकम्
प्रकृतितत्त्वपरं परमार्थकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।९०।।

सहज मीनवपुर्भवनाविकं
कमठरूपधृतोहित मन्दरम्
मथितदुग्धसमुद्रकृतार्थकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।९१

हिरणकाश्यपदैत्यविमर्दकं
नरहरिं करुणायतलोचनम्
दनुजपुत्रविपत्तिविमोचकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।६२।।

परम सूकरदन्त महीभृतं
प्रबल दैत्यविनाशन रूपकम्
भृगुवरं यमदग्निमुनीश्वरं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।६३।।

विविधरूपमनोहरमन्ततो
धृतवतो भुविभारहरं सदा
परमधाम भृतोऽपि दयाप्लुतं
नयतु मानसमन्दिरमर्थतः ।।६४।।

दनुजदेव सुमंगलभावनं
विविधमोहनिवारणतोध्रुवम्
सहजमेव तयोरपि तोषकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।६५।।

यदिह सर्वजनावनकारणं
कुमति वारणहेतु तनुग्रहम्
सविधि धर्मसुकर्मफलप्रदं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।६६।।

परमवीरधनुर्धरमीडितं
सुरवरैरपि संगरपूजितम्
जनकनन्दिनि नाथ सुदैवतं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।६७।।

हरिगणैर्हरिमेव सुपूजितं
विपिनवासि मुनीश्वरवन्दितम्
हरितनोर्हरिराजनिषूदनं
हरिकृतं हरिराजविधायकम्।।९८।।
सुकृतसेतुसमुद्रसुतारणं
सबलरावणवंशविदारणम्
जनकपुत्रि सुमंगलदायकं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।९९।।
व्रजपतिं जनतापहरं वरं
श्रुतिनिधिं निगमान्तनिगूहितम्
नयनधाम निसेवित विग्रहं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।१००।।
परमपुण्यफलोदयकन्दरं
परमपण्डित पूज्य पदार्पणम्
परमकीर्तिकला कलितास्पदं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।१०१।।
इति महामणिमन्त्रशुभौषधं
प्रभुपदं शुभनाम् शुधामकम्
शुभसुखं शुभनेत्र सुजिह्वकं
शुभदपल्लवपाणिमहं भजे।।१०२।।
विपद आशु भयावहयन्त्रणा
भवति यस्य कृपाकलयाहृता
निखिलजन्मजरान्तविसर्जिता
तमिह नाथमिमं परमं भजे।।१०३।।

दयितमान्यवरं प्रणपालकं
पतितदासजनप्रतिभाप्रदम्
प्रलयमेघनिवारणमञ्जसा
प्रथितदेववरं हृदि भावये।।१०४।।
गलितपापगिरिर्दयया ध्रुवं
कलित कीर्तिवरो विदितोऽभवे
चरणपंकजयोगकृतीव यः
जगति यस्य कलावनि राजते।।१०५।।
तमिह पूर्ण कृपापरमार्थदं
सदयदेहधरं फलदायकम्
निखिलजन्तुविमोचन संकटात्
भजत रे मनुजास्तनुनायकम्।।१०६।।
निगमबोधविधा भुवनत्रये
फलति कल्पवती बुध मानसे
परमपुण्यमयी ममता प्रभोः
लसतिभक्तजनेष्वमलाकला।।१०७।।
कमलपुञ्जमनोहरमन्दिरं
भ्रमरभंगिकलामलसुन्दरम्
निखिलदेहमुदाननमण्डलं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।१०८।।
चरणपंकजधूलिधराङ्गणं
मधुर वेणुरवाञ्चित गोगणम्
मदनमोहपराभवभावनं
भजत रे मनुजाः कमलावरम्।।१०९।।

सुखद संयम सेतुमिवामजं
विपदनाथसनाथितधीघनम्
सुयश आशुविभासितविग्रहं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।११०।।

श्वपचजीवदयार्पितपञ्जरं
विविधरूपविभावितमाश्रयम्
नरकतारणतीव्रमनीषया
भजत रे मनुजा हरिमाधवम् ।।१११।।

सकलयोगियतीश्वरवन्दितं
सुरगणैरपिवन्दितसत्त्वरम्
निविडमोह विधूननपावनं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।११२।।

शरणमागतमद्यविचारतो
विहितपाप निवारणमन्ततः
भवति दृष्टिदया भुवि यस्य वै
तमधुना कमलावरमाश्रये ।।११३।।

द्रुतमङ्गेऽमलविग्रहधारिणं
झटिति जीवगणोदयाकारिणम्
सहजकष्टहरं सुखकारिणं
भजत रे मनुजाः कमलावरम् ।।११४।।

यदपि नाथ! न भक्तिकला मयि
भजन भावशुभोपि न कश्चन
कलियुगो मम धर्मनिवारक-
स्तदपि देववरो गतिरक्षकः ।।११५।।

गति रहो जगदेक नियामकः
पतिरपिप्रणतारणदेशिकः
नतिरपित्वयिनित्यमधीक्षके
यतिपतेरवलम्बनपादुका ।।११६।।

"श्री गोदाम्बा प्रपत्ति स्तोत्रम्"

गोदाम्बा श्रीहरिहृदिगृहा भूमिजा मार्ग शीर्षे
ध्यायंती कृष्ण पद कमलं चन्द्र पूर्णे सुतीर्थे
श्री श्री रामानुज वर हरिं गोपिका मण्डलस्था
भौमा भक्ता व्रजमुवि गता मादृशाः ताम्भजन्तु ।।1।।

इत्येवं या जगदभिमतं भावयन्ती सहर्षं
गाथां गोदा प्रतिपदमहो कृष्णाभक्त्या प्रपत्त्या
गीत्या नीत्या प्रभुपद रजो राधिकेवात्र मुग्धा
शुद्धा बुद्धा भवभयहरं बोधयन्ती कृतार्था।।2।।

लोके सद्धर्म निरतकला सर्वकर्माभिरामा
दुग्धाम्भोधौ विहित शयन प्रेमभावाधिमान्या
कर्तव्याः कर्म सुकृतयः सर्व भोगाद् विरक्ता
प्रातः सायं विधिवदखिलं न्यस्त भावा प्रणम्या ।।3।।

सर्वां सौन्दर्य तनु रचनां सर्वथातो विहाय
क्रूरोक्तिं संकटमथिभरां नैवकुर्यात् कथञ्चित्
भिक्षा धर्मार्थममल दिशा दीयतां याचकेभ्यः
सर्वं गीत्या कलिमहरं छन्दसा शक्ति गोदा।।4।।

वर्धित्वा लोकमखिलमहो जीवनानन्द हेतोः
राधाकृष्णौ व्रज मुदि गतौ लीलया प्रेम भाजौ
दुर्भिक्षन्नैव जगति यदा धर्म सौख्य प्रसादः
देशे सर्वत्र सहजदया गोदया प्रार्थ्यते वै ।।5।।

सौन्दर्यं वा सरसि कमलै मंत्स्य नीवार संघैः
निद्राङ् कुर्युभ्रमभर निवहाः पक्षिणो वन्य जीवाः
धन्याः वाला कलश विविधै वारिधारां गृहीत्वा
तुष्टास्सर्वा ददतु सुखदं गोदया गीतिकार्थम् ।।6।।

गोदाम्बा देवि तुलसि कला लालिता लोक माता

सामुद्रान्तः प्रणय महिम्ना गीयते श्रद्धया स्याः (प्ता)

विष्णोः प्रीत्या परम् गतिका शंखचक्राब्जपाणेः

स्नातुं गातुं ब्रतरतवरा कीर्त्यते भक्तवर्गैः ।।7।।

माया मोहः श्रुतिवरयुषां भक्ति भाजां भवाब्धौ

शान्तस्सौहार्द मयवचनै राधिकाऽऽ राधनाद्वा

कालिन्दी कूल ललित लतेवार्थतः पुण्यधामा

गोदाम्बा कीर्तिकलितकला वन्द्यते मार्ग शीर्षे ।।8।।

लीलालावण्यतनुविभवा मायिनं कृष्णकान्तं

प्रादुर्भूतं ब्रजभुविरतं राधयारास लीलम्

गोपीनां संघ सहजवरं प्रेमपूर्ण प्रकाशं

मातुर्देहे विमलवचसावात्सल्य भावं लभन्ताम्।।9।।

गोविन्दं गोकुलकुल भरं प्राप्य गोदापिधन्या

पुष्पाणां गन्ध परिमलतो भूषितम्प्रेम भाजम्

मायातीतं नरवरं विभुं गोपिकानन्द मूलं

गोदा सेवे नयन वशगं कृष्णदामोदरन्तम् ।।10।।

कूजन्ति प्रात इह सततं पक्षिणो मङ्गलाय

श्रद्धावन्तस्तपनतनया तीरमासाद्य सद्यः

गोपाभक्ता मुनिवर गणाः स्नातुकामाः प्रसन्नाः

प्राप्ता प्रातः कलिमलहरं देविगोदापि धन्या ।।11।।

कालिन्दीन्तां ब्रज जनहितां पावनीं कृष्णजायां

गीत्वा नत्वा निज सहचरीं यूथ युक्तावगाहा

नत्वा प्रीत्या विमल जलदं प्रार्थयन्ती प्रवाहं

भावाभासा जगदवनता वन्द्यते वैष्णवाग्रैः ।।12।।

लीलाकेलि प्रवर वयसा केकियूथा निमग्नाः

भारद्वाजा सुवचनरवं श्रावयन्तस्समन्तात्

निद्रान्त्यक्तुं श्रुति रव शुभं ज्ञापयन्तो मुनीन्द्राः

सर्वेगोदा सदयहृदया चाप संक्रान्तिमाप्ताः ।।13।।

श्रीरंगं रगमधिपमहो मन्त्रयन्ती प्रभाते
किं स्नात्वा पुङ्गलमलिगणैः प्रेम भक्त्यानिवेद्य
गाथा गीता करूण वचनै स्सर्वथा मंगलाय
प्रेम्णादेव्या नियत समये यज्ञ भाजो भवन्तु ।।14।।

प्राच्याकाशे सघन जलदाः शीत संक्रान्त धाराः
प्रातस्स्नाने परम सुहृदो वृष्टि दत्तावधानाः (वृष्टि पूतावकाशाः)
मालाकारा इव परिवृताः स्मान् (नः) सुधाविन्दुसाराः
येन क्लेश सततम्धुना प्राप्यलब्धार्थकामाः ।।15।।

भूत्वा भाग्ये जनन मरणं कल्पयित्वा च हित्वा
भुक्त्वा भोगं प्रबल बलयं पुण्य पापाधिकानाम्
शीते काले प्रभुपद युगे लब्धभक्तिप्र पत्तिः
श्रुत्वा हुत्वा निगम वचनं प्राप्य गोदाकृतार्था ।।16।।

बैकुण्ठे शुद्धे मणिमयके सर्वतोदीप्त धूमे
निद्राशय्याधिकृतशयने माधवं प्रार्थ्यमानम्
सख्यस्सर्वाः प्रणयवशगाः प्रीयमाणास्सहर्षं
नीता भाग्येन विदित कला गोदया वन्दितांघ्रिम् ।।17।।

मूकाः किं वा? वधिर इवते नैव शक्ताः प्रवक्तुं
निद्रां नीता ध्रुवमधिगताः श्रोतुमर्थाभिमानम्
मुग्धेकिं वा? मणिमयवरं यन्त्रमुद्घाटनाय
प्राप्तास्सख्यो हरिपद युगं नेतुमाप्तार्थकामाः ।।18।।

तृप्तास्सत्यः सततमवलाः प्रेमपायोधितीराः
जाता मुग्धाः नयन नमिताः वन्द्य नारायणे वै
यज्ञानुष्ठानमिह निखिलं प्रापणायप्रबुद्धाः
गोदादेव्यासह - सखिवराः पूर्णकामा जयन्ति ।।19।।

नाना रत्नं ललितवसना भूषणं सन्दधानाः
गोदाम्बादेवि परमपथे व र्तमाना नवोढ़ाः
गोप्यस्सख्यस्सुखदमहिमाऽऽमन्त्रिताकृष्णलीनाः

गीत्वा गाथां दशमदिवसे भाग्यवत्यो बभूवुः ।।20।।

वाला धेनुः स्वगणसहिता दूग्धदोहं प्रपूर्य

प्रीत्या शक्त्या रिपुगणवरं नाशितुं दिव्य घोषम्

गोदादेव्या दनुज निखिल ज्ञापने सङ्गमार्थं

हृष्टा पुष्टानियत वशगाक्षीर पक्वान्नदात्रीः ।।21।।

इष्टा रक्षावधि सुनियता लब्धयागादि दीक्षा

सर्वोपास्या व्रत नियमतो हार्दभावानुकूलाः

शीतं सोढ्वा सखिभिरघुना रंगनाथ प्रसादे

गोदा देवी सहज दयया वैष्णवं पातु नित्यम् ।।22।।

सर्वं सहेतुलसिमूलकृतावतारे

श्रीविष्णु चित्त तनया करूणाब्धिमूले

भक्त प्रपन्न गति दायिनि राधिकेव

स्वस्य प्रधानवर दायिनि! त्वां नतास्मः ।।23।।

गोपांगनेव यजनेव्रतिनी प्रसन्ना

गोविन्द पादकमले भ्रमरीव मुग्धा

मासे नु कार्मुकवरे धृत धर्म मूले।

गोदे त्वदीय चरणौ शरणंप्रपद्ये ।।24।।

नाना खगा मुखरिताः प्रभु पार्श्वयाताः

दुर्दान्त राक्षस गणान् विनिहन्तुकामाः।

गीत्वा सु कीर्तिमखिलां वसुदेव सूनोः

गोदे त्वदीय महिमान्वितमर्थयन्ति।।25।।

माङ्गल्यपूर्णफलके गुरूशुक्रयोगे

सूर्ये नु कार्मुक गते भुविपौषमासे

श्रीरंगधाम्नि विदितेऽपर दिव्यदेशे

गोदे त्वदीय कलया व्रतमस्तिपुण्यम्।।26।।

श्री वैष्णवा विविधयाग युताः प्रसन्नाः

आराधनाय रसिका प्रणताश्च विष्णोः

लक्ष्मी कटाक्षकृपया भवदीयतायाः

वात्सल्यभाव नियता भवती प्रमाणम् ।।26।।

शोकापनोदनपथे प्रथिताः प्रसन्नाः

गोदेत्वदीय चरणाश्रित भक्तलोकाः

सम्पूर्णतां निखिल यज्ञविधेः प्रधानां

सम्पादयन्त इव भाग्य भरा जयन्ति।।28।।

मातस्त्वमेव जननी मम जन्मभूमेः

भक्तार्तिहारिणि वरे! कलिकल्मषघ्नी

स्वर्गापवर्ग विषये नहि कामना में

गोदे त्वदीयचरणौ शरणं मदीयम् ।।29।।

कंसारिकृष्ण पदपंकज दर्शनाय

प्रेम्णादया स्वजन रक्षण बद्धदक्षे।

मासे पवित्र रवि चापगते प्रबन्धे

गीते त्वदीयविहिते मतिरस्तु शुद्धा।।30।।

नित्यं प्रपंच विमुखः सुमुखस्त्वदीयः

भक्त्या प्रपत्ति विधया कृसरान्न भोगे

गीत्वा त्वदीय विहितां प्रभु कृष्ण गाथां

कैंकर्य निष्ठपथिकस्सततं भवेयम्।।31।।

दासस्सखा सहजबन्धु पिता गुरूश्च

देवाधिदेव महिषी जननी त्वमेव

लक्ष्मीस्तथा जगति कापिकलाविधात्री

श्रीरंगनाथ दयिते। भवतु प्रसन्ना।।32।।

श्रीकृष्णपादकमले भ्रमरायमाणो

दासोजनोऽयमधुनापतितः प्रपंचे

त्राता न कोपि भगवन् कृपया विचार्य

प्राधान्यतोहि भवतीति वचो जगाद् ।।33।।

दिष्ट्याधिकारविनयीव कृपाभिभूतो, यायात् सदा हरिपदाब्ज रतोद्विरेफः

गोदेत्वदीय चरणाम्बुज गन्धपूतो

यावन्नभाति भगवानपि रक्षकः किम्? ।।34।।

नभोऽङ्गणे जलमयोऽन्न रसानुकूले

काले लता विटप पुष्पपरागलुब्धाः

भक्ता विमुग्ध गतयः कथमाशुलब्ध्वा

पादाश्रयं सुखद मार्ग गता भवेयुः ।।35।।

रामानुजस्सदलगोपगणैरूपेतो

गोदाश्रयस्सहज भाग्यवर प्रदायी

श्री रूक्मिणी नयन मंजुल मंजनम्वा

राधारमाधरसुधा प्रणयीत्वदीयः।।36।।

गोदाम्बिके! कमलनेत्र रसाल रक्ता

भूमावतीर्ण कलया ललितेव लीना

गोदेत्वमेव करूणामयि सार्वभौमा

भू देवि! मैथिलिवरे! जननीव सीता।।37।।

श्री देवि! किं? ब्रजभुविप्रणतासिराधा

या कापित्वं ब्रतधरासि विधातृ गोदा

तेंन त्वदीय शरणं वरणं मदीयम् ।।38।।

या देवता निखिल लोक हिताय सद्यः

धृत्वातनुं मनुज भावभरां विभूतिम्

कृष्णारविन्द चरणाश्रयमाभजन्ती

सैवाधुना भगवती भुवि मातृगोदा।।39।।

मातः त्वमेव ममता जनता जनौघे

श्रीवेंकटेश नगरे प्रहरीव पूज्याः

श्रीरंगनाथ दयिते! तनयास्त्वदीयाः

भुक्त्वा नु पुंगलमहो जगति प्रसिद्धा (दधतिप्रसादं)

स्तम्भे सुदीप भवने प्रणताः प्रसन्नाः

भक्ता भवे प्रतिपदं तवधाम याताः

बैकुण्ठनाथ नगरे सफलार्थकामाः
त्वामेव देवदयितां शरणं प्रयान्ति।।41।।
दिव्याति दिव्य नगरे हरिपाद मूले
भक्ति प्रभाव विदितो विहितस्त्वदीयः
श्रीविष्णु चित महिमा महिता प्रबन्धः
भक्त प्रियो विजयते तवगीत गम्यः ।।42।।
गाथा त्वदीय कृपया ग्रथिता सपर्या
शाब्दी कलालवलया ललिता प्रसादा
श्री वैष्णवाश्रमहिता प्रणत प्रपन्ने
भूयादमोघ वरदायि पवित्र भाषा ।।43।।
नाना पुराण निगमागम दर्शनाङ्का
वेदांगभावनियता कलिकालसिद्धा
पूजोपचारविधया विहिता प्रभाते
ब्राह्ममुहूर्त्त विदिते हरिदर्शनार्हा।।44।।
भूभाग्य देव मुनि मानस मन्त्र मूला
विद्याविभा परमभागवतानुकूला
गाथा गभीर मतिका प्रथिता प्रभूता
पापौधनाशनकरी फलिता त्वदीया ।।45।।
नारायणस्य नरकार्णवतारणस्य
ब्रह्माण्ड वेद्य परतत्व समाश्रयस्य
धाम प्रदीपकलया कलितुं प्रपन्नान्
गीतन्त्वदीयवचनं शरणं समेषाम् ।।46।।
श्रद्धावतां नयन गोचरमाशुवन्धो
नारायणो भवतु चेदखिल प्रबन्धे
मन्त्रार्थ रूपमधुना परमार्थ तत्वं
भक्ति प्रसाद रचनैस्तव देवि! मान्यम् ।।46।।
नारायणी भगवती प्रणय प्रभावा

देवाधिदेव महिषी कलिदोषनाशे
किं वा रमा सहज साधु जनस्य वन्द्या?
माता त्वमेव विदिता भवभाग्य गोदा ।।48।।
गोदा त्वदीय चरणामूबुजलीन दृष्ट्या
भक्ता भवाटविगता गलिताघमूला
गाथां सुदूर गगनाश्रयमादधानाः
पूता भजन्ति भवसिन्धु कृताशुपाराः ।।49।।
नैतादृशी प्रवणता कलिकाल काव्ये
पारायणेन निहिता प्रणतां प्रबन्धे
मासेन पूर्ण रचिता रूचिरा रहस्या
गीते त्वदीय रचिते द्रविणे यथार्था ।।50।।
गीर्वाणवाणि कलया द्रविणाम्नभाषा
गाथानु गद्य गदिता प्रथितापि पद्ये
भावानुभाव कलिता सरितस्सखीव
शीत प्रवाह लधिता भवदीयतार्था ।।51।।
वेदान्त वेद्य गरिमा महिमा निवेद्यः
प्राधन्यतस्सरस शान्तिरव प्रसादः
संगीयमान करूणाकर दीव्य मूर्तेः
धामाश्रयं दिशति ते हरि भक्ति गीतम् ।।52।।
नीलांचले वरदराज पुरीव मान्ये
कृष्णाङ्गिते सबलरामयुते सुभद्रे?
कि देवित्वं? परम भाग्यवती प्रधाना
लब्धावतारतरूणी हरिबल्लभासि? ।।53।।
राधासखी ब्रजभुविप्रवराप्रणीता
श्रीरंगनाथदयिता स्वजन प्रपन्नान्
त्रातुं त्रिताप गलितान् करूणावतंसा
मातृ स्वभाव भवती नहि तत्रवादः ।।54।।

रोशेश्वरीव रसिकान् निज भक्त यूथान्
गोपीव नारिनिखिलान् परिभावयन्ती
सत्यं सनातन जनान् परिपालयन्ती
मातः! त्वमेव विधिना भवमुक्ति हेतुः ।।55।।
श्रीयामुनार्य वचनै रचनैरूपेता
रामानुजार्य चरणाश्रित भक्ति भाजाम्
अर्चावतार कलया परमाश्रयात्वं
(नारायण) - नारायणी प्रणयने ब्रतपूर्ण कामा।।56।।
रक्षाधुना निखिल भक्तगणप्रपन्नान्
संसार सिन्धुपतितानपि पुण्यदृष्ट्या
लब्धादरा जगति जन्मभृतो यथास्युः
वात्सल्य भावदयया कलयातवात्र ।।57।।
गीतात्वदीय चरणाम्बुज भावनीता
भक्ति प्रपत्ति विभवा नवधा नु गीता
गीतेव सागर सुधा प्रभुतामुपेता
गाथा सुगायन कला कलिता विभाति।।58।।
धर्मार्थमोक्ष गतिका पथिका त्वदीया
सिद्धा सदावनि निगूढ़भरी प्रणम्या
माया पिशाचिनिहरा वरदायिनीवा
विद्या प्रवाह निहिता विजयी सदास्यात् ।।59।।
सद् युक्ति सूक्ति रचिता प्रतिमेव पूज्या
शब्दागमेव गुरुता प्रणयानुबन्धा
वेदान्त वेद्यभवभूतिरिवार्थ कल्पा
गाथा सदाविजयतां श्रुति सारसाध्या।।60।।
श्रीरंगधाम्नि विदिता ब्रजधामनीता
श्रीरंगदेशिक गुरोः कृपया प्रणीता
श्रीरंगनायक युताब्रतभावपूता

वृन्दावने तवकृपा स्वजनाः पुनीताः ।।61।।

किं माधवी मधुर वाणि रस प्रवाहा

श्रद्धावनद्ध यमुना तटनीरनीता

गोवर्धनाद्रि निलया ललिता सखीभिः

लीलामहोत्सववृता जयतीह धन्या।।62।।

नन्दादि गोकुल पुरीवृषभानु वन्द्या

राधारमाश्रयरथा नयनाभिरामा

देवर्षि नारद नता मुनिभिश्चमान्या

गोदान गोप विभवा भवतु प्रसन्ना।।63।।

पंचोपचार विधया प्रतिमन्दिरस्था।

दीव्य प्रबन्ध कलया कलिकालजन्तोः।।

पूज्यानुबन्ध भजतोः यमयातनातः

त्राणाय ते परम दर्शनमेव बीजम्।।64।।

[illegible]रवनि भोग भृतां सतां वै

वैराग्य भाव निखिलः सहसाप्ररूढ़ः

[illegible] क्वच कल्पतव प्रसादः

[illegible]यातु भोग विपुलं लभते मनुष्यः।।65।।

[illegible] तव दृशः करुणामयीसा

श्रीवैष्णवो[illegible] नियमेन जगत् प्रवाहे

जन्मान्त भोग पथिकः पतितस्सदैव

प्राप्येदहो विवशता न दयात्वदीया ?।।66।।

कल्याणकल्प कलिता फलितात्मशुद्धिः

भाग्येन वैष्णव गुरो र्निहितार्थ बुद्धिः

सेवाव्रत[illegible] जपशील मनोऽनुकुला

लीला लवेन भवती भवतु प्रत्यक्षा।।67।।

येनाल्पकाल कलया कलितोदयाय

प्रातः प्रबोधन पटुस्तव सुप्रभातम्

गीत्या स्वबान्धवयुतः प्रति मन्दिरस्थः
बैकुण्ठनाथ चरणाम्बुज सेवकस्स्यात् ।।68।।
धन्यानुबान्धवजना द्रविणागमाना
मर्थानुबन्ध पदपाठ परायणाय
प्रातस्सहर्षमखिलाचर्नबद्धदीक्षाः
लब्धादराविजयिनो भुविभाग्यवन्तः ।।69।।
निद्रापहार कृतिनो ब्रतिनः प्रबुद्धाः
शुद्धा मनोरथपथे प्रवराधिमान्याः
कैंकर्य निष्ठ मतयः प्रतिवासरन्ते
सेवावधान चरिता भुवि भासितास्स्युः ।।70।।
श्रीराधिकारमण भक्ति भराः प्रपन्नाः
निष्काम भाव पथिका रसिका सहर्षम्
सर्वोपकार निरता विरता निजेभ्यः
ते बान्धवा जगति ये हरि भक्ति भाजः ।।71।।
इत्येव पक्षममलं सुविचार्यमाणाः
भक्ताः पुनन्ति सदयाः सकलान् जनान् ये
धन्यास्त एव विदिता भुविजन्म भाजः
संसारसार रसिकाः प्रथिता जयन्ति ।।72।।
सर्वेश्वरोहि भगवान् निजशेष जीवान्
संरक्षणाय करूणामय वासुदेवः
अर्चावतार कलया प्रभुर्वेंकटेशः
श्रीवेकटाद्रि गिरिमाश्रयते प्रणम्यः ।।73।।
श्रीरंग हरिरूपमहाविभूतिः
श्रीरंगनाथधाम्नि सदयोरघुवन्द्यदेवः
दीव्योत्सवाय विदितः कलिदोष शान्त्यै
सद्यो मनोरथभरः प्रथितो जगत्याम् ।।74।।
कावेरिमध्यमहिमावधिपूर्ण कामः

श्रीगोदयाव्रतनिधिः करुणा समुद्रः
सम्पूजितः परिणयेन महेन्द्र वन्द्यः
सर्वार्थदो विजयते श्रुति वन्दनीयः ।।75।।

दीव्या हि देशाः प्रभुधाम नाम्ना
भक्तार्तिनाशाय हरेरभीष्टाः
साक्षाद्धरिर्दीव्यकलाभिभूतताः
देव्यास्त्वयाशु कलिताः सहजा प्रधानाः ।।76।।

नैकत्रदीव्या प्रतिमा प्रकीर्णा
स्वेच्छामयी पर्वत गहरेषु
सर्वायुधाब्रह्मविभूतिभव्या
ब्रह्माण्ड भाण्डेऽनुपमा विभाति।।77।।

नीलाद्रि नाथोपि जगद्धिताय,
प्रेम्णा वपुर्नीलममोघलीलः
कृत्वाघनाशाय जगज्जनानां
सन्दर्शयामास पवित्रदेहम् ।।78।।

हार्दमनोभाव दयानुभूतं,
नीलाम्बुदं रूपमवेक्ष्य भक्ताः
पादाश्रितास्ते भवसिन्धुपारं
प्राप्ताः प्रसन्ना न च तत्र वादः ।।79।।

नारायणस्याखिललोक धाम्नः
पारायणो भक्त गणैस्सहर्षः
साक्षादभीष्टः परमार्थ दृष्ट्या
दीव्यस्स्वरूपोभवतु प्रसन्नः।।80।।

भक्तार्तिनाशाय हरिस्सहर्षः
संसारसिन्धोस्तटमाश्रितानाम्
सन्तारणाय प्रणातांजनानां
भाग्योदयो नास्ति कृपा विरोधः।।81।।

कल्याणकोषोहरिपाद मूले
सर्वार्थपूर्त्यै प्रणय प्रसादात्
प्रकाश्यमानो नु पराग गन्धः
तृप्तोऽस्तु लोको भवभीतिमुक्तः ।।82।।

सत्यं धनुर्मास सुपर्व भाजां
श्रीवैष्णवानाम्ब्रतराज धाम्नाम्
सम्पूर्णकालोललितो नाराणां
ये सन्ति भक्ताः प्रणताः प्रसन्नाः ।।83।।

नित्योत्सवे मग्नसमग्र सभ्याः
भावाभिभूताः प्रभुपाद पूताः
गोष्ठी गरिष्ठास्सुहृदो वरिष्ठाः
सौभाग्यतो नन्द कुमार दासाः ।।84।।

गोदापि राधेव हरेः प्रसादे
सर्वस्वमेव प्रणयेन मुग्धा
सम्पाद्य भक्त्या निज जन्म साध्यं
जाताकृतार्था भगवांछिताय ।।85।।

नीता निशा नाम जपन्त्यहो वै
राधापतेःरास गतेव साध्वी
वृन्दावने गोकुल गोपिसंघैः
गीत्वा प्रबन्धं च प्रभात काले ।।86।।

लीला विचित्रैव दयामयस्य
प्रासाद्यमानावधि पूर्णकामा
प्रदर्श्यमाना भुवनं पुनाना
श्री गोदयारब्ध प्रपन्नातायाः ।।87।।

श्रीरंगनाथाश्रय मानसायाः
दासीदशा दृष्ट फलप्रदायाः
वात्सल्य भावाश्रितपूर्णधाम्नां

श्रीवैष्णवानां जननी जनन्याः ।।88।।

को वा प्रभावं गदितुं समर्थो
वृन्दाटवी मूल कलाविभूतेः
लब्धास्पदायाः भुवि जन्मजायाः
(गोदाजन्याः) गोदास्वमातुः पदमाश्रयामः ।।89।।

श्रीवेंकटाद्रेर्हरिपूर्ण धाम्नो
नाम्नस्समर्चा विधि दर्शनार्था
श्रीविष्णु चित्त प्रभुता प्रदाने
संजायमाना दुहितेव जाता ।।90।।

गोदामहोदवि रमा सरवीव
प्राणाधिका विष्णु पदाब्जलीना
लीलावतीलोक ललाम भूता
वेदान्त विद्यामय भावपूता ।।91।।

श्रीवैष्णवाधार धराधरित्री
विद्यावतां भाग्यभरा भवित्री
गोदानु सावित्रि कलामयीव
प्रासंगिकी भक्त गणैरूपास्या ।।92।।

भूयादमोघा भुवि भाग्य माता
सन्तारणाय प्रणता सदैव
पापान्धकूपात् करुणावतंसा
मायाश्रितानामपि जन्म भाजाम् ।।93।।

नानाकुतर्काङ्कितमानसानां
ब्रह्मैवजीवो भुविलब्ध जन्मा
इत्येव सिद्धान्त निवारणाय
प्राधान्य धारा प्रणायीव जाता ।।94।।

माता विभूनां भुविजन्मभाजां
शेषीवशेषान् विधिनाप्रबोध्य

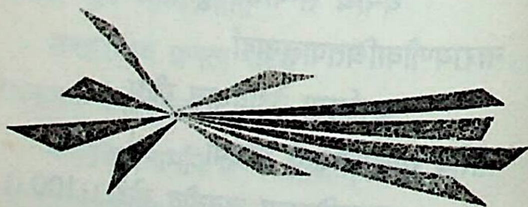
सत्तर्क सारान् सुविचार्य माणा
भक्तैरनन्यैस्सुवन्दितास्यात्।।95।।
कृष्णायते ते बहुभावलीला
राधायते सापि समाधिशीला
भक्ति स्त्वदीया हरिपादपद्मे
संशिक्षणाय प्रथिता जनानाम्।।96।।
श्रीराम कृष्णार्पित पूर्ण सेवा
निष्काम कैंकर्य कलात्वदीया
लोकोदयाय श्रुति सार्वभौमा
श्रीवैष्णवानां सदया सुलब्धा।।97।।
जन्मान्तलीलामय हेतु हृद्या
वेदान्तविद्यामृतपूर्णकुम्भा
सन्धार्यमाणा भुवि भाग्यलब्धा
केषांचि देव प्रतिभाधिगम्या।।98।।
श्रीपद्म् नाभस्य दयानुबन्धा
सम्प्रार्थनातस्तव देवि मुग्धा
भक्तिर्भवित्री भजनाश्रितानां
धर्मार्थ सम्पादन मूलमान्या।।99।।
नारायणीवाश्रितपालनार्हा
धर्माश्रया वेदविधान गीता
सीतेव वात्सल्यवती प्रभावा
भावाभिभूता जननीव गोदा।।100।।
श्रद्धास्वधामाश्रय मानसानां
प्रेम्णा धनुर्मास घृतव्रतानाम्
भाग्योदयेन प्रभुपाद भाजां
त्वामेव मातः! सततं भजामः।।101।।
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे

हे नाथ नारायण वासुदेव
भक्ता नु कम्पिन्! भगवन् दयालो
गोदाश्रयाणां भवतु प्रसन्नः।।102।।

वेद्यं विभो करूणयात्म हितं सुलक्ष्यं
पादारविन्द युगलं पतितावलम्बम्
जिज्ञासितं जगति जन्म जनानुकम्प्यं
सन्दर्शयन् शुभदमंगलमातनोतु।।103।।

कारूण्य सागर विभो! भवसागरेऽस्मिन्
प्रारब्ध भोग पतितान् बहुदुःख भाजः
हस्तावलम्ब कलया कलि काल बद्धान्
त्रातुं कृपा तव हरे! प्रभुतामुपैतु।।104।।

नायञ्जनः कथमपि प्रगतिं विचार्य
प्राधान्यतः प्रभुपदाब्जरतेः प्रवाहे
स्वात्मानमेव विफलंननु वाञ्चयित्वा
जानाति भक्त भयनाश करं भवन्तम्।।105।।



श्रीरामकृष्णरूपश्रीरंगनाथ श्रीवेंकटेशार्चावतार स्तुतिः

कलियुग भयनाशं विष्णु देवं प्रधानं प्रकटिततनुदीव्यं सर्वदेवं प्रपद्ये।।1।।
प्रणत जनमनो मोहमालिन्यहारं नयनपथगतं तं पूर्ण भाग्यमुदारम्।।
सुललित नव भारं प्राणिनां पुण्यसारं भजतु निखिललोकोरामकृष्णावतारम्।।2।।
प्रणयपटुमहेशं दीव्य सौन्दर्य वेशं प्रथमवरददेशं सर्वसामर्थ्य लेशम्
कर युगल विशेषं प्राणिनां पुण्यदेशं नयतुनयन देशंपुज्यदिव्याधिदेशम्।।3।।
कर कमल विचित्रं माननीयं सुचित्रं भवभयहर मित्रं प्रेमधार्यं पवित्रम्।।
जनजननि कलत्रं भासमानं चरित्रं तपनतरूण मित्रं भावये भक्त मित्रम्।। 4।।
स्वजन सुख निधानं वेदविद्या विधानं शरणवरणपालं मत्स्यकूर्माभिधानम्।।
दनुज कुल करालं सर्व सामर्थ्यकालं करयुगल विशालं नौमिभक्तौघपालम्।।5।।
निखिलभुवनमध्ये पूर्णतोऽर्चावतारं निमगनिधि विहारं सर्वशास्त्रार्थ सारम्
कमल नयन धारं पूर्णपीयूषभारं प्रमुदितमुखकारं नौमि भक्तार्तिहारम्।।6।।
कलितललित वेशं प्रेमभावाभिवेशं कलिकलुष विनाशे वेंकटाद्रौ विशेषम्।
कपिलमृदुल केशं वन्दितं कल्पवेशं प्रभुनयननिमेषं भावये वेकटेशम्।।7।।
धृतकर नवनीतं गोपिकाकोप भीतं भयवश तरुनीतं गोपवालै र्गृहीतम्।
जननिभय विनीतं नेत्रवारिप्रणीतं श्रुतिरवशुभ गीतं प्रार्थये पार्थ गीतम्।।8।।
निखिल निधि निधानं ब्रह्म विद्या विधानं सुरमुनि हृदिवासं पूर्ण विद्यावकाशम्।
नियति नय विकाशं सर्वधर्म प्रकाशं भजतु दुरितनाशं राधिकारास नाथम्।।9।।
चतुर चकित चौरं गोपिकावस्त्रहारं ब्रजभुविगतिकारं वंशिकाशब्द सारम्
सुमुखि सखि विचारं प्रेमभाव प्रसारं नयन पथगतं सम्भावये भक्तिसारम्।।10।।
शरदितिथि सुपूर्णे पुण्य पुञ्जेभुसारं प्रणत जनसुधारं गोपिकानन्दहारम्
मधुर सरस वंशीमूर्लिका गीतकारं प्रणयिसखि विहारं राधिकारास भारम्।।11।।
कुपथमत विनाशं सर्वसौख्यप्रकाशं चरणपतितदासं प्राणिरक्षा विकाशम्
नरकपथ पिधानं यस्यलीलाविधानं चरणशरण बन्धोः नौमिसंसारभासम्।।12।।
मनसिकृत निवासं भक्तिभाव प्रकाशं सहज सुख विलासं पूर्ण नेत्राब्जहासम्
निखिल रिपु विनाशं कंसचाणूरनाशं भजतुहृदय भासं राधिका मुग्धहासम्।।13।।
अवधपुर निवासं सीतयाबन्द्यभासं पवन तनय सेव्यं लक्ष्मणेनार्चिताङ्गम्।
रघुकुलवररामं पूर्ण विद्याभिरामं स्वजन हृदिरसालं नौमि सीताभिरामम्।।14।।

मधुरममलरूपं सर्वदेवाधिभूपं निखिल निगमरूपं सर्वशान्तिस्वरूपम्
प्रणत जन स्वरूपं ज्ञानकर्म प्रपूतं रघुपतिवरभूपं नौमिवेदान्त यूथम्।।15।।
सरस सरल मन्त्रं तन्त्र विद्याधियन्त्रं महति जगति गुप्तं क्षीरसिन्धौ सुसुप्तम्
तपसि वचसि लीनं ज्ञानं भक्त्यानवीनं प्रलयजलधि मीनं नौमिदूग्धाब्धिलीनम्।।16।।
कमल वनरमेशं देवदेवेशवेशं विधिहरसुरनाथं प्रेमपूजा सनाथम्
विबुध कुल विलासं ज्ञानकर्म प्रकाशं सहृदयहृदिवासं नौमिभक्तिप्रकाशम्।।17।।
ललितमधुरभाषं कर्मयोग प्रभातं नयनपुर विकाशं मन्त्रमूर्ति प्रकाशम्
जय जय शुभ घोषं पूर्णशन्ति प्रबोधं जगदवन सुबोधं नौमिवेदान्त बोधम्।।18।।
द्विजकुल नयननाथं वेदविद्या विलासं सुरमुनिवर वेद्यं सर्व सौजन्य हृद्यम्
कपिल मुनि निवेद्यं देव हूतिप्रसाद्यं कलितललितमाद्यं नौमिवेदानुवाद्यम्।।19।।
यदपि जगति रामं सर्व सौख्याभिधानं यदुकुल मणिमालं नन्द गोपालवालम्।।
नियतिनय निधानं सर्वथा पूर्णकामं हलधरवलरामं नौमिलीलाललामम्।।20।।
तदपि भुवनपालं पावनं नन्दवालं कलियुग मलहारं पूर्ण लीलावतारम्।
नयन नवनिहालं वेंकटेशं विशालं भजतिजन समूहो युक्तमर्चावतारम्।।21।।
न खलु कुपित कालः कलियुगो धर्महीनः पतनपथमसीमः कष्टदायी ससीमः।
नयतिसकललोकं धर्मधाम प्रकोपं द्रुततरमवतारं प्रार्थये त्राणकारम्।।22।।
श्रियइवननुमाता पूज्यपद्मावती या भुविभव भीतत्राण कामाप्रणीता।
हरिरिह मनसा या कल्पिता कीर्तिमाना प्रभुवर कृपया तां प्रार्थये भाग्य लक्ष्मीम्।।23।।
प्रणत जन सुशिक्षावर्धनाय प्रसादः हरिरमलकृपायाः पुण्य पुंजो विशालः
सुरतरूवर मालः कामना पूर्ण भालः सहज कमलनालोब्रह्मणस्सृष्टिपालः।।24।।
जयतु जयतु देवो विष्णु नारायणोवै नयनपथ ललामो देवकी पुष्यवालः
समीक्षा धर्माणां न भवति यदा प्रेम दयया
तदा धर्मोन्मादः प्रसरति स दौर्भाग्य महिमा
प्रतिज्ञा बद्धास्ते यदि सुमनसा कर्म निरताः
भवेयुस्सन्तुष्टास्तदनुसरणं धर्मवरणम्।।25।।
सदा सन्तो मान्या निखिल जन कल्याण कलया
स्वयं पूर्णं धर्मं हृदिधृतिधरं शास्त्रविहितम्
सुरक्षन्तो नित्यं जगदुदयमेवार्थ गतयः
हरिस्साक्षात्तत्र प्रणतजन भौभाग्यवरदः।।26।।
रमाराधा सीता मनसि ननुनीता प्रणयतः

महालीलालीनासरस हृदये सर्व जननी
दयाधीना नीला गुरूवरवचोरम्य नगरी
सदागीताऽऽधीता नयनपथनीता विजयते।।27।।
सुधीनां सोपानं परममहिमानं भगवतः
सुधाम्नः सम्प्राप्त्यै यतिवर दयावृष्टि नियतम्
सुसंस्कारे दीक्षा प्रणत जन शिक्षा शरणदा
गुरोः प्रासादो वा नयति सहजं नाथ सविधम् (निलयम्)।।28।।
सुकैंकर्यं विष्णोः सुकृतिरसिके रंग रथिकं
समानीतं गीतं चरणकमले वैंकट विभोः
मनो वाक्कायैर्वा श्रुतिपथ गतार्थं विधिवरं
प्रमाणं कृष्णस्य प्रणयवचन प्रेम विदितम्।।29।।
महानन्दं मन्दं मधुरमसृणं कर्म रूचिरं
विधाता शम्भुर्वा व्रजभुवि वदान्यौ विलसितौ
प्रगायन्तौ मुग्धौ प्रभुपद निलीनौ नु मधुपौ
प्रसादं पुण्यार्थं प्रवर वचनै र्वा वितरतः।।30।।
सदाध्यायं ध्यायं मुनिवरगणै र्यस्य विधिना
स्वरूपं माधुर्यं प्रभुदितमखैर्वन्द्यचरणम्
कृपापुंजं गुंजं नय नपथगं दिव्य विभवं
सदेवः कोऽप्यत्र श्रुतिरथ रथी कल्प विजयी।।31।।
सुधासिन्धुर्बन्धुरखिल भुवि दिव्येऽपिनगरे
निवासी वात्सल्यामृततनु धरो वैंकटवरः
महालक्ष्यालक्ष्योललितचरणस्सर्व सुखदः
गुरोश्श्री रामानुजयतिवरस्यात्र महिमा।।32।।
दयाधीनादेवा दनुजवरजेतुं प्रणयतः
सदायस्यप्रेम्णा दिविभुविरता यत्र फलदाः
स कृष्णो रामोवा प्रणतजन रक्षाव्रतधरः
सदाऽऽविर्भूयश्श्रीदर्शरयगृहे भक्त वशगः।।33।।
पुराणं वेदास्ते स्तुति वचन मालम्ब्य सततं
समान्ताद् रक्षायां सुरमुनिमनो भाव विहिताः
इदानीं श्रीनाथो निज चरणयोरेव वरणं

विभाव्यैवं नित्यं स्वजन मनसा गीत गतिदः।।34।।
तदन्यन्नैवास्ति प्रणत जन रक्षाहित वहं
सुदीर्घं विस्तार व्रत नियममादाय रचितम्
प्रभोः कैं कर्य्य वा सविधि हरिपादाम्बुजनतिः
दृढ़ा भक्तिप्रायो भवति भुवने पावनकरी ।।35।।
कलाकीर्तिः कापि प्रथित विथिकाकाननमयी
विहर्तुं तर्तुं वा ललितकलयानीत नगरी
वशं श्रीरंगं वेंकट गिरिवरं प्रागि निखिलं
प्रपातुं स्वान्तस्थो ब्रज भुविगतो वा करूणया।।36।।
स्वलीलालावण्यं ललितवयसा साग्रजयुतः
प्रभुःपूर्णार्थो वै व्रज वनितया रासरसिकः
यशोदानन्दोवा नयनपथ गामी विलसितः
सदारम्यो गम्यो हृदि गिरिगुहायां विजयताम् (विचरतात्)।।37।।
न वा भक्ति श्श्रद्धा तवचरणयोर्नाथ नियता।
न वा पुजा शुद्धा नहिमनसिजो भोग विभवः।
निवेद्यश्शुष्कोवा नहि सुलभ भोगोपि कलितः
पदार्थः सेवायां सभयमधुना मेस्तु विहितः।।38।।
स्वधर्मं संसारे स्वजन फलके ह्याप्यमधुना
भवेयं मानार्हो वचन रचनैरर्थ निहितः
परार्थे नैवात्र प्रगति कणिका कापि विहिता
कथं जाने हृद्यं कलुष मनसाऽतीत फलितम् ?।।39।।
तथापीत्थं नाथ! व्यथित हृदयो भाव विधुरः
सदाभ्रामं भ्रामं जगदखिलमेयात्र भयतः
न लब्ध्वा साक्षात्त्वां नयन विफलोदुःख मनसा
भवन्तं सन्द्रष्टुं चरणपतितो दीर्घ पथिकः।।40।।
कृपालुः किं त्वम्मे मनसि वचसि प्रार्थितदिशा
प्रतिष्ठां सम्भाव्यश्चरणशरणार्ते नियमतः
वशीभूतो जातो नयनपथ गोपाय विदितः।।41।।
दयाधीनोदीनो जलविगतमीनस्सरसिगः
यथा जल्पं जल्पं व्यथित हृदयो याति निधनम्

तथा स्वल्पं स्वल्पं त्रसित मनसाऽधीरनयनः
तवस्मारं स्मारं प्रणय निपुणं यामि शरणम्।।42।।
न वा भोगे सक्ति र्न च भजन योगेपि सुमतिः
न वा तीर्थवासो न च किमति सम्कर्म विहितम्
न वादत्तं दानं न च गुण गण निधानं भगवतः
न वा हृद्यं वेद्यं तव मधुररूपं हृदिकृतम्।।43।।
न वा शिक्षा दीक्षा विधि वश कृता भक्तिरधुना
न वा नित्या प्रीतिः परम् सुहृदिप्रेम रसिका
हरौ राधा रीत्या सरस वचनैरार्द्र हृदया
कलालीना बुद्धि र्न च चरण सेवा सुविहिता।।44।।
कथङ्कारं पारं भवजल निधे र्यामि विपुलं
प्रभो स्यात्तेदृष्टिः यदि करूणयातारण करी
तदा भाग्यं भूरि प्रमितकलया वेद विदिता
जनास्सर्वे भीताः परमपदनीता भयभिदः।।45।।
जनस्तेष्वेवन्ते चरणमधुपः पूत हृदयः
सुसन्तुष्टः पुष्टोपि गुरूपदरूष्टो न जगति
प्रपत्तिः पूर्णार्थानिखिल भुवने प्रेमविहिता
परा सेव्या देव्या रघुवरदया सा विजयताम्।।46।।
नमस्तुभ्यं विष्णो! प्रणतजन रक्षाव्रतधरः
कृपालो! बन्धो हे यतिवरगुरोर्वन्द्य चरणः
रमानाथस्साक्षी त्वमसि जगति प्राणि वरदः
तवाऽहं स्यात्पतितपथिकस्त्रस्तहृदयः।।47।।
कलालीनोमीनः कमठनर सिंहश्च सहजः
वराहो व्यासो वा कपिल मुनि बन्द्यो नयनयोः
स्वरूपं रामो वा यदुकुल मणिः कृष्ण रसिकः
कृपालेशेन प्रार्थ्य उदय गिरेर्भानुरधुना।।48।।
जगत्साक्षी धर्मे सहज गतिकः सर्व निलयः
अहोरात्रं व्यस्तं प्रतिपदमहो काल कुपितं
जनं सर्व दृष्ट्वा द्रवित हृदयोदार कृपया
सुरक्षां शिक्षातः कठिन समयेदातुमिहितः।।49।।

परोव्यूहो वाऽर्च्यो विभववपुषा राम रूचिरः
ब्रजाधीशः कृष्णो वलियजन मान्योपि वटुकः
स्वयं लब्ध्वादाने त्रिभुवन धनं पादनियतं
प्रदाय प्रासादं सुरपतिहिते (कृते) प्रेमवचसा।।50।।

प्रसन्नं देवेशं हृदि धामाश्रयमहो
भजन्तं भक्तानां भवभयहरं भावमधुरम्
सदान्तर्यामीशं वचन रूचिरं सेव्यमचिरं
प्रत्यक्षं याचेऽहं चरण कमलं पावनकरम्।।51।।

नयन्तं बैकुण्ठं द्विजकुलकलंकं निपतितं
सदापापाचारे परिणतमतिं यं यमपुरीम्
स्वदूतैः कर्षन्तं निज तनय नारायण परं
भजेऽहं सन्नाम प्रणववरणं विष्णुशरणम्।।52।।

प्रभो दूतै र्भीतै र्यमपरिकरैर्मुक्तकलुषं
महापापाचारे कुपथिकमतिं ब्राह्मण जनम्
नयन्तं प्राधान्यं यम निलयमार्त प्रणयनं
प्रदत्तं पूर्णायुश्चरण शरणन्ते नयतुमाम्।।53।।

न जाने धर्मस्वं प्रभुपदवरं प्रेमरचनं
न जाने सर्वस्वं निगम नियमं पावनकरम्
त्वमेवत्राता वा निरतविषयानन्द भजतां
दया दृष्टि र्देया सहज पततां घोर निरये।।54।।

न जाने जन्मान्तं कियदिह तनो र्नाल्प नियतं
सदा मिथ्याकांक्षा विषय बहुले धूर्त मनसा
कृता मोह ध्यान्ते न च सुमतिराधा विकसिता
प्रमुग्धः संयाचे तव चरणमेवाश्रयमहो।।55।।

कृपा सिन्धो! बन्धो! कुपथ मति नाशाय निगमे
विगीतो नीतो वा निखिल जन हृद्यो विलसितः
सदा सत्यं साक्षी यदि सुहृदहो तर्हिविषयी
कथञ्जातः प्रार्थी नहि तव दया कापि पतिते।।56।।

परं जाने बन्धो! सहजशरणं सर्व जगतां
तदार्तस्तत्रैव प्रणतिपरदासश्चरणयोः

निरासो नैवाऽहं कथमपिकृपा दृष्टि पथिकः
क्षमासाध्योरक्ष्यः कुपथ गतिकोवा सुपथिकः।।57।।
यदा साधुः सत्यं नहि किमपि कष्टं नियमितः
सदाशान्तो दान्तस्तवचरणनीतो विधिवशः
न साधुश्चेद्वै कथमिह तवानन्य हृदयः
भवेत्प्रार्थी स्वार्थी सहजइह दयादान विधुरः।।58।।
तथापीत्थं याचे चरणशरणं देहि कृपया
न चेद् दोषस्ते वा त्रिभुवन पदाधीश मनसि
प्रणामी तेदासस्तरति भवसिन्धुं सहजतः
तदाऽहं विश्वस्तो नरक भिदिनारायणवरे।।59।।
परम्पारं सिन्धोः कथमवनि जन्मा नरकतो
विभीतोऽशक्तोवा कपट मतिको यातु कलुषः
तदास्मारं स्मारं परमसुहृदं दीन शरणं
भजेऽहं पूर्णार्थं सफलमधुना नाम विमलम्।।60।।
सदाऽऽधारस्सारः सकल जगतामेव निपुणः
परब्रह्माधीशो नरहरिवरो वामनतनुः
गृहीतो गीतो या विविध विधिनानन्तकलया
स रामः कृष्णो वा भवतु भयहारी विलपताम्।।61।।
मामाऽधर्माऽनन्ता जगति विहितानन्त युगतः
मनोवाक्कायान्ताः कुमति नियमानन्त विथया
कथं क्षन्तव्यास्ते नियति वशगा वात्र विहिताः
प्रपन्नो भक्तो वा जगति विदितो नैव दयया?।।62।।
रसानन्दोराधावरहरिविभु भावविभवः
सदा सेव्यस्साध्यः सुरमुनिवरैरर्थ रमणः
समाधौ सम्भाव्यः श्रुतिवर रवोद्गार महितः
कथन्द्रष्टव्योवा कलिमल युतेनात्र सहसा।।63।।
कृपाकुंजे गुंजन् भ्रमरइव मुदा पदम् रसिकः
न वा मीनोदीनः सरसिवरणे शक्ति सहितः
सुगन्धिं पद्मानां नहि सममिनेतुं प्रणयतः
कथं जायात् तृप्तो विषयवशगोधर्म विमुखः।।64।।

कलाकान्तिश्शान्ति ब्रजभुवि महारास रसता
शिव ब्रह्मादेवा सुरमुनिगणा भक्ति रसिकाः
इमे सर्वे गोप्यो रहसि विहिता नारितनुताः
स्वयाशक्त्या सद्यः सहज कलयानन्द मनसा।।65।।
रतिः पत्या सार्धं विजय कलिता नैव विदिता
सुधासिन्धुं नेतुं नयन निलये को निगलितुम
समर्था योगीशं रसिक रसिकं कृष्ण हृदयं
प्रसादं सम्प्राप्य प्रणय पथिका गोपि सदृशाः।।66।।
सुचन्द्रोरायत्र्र्थेऽपरवरविधुं कृष्णसुहृदं
प्रबोधं पूर्णार्थं जगति जनितं ज्ञाप्य विशदम्
समर्थः को ज्ञातुं? प्रभुवर कृपा भाव रहितः
न योगारूढ़ोवा गुरूवरकृपा कापिनहि सा।।67।।
समीक्षाधर्माणां न भवति यदा प्रेम दयया
तदाऽधर्मोन्मादः प्रसरति स दौर्भाग्य महिमा
प्रतिज्ञा वद्धास्ते यदि सुमनसाकर्म निरताः
भयेयुः सन्तुष्टा तदनुसरणं धर्मवरणम्।।68।।
सदा सन्तो मान्या निखिलजन कल्याण कलया
स्वयं पूर्णधर्मं हृदिघृति धरं शास्त्र विहितम्
सुरक्षन्तो नित्यं जगदुदयमेवार्थ गतयः
हरिस्साक्षात्तत्र प्रणत जन सौभाग्यवरदः।।69।।
रमाराधासीता नयन पथनीता करुणया
यदा भक्तैरर्च्या सविधि मनसा मोहविधुरैः
तदा देव्यस्सर्वा हृदय वशगा भाव विदिता
हरे साक्षात्कारे सहजदयया यान्ति सविधम्।।70।।
कथं लोकाः लोभं व्यथित हृदयाः शोक शमने
भयग्रस्तास्त्रस्ताः प्रतिपदमहो काल कलिता
भजन्तः कृष्णस्य प्रतियुग मिहप्रेम मधुपा
पद द्वन्द्वें गन्धं नियति नियमेबद्ध हृदया।।71।।
प्रसन्नालब्धार्था त्रिदिव पथिकाभान्ति विरलाः
प्रपत्त्या भक्तया भुवि कलियुगे चापि सचिवाः

सहन्तासंस्सारे परम भय भोगं विधिवशाः
प्रकृत्या सद्वृत्या स्वजन भरणेधर्म यशसा।।72।।
वृतास्सत्यं सदभिः परहितरता रामपथिकाः
महामन्त्रैर्मुग्धाः कमल चरणे श्रीप्रभु हरेः
निमग्ना निर्भ्रान्त्रा मधुप इव पीत्वा मधुरसं
विमुक्ताः संसाराद् विमलमतयो भाग्यनियताः।।73।।
गुरूं मित्रं बन्धुं नयन निलये प्राप्य मनसा
प्रत्यक्षं स्वान्तस्थं कथमनुभवेयं कुमतिकः
तमेवाहं नाथं सपदि मनसा कृष्ण सुहृदं
भजेऽहं शास्त्रार्थं परम गतिदं सर्व जगताम्।।74।।
सुदामानं विप्रं गुरूकुल सुमित्रं प्रभुदितं
महाद्वारावत्यां प्रगतिपथं प्राप्य सहसा
हरिर्हार्दं भावं सुहृदिवितरन् करूणया
महाऽऽतीथ्यंहृद्यं पदयुगलपूजां विरचयन्।।75।।
कृतार्थः पूर्णार्थः स्वजनपद सेवा सुपथिकः
महादर्शः प्राप्तः परमकृपया यस्य सरसः
समग्रे राष्ट्रेऽस्मिन् नहि नवनयः कोपि फलितः
तथादीनः किं वा त्रिभुवनपते! मादृशजनः?।।76।।
घटाम्मं सन्धार्यं प्रणयदशगो भाव विभवः
महातीर्थं नीत्वा सपरिजनतोदारसहितः
सुसौभाग्यं दत्वा सकुचहृदयोमित्र सुखदं
न चान्यः कोप्यत्र प्रखर मति मित्रप्रसहने।।77।।
महादर्शं दर्शं प्रभुदितमना नाथ सविधे
सुदामाशान्तश्री न किमपि मनोभाव निहितम्
निवेद्यं वेद्यंवा प्रभुवर कृपा लब्ध निखिलं
पराभक्तया शक्त्या द्विजवरकृते प्रेम जनितम्।।78।।
सुदामा नामासौ सरल हृदयस्स्वार्थ रहितः
सखा धर्मं जानम् प्रभुपदनतो भक्तिमनसा
महाद्वारावत्यां गुरूगृह सखाधर्म वशगः
प्रसन्नः पूर्णार्थः स्वजन नगरी भाग्य विषया।।79।।
कृतार्थाः ग्रामीणाः प्रभुवर कृपा लब्ध भवनाः

सुदिप्या विस्तीर्णाः सकल निधि भोगाश्रयुताः
सुदाम्नो भक्त्या ते परिकररताः पुण्यपथिकाः
विदग्धाधन्या वै हरिपदनताः प्रेम रसिकाः ।।70।।
तथादेवे सत्यं सविधि यजने वेंकट गुरौ
कथं शक्तो भक्तः कलिमलकलंकी कपटधीः
नृसशंः पापीष्टस्तवचरण सेवा विलसितः
भवेदिष्टःशिष्टज्ञे यदि तव कृपा नास्ति महती? ।।71।।
सदारम्यो गम्योस्त्रिभुवनये नाम भजतां
प्रसन्नः प्राधान्यः सुरमुनि गणोपासितकलः
महानन्दी बन्दी स्वजन मनसि प्रेम विपुलः
प्रभुलीलालीनो भजनवशगो वै विजयताम् ।।72।।
भजन्तो रंगेशं रूचिर रचनैरर्थ विशदैः
त्रिकालं श्रीरामं कमलदल नालं विधिभरम्
रमेशं विष्णुम्वा सुमति रसिका भक्ति पथिकाः
प्रणीय प्रारब्धं बहति नियतिं वेद विदितम् ।।73।।
वशिष्ठो व्यासो वा कपिल मुनिवाल्मीकिनिवहाः
समे सिद्धाबुद्धाः प्रगति पथ रक्षा सुनिरताः
हरिं गीत्वा नत्वा प्रपदनमये प्रेम मनसा
प्रबोध्या व्यग्रार्तान् दधतिसततं नीति निखिलम् ।।74।।
दयामुग्धा विष्णोनर्यनपथनीताः समधिकाः
जनायोगारूढ़ाश्चरणकमले लब्ध शरणाः
प्रसन्ना भक्ता ये परमसुहृदः सर्व जगतां
विमुक्ताः संसारात् नरकमय भोगाद् विरहिताः ।।75।।
मनोयोगो भोगः कुमतिपथ रोगस्सुविदितः
मनोयोगो विष्णौ सुमतिनय नीतोर्थ विशदः ।।76।।
महायोगः शुद्धः श्रुतिनिकर गीतोपि रसदः
परब्रह्मानन्दं जनयति मनोमोह विकलः ।।77।।
स रामः श्यामोवा भवविभव रूपावसरदः
समाऽऽराध्यस्सेव्यः परम गतिकोऽनन्यशरणः
पुरागीतो नीतो रघु यदुकुलालब्धवरदः

प्रभो! देया दृष्टि स तवचरणमाप्तेषु कृपया।।78।।

कथं जाने त्वां वै प्रतिपदमहो मोह वशंगः
मृषावाणि बुद्धिः कलहकलिताचारमियता
यदा यस्य प्राणाः विषय गहने नष्ट गतयः
स कं यायाद् देवं? त्वमसि यदि रक्षा प्रणयदः।।79।।

शशी सूर्यौ नेत्रे निशि नवदिवा साक्षिवरदौ
समग्रं सत्कर्म प्रगति पथ पाथेय विहितम्
तव प्रीत्या नीतं जगति जनितं भक्त निवहैः
तथाऽहं संजाने भवदभिमतं धाम विविधम्?।।80।।

कलाकान्तिः शान्तिर्भुवनगतधर्म प्रणयिनी
प्रणम्या गम्यावा कमलनयनान्द निभृता
दयाधीनो दीनो भवदधि गतो नैव विफलः
तवेयं सम्प्रार्थ्या मममनसि कापि निकषा।।81।।

अयोध्यामायाकाशी ब्रजभुवि निवासो न सुलभः (न रूचिरः)
पुराद्वारावत्यां नहिनिवसतो में सुदिवसैः
व्यतीतो नीतोवा दिवस सुभगो भाग्य विधुरः
न दार्चा श्रीविष्णोरविरल कृतालेश विदितः।।82।।

पठन्तो नामानि प्रभुवरविभोः सर्वसुहृदः
स्मरन्तो रूपन्ते परमपददातुः प्रतिपदम्
चरन्तो ये भक्तास्त्वयि खलुरमन्ते सहृदयाः
कथङ्कारं मुक्ता भवभय भिदो भान्ति मलिनाः।।83।।

कृपाते जाता चेत् किमिव नहि लभ्यं जनिभृतां
गदाक्लिष्टं कष्टं तवचरणसेवा विरहिताः
सदाभुक्त्वा भूमौ विविधतनु भोगाभिलषिताः
भवत्पा दाम्भोज स्मरणरसिकास्स्युः सुपथिकाः।।177।।

अनासक्तं चित्तं भवतियत् विष्णो! कुरूदयां
मदीयक्लेशौघप्रशमनं दशानाम् कियती?
न के के लोकेऽस्मिन् प्रणय रहिताश्शान्तमनसः
भवद्भक्ता मुक्ताः सुख गतिमसक्ता विदधते।।84।।

अहं गायं गायं तव विमलनामात्र विलपन्

सदास्मारं स्मारं तवचरण सेवा समधिकम्

मनोमुग्धं क्षुब्धं प्रणयशुभगं चन्द्रवदनं

कृपा सिन्धो! बन्धो! नय नव युगंपूर्णफलदम्।।85।।

महामूढ़ाप्रौढ़ा जगति ननु मन्त्रार्थ विकलाः

भवत्पादाम्भोजस्मरणरहिता प्रेम विकलाः

सदानन्दाद्वैत प्रणति विकृतास्त्राणमतयः

वचस्तीहभ्रान्ताःकलिमलवशा यान्ति निरयम्।।86।।

भवद् भक्तिस्साध्या भवतु भुवि सैव प्रशमये

दशेषक्लेशौघं न खलुहृदि सन्देहकणिका

न चेद् व्यासस्योक्तिस्तववचरण सेवा सुलभता

भवेत्सत्यं पथ्यं जगति जननं नैव लभते।।87।।

प्रभोर्भक्तिस्तावद् यदपि सहजा शान्ति निवहा

कथम्भूयाद् भूमौ तदपि विदितातेऽत्र कृपया

किमप्यारूढ़ा चेदखिल परिताप प्रशमनी

प्रणम्या गम्यामे भवतुभय नाशाय नियता।।88।।

पुनश्चान्ते स्वान्ते सुखद हरिपादाब्ज युगले

पराभक्तिस्तावत् प्रमुखमधुरात्वदगुण रसात्

भवाब्धौ मग्नानां हृदय विमले भावलषिते

दयादृष्ट्या प्रार्थ्या विलसतु मुदामोह दलनी।।89।।

विधूय क्लेशान्मे कुरूचरण युग्मं भृतरसं

तवध्यानज्ञान प्रणय मनसि प्रेम वशतिः

हरेन्तर्यामीश्वरवरकलायाः कलियुगे

महामन्त्राराध्या भवतु विपदां दृष्टि दमनी।।90।।

भवन्मूर्त्या लोके तवचरणयोः पूज्यतुलसी

परिघ्राणेघ्राणं श्रवण युगलं चारू चरिते

करौ पादौ सर्वं तव विहित सेवा सुनिरतं

सदानन्तं कल्पं कपिल मुनि भावान्विदधतु।।91।।

किमुक्तैर्वेदान्तै स्तवहि करूणायावदुदिया

दहं तावद् देव प्रथित विविधार्थ प्रलपने

सदाऽऽसक्तोंदृप्तो नहि शुभ पथे पूर्ण रसिकः

कृपावृष्टिः सृष्टिः शमयतुमहाशोकमनलम् ।।92।।
कलाकीर्तिःकान्ति स्तववदन विम्वप्रणयिता
समर्था संसारे चरण शरणार्थिप्रसविता
मनीषा मुग्धानां कलियुग कलाकोप वलिता
विनश्येत्साशक्ता यदितव कृपास्यात्समधिका ।।93।।
हिरण्याक्षं तावद्वरद्भव दन्वेषणपरं
नयन्तं भूमिं तां पयसि निज पादावधिभिते
भवद् भक्तःको पि प्रकटपटुधी ब्रह्मतनयः
शनैरूचे नन्दन् दनुजमपि निन्दस्तव बलम् ।।94।।
अहोमायावी वो हरति भवदीयां वसुमती
महाकष्टं कष्टं कथमिदमितिप्राह दितिजः
नदन् क्वासौ विष्णुः प्रकटवपुषा नारद दिशा
भवन्तं सम्प्राप्तो धरणिधर मुद्यन्तमुदकात् ।।95।।
हिरण्याक्षो योद्धुं मृगमिति हसन्तं बहुविधै
दुरूक्तैर्विध्यन्तं दिति सुतमवज्ञाय भगवन्
महीं दृष्टवादंष्ट्राशिरसिनिहितां स्वेन महसा
पयोधावाधाय प्रसभमुदङ्‌था मृधविधौ ।।96।।
हिरणाक्षेदैत्ये प्रभुरपि गृहीतोन्नतगदो
सुयुद्धेनक्रीडन् जलधिलयलीनो विधिवशः
गदोन्मर्देतस्मिस्तव खलु गदायां दितिभुवो
गदाघाताद् भूमौ कलितकलया भाति विजयी।।97।।
महाचक्रं स्मृत्वा कर भुविदघानो रूरुचिषे
सुरारेः संहारे कृतसुमतिराशु प्रमथने
महाकायः सोऽयंतवचरण पात प्रमथितो
गलद्रक्तोवक्त्रादपतद् सुरप्राणविधुरः।।98।।
सदाध्यानं ज्ञानं हरिपद रतिः प्रेम रसिका
भवाब्धौ मग्नानां परम कृपया तारण तटी
प्रपत्तिः पारार्थ्या प्रतिपद महायस्य विहिता
स मान्यो देवोऽसौ गुरूवर बुधौवै विजयताम्।।99।।
न वाऽऽसक्ति वंशे न च निधिनये कापि कलुषा

मनीषा मांगल्या प्रणति जन मोहापहरणी
प्रपन्ना भक्ताये सहज विधिनागत्यशरणम्
कृतार्थाः सञ्जाता गुरूवर कृपालब्ध शरणाः (सफलाः)।।100।।
सदा स्मारं स्मारं हरिपद युगं यस्य कृपया
तपोनिष्ठाशिशष्टाब्रतपथयुता धर्म पथिकाः
सदाप्रातः सायं प्रभु गुण निधानं सुमनसा
मुदागायं गायं कलिमलहरं सोऽत्र सदयः।।101।।
न वा वांछाऽऽकांछा प्रभुपदमतिः पूर्ण नियता
यशोगानं मानं प्रणतजन वाचा विलसितम्
न वा नीतं गीतं मधुरवचनै रात्मरूचिरं
दयादृष्टि र्यस्यब्रतधरजने सोऽत्र सदयः।।102।।
कथा कालीन्दीया मधुर रस धाराप्रणयिनी
प्रकीर्णा पूर्णार्था श्रवणपथिका कण्ठकलिता
सुधांशोस्सम्वन्धा श्रुतिरव रयानन्द फलिता
यदीया सद्वाणी द्रवफलवती सोऽपि रसिकः।।103।।
पवित्रं सावित्रं भजन यजनं नित्य नियतं
चरित्रं सम्वेद्यं निखिलजन वेद्यं सहजतः
महामन्त्रोद गारो निगम मतसारः समधिकः
शुभस्संकारोद्धार इव वचसि येन प्रवहति
स योगारूढ़ो वै गुरूवर विभुः सं विजयताम्।।104।।
दयादृष्टि र्दिव्या कथमवनि पतितनैव विहिता
प्रभो! लीलालीना त्रिभुवनपाथि प्राणिविबुधैः
सदा लब्धाऽगम्या गुरुवरकृपा पुण्यवचनै
रवश्यंदासोऽयं तवनयनमांगल्यकलितः।।105।।

गंगास्तवः

श्री जाह्नवी जंगमजन्तुपावनी
पादप्रभावामितदुःखनाशिनी
सद्यस्सुशान्तेरवतीर्णधारया
लोकत्रयेऽनन्तसुखाय नन्दता ॥१॥

पवित्रगंगाम्भसिलीनदेहिनः
सुतर्पयन्तः सुरसंघमानताः
पितॄँस्तथाचार्यवरांश्च नित्यशो
विमुक्तिमार्गव्रतिनो जयन्ति ते ॥२॥

शुभामहोर्मिप्रथयेवदीधितेः
सुधापगानन्दमयीवमन्दिरा
प्रवर्षतीवामरभूमिसम्पदो
मुमुक्षलोकाय सदाश्रया मता ॥३॥

समग्रपापौघमलोपसारणे
चिरन्तनी शान्तिपयोऽभिधारणे
निमज्जतां देहदशानिवारणे
मातस्त्वदीयाकरुणा महीयसी ॥४॥

दिवानिशं प्राणिजनस्य दुर्दशां
विवेकचारित्र्यहतस्य कर्कशाम्
व्यर्थां नदीयामभिलक्ष्यसत्वरं
दयार्द्रता ते भवति प्रवाहता ॥५॥

ह्रदाद्युनापारगिरंगभीरता
नदीनदोऽन्यो न समस्तवार्थतः
विश्वेशशम्भुस्वजटाकलापगां
कृतीव मेन भवतीं विचारयन् ॥६॥

सहिष्णुता ते महिमातिशायनी
समग्रपापाद्रिवहापि हर्षिता
प्रपावनं वारि मनोद्रिगह्वरे
शरीरयोगेन मलं व्यपोहति ॥७॥

निवासशय्यासनभोजनेष्वपि
प्रमादनिद्रालसजन्यपातकम्
प्रभूतपीडानरकप्रदायिनं
विशोध्य लीलाऽमरलोकदायिनी ॥८॥

मनः क्रिया वा वचनानुकारिणी
शरीरबुद्ध्योरनुहारिणी तथा
निषिद्धकर्माणमवेक्ष्य शान्तया
त्वया विशोध्याऽमलधारया द्रुतम् ॥९॥

मातस्त्वमेवासि महोपकारिणी
शान्तिस्वरूपासि जगद्विहारिणी
जीवात्मनां कापिविपन्निवारिणी
शम्भोर्जटाधामतपस्विनीयते ॥१०॥

प्रपञ्चपुञ्जप्रखरप्रवेगतो
धराधरेन्द्रद्रविणप्रकाशिनी
तपस्वताक्लान्तकलेवरभ्रमात्
भवोभवानीसहितः प्रसादितः ॥११॥

यदर्पिताऽमोघविरञ्चिधामनो
भगीरथस्य प्रथयाऽवतमिगा
प्रजापतेश्शापविमुक्तिहेतवे
विभोर्जटायास्सगरात्मजान् प्रति ॥१२॥

लीलैव मातस्तवविन्दुतर्पिता—
स्त्रस्ताश्चतेवै पितरस्तथानुवि
मृत्योर्भयान्मुक्तिपथप्रयायिनः
जीवा जडाश्चापि भवन्ति देवताः ॥१३॥

वैधर्म्यसाधर्म्यनिरस्तभावना
स्वर्गापवर्गप्रदनीरवाहिनी
देवीदयादेहजलाधिधारया
रूपन्तवैतन्ममनेत्रगोचरम् ॥१४॥

विष्णुस्स्वयं वामनरूपमुद्वहन्
प्रजापतेः कश्यपदेविकुक्षितः
स्वयाचने भूमिपदत्रयीध्रुवं
बलिं महाभक्तहितञ्च प्रादिशत् ॥१५॥

विचित्रतैवास्तिवलेः पुराऽवनेः
शापाग्निदग्धाः सगरात्मजाः यदा
ब्रह्मा हरेः पादजलं कमण्डलौ
संस्थाप्य गंगां भवतीं समाश्रयत् ॥१६॥

तदैवलोकाऽभ्युदयप्रसंगतो
भुविप्रवाहावनचन्द्रमौलिना
न्यषेधि वेगस्स्वजटोटजे शुभो
धर्मार्थमोक्षाप्तिकरस्सुजन्मनाम् ॥१७॥

कनावतश्चन्द्रमसः कलासखी
उमापतेः प्रीतिभरापरानतिः
यतो सपत्नीव न कल्प्यते शिरः—
स्थितिः सदापादसमीपगामता ॥१८॥

ध्रुवं धराधाममयीव शास्वतः
प्रकीर्तितानाकगतिर्निमज्जताम्
भवाब्धिग्राहाऽवलिनिष्ठभोगतो
विमोचिनी भक्तजनैरुपास्यते ॥१९॥

नितान्तमेवास्ति दयाद्रवीयता
त्वदीयधारामृतसारशाश्वती
दिवौकसां भाग्यवशाच्च स्वर्गंगा
मन्दाकिनी देवपथप्रदर्शिनी ॥२०॥

सुराऽसुरैर्वन्दितमुक्तिदेवता
कृषीक्रिया धान्यफलोन्नतिप्रिया
सदौषधी पर्वतकन्दराश्रया
सुधापगा धर्मविभूतिभूषिता ॥२१॥

सुभावना मूर्तिसितातिपावनी
सपर्यया वेद्यगुहानुधावनी
निसर्गतः पूतमनस्थितेव सा
विराजतां सर्वसमृद्धिदानतः ॥२२॥

शिवार्चिता चन्द्रमरीचिमालिनी
दिवानिशं स्वर्गसुखावहाश्रया
गणेशनन्दीवरपूजितांघ्रिका
मनोरथा प्रार्थितपूर्णकामदा ॥२३॥

सुभुक्तिसम्मार्जनशुभ्रविग्रहा
विमुक्तिदायीतिसदेरिताश्रुतो
महर्षिदेवर्षिगणप्रहर्षिणी
सुवर्षिणी पुण्यघनश्रियस्सताम् ॥२४॥

गंगातरंगोद्धृतसत्त्वसम्पदो
मनीषिताः जन्मगृहीतभावुकैः
सुतीर्थभात्रोहितसंचितश्रिया
समीरितास्ते कृपयाऽभिमन्त्रिता ॥२५॥

गंगे ! भवानीशशिरोरुहेसिते
तादात्म्यतापन्नविपन्नरक्षणे
कैलाशधामाध्वनिदेवदर्शना
प्रणम्यतेऽद्यापि महाधिदेवता ॥२६॥

अधर्मबन्धोरवधारणाय किं ?
त्वदीय नामापि महोत्सवायते
निमज्जतां वा वसतां तवांके
वरप्रदे ! देवि ! तव प्रसादतः ॥२७॥

न कल्पवासो न च यज्ञदानता
जपो न मातस्तव नामविभ्रतः
व्रतीव नापि प्रहिताक्रियाऽधुना
कथं भवच्छेदमहोविभावये ॥२८॥

न तीर्थसेवोपयिकं महाव्रतं
समीहितन्नैव मनोवचोमयम्
सदेन्द्रियद्वारमतं मनोरथं
विचार्य लोकप्रणयीव मोहितः ॥२९॥

पारायणं नैव महापुराणतः
कृतं धृतम्वा मनसापि जानता
मया प्रथा कापि नु शास्त्रसम्मता
सुपालिता नैव शुभानुरोधतः ॥३०॥

के के तवानन्तकलाऽऽकुलाजनाः
पवित्रधाराऽभ्युषिताऽध्वरव्रताः
सिद्धान्ततो जन्मजरान्तमानसाः
देवीमधिष्ठाय पवित्रभावनाः ॥३१॥

सुरार्चितैवाध्वनि देवलोकतः
पातालमभ्येत्यत्रिलोकपावनी
मन्दाकिनी त्रैपथिकाऽमरश्रुतिः
स्वाहास्वधेवास्तु महर्षि मानिता ॥३२॥

कलंकितो मानवदेहमन्दिरे
जीवो जगत्यां तवभक्तिनिन्दया
कथं नदीयं भवभीतिनाशने
समर्थितेति प्रकृतेः पुरस्सरम् ॥३३॥

किमद्भुतं धाम सुकर्मवर्जितं
स्नानं सदादेहमलोपसारणे
प्रसंशितं सर्वजनैरहर्दिवं
जलं समं नैव विशेषितं परम् ॥३४॥

इत्थं मतिर्यस्य विचित्रकर्कसा
वेदप्रमाणातिशयीव कल्पिता
व्यर्थाक्रिया स्नाननिदानपात्रता
तस्यात्र वाचां हि कथं प्रमाग्रहः ?॥३५॥

तव प्रभावाऽभयमभ्युपेत्य वै
सनातना योगिवरा हिमालये
तपस्तपन्तस्तरवो यथाऽचला:
चिरायुषस्ते भवतीमुपासते ॥३६॥

निवर्त्य दुर्भावगतिं मुनीश्वरा:
सप्तर्षिधारापथिकामहीसुरा:
सतीशनारायणधामवासिनो
हिमप्रभावातिसहा: प्रसंशिता: ॥३७॥

निराश्रितस्याभयदानवारिणा
निमग्नशोकस्य विदग्धदेहिन:
त्वदीयकेनाशु शुभं प्रतीक्षणं
विचार्य मातश्शरणंतवागता: ॥३८॥

भागीरथी शान्तनुपत्नि मानिनी
भीष्मस्तुता मातृवरातदीयका
त्वं जाह्नवीशम्भुशिरोऽभिभूषणा
जगत् पवित्रीकृतनीरविग्रहा ॥३९॥

सुमंगलीयं तनुराशुसाधना
तपोव्रतीवाऽवनि विष्णुपादजा
सुवन्दनीयाऽमरयूथकल्पत:
प्रयागतीर्थाऽतिमप्रभावती ॥४०॥

निवेद्य पुष्पाञ्जलिमञ्जसा ध्रुवं
सुस्नानपूतान् सुरसाध्यपूर्वजान्
दिवंगतान् तान् प्रतिप्रीतिपूर्वकं
तवांगगा: धर्मपथं प्रपेदिरे ॥४१॥

सद्यस्समन्त्रं तव वारिसम्भृतं
सत्कर्म कल्पायुतमोक्षसूचकम्
निमज्जतां पापनदीसुसीदतां
विषाद कालोपि गतो हरेः पदम् ॥४२॥

भक्तिप्रदाशक्तिरनन्तसिद्धिदा
तवैव मातः क्षरणे दयाद्रवा
स्वास्थ्यप्रदा प्राणिजनस्य नित्यशः
स्नानमात्रेण हितैषिणी कृपा ॥४३॥

सलीलमेवात्र जलं सुनिर्मलं
सदौषधं वैद्यवरस्य पादजम्
हरेरनुग्राहकमूल्यमापकं
तदैव देवेन जटाभिराश्रितम् ॥४४॥

ससिद्धगन्धर्वधुरीणवीणया।
सुगीतमञ्जुप्रवरप्रमूर्च्छना।
प्रकाशितेयं तरलैस्तरंगकैः
वेदस्तुतिर्वा ध्वनिरेष तावकः ॥४५॥

ब्राह्मे मुहूर्ते कृतनित्य सत्क्रियाः
भक्ताभवत्याः भवसिन्धुतारणे
स्नातुं मुदामंगलमन्त्रगायकाः
तटं प्रयातास्तवपुण्यधामकम् ॥४६॥

त्वामेव देवीं महिमातिशायिनीं
भजन्त एवामलनामतो जनाः
त्वदन्तिकं प्राप्य विशुद्धचेतसो
धन्यं हि मन्यन्त एवात्रजीवनम् ॥४७॥

सदाऽवधानं तवदेवि नामतः
परंपदस्याखिलयोगदर्शनम्
नरस्य नारायण एव नित्यशः
सेव्यस्सदामोक्षगतिस्तवाज्ञया ॥४८॥

त्वया सदीक्षाऽमलवारिवर्धने
ह्रासे तथापुण्यपयोदमण्डने
लोकोपकाराय समर्पितातनु-
र्यथेष्टलाभायरता प्रतीयते ॥४९॥

दिशोऽन्तरिक्षं समयस्त्रिधावृतः
त्वयैवलोकाऽभ्युदयप्रभावितः
कृषिः कलाकुञ्जपराऽभिधामयी
नवीनतायां भववन्द्यदेवता ॥५०॥

गंगाम्भसा देहदरी दशायाः
महाव्रतीनां प्रथमः प्रभातः
सूर्योदये पुण्यपुनीतधाम्नां
शुभावहं जन्मफलं विभाति ॥५१॥

दयान्वितस्यावनिभाग्यवत्तया
हरेः कृपालेशमनुष्यविग्रहः
जनस्त्वदीयं तटमभ्युपेत्यवै
विमुक्तिमार्गप्रणयीव जीवति ॥५२॥

सुधापगानन्दमयीव मंगला
सुरार्चिताभारतमातृकावरा
प्रपन्नलोकाऽभ्युदयप्रभावती
दयालुता देवि ! तवात्र कीर्त्यते ॥५३॥

विवर्धितोद्यानलतेवलालिता
तवालितालोकविशोककायत:
प्रसंशितोदारमयीव देवता
तपोमयी कापि हरे: कलेव किम् ? ॥५४॥

कलावपि प्राणभृतां प्रपालने
धारावतीधामपुरीव सप्तधा
सदा हरिद्वारवती च मोक्षदा
काशीपुरीवा मथुराऽमरावती ॥५५॥

देवापगामर्त्यभुविप्रवाहिनी
धारामयी मन्त्रमनोहराकृति:
सुशीतलाऽमोघपवित्रशक्तिधी:
चिरायुषां प्राणयुषां मनोरथा ॥५६॥

कृताऽवतारानिखिलाघहारिणी
प्रतिक्षणं त्राणपरायणागति:
त्वमेदमातश्शुभसुप्रभातके
स्वभावतश्शान्तिसरस्वतीयते ॥५७॥

रमापतिर्वागिरिजापतिस्स्वयं
पितामहोवाऽमरयूथसंगता:
मुदाहरिद्वारपथप्रयायिनां
विमुक्तिदास्ते कृपयाऽनिशं सताम् ॥५८॥

पलायितास्ते यमराजपार्षदा:
प्रभावतस्ते महिमानुयायिन:
ब्रह्मद्रवाविष्णुपदावनेजनी
महर्षिवर्यैर्नितरां प्रशस्यते ॥५९॥

शुचिस्मिता शान्तिसुतीर्थसंगिनी
विमर्दिनीवावनिपुण्यपापयोः
मुमुक्षुलोकाय महेश्वरीयता
प्रशंसिता किन्नदयार्द्रता तव ? ॥६०॥

सपर्यया ते वरुणावतंसया
जगद्धितानन्दमतिश्च मानुषी
दिवौकसां दिव्यपदावधारणे
सदास्तुता भाति परार्थपूरिणी ॥६१॥

महीधराणां महिमाविचारत-
स्तवैवधाराऽमलधाममण्डितः
तपस्विनां तीव्रतपोऽनुकूलतः
सुसेव्यएवास्ति भवौषधिर्यथा ॥६२॥

व्रतप्रभावातिशयप्रवाहिता
महर्षिणां मंगलमन्त्रधारया
तवेदृशी वेगवती प्रसन्नता
शिवाय लोकस्य सदास्तु संस्तुता ॥६३॥

स्वनामधन्या सुरधामवन्दिता
सदाऽपराधान्तकरी दयावती
तपस्थली पुण्यवती सरिद्वरा
विराजतां मे मनसि प्रकीर्तिता ॥६४॥

पुनीतधारावसिता शुभाश्रया
मरालसंघैस्सहिता तपस्थली
तरंगिताश्वेतवतीकलालया
यथेन्दुशोभातिशयी प्रकाशते ॥६५॥

सुघर्षितापापमतिः प्रपञ्चतः
प्रहर्षितादिव्यतनुश्च सन्नता
प्रवर्धिता बुद्धिगतामनस्विता
यस्य क्रियाते कृपया स वन्द्यते ॥६६॥

शुभोदयः कस्य न लोकरञ्जनः ?
प्रभञ्जनेनानुगतस्सुगन्धिना
तवानुगस्यापि पवित्रदेहिनः
चिरञ्जीवीषाफलतीह साम्प्रतम् ॥६७॥

तवासृतस्यन्दिनिविन्दुवैभवे
सुसंगतेहा शरणार्थिभागिनः
तवाऽमलश्वेतजलाभिषेकतः
सुकीर्तिताऽनन्तगुणा विभाषिताः ॥६८॥

नमामिमातस्तवपादपंकजे
वदामि मातस्तवनाम निर्मलम्
भजामिमातस्तव नीरविग्रहं
स्मरामि नित्यं भवतीं सुमातरम् ॥६९॥

नभोङ्गणे प्रेमपयोदसौभगा
ध्वर्मायुषीवाशु गतिरुपासिता
प्रवर्षतीहानुमता प्रजाहिता
सुवृष्टिरेषा तव विन्दुधामतः ॥७०॥

प्रशासिता सर्वतपस्थलीत्वया
परिक्रमेणावनिशुभ्रधारया
प्रपावनो तीव्रगतिस्तवाऽमला
पुनातिलोकत्रयमाशुवत्सला ॥७१॥

देवर्षिराजर्षिमहर्षिमन्त्रिता
प्रकर्षलीलाऽऽकलिताकलाप्लुता
कठोरताक्लेशहरादयादृशा
भवाटवीषु प्रथिता कृपावती ॥७२॥

यदा यदा धर्मपथापकर्षता
विधर्मवृद्धिरवभास्यते चिरम्
तदा तदास्नेहृदयाभिधारया
सुधर्मधारातनुराश्रिता भुवि ॥७३॥

पयस्समानं न चिरौषधंभवे
मनोवचःपूतकरञ्चदेहिनाम्
फलौषधीवाशुतृषानिवारिणी
श्रमोपहारासि च शक्तिदायिनी ॥७४॥

सिद्धाश्रमा संचितपुण्यदेहिनां
प्रज्ञापरापण्डितमान्यसद्मनाम्
विद्याविधा भाग्यवतां भुविध्रुवं
सर्वप्रदा सर्वमयीव संस्तुता ॥७५॥

सुरम्यधाराधवलाऽव्वनिप्रभा
प्रभासमानाऽमरकीर्तिकन्यका
जनाऽवने जागृतधर्मविग्रहा
प्रतीयसे त्वं जननीवरक्षिणी ॥७६॥

सहिष्णुतामूर्तिमयीवधैर्यतः
परावरेस्मिन् जगति प्रकाशिता
हरेः कृपामंगलपादपद्मतो
विनिःसृताऽतीर्थमयी नमस्यते ॥७७॥

सदिच्छयाब्रह्मनदी पयोधरा
चतुस्समुद्रात्मभुवः प्रसादिनी
कल्पद्रुमानन्तफलप्रसूतिधी
रथावनेर्वीथिवहाप्रसीदताम् ॥७८॥

यत्राऽवनेस्तेतटमीशदर्शना
श्रद्धावतां नित्यमहोत्सवायते
सदर्चने वन्दनकीर्तनादिभि—
र्नारायणस्यापि महाव्रतार्थिनाम् ॥७९॥

त्वदीयधाराऽव्युषितैः प्रजाजनैः
सदिन्द्रियार्थाऽमलवाङ् मनोरथैः
सदर्चया राममहेशदेवता—
स्तटे त्वदीये विधिनाप्रपूजिताः ॥८०॥

देवर्षिपित्रादिगणास्सुतर्पिताः
पित्रोः कुलोद्भाव्यदयानुसारतः
स्ववंशभाग्योदयमाप्यसत्पथाः
प्रजास्त्वदीयास्सुखशान्तिसंयुताः ॥८१॥

सुनिश्चितं वै तव धाम भूतले
नानाविधं तीर्थंकरं मनोहरम्
सुसेवनीयं हरिधामदायकं
विसर्ज्यनैराश्यपथं विचारतः ॥८२॥

सरस्वती वा यमुना सखीप्रिया
नारायणी वा तमसानदीवरा
कावेरिकृष्णासरयूतपस्विनी
तवाऽवतारा हरिरामकृष्णवत् ॥८३॥

दिव्याच वैकुण्ठनदीश्वरीव किं ?
त्वमेव सत्यं विरजाऽभिधीयते
लोकत्रयस्यापि विमोहहारिणी
हरीकथा कल्पतरुर्भुवि स्थिता ॥८४॥

सुदक्षिणा शान्तनुराजभूपतेः
प्रदक्षिणेवाऽमरवन्द्यश्रीपतेः
सुलक्षणेवाऽवनिपत्नि योगिनां
विलक्षणा पुण्यवती विराजते ॥८५॥

श्रद्धावतां सर्वसमीहितार्थदा
निसर्गतश्शान्तिकरी सुभाषिता
गंगेति नामाऽमरनाम जल्पतां
सुधामयी देवि! सदाभिवन्द्यते ॥८६॥

गंगोदकस्यामलकीर्तिदायिका
प्राणान्तकाले जलबिन्दुलाभतः
प्रवर्तिता मुक्तिकरीच मान्यता
कृतापराधस्य जनस्य तारिका ॥८७॥

पापान्विताश्चापि सदात्मवञ्चकाः
विरुद्धधर्माचरणे कुमार्गगाः
आसन्नमृत्युं विगणय्य सत्वरं
गंगोदकं प्राप्य भवन्ति निर्भयाः ॥८८॥

त्वदीय मातर्महिमातिमानिनां
सदा सतां संकटकालयायिनाम्
सद्यस्सुधेवाखिलरोगभोगतो
विमुक्तिदो मन्त्रवरः प्रवर्धते ॥८९॥

पराशरो व्यासगुरुर्मुनीश्वरा:
योगीश्वरास्सिद्धगणाश्च श्रद्धया
गर्गस्तथा काश्यपवामदेवता:
समामनन्ति प्रणता यशस्तव ॥६०॥

मुनिर्भरद्वाजयुतश्च गौतम:
शुकस्तथासूतवरोपि धार्मिक:
गंगाप्रभावावनिधामदर्शना:
गंगाप्रसादं वितरन्ति मोक्षदम् ॥६१॥

दिश: प्रसन्ना ऋतवश्च मंगला;
सरित्समुद्राद्रितटोपवासिन:
नभश्चराभूतलगर्भसंश्रया:
जीवा: कृतार्थाश्च मुदादिवंगता: ॥६२॥

यस्य प्रभावातिशयप्रचोदिता:
निष्पापजाता जलविन्दुसेवनात्
नामाभिधानाऽमलदेहमूर्तय:
पवित्रयन्तो मुनयो भुवं स्तुता: ॥६३॥

यस्याधुनाकीर्तिकलावलेशतो
देवत्वमाप्तानरदेहमुक्तित:
समाधिनिष्ठा: परमार्थजीवना:
तदीयतापुण्यवतीदयास्तुता ॥६४॥

गंगाप्रपाताखिलभूमिसम्पदा
प्रजा: प्रसन्ना: प्रणता: क्रियारता:
सदाऽवधानास्तवपादपद्मयो:
मातस्त्वदीया: फलितादयादृश: ॥६५॥

कलाहिताचान्द्रमसीवनिर्मला,

धारायितातीव्रगतिरवस्थिता

प्रजासुरञ्जीमहिमेवरामतः;

स्वनामधन्योस्तुवरः प्रसादकः ॥ ९६ ॥

स्वधामयी चापि सुधामयीयता

स्वधामधाराध्वनिधीरतार्पिता

पवित्रचारित्र्यनतामहेश्वरी

माहेश्वरीवावतु भक्तमण्डलीम् ॥ ९७ ॥

काशीपुरी काञ्च्यवतीव्रजावनिः

श्रीरामधामापि तथान्यतीर्थका

आयोध्यिका वा वदरीशमाश्रया

समन्ततो व्याप्तकलाप्रणम्यते ॥ ९८ ॥

नानाऽवताराभुवनत्रयस्थिता

कृपावती कापि कवीश्वरार्चिता

दयादती मंगलमूर्तिधारिणी

कलौ कलाशम्भुकिरीटमालिनी ॥ ९९ ॥

प्रतीक्ष्यमाणाधरणी धरावलि—

र्मालायिता लोलतरंगलालिता

सनातनी पुण्यप[illegible]

नवा नवेन्दुप्रभयेव हर्षिणी ॥ १०० ॥

द्वारं हरिद्वार इति प्रभा[illegible]

मोक्षाभिधं मातृवरप्रसादतः

गन्तुं महायोगि पथानुसारतो

धर्मप्रियैराशुतवानुकम्पया ॥ १०१ ॥

देहे नवद्वारनिभो नु सार्थकः
भक्तेर्नवप्राग्रपथः प्रबोधितः
सर्वांगपूतस्य जनस्य जन्मनः
सौभाग्यलाभो भवदीयमायया ॥ १०२ ॥

गताऽगतेनात्र परिश्रमोऽधिको
युगान्तकालावधिजन्मबीजतः
पुष्पौषधीवात्र सुगन्धिसंगतः
सुसौरभं भाग्यफलं सुदुर्लभम् ॥ १०३ ॥

जन्मान्तरेऽद्यापि चिरं सुखोपमं
सुधोपमम्वा मनसाविचारितम्
तवामृतं विन्दुलवं नवं नवं
पीत्वामुदायान्ति हरेः पदं ध्रुवम् ॥ १०४ ॥

नरः कथन्नात्र भृशं प्रसन्नता-
माधाय नित्यं हृदये विधानतः
दयानुबन्धं धरणीधरायुषां
सुसौख्यशान्त्यै व्रतिनो जयन्ति ते ॥ १०५ ॥

स्नात्वा च तृप्ता जलजन्तवोपि ते
निमज्ज्यमाना जलधारमध्यगाः
स्वभावतस्ते दययानुवन्धिताः
कालान्तरे मुक्तिपदं प्रपेदिरे ॥ १०६ ॥

जलं त्वदीयन्न विकारतां गतं
सुदीर्घकालेपि मनःप्रसादकम्
पुण्यौषधं रोगवरस्य शामकं
वैज्ञानिकैर्यन्त्रवरैः परीक्षितम् ॥ १०७ ॥

कथं ब्रुवे मातृपदं प्रभावतः
सर्वार्थकं पूर्णमहत्त्वमंगलम्
विराजमाना भवती स्वधारया
सुशीतलं भूतलमञ्जसाकृतम् ॥ १०८ ॥

प्रकीर्तितो यैस्तव एष संस्तवो
देवैर्नरैर्वा प्रणतैर्मनीषितः
निवारयन्तापवरं प्रपञ्चतो
विमुक्तिकारी जयतीह संस्तुतः ॥ १०९ ॥

दशोत्तरन्ते शतकं स्तुतं मुदा
मयाऽबुधेनानिशमन्यथाकृतम्
कवित्वशक्तेरनुरोधवर्जितं
स्वीकृत्य मातः ! क्षमया प्रसीदताम् ॥ ११० ॥

मनोभावप्रस्तुतिः

वन्द्यस्समे सिद्धिपथावधानै—
रैश्वर्यलीलायितमञ्जुहासैः ।
आनन्दसिन्धोरभिधानमूलः
सर्वेश्वरः कोपि हृदि प्रभासताम् ॥१॥

सर्गान्तलीलाखिलखेलनाय
नीलाद्रिनाथोऽमरसंघवन्द्यः ।
दिव्यातिदिव्येन कलेवरेण
सर्वान्तरात्मा जयति प्रसन्नः ॥२॥

नामीजनाः धर्मपथप्रयाताः
संसारसिन्धौ सततं निमग्नाः ।
सन्त्राणकारुण्यदयावरीया
दृग्गोचराः सन्तु सदैव मातुः ॥३॥

मध्याह्नकालः कलिकालजन्तोः
सम्मर्दनं सर्वजनस्य तीक्ष्णम् ।
मेघायमानः परिपालनार्थं
प्रसीदतां कोपिकलानिकेतः ॥४॥

श्रुतिस्मृतीनामितिहासवाचां
श्रद्धावतामाननमंगलश्रीः ।
लक्ष्मीः स्वयं ब्रह्मरतव्रताना—
माभासयन्ती मुखमण्डलं स्यात् ॥५॥

यतीश्वराणामिव कामधेनो—
यंशं चिकीर्षोर्भवजीवराशेः।
सम्प्रार्थयन्त्याः सुरदेवतायाः
कस्या अपि प्राणवती दया स्यात् ॥६॥

सुधापगावीरप्रसूदराभा
मही महीपालललामलीला।
नारायणीवार्थकरी प्रसादा
सतां मनीषेव हि सुप्रभाता ॥७॥

रयीप्रसूतिस्सुफलावसाना
प्रीतिः प्रजासु प्रणयप्रधाना।
मूर्तिर्मनोहारिपरिस्फुरन्ती
सम्मानितास्तु ममनेत्रधाम्नि ॥८॥

कृपालुतायास्तवभक्तिभूमेः
पारन्नवानापि तदर्थशक्तिः
दयाम्बुराशे! भवसिन्धुमग्नः
कुतस्त्वदीयं शरणं व्रजेऽहम् ॥९॥

प्रतिक्षणं पापमनन्तरूपं
कुर्वाणएवास्ति जनस्स्वभावात्।
कल्पान्तजन्मान्तरकोटिजन्यः
स्वल्पोऽस्य पुण्योदय एव नास्ति ॥१०॥

जनिस्सतां पुण्यवताञ्जगत्यां
केषाञ्चिदस्तिप्रथमाभिधाना।
वेदांगवेदान्तपथव्रतानां
शुभप्रभातेव महोत्सवाय ॥११॥

चारित्र्य संस्कारसुभाविताये
महर्षिराजर्षिमतस्थिताश्च ।
तेषाम्मनो धर्मरतं प्रजाहिते
ते भाग्यवन्तो भुविजन्ममुक्ता: ॥१२॥

नारायणेनैव नरप्रयासे
धर्मार्थमोक्षेऽभिमतेऽन्तकाले
प्रवर्त्यमानेऽमरपूण्यगेहे
प्रादर्शितेजस्स्वयमेवगम्यम् ॥१३॥

रक्षानिधि: कोपिकवीश्वराणां
सन्तारणार्थं भवसिन्धुमग्नान्
नारायणेनार्थितधर्मभूमौ
प्रपत्तिविद्याऽभयमूलमन्त्र: ॥१४॥

प्रवर्तितोऽनन्यगतीश्वरीयो
य: कश्चिदेषोऽमलमन्त्रराज: ।
मन्त्रद्वयोवा चरमस्तथान्यो
विष्णो: पदप्रापयितार एव ॥१५॥

समेघमानेवकुपालवंश्री:
लक्ष्मीपते: पूर्णदयार्द्रतीरा ।
जीवावने प्रेममयप्रवाहा
नदीवराकापि मनोऽभिरामा ॥१६॥

पीयूषपानाय न जन्मजन्तो:
भूमौ स्वकर्तव्यनिभालनाय ।
समीक्षणार्थं प्रणतामहो किं ?
चारित्रनिर्माणपथे रतानाम् ॥१७॥

कुपितकालकरालगतेर्लवो
जगतिजन्मभृतामपिसाम्प्रतम्
विविधपापपराभवदासतां
नयति दुःखदवाग्निपथं ध्रुवम् ॥१८॥

प्रणतिराशु तवैव पदाम्बुजे
पतितपावनधामदयान्विते।
सहजसंकटकोटिहरे वरे
भवतु प्रीतिमयी ममभारती ॥१९॥

सदयराशविहारिणिमाधवे
हृदयधाममहेश्वरवन्दिते।
त्रिविधतापनिवारणशक्तिदे
भवतुभक्तिरसोदयतारतिः ॥२०॥

रचितरंगमनोहरमन्दिरं
सविधिसंग सुदूरपथप्लुतम्।
हरिपदाश्रितरागरसार्द्रकं
मधुरमूर्तिधरं शरणं भजे ॥२१॥

भवतु नाथ तवाननमायया
जगतिशान्तिसुधांशुमितानया।
परमपावनभूमिसमाश्रिता
सुरुचिराशु ममापि तवानने ॥२२॥

रहसि नन्दकिशोरपदार्पणं
मनसि वाचि सुरार्चित मंगलम्।
नियति भक्तिवराश्रितवैभवं
सृजतु शान्तिकरं शरणार्थिने ॥२३॥

धरणिधाममनोहरविग्रहः
कलितकान्तिधराऽरुणभासुरः ।
नयनवीथिविहारिविलोकितो
जयतु कोपि यतीश्वरपूजितः ॥२४॥

द्रवितशब्दसमर्पितसाधनं
शुभगमन्त्रमनोहरताश्रयम् ।
निगमतत्त्वसमामलकीर्तितं
परमपूज्यपथं हरिमाश्रये ॥२५॥

हरिहराश्रितरंगतरङ्गितो
व्रजभुविप्रणयातुरधावतः ।
मम मनोहरभावविभावितो
जयतु ते महिमा प्रणताश्रयः ॥२६॥

सबलसञ्चितपुण्यलवेन किम् ?
तरुणतापनिवारणमर्थतः ।
जगति जन्मभृतामपिभाग्यतो
भवतिभक्तिमतीसुमतिश्शुभा ॥२७॥

चरणपंकजमाशुसमाश्रिता
तवकृपालवलीनमनोदशा ।
मधुपरागसुधाधरपानतो
मधुकरीव कदा भविता नु मे ॥२८॥

विहरताऽमरमण्डितमण्डपे
यदि कथाऽऽकलिता न हरेरहो ।
श्रवणगाऽऽतुरमानसमन्दिरे
भुवितदाजनिरर्थकरी कथम् ? ॥२९॥

चरणपंकजचारुविभावित:

स्वजनसंगसुरम्यविलासत:

विरतभावभराश्रितदेहिन:

प्रणय आशुकथं त्वयि जायताम् ? ॥ ३०॥

निहतकल्मषकल्पकलेवरे

निहितभक्तिभरे हृदिपावने ।

नयनवारिमुरारिपदाम्बुजे

श्रवतु किन्न दया तव मामके ? ॥३१॥

भुवनभासितवेदविदांमते

श्रुतिसहोदर दीप्तिरभीप्सिता ।

सदयभक्तिरसद्रवभूमिका

भवतु कृष्णपदाम्बुजसेवया ॥३२॥

नहि कृपा यदि भक्त जनेष्विह

प्रथितकर्मपरायणदेहिषु ।

भवति संशय एव सतामहो

अत इतो भवतो वचनीयता ॥३३॥

क्वच ममेह निमेषनियन्त्रणं

मनसि भोगविधेरवधारणे ।

विपदि देहद[illegible]सर्गत:

पतितपावननामनिमालय ॥३४॥

न च बुधो न च ती[illegible]णं

यजनयोग्यवरोनहिं देहभृत ।

कुपथगामिमनाविचरन्नहो

सुखलवं स्वयमेव कथं लभे ? ॥३५॥

पठितशास्त्रसमादरभाषया
विहितयज्ञविधेरवधारणे।
सततमेवहृदाननुपालने
कथमयं भवतु प्रणधारकः? ॥३६॥

नियतिबोधसमीक्षित रागतः
सुरगणैरभिभासितलोकतः
प्रतियुगं करुणाकरदैवतं
भवतु पालनयोग्यवलं कथम्? ॥३७॥

नरवरः पुरुषोत्तमनामतो
जगति वन्दित एव न संशयः।
सहजतोऽधमतारणभावनो
द्रवति दिव्यतनुर्जनपालने ॥३८॥

विविधवन्धनकर्मकृतां सतां
जननमृत्युभयं भवदेहिनाम्।
सुचिरमेव कुयोनिषु धावतां
शरणमाशु हरेरनुभूयते ॥३९॥

यतिवरैश्श्रुतिसम्मतसंस्तवैः
हरिपदाम्बुजभक्तिविधायिभिः।
निखिललोकविशोकदयालुभि-
र्नयनगोचर एव हरिस्स्तुतः ॥४०॥

प्रणतपाल! कृपालवर्दशितो
मधुरमन्दमनोहरलीलया।
जगति कल्पतरोरिव कामदो
जयतु कोपि कवीश्वरवन्दितः ॥४१॥

सततमेव समादरभाजनं
विदितसर्वसुखावहकारणम्
परसधामधुरीणधराधरो
लसतु मानसमन्दिर एव मे ॥४२॥

निखिलजीवगणाऽभ्युदयेरतः
प्रचितवेदविधेरवनेऽनिशम्
विविधरूपरसोदयधारया
हरतु पूर्णतमो हरिरर्चितः ॥४३॥

कुमतिकीर्णतमोहर शेमुषी
कथमहो शुभभाग्यवशादपि
विमलकीर्तिकलाननभासिनी
भवति कापि हरेरनुभाविनी ॥४४॥

विविधपापपराश्रितधिषणया
मनुजमंगलमाशुविखण्डितम् ।
त्रिविधतापवशीकृतदेहिनां
नरकभोगपथे पतनं ध्रुवम् ॥४५॥

यदपि नाथ ! ममेप्सितकर्मणः
परमधर्मफलाश्रयदर्शने
निमिषमात्रमपीह न वैधता
तदपि देववरो मम रक्षकः ॥ ४६ ॥

न खलु दुःखमहानलदग्धया
मम गिरा भवतो निखिलागुणाः ।
प्रतिपदं मनसापिहि संस्तुताः
पदसरोरुह एव ममाश्रयः ॥ ४७ ॥

परमपुण्यपथाऽवनिधावतां
निगमधामदयामयभावतः
प्रणयपूर्णकलाऽवनदेहिनां
भवतु नाथ ! तवोदयभाग्यता ॥ ४८ ॥

चरणपंकजलीनमतीदृशी
गतिमती निरता विरता न वा।
चरणरागपरागपरायणा
भवतु भाग्यवतामिह धारणा ॥ ४९ ॥

भवदरीदरिदृश्यकलावती
कलुषकंटककीर्णपथोन्नता
सहजसंकटमेव मनोरथं
दिशति पापरताय मनोदशा ॥ ५० ॥

चरणपंकजधूलिकणाप्लुतः
परमभाग्यवशादिह मानवः ।
विदितवेदविधौपरमेश्वरे
भवति कोपि कलामय आनतः ॥ ५१ ॥

परमभोग्यभयावहधर्मिणो
विविधयोनिगताऽध्वनियातना ।
नयनवारिदृशेव सुमूर्च्छना
कथय नाथ ! फलं मम जन्मनः ॥ ५२ ॥

नभसि सूर्यशशीव विभान्वितो
विरल एव जनो दिविभाग्यतः ।
परमधामधियाभजनाश्रयो
जयति जन्मधरामखिलां शुभाम् ॥ ५३ ॥

प्रणयकोपकथामृतपानतः
तरुणतापतमोहंरकल्पकः
विधुरलोककलेवरवासनां
परमभोगगतिं मनुते जनः ॥ ५४ ॥

अहहभाग्यवतामिहशाश्वती
विषयमोहविभेदनसत्क्रिया
सुरुचिरामपदाब्जपरागतो
धवलकीर्तिकलाभुविभासते ॥ ५५ ॥

मनसि मंगलमूर्तिमयी दया
करुणया ममतासमताऽदरा
स्वजनजन्मजरान्तकरीदशा
विशतु रामदयादरदेशिका ॥ ५६ ॥

हृदिशुभाशयतामहिताऽनघा
कलिमलाखिलपावनजाह्नवी
भवभयावहहारिपथाश्रया
हरिकृपा मम मानसगोचरा ॥ ५७ ॥

सुखदराशिरिवामरलोकतः
परमनीति नवोदयरेखया
नरहरेरनुभावविधिस्त्वयं
प्रकट एवजनाऽवनलीलया ॥ ५८ ॥

प्रणतिराशुरमाश्रयपादयोः
सुमतिरर्थवराप्रभुदर्शने
कृतिकलाकलिता कमलेक्षणा
भवतु भक्तजनस्य हरेर्नवा ॥ ५९ ॥

क्वच न मे प्रभुपादपदाब्जयोः
सविधिभक्तिलवोपि कदाचन
क्वच स नाथ इहार्तमनोरथो
नयनधामगतो ननु भाव्यते ॥६०॥

यदपि कीटपतंगकुयोनिषु
भवति जन्म यदीशदयाच्युतम्
तदपि दीनदयालकृपालयो
भवति दुःखभवार्णवतारकः ॥६१॥

नियतिनीतिनवाम्बुजशोभया
करतलालयधारितलीलया
जगदनाथवशीकृतमायया
त्रिविधसृष्टिधरः प्रतिपद्यते ॥६२॥

कुपथकंटकविद्धपलायनं
न खलु वाक्यमहोपततां सताम्
भवति नाश्रय एव विमोहतः ?
कथय नाथ ! कथं जनरक्षणम् ॥६३॥

विहितवेदविधा भववारणे
ललितलोक इवाध्वरधारणे
विदितरूपमनोहरभाग्यके
सहज एव सतां रुचिरर्पिता ॥६४॥

यजनयाजनदानसुसेवया
परहितार्थपरायणमानसाः
सुरतरोरिव सर्वसमीहितान्
दधति धर्मबलाः प्रतिकल्पतः ॥६५॥

कृतयुगे प्रतिवासरमग्रतो
यदिदयोहितधर्मपथाश्रया
प्रबलभावशुभोदयभाग्यता
नहि वृता भुविजन्मनिरर्थकम् ॥६६॥

निमिषमात्रमपीह विधर्मतो
नरकभोगकृते बहुयातना
निमिषमात्रमभीक्ष्य सुधर्मता:
नयति धाम हरेरनुरोधत: ॥६७॥

कपटनीतिपथाश्रितसांसदा:
नगरराष्ट्रदिशा विधिनाशका:
जनमतार्थितनीतिविधायका:
कथय किन्न विभान्ति महाग्रहा: ? ॥६८॥

परमपूज्यवरा विबुधाश्रया:
विविधनीतिनिभालननायका:
भरतनामसुचर्चितमानसा:
भरतभूमिमिमां शिरसानता: ॥६९॥

मलिनधाममनो ममतान्वितं
यदपि नाथ ! न धन्यतमं ब्रुवे
वचसि नास्ति हरेरनुबन्धिता
तदपि देववरो जनरक्षक: ॥७०॥

विसर्जितश्श्रीर्भववारिधौ स्वयं
कुकर्मकुष्ठांग विशीर्णपादप:
नरो न कस्यातिविनिन्दको न वा
यथाऽधुनादृष्टिपथं गत: खल: ॥७१॥

स्वधर्मं सेवावसरप्रवर्धने
मनस्विनः प्रेमपयोदसम्पदा
सहर्षमेवास्ति तपोमयीक्रिया
प्रशंसिता देवगणैरपिध्रुवम् ॥७२॥

न ह्यास्यमेवाऽमरवाणि संस्तुता
जगज्जनिर्जीवगणस्य भाग्यतः
विभोः कलाऽऽलम्बितदेहमन्दिरे
हरिस्स्वयं सन्निहितोऽभिवन्द्यताम् ॥७३॥

निरीश्वरस्यापिसदानुभूतितो
निसर्गतो धर्ममयी कलावतः
समग्रलोकोदयभावभंगिमा
क्रियामुखी शान्तिकरीमनस्थितिः ॥७४॥

विवर्जितालोभगता मनस्विता
सक्रोधकामानलभस्मतां गता
न कस्य दुःखाशयपंकमण्डलात्
समीहितावृत्तिरियं विमृश्यते ? ॥७५॥

हरत्यघं देववरो निमेषतः
पदाम्बुजेस्वस्य विलीनचेतसाम्
निराश्रयाणां भवसिन्धुमज्जतां
सेतुस्स्वयं कृपावतो नयः ॥७६॥

हरिस्समस्तस्यविभूतिदस्य वै
प्रभुस्सखाऽऽचार्य विशुद्ध चेतसाम्
गुरुः पिता वंशधरश्च कीर्तितः
संसारसिन्धोस्तरणाय नाविकः ॥७७॥

हरोविरञ्चिः सुरशेषशारदाः
गन्धर्वविद्याधरयोनिपार्श्वगाः
समस्तयोगीश्वरसाधकाश्च ते
समाश्रयन्ते हरिपादपोतकम् ॥७८॥

मनुर्मनीषी विबुधाश्रयोगुरुः
स्वधर्मशास्त्रप्रणयप्रसंगतः
पवित्रलीलाऽवनिपुण्यजन्मनां
हरेः कृपालेश फलं शुभं दधौ ॥७९॥

निवारिताया ममतामहादिशो
भयावसानं भवजन्मजन्तुनः
हरेरनुज्ञाधरजीवनान्तिका
कलाहरेः कापि शुभा शुभाप्यते ॥८०॥

नयस्य नेता नवनीतिनायकाः
सभासदः सर्वजनानुरञ्जने
स्वधर्मनीत्यैव समावृता यदि
तदैवलोकस्य हितानुसंशकाः ॥८१॥

परशुराम ! दयामय ! भारते
पुनरद्य खिलभूमिविखण्डने
सुखदनीतिविदारणशासकाः
विमुखधर्मपथाद्वि विधायकाः ॥८२॥

न यदि शासननीतिसाधनं
निखिललोकनयो ननु हीयते
भरतभूमिहरान् वसुताहरान्
शुभसनातनधर्ममयान् कुरु ॥८३॥

हिताहिताभ्यां महिपालनीतिमान्
पदार्थराज्याश्रितसर्वसम्पदाम्
नियोगनिस्तारणपूर्णसञ्चयः
प्रजासुखं भावयतीह धर्मतः ॥८४॥

मनीषितस्याखिललोकभूभृतो
दयार्द्रतादेशहिताय सात्त्विकी
समा च दृष्टिः सकलार्थचिन्तने
पुराणशास्त्रप्रथिता हितावहा ॥८५॥

न वैरभावं न च मित्रमान्यतां
परस्परं भेदविगर्हिताञ्च वा
प्रवर्धयन्तो जनता प्रतिष्ठिताः
विधायकाः सांसदपुण्यमूर्तयः ॥८६॥

अयं च लोको नरदेहधारिणां
सुपुण्यलीलोपयिकः प्रसादतः
समर्पितो धर्मपथावधीरिणा
सुकर्मतो वै हरिणा स्वभावतः ॥८७॥

दरिद्रतायाः भवितव्यता च का ?
धनस्य भक्तेरवधारणा च का ?
स्वधर्मनीतेरवमानना यदा
तदा स्वयं भाग्यदशाविलक्षणा ॥८८॥

सुरक्षया शाश्वतवृत्तिमायया
भयातुरस्य प्रणयः कथं भवेत् ?
हरौ स्वधर्मे भुविकर्मसञ्चये
समर्पितस्य प्रणतिः प्रवर्धताम् ॥८९॥

महोसुरस्य प्रथमंप्रयासत:
समग्रसंसारहितं विवक्षितम्
स्वधर्मनीतेरवधारणाय वै
सुशिक्षयाधर्मपथोऽभिरक्ष्यताम् ॥६०॥

नवीनता नैव जनोपकारिणी
स्वतन्त्रताऽधर्मपथाऽनुधावताम्
सुकीर्तितापुण्यफलानुबन्धिनी
विभोर्महानन्दकलेव वर्धते ॥६१॥

सहर्षसंघर्षकरस्यदेहिन-
स्त्रिदोषदावानलमध्यसीदत:
निदानमेवात्र सदावलम्बनं
भवेदहो नाथ ! पदाम्बुजञ्च ते ॥६२॥

अनन्तकल्पावधिदु:खभोगत:
सुरम्यरागोहितरोगयोगत:
प्रणम्य वेदार्थमतप्रसन्नया
हरेस्सदा को दयया न रक्षित: ? ॥६३॥

सरीसृपोयोनिगताहि जन्तव:
सदा स्तवन्ते मुदमानसा ध्रुवम्
विभावयन्त: सततम्मन:स्थितं
सुखप्लुतास्ते परमार्थत: प्रिया: ॥६४॥

सुखावहं विष्णुपदारविन्दयो:
परागविन्दुं मनसाविभाव्य वै
नितान्तमेवाऽभयमाप्य जन्मत:
कृतार्थयन्तो जननीं भुवं नता: ॥६५॥

न शास्त्रसौहार्दरतामनस्विनो
युगेऽधुनाकेपि कथावशंगताः
दयार्द्रभावच्युतकल्पनाश्रयाः
कलाविहानन्दपथंदिदृक्षवः ॥९६॥

न मानसीया भुवि भारतीयता
वचस्सु नास्तीह सुधालवश्रुतिः
न देहगेहे गरिमेव भासितः
प्रकाशद्वीपोपि न वा विदीप्यते ॥९७॥

मनोवचोभ्यामखिलाक्रियाऽधुना
प्रपञ्चपाखण्डपरायणा कथा
हिताहितप्राणगतेर्नवानवा
मनोहरा सा फलिता मतिः स्पृहा ॥९८॥

न मन्त्रणाशास्त्रमतैरुपासिता
समस्तकल्याणकरी न सत् क्रिया
पुराणशास्त्रप्रथया न भावना
भवौषधीवान्यतमा विचिन्त्यते ॥९९॥

परस्य निन्दाश्रवणप्रसंगतो
निजस्य सत्कीर्तिकथावभाषणम्
स्वधर्मदीक्षेव मताप्रवृत्तिका
विनाऽभिमानं न मनः प्रसन्नता ॥१००॥

सदीक्षणन्नैव दयार्द्र भावतः
समीक्षणन्नैवनिजाऽपराधके
प्रतिक्षणन्नैव हरेरवस्थिते-
र्विचिन्तनं नैव कुतस्सुखश्रुतिः ? ॥१०१॥

हरेरवज्ञामवधार्य कल्पतो
निपातमेवास्य जनस्य संकटे
शरीरभोगायतनप्रपञ्चतः
सचेतसो मुक्तिकरी प्रपत्तिका ॥१०२॥

गुरोः प्रसादादिहदीर्घनौकया
भवाब्धिपारं नयनेप्रपत्तितः
प्रभोः प्रपन्नस्य समाश्रयाऽनया
सुदीक्षया किन्न जहाषि यातनाम् ॥१०३॥

स्वतो न बोधो भवबन्धकारणात्
तथा धृतिर्नैवप्रपत्तिसञ्चिता
न वा श्रुतेरर्थहिते प्रवर्तना
पदे पदे सास्ति जनाववञ्चना ॥१०४॥

कथं प्रभो ! प्रेममयो प्रभावती
कलावतस्ते कलिता दयावती
दयालुता सर्वजनाभिदर्शिनी
हिताय लोकस्य वृताऽनुबन्ध्यताम् ? ॥१०५॥

पराशरो व्यासगुरुर्वशिष्ठतः
पुरावृतौ शास्त्रनयेन शिक्षितौ
निधाय विष्णोश्चरणाम्बुजे हृदि
महर्षिणौ लोकहिताय सम्मतौ ॥१०६॥

सनातनेब्रह्मणिलीनदृष्टयः
सनत्कुमारोऽथ सनन्दनश्च सः
सनातनो वै सनकश्च तापसो
नरश्च नारायणधर्ममाश्रिताः ॥१०७॥

यतीश्वरा वैदिकमार्गसंरता:
व्रते स्थितास्संयतधर्मदृष्टय:
प्रजेश्वराणां हितबोधने रता:
सदास्मृता भान्ति हृदिस्थिताश्च ॥१०८॥

त एव सर्गस्थितिनाशकारणं
निमित्तमात्रं नवधा निसर्गत:
प्रपत्तिभक्त्याहितवन्दिता ध्रुवं
परिप्लुता: विष्णुपदं प्रपेदिरे ॥१०९॥

कथानकस्यास्य विबोधनाय य:
स्वयं सदाचार्यवरस्तनुर्भुवि
प्रकीर्तितश्शाश्वच्छास्त्रमुक्तिभि:
स नाथ एवात्र परं मतम्बलम् ॥११०॥

नगण्य एवास्मि कुमार्गसेवनात्
न वेदविद्याऽनुमत: स्वधर्मत:
निषिद्धभावोहितमानसीगति—
र्नमस्क्रिया नापि विभो: प्रसादिका ॥१११॥

कलंक एवात्र मदान्धमानस:
प्रपञ्चमायांग कलत्रकल्पितम्
सुदु:खितस्यार्तजनस्य रोदनं
कथन्न हे नाथ ! निवार्य्यंते ध्रुवम् ॥११२॥

उपायनीतस्य विधेर्विधानत:
सुकर्मण: संवरणं समासत:
सदर्थचिन्ताकरणं स्वभावत:
सदास्तु बुद्धिस्तवपादपंकजे ॥११३॥

न मे स्पृहाभोग्यवरेऽत्र साम्प्रतं
पदारबिन्दातिरतेर्विना तव
न भक्तिभावोपि कदापि जागृतः
कथं तवास्मीतिविभावये मतिम् ॥११४॥

न निर्गतो मे मनसि स्थितोऽधुना
रजो गुणो वा तमसः प्रतिक्रिया
न सत्त्वसत्यार्थं पराविचारणा
कथं हरेर्नाम भजे प्रसन्नधीः ॥११५॥

हरिश्रितो भक्तिवशं गतो न वा
गृहीतदीक्षोभयमुक्तमानसः
गुरोः कृपालम्बबलं विधाय वा
जनः स्वयं धामतवाश्रयं गतः ॥११६॥

न दीनता स्वादरभाववर्जिता
प्रकर्षलीलामय नाथ वन्दितः
प्रसन्नलोकः प्रणतः समर्पितः
प्रपत्तिमार्गे नियतादया च ते ॥११७॥

प्रसन्नदेही गृहदारमोहतः
सुदुस्त्यजो नैव कदापि वर्णितः
समर्प्य सर्वात्मनिधिं प्रणम्य वै
सुदर्शनाय प्रणयीतवास्तु सः ॥११८॥

समस्तदोषान् निजवाङ् मनोभवान्
विगर्ह्य सम्यक्परकीय भावान्
सभाजयन्त्योऽन्यगुणाग्रहो वुधाः
प्रसादयन्तो जनता प्रसंशिताः ॥११९॥

स्वकीयदोषान् हि विगर्ह्यंयन् जनः
परस्य तोष्टूय्यगुणप्रहर्षतां
सदाऽत्मनोऽनन्तमहापराधतां
प्रकाशयन्नस्तु विनम्रभावनः ॥१२०॥

गवेषणालोकहितापकारिणी
कुपोषणेवामलमूलनाशिनी
विदग्धताहीनकला मनोगता
प्रसन्नता हानिकरी विनिन्द्यते ॥१२१॥

हरौ मुदाऽऽमोदभरी दयालुता
विभूतिरम्यैरखिलैस्सुसंगतैः
उदारताऽनल्पगतैरुपस्तुता
सतां स्वतन्त्रैरभिवर्धतां कृपा ॥१२२॥

नखोदकं यस्य पदारविन्दयोः
जगत् पवित्रीकृतभूरिभाग्यकम्
प्रतिक्षणं लोकमलापसारणे
प्रसंशितं शम्भुमुनीन्द्रयोगिभिः ॥१२३॥

प्रवृद्धमोहो यदि कृष्णपादयो-
र्विलीननेत्रद्वयकोणमण्डले
तथामनोहारि (द्वारि) सशंखचक्रकं
सुलाञ्छनं भाग्यवलेन लक्ष्यते ॥१२४॥

मदो न नैजो हरिपादसेवने
हृदिस्थिता कापि रतिस्स्पृहा न वा
स्वदासताविष्णुपदेऽभयप्रदा
त्वदीयसेवावसरः प्रदानतः ॥१२५॥

स्वदासयोग्योस्ति जनः कथञ्चन
च्युताऽभिमानाखिलदोषसंवलः
सुलक्षणस्संयमितश्च सर्वतो
विभोर्दयादृष्टिगतस्सुरक्षितः ॥१२६॥

हृदिस्थिताः षड्रिपवो नु वैरिणो
दुराग्रहाः दुश्चरिताश्च जन्मतः
अजानतो मे वचनप्रकल्पिताः
जिताः कथंस्युर्भवतो दयां विना ॥१२७॥

विहिंसिता वै मनसापि नैकधा
प्रवञ्चितास्ते वचसामृषावृताः
जनाः मनोभावमदान्धकर्मणा
निधाय त्वामात्मनि जानता मया ॥१२८॥

सहिष्णुता क्वास्ति मयि स्वभावतः
तितिक्षया नैवकृतापि साधना
प्रगल्भता वाचि मृषा मनीषिता
नितान्तमेवास्ति भुविप्रवञ्चना ॥१२९॥

यदर्थमेवात्रनिजन्मदेहिनः
स्वमातृकुक्षिगतजन्तुजीविनः
स्ववर्णजातेरवधारणा कथा
कलावपीहान्तहरा हरेः कृपा ॥१३०॥

न यामि देवालयमाशु भक्तितो
नतो न विष्णोः पदपावनीं भुवम्
कृता सपर्य्या न हरेः प्रसादिका
तथापि देवस्य दयाविशालता ॥१३१॥

न पुष्पमालाऽमलनैष्ठिकीक्रिया
दिवानिशं वा प्रभुपादपद्मयोः
सश्रद्धया वा मनसावचोयुता
कृता कदापि प्रणिपातपूर्विका ॥१३२॥

जपो न मन्त्रस्य यथार्थतोऽधुना
क्रियाविशुद्ध न सदाहुतिर्नवा
प्रभोः परप्रेममयी न याचना
महारतेर्भक्तिभरा न भावना ॥१३३॥

निरस्तदोषो हि जनस्त्वदीयया
प्रधानया ते दयया नियोजितः
विलासभोगायतने शरीरके
निवासयोग्या न मनःक्रिया यदि ॥१३४॥

प्रधावतो मे विषयार्थकानने
द्विजातिधर्मस्खलनं पदे पदे
सुशिक्षयाऽनन्यरतेर्हरेरहो
प्रवर्धनं लोकहिते कथं भवेत् ॥१३५॥

अतो हरे ! ते पदकंजलोलुप —
स्तथाश्रियोमातुरवेक्ष्यमाणया
दृशानुकम्पी पतितस्तवाग्रतः
प्रवर्तितोऽस्तु प्रणयीजनो यथा ॥१३६॥

न यज्ञपूजाव्रतचर्यया तथा
जनो जगत्यामवतार्य्यतेऽनया
कृपादृशा ते शतकोटिजन्मनो
यथाबलन्ते शरणं भजेऽधुना ॥१३७॥

दिवानिशं मे वहुधाप्रकल्पितं
मनोवचोभ्यां दृढभक्तिकल्पकम्
व्रतञ्च सत्यं वचनं प्रतिश्रुतं
परं प्रभो ! नात्र कृतं प्रपालनम् ॥१३८॥

महत्त्वमीमांसितमानसे च मे
प्रवुद्धभावोहितसत्यसाधना
न वा तवोद्देश्यपथप्रवर्तने
प्रवृत्तिरेकापि तवानुगामिनी ॥१३९॥

वचोमनोहारि जगद्धितैषिणी
क्रियाकलास्वल्पमतेरवस्थया
गुणो न दोषो विविधप्रसंगत:
प्रवर्तितोऽद्यापि मया कुभाग्यत: ॥१४०॥

हतश्रिय: कस्य कुमार्गशोधनं
नतं शिरो मे शरणागतस्य किम् ?
विलज्जितस्याभयदानदायिन:
हरे: कृपातो भवतु प्रसन्नता ॥१४१॥

प्रजापते ! मे भवतोऽनुकम्पया
समीहितार्थ: सहसाप्रवर्धित:
दिविस्थिताश्चापि सभे र पूर्वजा:
त्वदीयलोकं प्रणता: प्रपेदिरे ॥१४२॥

नयन्त्यहो वाच इमाश्शु[illegible]
चराऽचरं नैकमताभिमर्शिनाम्
हरे: पदं योगिवरैरुपासितं
त्वदीय भावानुगतं न किम्भजे ? ॥१४३॥

न मातरं मे पितृं सखायुतं
कलत्रपुत्रादिमतञ्च तावकम्
समर्प्य सर्वात्मनिर्धि त्वदीयकं
स्वयञ्च वद्धोऽस्मि पदाम्बुजे द्वये ॥१४४॥

हे नाथ! नारायण! वासुदेव! ते
कृपाम्बुराशे! भवदीयकीर्तिताम्
विभूतिमेनां निखिलोपचारां
कथं कयाप्रीतिसपर्य्ययालभे ॥१४५॥

न मे वलं नापि मतञ्च सात्त्विकं
न वा यथाशास्त्रकला च पावनी
त्वदीयपूजोपरतिर्न नैष्ठिकी
कथं त्वदीयं पदपंकजं भजे? ॥१४६॥

न यज्ञदानोहितमन्त्रपूर्विका
क्रियाविशुद्धा तव भक्तिदायिनी
न सत्यवाणी भवभूतिसंचये
प्रयुज्यमाना सहजाप्रवर्तते ॥१४७॥

समृद्धिरेषा मनसा प्रकल्पिता
प्रपञ्चसाराऽनृतशब्दसंस्तुता
मरीचिकेवात्र मया विमुग्धया
धियाधरायां विहिता मृषाक्रिया ॥१४८॥

सर्मार्पितो नैव मनोधृतोवर:
प्रभुप्रिय: कोपिमनोरथो न वा
प्रतिक्षणं पापपरायणव्रती
कथन्त्वदीयो जनआशु वर्ण्यताम्? ॥१४९॥

न. देशसेवा न कुटुम्बपोषणं
मनोवचोभ्यां जनरक्षणोविधिः
न देहधर्मोबलसम्पदाश्रितः
वृतः कदापि प्रणपूर्णमंगलः ॥१५०॥

त्वदीय भक्त्याऽमरलोकपालकाः
लब्धास्पदा ब्रह्मपदाभिधायकाः
स्वयं न शक्ताः नरलोकभूतिदाः
तव प्रसादेनफलप्रदायकाः ॥१५१॥

धनंबलञ्चापि सुखोपलब्धये
जनेभ्य एवात्रवराभिधानतः
महर्षियज्ञेषु कृताधिवासिनः
जयन्ति देवाश्श्रुतिपारदृष्टयः ॥१५२॥

कृपा यदि स्याद् भवतोदयावशा
दरिद्रलोकोपि नृपायते सदा
नृपो दरिद्रायत आशुलीलया
इतीह मानेन न शान्तिराप्यते ? ॥१५३॥

परिश्रमस्तु प्रथमोऽधमोऽथवा
न शान्तिदो भक्तिविवर्जितस्य वा
वुधस्य भाग्यातिशयस्य जल्पतः
यदीश्वरे भक्तिमती न भावना ॥१५४॥

न सत्कुलं कल्पशतेन भाषितं
न तद्धनं धर्मविगर्हितं यदि
न पौरुषं त्रासकरं च शासनं
स्वतन्त्रता शास्त्रपरा न संशिता ॥१५५॥

दयामयी मानवताजनप्रिया
भयावहा दानवता नराश्रिता
चरित्रताशास्त्रमता कथं भवेत् ?
प्रवृद्धिमेतीति हता सुसंस्कृतिः ॥१५६॥

युगस्य धर्मो जनताघवर्धनं
प्रमादमोहानृतवाग्विसर्जनम्
स्वभावएवाशुचिताऽपवादनं
निकृष्टभावो नरकप्रदायकः ॥१५७॥

यथा पृथिव्यां फलदायिपादपाः
स्वतस्सुसन्तापनिवारणोत्सुकाः
समीपगस्यप्रणतस्य सादरं
तथा नराः किन्न युताः स्वधर्मतः ॥१५८॥

समुन्नताः धर्मपरायणा जनाः
सुवृक्षमालेव जनप्रसादकाः
दयाऽऽनताः सर्वजनाऽवनेस्वतः
नराः कथं नैव तथा सुशिक्षिताः ? ॥१५९॥

समाहितं यस्य मनस्तपस्यया
सुसंयतं यस्य वचोल्पभाषणे
वशेन्द्रियाणि व्रतचर्यया सदा
स वै नरो ब्रह्मपदं प्रपश्यति ॥१६०॥

न वा दरिद्रोऽर्थं हतो नु भाग्यतो
न वा धनी धान्ययुतोऽप्यधर्मतः
धनीदरिद्रौ हरिभक्त्यभक्तितः
प्रभापितौ धर्मपथानुसारतः ॥१६१॥

सुकीर्तित: कल्पतरूपमस्मदा
फलप्रदोऽन्यार्थधृतश्च विग्रह:
कृतीव कोपि व्रतपूर्णजीवन:
चराचरप्राणधरो भूभाग्यत: ॥१६२॥

न दैवतं दण्डमिवार्घ्यपात्रता
न वा क्षमा जन्तुयथोपकारिता
नवाऽमृतं देवपथानुगामिनां
निसर्गतो धर्मयुषां विमोचनम् ॥१६३॥

अनन्यसेवा हरिपादमूलयो:
परोपकाराय शरीरधारणम्
हरेर्नरस्यापि परस्परं भुवि
प्रधावतो: सर्वजनप्रसन्नता ॥१६४॥

न सर्गबोधो नरदेहधारिणां
मरीचिसंसर्गविवर्जितात्मनाम्
दिवान्धकारा गृहदेहदर्पणा
मतिर्न यस्यास्ति स दु:खमाप्नुयात् ॥१६५॥

कल्याणीवकला मनोहररुचिस्सर्वार्थदा प्राणिनां
मृग्यागेयगवीदिवौकसइवोदारावरा मंगला
राधाया विदिता महोपकरणामुक्तिप्रदासाधना
ब्रह्मानन्दसहोदर प्रकृतिकागोतिश्श्रुति: प्रार्थ्यते ॥१६६॥

मन्तव्याऽमरवाणिभावकलिता काव्यप्रथापावनी
भूत्यैदेशदशायुषां समरसा सौन्दर्यशुद्धिप्रदा
कीर्ति: काव्यकलावधाननिहिता रामायणीवार्थदा
सर्वानन्दकरी सदाविजयतां मामाधवी राधिका ॥१६७॥

निद्राव्याजनिमेषनेत्रकणिका सिद्धाश्रमे सम्पुटा
पूर्णप्रेमवशेन्द्रियस्यपरमा मुग्धांगनानन्दिता
कस्य प्रार्थनया शुभास्तुतिवरा जेगीयमाना नवा
हृद्यानन्दमनोहराप्रणयिनी ब्रह्मद्रवा सेव्यताम् ॥१६८॥

पुण्यापुण्यनिवेशमानमहिता दिव्यापगेवान्विता
कर्माधीनभुवोविधानमखिलं सन्धारयन्तीव या
नव्यावीथिमयीवधारधवलाकीर्तिर्यन्ेथाऽधुना
साऽत्रैवप्रभुपादपूतनिलया विद्येव धार्या भवेत् ॥१६९॥

विद्या सा सुवशासमेव सुभदा नैराश्यतानाशिनी
सद्यश्शान्तिकरीव कल्पतरुताप्राभासिनीवर्णिता
दिव्याऽऽभाऽमरभाविभोग्यविधुरा दुःखान्तलीलालया
भव्याऽभव्यदिशा विधाननयनानन्दं नवं यच्छतु ॥१७०॥

पूता धूता हरिपदरता धूर्जटेर्मौलिलीना
कल्पानन्तप्रबलवसुता संस्तुतेवार्थसिद्ध्यै
धन्या मान्यागिरिवरगुहावर्तमानेव वामा
लीलाधीना धवलरुचिरा देवता पातु लोकम् ॥१७१॥

वन्द्या वेदैरखिलमुनिभिर्माधवीमूर्तिराद्या
वीणापाणिर्धवलवसनाऽऽनन्दमालाब्जहस्ता
इष्टानिष्टप्रगतिवरदाऽऽभासमानेव धात्रा
ध्येया गेया निखिलविपदां नाशिनी संविदस्तु ॥१७२॥

गीता गंगा सविधिविदिते ज्ञानविज्ञानभूमौ
मोहाज्ञानप्रभृतिपतनप्राणिनां मोचनाय
विद्यास्नानं द्वयमिहविधिं ज्ञापयित्वा नितान्तं
शुद्धाचारप्रथितपथिकाः भाग्यवन्तो जयन्तु ॥१७३॥

मूर्ताधारस्सहजविहितस्सम्यलोकोदयाय
पूजाचारो विविधविधया वर्णितो धर्मसूत्रैः
कामक्रोधौ त्रिभुवनपथे निन्दितौ दुःखमूलौ
जित्वा सम्यक् सुगतिवरणो जायतां धन्यजन्मा ॥१७४॥

काचिद्देवी त्रिभुवनवराऽऽराध्यमानात्रिधान्या
यस्याश्शक्त्या सगरतनयाश्शापमुक्ता महर्षेः
ब्रह्माशम्भू हरिपद भवाया मुदा भक्तिभाजौ
पुण्यालीला ललितलहरी सा सदास्यात् प्रसन्ना ॥१७५॥

शम्भोर्मौलौनिहितवसतिस्स्वर्गपातालवासा-
प्यस्या भूमौ धवलतरलाशुद्धसाकारधारा
दैवी दृष्टिस्सहजशुचिताऽनन्तपापौघहन्त्री
ब्राह्मी देवी सुरमुनिवरैरर्च्यतां हृद्य विद्या ॥१७६॥

विद्याऽविद्ये सकलजगतां जन्मरक्षान्तलीले
प्रातस्सायं दिनकरइव प्राणिनां पूर्णतायै
ग्राह्याऽग्राह्ये प्रणतिवरदे मुक्तिदाभुक्तिदा वा
लीलोपाधी सविधिनयतो गीयमाने सदास्ताम् ॥१७७॥

दिव्यादेवी त्रिपथगतिका जाह्नवीवात्रवन्द्या
पुण्यालीला प्रणयपरिधिः प्रेमवीथ्यां निषण्णा
राधावाधाहरण सुधयाभा[illegible]मूर्तिर्भवित्री-
तीर्त्थं लीलाकलितकलयाकृष्णभूमिः पुनातु ॥१७८॥

हर्षामर्षौ नियतिनियतौ पुण्[illegible]ानुबन्धौ
लाभाऽलाभौफलितदशया दर्शितौ जीवनान्तं
यस्यानन्ताः प्रतिपदमितो मंघद्वारप्रबन्धाः
तस्यानर्हाः निखिलविपदः स्वप्नकल्पाविलुप्ताः ॥१७९॥

धन्यास्ते वै नियतिरभसा पक्षिराजप्रकर्षाः
सद्योविष्णोः परमपथगाः कीर्तिता भाग्यवन्तः
शुभ्रै रङ्गै रमलकिरणैः कर्षिताः प्रेमबद्धाः
वंशे वन्द्याः विदितचरणाः पावयन्ति प्रपञ्चम् ॥१८०॥

रक्षाधारस्त्रिदिवमहिमामण्डितानन्दसिन्धौ
मग्नो लग्नो हृदयपटले यस्य भावोविशुद्धः
नेर्ष्यादोषौ मदपरिणतौ वाङ्मनः कामजौ वा
तस्यैवार्थे जनकजननीजन्मभूमिश्च पूताः ॥१८१॥

नीती राज्ये प्रणवविहितानर्थमोषाय मान्या
पूजाश्रद्धाऽवनतशिरसा प्राणिनः प्राणवन्तः
राष्ट्राध्यक्षैः सचिवसचिवैरक्ष्यमाणायथार्थाः
राष्ट्रोन्नत्यै विबुधसमताः सर्वदैवप्रशस्ताः ॥१८२॥

मूर्खोराजा जगति जनता जन्मजातो रिपुर्वै
रोगाभोगा भवभयकराः जन्मभूमेश्च खण्डं
कर्तुं हर्तुं मलिनमनसा शान्तिमूलापकर्षे
वर्षे वर्षे सुकरविभवाः स्वार्थमेवाश्रयन्ते ॥१८३॥

श्रद्धाबद्धः परिणतवयाः स्नेहपीयूषवर्षी
हर्षीवान्तःकरणनिहितो भक्तिभावप्रबुद्धः
शत्रुं मित्रं सुखदवचनैर्भावयन्नल्पकाले
विश्वं सर्वं जयति सुतरां सर्वदा सर्वबन्धुः ॥१८४॥

कल्पानन्तं हरिरिहमहामंगलप्राङ्गणेऽस्मिन्
संसारे स्वं विविधवपुषा भावयन् भक्तिबद्धः
साङ्गं स्वाङ्गं विपुलरचनासर्जकं मूलमन्त्रं
क्रीडार्थं वा निखिलजनताप्रीतये पाति वन्द्यः ॥१८५॥

भूमिर्माता स्तनगिरिवरा भुक्तमालेव जीर्णा
भोक्ताभोग्या नृपतिवसुधा केवलं भोगभावैः
जातीसर्गे यदिसरसतो नास्ति लोकोपकारः
सत्यं नष्टं जगदिदमहो कोस्ति रोगोपचारः ? ॥१८६॥

वृद्धावस्था स्वजनरहिता रागवैराग्यतायाः
प्रज्ञावद्भिः सरसवचनैर्बोध्यतेवा समग्रः
जीवादर्शः प्रणवसहितैर्मन्त्रसिद्धैरवश्यं
सत्यं किं वा मम मनसि वै नैव शान्तिस्तदापि ॥१८७॥

स्वर्गो भूमिः किमिहशरणं ? नैव जाने हरिम्वा
धर्मारण्यं विपुलगहनं कंटकाङ्कप्रविद्धम्
मन्ये देहं नयनविधुरः कोस्ति सामर्थ्यशाली
शालीनो वा तरुणवयसा गाहनेऽरण्यभूमेः ॥ १८८ ॥

नष्टो मोहस्स्वजनपरता नापिसर्वात्मभावः
सेवाबुद्धिस्सुयश इयतापन्नभावप्रधाना
मिथ्यादर्शो वचनचतुरो वञ्चनातन्त्रसारो
भूमौभारोऽयमपिविधिना केन धात्रा सुसृष्टः ? ॥१८९ ॥

नादावन्ते प्रगतिकलयाऽऽलम्बितादेहसम्पत्
जीवो योद्धा मदरिपुगणं जेतुमत्राऽसमर्थः
शौर्यं चौर्यं विविधविषयैर्यस्य सर्वैन्द्रियैस्स्वैः
वन्दीभूतः स खलु विलपन्नास्ति त्राताऽत्र कोपि ॥ १९० ॥

नाहं जाने जननि ! जनकं ब्रह्मलोकप्रजानां
धर्माचारं कमलनिलये ! क्वासि मातः सुतस्ते
आसंसारे निगमविपिनं संश्रयन्तं मुकुन्दं
याचे सत्यं चरणशरणं देहि दासस्त्वदीयः ॥ १९१ ॥

सर्वं पापं विलयमधुना यातु मातुर्दया चेत्
नाम्नश्चर्चा शरणवरदैर्वर्णितापापमुक्त्यै
श्रीनाथस्य प्रणति युषतो रक्षणीयस्स्वभावः
त्रातुं शक्तोजननमरणक्लेशनाशाय हेतुः ॥ १९२ ॥

नित्यानन्दमहोत्सवप्रणयने यस्यास्ति लीलातनुः
मेघश्यामकिशोरचन्द्रकलया वृन्दावनस्थाऽवनिः
पद्मालंकृतमुग्धमंगलधना सर्वापदां वारिणी
सोऽयं नो विदधातु मंगलभरं प्रेमास्पदं मानसम् ॥ १९३ ॥

सर्वानन्दपरापरात्परतरा पुण्यौघलीलायिता
कन्दर्पाङ्कमनोहरप्रपदनप्रेमावहेवाधुना
जीवोद्धारमनीषिताशुवरदा कारुण्यवारान्निधिः
लक्ष्मीदृष्टिदयावहाशरणदा दिव्यात्सदा मंगलम् ॥ १९४ ॥

शाकद्वीपबुधान्वयप्रणयिनश्शौरेः परब्रह्मणः
सप्तद्वीप महीसुरानियमिताः क्षीराब्धिशेषाश्रित–
स्याज्ञाधाणरसर्वंशास्त्रविदिताः पूज्याः सदाभारते
विज्ञायज्ञकरा हरेरनुमतादिव्या मगा भूसुराः ॥ १९५ ॥

जम्बूद्वीप भुवोऽन्तरिक्षगतयो विद्यातपोभूषणाः
श्रीविष्णोश्शरणागतानियमतः कण्ठस्थया भाषया
तस्यैवाननजन्मधामविहिता वन्द्या भुवोभूतये
सृष्टाश्शान्तिवहाद्विजाग्रतनयाः कृष्णप्रियाः संशिताः ॥१९६॥

विष्णोर्यानिवरेण भारतभुविप्रीतामहावैष्णवाः
नीताधर्मधिया मुदानुविनतापुत्रेण कृष्णाज्ञया
येऽत्राद्यापि महामनीषिवरदा द्वारावतीवासिनः
आर्यावर्तं भुवश्शुभाय विदिता भान्ति स्वयं कर्मणा ॥१९७॥

ब्रह्माराधन विद्यया सुगतिदाः प्रोक्ताः पुराणेऽप्यथ–
प्रौढा वेदपथानुगम्यमतयो विद्यामया जीवनाः
दिव्या देवदृशः सदासमरसास्सेवापरानित्यशः
गीता भारतभूमिधामनिलयैर्विप्रैर्मुदा धर्मतः ॥१९८॥

तेष्वेवात्र महातपोधनवरः श्री विट्ठलार्योबुधः
सीताजन्मभुविप्रसन्नहृदयो वेदान्तकल्पद्रुमः
वेदव्याकरणेपुराणनिखिले लब्धप्रतिष्ठादरः
शाकद्वीपकुलारविन्दतिलको मे पूर्वजोवर्णितः ॥१९९॥

श्रीमान् विट्ठलदास जन्यजनको विष्णोः पदप्रापकः
स्वीयेमान्यकुलेऽत्र पुण्यविभवेभादत्तनामाभिधः
भक्तो यो नरसिंहदेवपदयोः सन्दर्शने भाजनं
वंशेनोऽत्र चिदीश्वरप्रणवभूः संप्रार्थ्यते श्रद्धया ॥२००॥

देव्यः काश्चन पूर्वजाममकुले पातिव्रतेनैष्ठिकाः
पत्युः पार्थिवदेहदारुसमये पातिव्रतप्रेमतः
पञ्चत्वं मुखवह्निदिव्यकिरणैर्जाताः स्वयं तेजसा
लीलाधामकलेवराः पतियुता धर्मप्रियामातरः ॥ २०१॥

तासामेष जनो महाऽबुधवरो मायानुगोलिप्सया
शास्त्राभ्यासविमुक्तभोगनिरतो वद्धादरोमोहतः
सर्वत्राणतपोविधानरहितः स्वार्थीव भूमौ भ्रमन्
कल्याणाय न कोपि शास्त्रविहितो धर्मोऽधुना कर्मणाः ॥२०२॥

का वार्ता ? यदिरामरीतिरहिता कृष्णस्य गीतिश्च का ?
कोवाऽऽचार इहानुभावविधुरः श्रद्धावतां संचितः
संख्येया गुणधामधर्मनिपुणाः ये सन्त्युपेक्षां गताः
एकैवास्ति निजापराधसरणिस्तुभ्यम्मयाज्ञाप्यते ॥२०३॥

विद्याऽऽभासकलापि नास्तिशुचिता सांसिद्धिकी वासना
कल्पानल्पनिसर्गमोहवशगाबुद्धिश्च वक्रंगता
इच्छाशक्तिसनातनी विवशता संकीर्णतासंचिता
सर्वोपद्रव एव मामधिगतस्त्रातुं प्रभो ! त्वां वृणे ॥२०४॥

को वा लोक विशोकभावनपटुः ? जन्मान्तरे वा वृतः
हित्वा मामपि सर्वदेवनिलयः किं वा दयां नेच्छति ?
साक्षी सत्यसमीहितार्थनयने शक्तो भुविप्राणिनां
सिद्धान्तार्थमवेक्ष्य नाथशरणं प्राप्तश्चिरं दुःखितः ॥२०५॥

वेदान्ते श्रुतिसारसौरभकणः पादाम्बुजप्रास्रवत्
ब्रह्मानन्दसरोवरस्त्रिपथगा भागीरथी भारती
वाणीवेदमयो दयापरवशालोकत्रयगामिनी
तादात्म्येन हि शब्दराशिरखिलो लोकस्वरूपं गतः ॥२०६॥

विद्यावेदमयीव कापिविदिता येनापि केनापि वा
नित्यानन्दसहोदरीव विहिता शास्त्रान्तरेवार्थिता
प्रज्ञाभूमिभवाटवी सुमतिका ब्रह्मादिदेवार्चिता
नित्यामोदवहा सदासुरमतामाद्यास्तुता मानसे ॥२०७॥

श्रद्धेवार्थितपादपद्मयुगला शान्तोदरावत्सला
लीलाभूतिविभूतिपूरणकरी सर्वार्थकामेश्वरी
रक्षाधाममयीसदाऽऽनतजने कारुण्यमातन्वती
लोके कापि कृपाकला भगवतः पायादपायाज्जनान् ॥२०८॥

सिद्धा हृद्यमनोहरेवरसिका रासेश्वरी वर्णिता
प्रीतिः पुण्यपदारविन्दलतिका गीताञ्जलीवान्विता
लीलाभूमिगतार्थदिव्यदयिता संसारभद्रैषणा
कीर्तिः कृष्णकलावतंश सहजा त्रैलोक्यतृष्णाहरा ॥२०९॥

भद्रैषाऽमरलोकदिव्यलहरी भावोज्झितामञ्जरी
वासन्ती ननु माधवीतनुभरा मानायितामन्दिरा
मांगल्यं प्रणिपातभावतरला श्रद्धावृतां शाश्वती
भाग्येनैवदयावशावितनुते मातेश्वरीराधिका ॥२१०॥

लक्ष्मीर्लक्ष्मभराञ्चितेशपदवीपादारविन्दद्वये
ब्रह्माशम्भुसुरेश्वरापिनिवहाः यस्यांगलीलालवम्
सन्धार्याऽध्वरतुल्यजन्मसफलाः कल्पावधिं सेवधिं
सोऽयं विष्णुमुखारविन्दमधुपो वेदध्वनिः पातु नः ॥२११॥

धन्यास्सन्ति सनातनास्सुरभयः संसारपुष्पोद्धृताः
दिव्या भोगविभूषितांगगलितालीलाऽपवर्गायिताः
सिद्धानामपितारतम्यकलिताः कल्याणकल्पद्रुमाः
शुद्धान्तः करणार्द्रलेपनजुषः प्रारिप्सितान् पान्तु वः ॥२१२॥

श्रद्धावद्धभवाटवीषुघटतां सम्बद्धमायाजुषां
योगारूढमुनीन्द्रमन्दविहिता कर्मावधेर्यातना
ब्रह्माण्डाखिलखेलपूर्णपणिका पाखण्डवेलान्तिका
सिद्धिः कापिकलावपीह भविता नारायणी मंगला ॥२१३॥

सत्याधारपरार्थभावभजतां सम्पूर्णधर्मायुषां
राधाकृष्णपदारविन्दनिहिता भक्तिः प्रपत्तिः शुभा
मुक्तिर्भुक्तिपुरस्सराप्रणयिनां का वञ्चना ? जन्मनि
यद्येवंविधिभारतीभुवनिका यस्यास्ति धन्योहि सः ॥२१४॥

यस्यां लीनभवोपिधन्यपथिको रासेश्वरीदर्शने
ब्रह्मेन्द्रादिगणैरहो प्रतिदिनं रासेश्वरं माधवम्
कैलाशाद्रिदरीं ब्रजाऽवनिनिभां नालिंग्यलीलायितः ?
सावै हृद्यवरुद्धयोगसरणिर्यायान्मनोमन्दिरम् ॥२१५॥

क्रोधामर्षविकर्षहासधवला कामां कलाकल्पना ?
गोपीगोपगवां व्रजे विचरतां लीलानुबन्धीभृतां
गोपीनां श्रुतिसारवीजरसना वाचां मनोमोदिनी
केलिः कृष्णकरग्रहे वितनुतां राधासखीमंगलम् ॥२१६॥

ज्ञानानन्तविभूतिपावनपथे साम्नायपौराणिकाः
श्रद्धावन्त इतिप्रकर्षं विविधैराद्रीयमाणास्सदा
धर्मार्थौसमभावपूर्णविहितौ येषामिहप्रार्थितौ
तेषामेव मनोहरप्रणतयोलोकोदये संस्तुताः ॥२१७॥

पापान्धःपरितापशापपतितः क्रोधान्वितः क्रूरधीः
संसारे परिणामदुःखगलितो वैधर्म्यदृष्टिं गतः
भूभारस्स्खलितस्सदाऽवनितले त्रातो न देवैर्यदा
तेनैवास्मि तवाश्रये निपतितो नारायणः पातु माम् ॥२१८॥

यस्यानन्तकुकर्मकोटिविहितं वैधानिज्ञैर्धार्मिकैः
यज्ञै रन्यविधैरगम्यविभवैर्नेतुं न नाशं यदा
सोऽयंत्रस्तनिराश्रयस्तवपदं प्राप्तुमुपायोऽधुना
त्वामेवेत्य सदाश्रयस्तवकृपा जातो जगत्यां महान् ॥२१९॥

रक्ष्यो जीवमणीरमाश्रयवनी शास्त्रार्थसारोपमः
कल्याणाय कलाप्रभावशरणं रामं तथा माधवम्
योगेशं प्रणतार्तिवारणपरं ध्यात्वा मुदामानसे
भूयोभूयइहानुभूतिरसिको धन्यो ध्रुवं मन्यते ॥२२०॥

का वेला प्रभुपादपद्ममधुपैराश्वादसंधारणे
व्रह्मानन्दरसोदयप्रवहणैरापूर्यमाणे विधौ
प्राकाश्ये नलिनीविकासविपिने सूर्योऽथवाशीतगुः
वेद्यौ भाग्यगतैपरागकलितैर्नाराधनीयौ भवे ? ॥२२१॥

माता नैवजहातिचञ्चलवटुं संक्षोभ्यमानापि वा
स्वेच्छाचारिपथप्रभावविगतं क्षन्त्वापराधं ध्रुवम्
तस्यास्साकरुणाकृपालवकला कल्याणमन्तःस्थितं
दुग्धव्याजसुताऽवनेन सहजां प्रीतिं वरां रक्षति ॥२२२॥

भैषज्यं शुभनामधामविहितं नारायणस्य प्रणः
प्रारब्धार्जितजन्मयोगमहिमा भोगाय सर्वैरपि
सत्कर्मार्जनभोग्यभूमिविहितो मांगल्यमोक्षार्थिभि-
र्हर्षामर्षसमन्वये समरसो भाग्याद्भुविप्राप्यते ॥२२३॥

सत्यं धर्मतरोः सुबीजमधुनाऽहिंसाव्रतीप्रेमतः
संस्थाप्यैव महोपकारकृतितां वृत्तिमिमां शान्तिदाम्
संसारेऽमरदेहपुण्यनिलये जीवन्नपि प्रार्थये
सर्वैश्वर्यपरायणः प्रतिदिनं सौजन्यमूर्ति यथा ॥२२४॥

विज्ञानं ममताभिमानरहितं सर्वोच्चजातावपि
पुण्याचारविचारसारविपुलैरामन्त्रणा कर्मणा
यातायातभवाटवीभयहरा या शाश्वतीसान्त्वना
देवैस्संस्तुतवासनाविरहिता जे गीयते शास्त्रिभिः ॥२२५॥

प्रेम्णा सैव सवाहनासुरगवी वेदध्वनिप्रार्थिता
शब्दार्थान्वयभासिनीसुमनसां शास्त्रार्थबीजाङ्कुरा
संसाराब्धिनिमग्नतारणवरा विष्णोः परप्रेयसी
सर्वानर्थहरा सदा विजयतां भक्तिप्रियामाधवी ॥२२६॥

वात्सल्यं मयितावकं प्रपदनं विष्णौ गुणः मामकं
सौशील्यं प्रभुतापरं भगवतः सेवावधानं नवम्
सेव्यस्यापि सदाहि सेवकजने शिक्षाप्रदं ज्ञापनं
सन्धार्यैव विभोस्सदाचरणतो मायावसानं भुवि ॥२२७॥

नद्यो नीरवहास्त्रिधामपथिकास्सन्तारणे प्राणिनां
गंगाद्वारधरा नु भूधरवरा: कैलाशनाम्नोन्नता:
स्वर्गारोहणदिव्यधाम मयता: लालायिता: मुक्तिदा:
कल्पानन्तफलप्रदाहि मनुजैस्सेव्या भवन्तुस्वयम् ॥२२८॥

सामर्थ्यं मयिनास्ति शास्त्रजनकं ज्ञानं न धर्मंक्रिया
स्वार्थीभोगरतस्सदा निपतितस्स्मृत्वापि सत्तां तव
योगारूढपथप्रभावरहित: प्रारब्धभोगायुषा
सर्वत्रापि सनातनं प्रभुपदं मायान्मनोगोचरम् ॥२२९॥

मूढोऽहं प्रभुपादभक्तिरहितो मोहान्धकारावृत:
पत्नीपुत्रसुतागृहेपुनिरतो भोगेषणापण्डित:
निन्द्य: क्रूरवचोविलासपथिकोनिद्रालसोदु:खित:
याचे ते शरणं त्रिधामनिलयो नारायण: पातु माम् ॥२३०॥

सिद्ध्यैधर्मगुहागता सुरगवीविद्यानदीस्रोतसा
धारानन्तमहोर्मिपावितमही मालायमानाऽनघा
जन्माद्यप्रथितप्रभाववहतां सौजन्यपूर्णायुषां
भक्तिर्माधवपादपद्मयुगले विद्योततां मंगला ॥२३१॥

वृद्ध्यै धर्मकुलान्वयप्रपरतां शुद्धात्मनां मूलत:
ऋद्धि:सिद्धि पुरस्सरा श्रुतिमता संस्तूयमानाऽध्वरै:
कर्तव्यैरनुभावितैरनुदिनं लोकत्रयव्यापिनी
सर्वार्थोहितमानवप्रणयिनी भूयादमोघाशुभा ॥२३२॥

प्राज्ञैरद्यमनोरथप्रतिहतैर्दु:खास्पदं भाव्यते
स्वस्यापीह महार्तिनाशनपरा विद्यानवद्याहिता
चिन्तामोहमनीपितार्थनिहता प्रज्ञाऽपराधाऽऽहिता
संशोध्येति विचारभावनविधाविज्ञायतां श्रेयसी ॥२३३॥

सद्योभाग्य विधानतेव तरुणातारधिपप्रेक्षणा
भूलोकोर्ध्वनभो नवोदयपथे प्रीत्याग्रधावातुरा
कीर्तिश्चान्द्रमसीव लोकविदिता सौजन्यतामाश्रिता
जन्मानन्तहराहिकल्पकपिलाकामार्थिभिःप्राप्यताम् ॥२३४॥

रक्ष्यादेहदशेवदेशवनिता यस्यापिकस्यापि वा
भूमिर्वा जननी सुतेव शुचिता वन्द्याजगत्यां समा
गेहोदेह इवप्रसन्नमनसा सत्योपकारायितः
नीतो येन दयार्पितप्रकटतः सत्यं स वै जीवति ॥२३५॥

कल्याणीव मनोदशा विलसिता चन्द्रार्धचूडोपमा
प्रत्यक्षाऽमरवाटिकेव नगरी पुण्यप्रदाप्राणदा
कस्यास्तीह परावरस्यकृपया कारुण्य वारान्निधे
को वक्तुंप्रभवेत् सदासुरगुरोर्दृष्टया न पूतोयदि ॥२३६॥

लोके ते दयया विसर्जिततनुर्भाग्योदये वाऽथवा
सद्योऽनन्तमहापराधरहितो जन्मान्तरेवाऽधुना
दिव्यात्मेव तवोपदेशनिखिलं संरक्षयन् भक्तितः
सिद्धार्थो भवतोऽनुकूलगतिको भूयादिह प्रेमतः ॥२३७॥

कृष्णोरामपरावतारविहितस्सीताविवाहोत्सवे
मर्यादावशमागताभ्य इव किं ? जन्मान्तरे द्वापरे
प्रेम्णा. पूर्णपयोधरापि यमुना गोपेश्वरी गोपिका
गोपैर्भक्तवरैस्सहावनितलेलीलाऽवतारं दधुः ॥२३८॥

कृत्वा घोरतपः समाधिनियताः सन्तः परार्थेऽथवा
गोपीगोपगवांतनौ व्रजभुवि प्रारिप्सितार्थाः ध्रुवम्
तेभ्यो दर्शनमेवकृष्णपदवीं विष्णुः स्वयं कामदः
स्मृत्वाऽनन्यपरायणान् व्रजभुविप्राप्तः स्तुतोब्रह्मणा ॥२३९॥

त्रेताद्वापरविष्णुपावनपथे लब्धाश्रयैस्सज्जनैः
स्वात्मा वै परमात्मशेषविषयो ज्ञातश्चसेवारतैः
योगारूढतपःप्रभावपरितो मुक्तिप्रदं साधनं
नीत्वाभक्तिभरां प्रपत्तिमनिशं विष्णोःपदं वन्द्यते ॥२४०॥

व्रह्माशम्भुफणीन्द्रदेवविविधैरद्यापि भावातुरैः
सेव्यश्श्रीपतिरेव साधुपुरुषैर्लोकत्रये ज्ञापितः
पद्मापद्मपरागगन्धमधुपोभक्तः प्रभोः मन्दिरं
यायादेषकथं सनातनपथं यावन्ननाथप्रणः ॥२४१॥

क्रीडाभूमितलावलम्बिमहिमा वैकुण्ठधामायितः
लंकेशादिनिशाचरान्तकलितालीलालयानन्दना
नावोधिप्रणिपातभावविभवैरक्षानुवन्धप्रथा
लोकस्यास्यविधर्मतःप्रतियुगं नारायणोरक्षकः ॥२४२॥

श्रीनाथश्च दयार्णवः प्रतियुगं त्राणाय नाशाय च,
धर्माऽधर्मपरायणस्य सततं भूभारहारीप्रभुः
लीलामेव जनानुरञ्जनधियाऽनायासवृत्त्यास्वया
कुर्वन् रक्षति सारथी जनरथी पादानतं मामपि ॥२४३॥

तेनार्त्तास्तवदासभाग्यविभवा लीलारसं सौरभं
पीत्वा त्यक्तसुखावगाहनपथाः जन्मान्तलीलाच्युताः
श्रद्धावद्धतवारविन्दनयने मग्नायथाषट्पदाः
धन्यं स्वं सुविचार्य पादपतिताः नेयाः पदं तावकम् ॥२४४॥

इत्थमेवदिवानिशं विदधतो जीवाऽवने व्यग्रतां
मोहाज्ञाननिदानमेवभवतो नैसर्गिकीसंगतिः
नानाजीवमगाधसिन्धुतटतो नेतुं प्रभो! सक्षमः
अन्तर्यामि वरप्रसाददयित! त्वामेव याचे चिरम् ॥२४५॥

ज्ञानंनास्ति नवा ममेहसहजा पूजोपचारक्रिया

ध्यानं तर्हि कथं तवाऽमलतनौ मायामलं विभ्रतः

मन्त्रोच्चारणमेव नास्ति विधिना नार्थोपित्रुद्धिं गतः

रक्षाभारत्वहस्त्वमेवशरणं नान्यं न जाने प्रभो ! ॥२४६॥

नीचानैव निराकृताहि जलधौ स्नानार्थिनोन्यायतः

मिथ्याजलपवलावरूढमदनो नग्नोभवे लज्जितः

कारुण्यं करुणाधरस्य नियतं सर्वाऽवने नित्यशः

तेनैवास्मिदयाप्रसन्नवसनो दग्धोमलोरक्षितः ॥२४७॥

राजानोभुविभोग्यभाग्यविदिता रक्ष्यास्स्वयं रक्षकाः

जाता धर्मपथच्युता भययुताः तन्त्रे प्रजाशासने

शिक्षा यापि विदेशदासिपरता भाषांगलाव्यापिनी

सर्वा संस्कृति-संस्कृतं परवशं रक्ष्यं कथं भारतम् ? ॥२४८॥

देशोऽयं महिमावधानरहितः कूपान्धवद्दृश्यते

यत्रैको द्रवविन्दुरेव न गतो विद्यासुनद्याच्युतः

पाश्चात्यैरशुभाप्रतारणदिशा शिक्षानुबन्धीकृता

व्यापारोऽत्रविदेशनीतिनिपुणै संशोध्यतां देशिकैः ॥२४९॥

धर्माचारविचारशक्तिनिहितैर्नाद्रीयते भारतं

चेदत्रापि मदीयमानसदशा वैदेशिकी गर्हिता

संशोध्याऽखिलनीनिरोतिफलिता वृत्तिर्यदा भारती

कल्याणायहि भारतस्य भविता विद्यामनीषा तदा ॥२५०॥

प्रभातवेलेव निरोगसाधना

समर्थशक्तिस्सवितुस्समेधिता

त्रिलोकधामाऽध्वनिमासुराऽमला

जयाय सम्पूर्णविभूतिदाभुवः ॥२५१॥

सरस्वतीसम्प्रतिसर्वदैवतं
विधातुरस्याः प्रवलप्रमीयता
तयोस्तु दाम्पत्यकथानुरोधतः
समग्रशब्दागमदैवतं वृतम् ॥२५२॥

स्वराजनीतिर्नवनीतनामतो
यथामतेवार्थत एव वर्णिता
विधायकैस्सांसदलोकनायकैः
प्रजोपकारायसदाविधानतः ॥२५३॥

वचोमनोहारिजनानुरञ्जने
सदाऽऽनतादानदयेव नम्रता
प्रतिग्रहाऽऽधारवती धरेव वा
करग्रहानीतिरहोऽभिनायिका ॥२५४॥

श्रुतेरिवार्थप्रथयानुगामिनी
स्मृतिर्यथाधर्मपथप्रवर्तिनी
हिताय लोकस्य तथा मनस्विता
प्रवर्ध्यतां सर्वजनाऽत्रनेशुभा ॥२५५॥

कलेवचन्द्रस्य नमोंऽगणेसिता
श्रमापहन्त्रीव तमोनिवारिणी
प्रजासु प्रज्ञा भवतापवारिणी
सुशान्तिदा सर्वजनस्थिता भवेत् ॥२५६॥

समर्थितोऽद्यापिहरेरनुग्रहः
स्वधर्मभोगाय कृतश्च विग्रहः
सुसर्जितस्याखिलकर्मसत्फलं
प्रदाय तस्मै हरिरस्तु रक्षकः ॥२५७॥

न वेदविद्यावधि कापि देवता
न वा नदीवेग इवात्र मेयता
सुराधिपस्यापि न वैभवान्तता
कथं कदा कापि सतां वरीयता ॥२५८॥

नखच्युतोविन्दुकणोपि वन्द्यते
पदार्चनं विष्णुपदं गतेनवै
जनेन भाग्यातिशयेन नित्यशः
सदाहरिर्भक्तगणेन पूजितः ॥२५९॥

विचार्य धर्मं भवरोगनाशनं
मनोवचोभ्यां त्रयतापशमाकम्
विसृज्य विद्वेषमदान्धमान्यतां
सदाभजेद् विष्णुपदाब्जधामकम् ॥२६०॥

जनस्य सर्वस्य विचारणा यदा
सुसंस्कृता नैव न चास्ति सन्मता
न वा सदाचारविचारभाविता
तदा हरिर्नैव कृपां विधास्यति ॥२६१॥

तदैव तन्द्रा भयदा प्रतीक्षणं
प्रकृष्टमाया!विहितामतीदृशी
प्रतारणीयाऽवनिकष्टकारिणी
प्रवर्तते सर्वजनस्य भाग्यतः ॥२६२॥

प्रपन्नलोकाश्रयधर्मदासता
प्रवर्त्यमानाऽमलदेहधामके
सदाऽऽदृताऽनन्यगतिश्च जीवने
हरौ नवीनाऽवनिजन्मलाभतः ॥२६३॥

कलावती कापि कविन्दु कल्पया
दयावशेवाऽऽदरताननश्रिया
गभीरतांगानवयौवनप्रिया
विलक्षणावै कवितांगना न वा ॥२६४॥

नवेन्दुपूर्णाननमुग्धमानसाः
प्रजेश्वरा भोगरताश्च शासकाः
स्वकीय चिन्त्यार्थ फलाय तत्पराः
प्रजाभिमान्यापि न हिताहितंविदुः ॥२६५॥

न सौमनस्यं न च मित्रताक्वचित्
न मातृभावः प्रतिनारिभावितः
स्वसादुहित्रादिमता न पूजिता
विधर्मदृष्टिरखिला विवर्धते ॥२६६॥

सुतः पिता वापि कलत्रवंशजा
सदार्थतः प्रेमपथानुबन्धतः
सुपूजिता नैव यदाविचारतः (विधानतः)
तदा प्रजा धर्महता विपद्गरताः ॥२६७॥

सुभिक्षदुर्भिक्षमये त्रिधामनि
प्रकर्ष संघर्षयुते च राज्यके
निरापदव्याजविधानछद्मना
विधायकास्सांसद एवहेतवः ॥२६८॥

कृषीबलं धान्यप्रदं विधानतः
सुरक्षितं वर्द्धितमेव दैवतम्
नृलोकसौख्यप्रदमादिपूर्वजाः
समामनन्ति प्रथमं स्वभावतः ॥२६९॥

जनोहि सर्वोपि सुरक्षितो न यैः
स्वबन्धुभावानुमतैः प्रसाधनैः
समग्रदुःखप्रसरप्रसंगतः
न ते प्रजास्वामिपदाधिनायकाः ॥२७०॥

परम्परेयं विधिना विवर्धिता
कुटुम्बग्रामेनगरे प्रसारिता
सहायतादीनजनेषु सर्वतः
सुयज्ञ एवास्ति यशोऽभिवर्धनः ॥२७१॥

दयाश्रितस्यात्र सुपात्रता न वा
बुभुक्षितस्याशु सुभोजनं यथा
विचार्य नैवात्र कदापिपात्रतां
तथादरो दीनगणस्य मन्यते ॥२७२॥

निवासशय्यासनभोजनौषधं
यथारुचिप्राणिगणस्य सम्मतं
न तत्र कौटुम्बनयां विशेषतः
सुरक्षणं सर्वजनस्य गीयते ॥२७३॥

समीरितावेदविधावधानता
महर्षिणालोकपितामहेन वा
स्ववर्गसीमावधिता न भाषिता
भुवोऽन्तरिक्षप्रसरा सुसंस्कृतिः ॥२७४॥

विगर्हितैवात्र पराऽमृत [illegible]:
गतिर्नयस्यास्ति परोपकारिणी
न वा विवक्षैव समत्वधारिणी
स मन्यते निन्दितमार्गसंश्रयः ॥२७५॥

महीभृतस्तस्य मनोऽनुसारिणः
जनाः स्वयं संयमिताः प्रतिष्ठिताः
यदा सुनीत्या समभावसंगताः
तदाभुवो योग्यतमाः प्रशासकाः ॥२७६॥

सुदीर्घकालावधिपुण्यमाश्रिताः
नयानुसारं निपुणास्सभासदः
दयादृशां वात्र मनीषिताः प्रजाः
सुखं चिरं प्राप्या भवन्ति कीर्तिताः ॥२७७॥

प्रतारणा नान्यकृतीव मान्यता
प्रसीदतामन्यतमाच नैष्ठिकी
भवाटवी भोग्यगृहेवयोग्यता
समाश्रितानामभिमन्यतेदशा ॥२७८॥

फलश्रुतिवामरवेलिलम्बिता
मनोदशाकल्पलतेव वर्धिता
सुखोपलब्ध्यै नितरामितस्ततः
प्रधावतामेव मनस्थितेः क्रिया ॥२७९॥

प्रबन्धकोषस्य मनोमयस्य का ?
नवीनता मन्त्रमयीवकल्पिता
जनस्त्वदीयो जडयोनिसंगतः
निसर्गतः कर्मफलोपलब्धये ॥२८०॥

विकाशयोर्नि गतचेतनोध्रुवं
मनुष्ययोनिर्भवतः प्रसादतः
परस्पराऽमंगलदेहयातनां
समाप्य पादोदकमेव याचते ॥२८१॥

स्वधर्मरक्षाव्रतपूर्णताऽऽहितं
भवत्कृपालम्बबलञ्च धारयन्
परोपकाराय सदा स्वजीवनं
सौभाग्यशाली भुविकोपि जायते ॥२८२॥

न चेदहो मानसमन्दिरे शुभे
परोपदेशाय वचोविमर्शने
छलेन पारार्थ्यमयीप्रवञ्चना
वसेदवश्यं नरकप्रयोजिका ॥२८३॥

न यातनेवाऽमरदेहवासना
विसृज्यधर्मार्थिपथं स्वभावतः
विमृश्यमानापि यथामतिध्रुवं
निवर्त्यतां मे मनसः कुवासना ॥२८४॥

दिवानिशं प्रार्थित धर्मदाश्रयो
भवेभुवोभारहरञ्च कर्मणा
नियन्तृकस्येव मती रथांश्रिता
गतिश्च तीव्राऽवनिधाममंगला ॥२८५॥

भवत्वसौ नाथपदावलम्बने
मनोवचोभ्यामिह रक्षितातनुः
हुतिश्श्रुतिज्याखिलयज्ञसत्क्रिया
तदाहि तस्यामलकीर्तिसन्ततिः ॥२८६॥

नवोदयो नीतिनिधाननामतः
जनीभृतां मंगलमन्त्रवादिनाम्
विशुद्धभावोहितपुण्यभावना
दयाञ्चिता सर्वहिताय वन्द्यते ॥२८७॥

परायणं वेदपुराणभाविनां
सतां शुभानां वचसां कलाविदाम्
कृतं शुभञ्चापि भृशं समीक्षितं
भवत्यवश्यं फलदायिधर्मतः ॥२८८॥

न केवलं काव्यकृतेरवश्यता
वचोमनोहारिविदूषणोद्धृता
परं हि तथ्याहितहीनभावना
परिप्लुताऽमंगलकारिता तदा ॥२८९॥

विवर्धते नैवगुणप्रसाधना (प्रसादना)
क्रियाकलापैरनुभावभूमिका
यदाहि यस्य प्रथिता न नीतयः
परोपकाराय तदा स निन्द्यते ॥२९०॥

विद्याविद्ये नियतिविहिते मुक्तिभुक्तिप्रसिद्धे
वैदान्ते वै सविधिफलिते नास्तिकोपिप्रवादः
सर्वाशक्तिर्विविधवसुतावासिनीव प्रवुद्धा
कल्याणी नः शुभगवचसां प्रौढतामाशुदिश्यात् ॥२९१॥

आत्मनिरीक्षणम्

आत्मात्मने मे प्रणतिश्शिरोभवा
सर्गात्मने स्वात्म महोदयाञ्चिता
सर्वात्मनामात्मनिरीक्षणाय सा
स्वभावतो धर्महिताय जायताम् ॥१॥

धराधरेन्द्रार्पितपाणिपल्लवे
महेश्वरो मंगलविद्ययार्चितः
प्रसादविद्याऽभयदानदक्षिणः
सतीसपर्य्यानुगतिः प्रपातु नः ॥२॥

सरस्वती सत्यविरञ्चि मान्यता
पयस्विनीवाऽमरवेलि मण्डिता
सर्मार्चिता ब्रह्मविधावनन्यता
सुमेधसां मानसमन्दिरायताम् ॥३॥

लक्ष्मीशतालक्ष्यलतेव लालिता
नारायणेनात्र पवित्रपाणिना
प्रज्ञापराधावनमन्त्रवाणिभिः
सर्वात्मनि प्रेमदयादृ ता वृता ॥४॥

त्रिपाद भोग्यासुविभूतिभूषिता
नारायणी ह्लादकरीव दर्शिता
सौजन्यता जन्मभृतां सुशिक्षया
साक्षाज्जनाह्लादतनुः प्रसीदताम् ॥५॥

नामस्थलीयेन्दुमतीविभावरी
प्रामाण्यरेखाऽमलचन्द्रिकाङ्गना
शंभोर्हरेश्चापि विरञ्चिकल्पना
काव्यात्मभावानुगतास्तु वन्दिता ॥६॥

देवर्षिवीणाध्वनिभाववेद्यता
सर्गात्मवीथीसु नवानुमन्त्रणा (भाव्यता)
चारित्र्यपाविद्यकरी सुमंगला
गीर्वाणवाणीव रसास्तु काव्यता ॥७॥

काव्यार्थभावाऽऽभरणे नवीनता
वेदांगवेदान्तमताऽऽनताऽभया
वैकुण्ठधामाश्रित मान्यतोन्नता
सद्भावचारित्र्य गतिः प्रवर्धताम् ॥८॥

धन्यात्मधाराधरणी रथांकिता
भागीरथीवाऽमरधामधारया
मन्दाकिनीवान्यतमानदीवरा
सद्धर्मगीता जगति प्रसीदताम् ॥९॥

कल्पावधेर्भूरितपः प्रभावतो
देहात्म सर्वेन्द्रियबुद्धिभावना
नैर्मल्यतायां विहिता चरित्रता
अद्यापि सद्योहि मनस्सु भासताम् ॥१०॥

(सर्वास्व)

लोकेऽवतीर्णा नृपतेरवस्थिता
भूमिः स्तुतातीर्थमयी क्षमावताम्
राष्ट्राधिपानां महतः प्रयासतः
संरक्षणीया कथमस्तु शासकैः ? ॥११॥

राष्ट्राधिपाश्शासनतन्त्र पक्षतः
प्राचीन राज्याश्रित नीतिनिर्धनाः
निर्धारणं नैव मनीषितं शुभं
कर्तुं समर्थाः सहसाविभावितम् ॥१२॥

तन्नास्ति चित्रं भववारिधिगताः
प्रागाघनीराहृत सर्वशक्तिकाः
रत्नानि भोक्तुं कथमभ्युपक्रमाः
जायन्त इत्येष न कष्टकल्पना ? ॥१३॥

रक्षौषधीवाभयदान रोगतो
राष्ट्राधिपानां प्रणयप्रजानताम्
सन्धार्यमाणा नवनीतिधारणा
सर्वार्थदा प्राणिहिताय बोध्यते ॥१४॥

प्रीतात्मनि प्राणभृतां समीक्षिता
नीतिस्सुरक्षा जनमानसे ध्रुवम्
कल्पादि कल्पान्त कलेवरार्पिता
जीवात्मनां प्रार्थनया सुरक्ष्यताम् ॥१५॥

नैसर्गतः केन्द्रनयोऽनु भाग्यतः
प्रान्तीयनीतिर्जनरक्षणाप्लुता
प्राशासनारूढनयानुमानिता
संरक्षिका सेत्स्यति राष्ट्रभासिता ॥१६॥

वर्गास्त्वनन्तास्सहजास्समन्ततः
जातीय संकीर्णपथे प्रवर्तिते
कर्तव्य क्षेत्रात्पतितस्वतास्सदा
भारायमाणा विदिता भयातुराः ॥१७॥

नैजं वपुः कर्मपरायणं यदि
सर्वेन्द्रियाणि परतस्स्वतश्च वा
स्वार्थे मनोभावगतेरवस्थया
बद्धानि सन्तीह कुतस्सुखं भुवि ? ॥१८॥

हा हन्मि लुण्ठामि जयामि सर्वतः
शास्त्राणिवेदाश्च समे सवर्णगाः
सुदीर्घकालात् महिपालमानसाः
विगर्हणीया दधतु प्रजाः कथम् ? ॥१९॥

नैराश्यवैरस्य पथिप्रधावतां
वाग्जाललीलानिपुणा विधायकाः
सुसांसदाश्चापि सदा सुमन्त्रिणः
स्वात्मानुरोधेन भुवि प्रसादकाः ॥२०॥

वाक्कायकीर्तिः कवितेव काम्यता
कर्मानुगा लोकहितप्रसाधने
पारार्थ्य भावानुमतास्स्वधर्मताः
मान्या भवत्येव युगानुसारतः ॥२१॥

संशोध्यधाराः दलनीतिपारिताः
प्रासंगिकाश्शासनपद्धतेः पराः
सार्थक्यतां नेतुमनीशमूर्तयो
निन्दास्पदं यान्ति महीप्रवञ्चकाः ॥२२॥

संशोधनं सत्यपथप्रभावतो
राष्ट्रप्रसादाय निसर्गतोध्रुवम्
शान्तेस्सुखस्याखिलभागपूरणे
सम्मान्यते शास्त्रवुधैरुपासितम् ॥२३॥

धैर्यप्रभावाधिगमप्रसादिता
चैतन्यता चेतनरूपतायिता
शान्तिप्रभावातिशयप्रभाविता
न जायते चेत्पतनं सुनिश्चितम् ॥२४॥

समीहमाना भुवनोपलब्धयः
प्रशासकैः प्राणिजनप्रसादने
समीहितार्थप्रथनोत्सुकैर्यदि
संरक्षितास्स्युः परितोहितन्तदा ॥२५॥

अन्नानि सर्वौषधयो मतिश्शुभा
वाचां तनूनां सुखदात्मनां यदा
प्रभूतमात्रार्थकृता मनास्थिता
सम्प्रार्थ्यतेऽद्यापि दयामहीभृताम् ॥२६॥

ये माननीया भुविभाग्यनायकाः
निर्वाचिता लोकजनैरुपासिताः
सत्तन्त्रधारोहितराष्ट्ररक्षकाः
ते वै स्तुताः स्युर्यदिधर्मपक्षगाः ॥२७॥

सत्यं हि सत्तन्त्रयुतं प्रशासनं
ससांसदैर्मन्त्रिवरैस्सदादृतम्
वैधानिकं शान्तिकरं प्रजाहितं
सम्प्रार्थ्यते राष्ट्रहितैषिभिस्सदा ॥२८॥

वर्णाश्रमाधारपवित्रधारणा
प्रजाहिताय प्रबलप्रशासने
प्राणेन्द्रियप्रार्थितसौख्यसाधना
कथं भवेदर्थकरी विचिन्त्यताम् ॥२९॥

सामन्तभावानुगतैस्समांसदैः
सन्मित्रकार्यानुमतैर्हि मन्त्रिभिः
प्रान्तस्य राष्ट्रस्य हितन्नचिन्तितं
स्वार्थेरतैस्स्वस्य दलस्य पोषकैः ॥३०॥

सन्तोषणं सद्वचनैस्समन्ततः
संशोषणं सर्वजनस्य नित्यशः
सर्वार्थहानिञ्च विधाय मोहतो
दुःखानुदानं विहितं विचारतः ॥३१॥

स्वार्थप्रधानस्य मनोनुसारतः
स्वप्नेन लोकस्य हितावहक्रिया
दृष्टा श्रुता वा परमार्थमन्त्रिता
तेनैव सत्तन्त्रैमतं समीक्ष्यताम् ॥३२॥

यद्यस्ति सत्यं जनतन्त्रशासनं
प्रान्ते स्वराष्ट्रे प्रबलप्रबन्धतः
संसाधनैस्सर्वजनप्रसादनैः
सल्लोकतन्त्रं प्रथितं भवेत्तदा ॥३३॥

ये सांसदा लोकसभासमाश्रिताः
प्रशिक्ष्यमाणासदसिप्रसादिताः
शिक्षासुसंस्कारनयप्रपालने
आदर्शभूता जनतासु पूजिताः ॥३४॥

संभावनीया विजयप्रदायिनः
विधायकामन्त्रिवराश्चनीतितः
वाचां सदाचारपथस्य मान्यतां
प्रदर्श्य लोकाऽभ्युदयाय भान्ति ते ॥३५॥

नाकारि सत्यं हृदयेन भारते
सच्छासनं सर्वहिताय नैतिकम्
सर्वत्र सामर्थ्यनतैस्स्वभावतः
सन्नीतिसन्मार्गमतेन्वपेक्षितम् ॥३६॥

शोकापहारी जननाथशासकः
वैधानिकेन प्रथितेन कर्मणा
कौटुम्बिकेनेव नयेन पालयन्
प्रजाः समग्राः भवतीह पूजितः ॥३७॥

यथेष्टलाभांशधनेन नीतयः
निर्धारणीयाः सुखदुःखसाक्षिकाः
सर्वर्तुसाहाय्यकरप्रयासतः
प्रजासु पुत्रात्मगतानु धर्मतः ॥३८॥

राष्ट्रस्य सद्यो भयमाश्रितस्य वै
व्रोघोनिदानस्य महात्मनां मते
स्थैर्येण साधर्म्यगतेन सार्थकं
विधायकैर्मन्त्रिवरैस्सुरक्ष्यताम् ॥३९॥

भुक्तार्थकामाभवभाग्ययातनाः
नीतास्स्वकीयाश्च जनाः प्रधानताम्
शक्ति समग्रां नवनीतिमार्गतः
यैरद्यपारार्थ्यंहिते न ते स्मृताः ॥४०॥

साम्ना नु भेदेन दमेन दण्ड्यता
प्रजाजनानामवने च दक्षता
सद्योऽपराधानुगताविचारणा
प्रशासने शास्त्रमते प्रशास्यते ॥४१॥

श्रद्धानतेव प्रणिपातनिर्भरा
यज्ञाऽऽहितेनाखिलमन्त्रसत्क्रिया
नीतिः प्रभूता प्रवरासुभावना
सम्प्राथ्यंते राज्यसुखाय सर्वथा ॥४२॥

मन्त्रीवरः कः प्रथमः प्रजेश्वरः ?
आराधनीयो महिपो विकल्मषः
श्रीरामराज्यस्य वरप्रसादतः
कार्यानुरूपो नियतः प्रतिष्ठितः ॥४३॥

को वै जनानां श्रुतिधामनामतः
संकीर्त्यमानः कलिकालकेऽधुना
देवाऽवतारस्तरुणोऽथवृद्धकः
शुद्धोविधिज्ञो जनताभिरर्चितः ॥४४॥

नातंकवादी न च राष्ट्रशोषकः
नाऽहंकृतिर्वा न च धर्मदूषकः
राज्ये हि यस्याभयभावमन्त्रणा
स एव राज्ये कुशलः प्रशासकः ॥४५॥

येनापि चौर्यं मनसापि कारितं
कृतं स्वयं वा खलकर्मनिन्दितम्
लोभेन कामान्धपथेन लाञ्छितः
देयं न तस्मै मतमन्यतोपि ॥४६॥

कोवार्हतीह प्रथिते नु तन्त्रके ?
प्रजासु वृत्ति प्रथितुं न यत्नतः
कल्याणवीथीमयमंगलश्रिया
गतिश्शुभा यस्य मतिस्सशासकः ॥४७॥

संरक्षणायप्रणयीवभूपतिः
प्रजापतिश्चापिगतिर्जयश्रियः
सर्वान्तरात्मेव सदा स्तुतो यतः
सेवाव्रतीवामरकीर्तिमण्डितः ॥४८॥

बुभुक्षितस्यान्नदयार्द्रं मानसः
पिपासुलोकस्य नदीव धारया
प्रपीडितस्याशु शुभौषधीप्रदः
प्रशासकस्सर्वजनैरुपास्यते ॥४९॥

करग्रहस्यापि महीभृतां सदा
षडीतिवर्गस्य निवारणाय वा
प्रकल्पिता या जनतापमोचने
नीतिर्नवा शास्त्रमयी प्रशस्यते ॥५०॥

सभीतिकान्या जनकष्टकारिणी
(प्रभाष्यते) प्रतीक्ष्यते नैव कदापि दुर्बला
तपस्विभिः सत्यसमीक्ष्यमानसैः
तस्यास्समाधानरतैश्च भाव्यते ॥५१॥

हानिः कदालाभपराक्रियाधरा
राजा प्रजापालनबुद्धिसम्पदा
सिद्धिस्तयोरस्ति समा न सक्षमा
गीतेव गीता नरदेवविद्यया ॥५२॥

श्रद्धादरैरर्थकरीव यज्ञता
ब्रह्मात्मनिध्यानगतेव भव्यता
भाग्येन कस्यापि महाव्रतेन वा
संलक्ष्यतेऽद्यापि भुवि प्रधानतः ॥५३॥

नितान्तमेवास्ति जगद्धितैषिणां
जनानुरञ्जीव्रतवैधता ध्रुवम्
स्वभावतः पुण्यबलार्जिताजिता
समग्रलोकस्य हिताय मर्शिता ॥५४॥

विधिः पवित्रो निचयश्च संचिताः
सदिक्षया यस्य मनः पवित्रता
कृतेः कलाकल्पमनन्यरक्षगे
स वै कृती कल्पयुगान्तरादपि ॥५५॥

नैरुज्यतायाः परमार्थदायिनां
युक्तिप्रमाणानुगतानुधावताम्
सत्संगशिक्षासुमतं प्रभाषतां
सारुप्यसामर्थ्यगतिर्न हन्यते ॥५६॥

विसृज्यते नैव रुचिस्सतृष्णिका
सुकीर्तिरक्षाहितजन्मधारकैः
प्रजाभिरद्यापि सदा नृपादिभिः
कथं धरार्धमिरथीव्रतैः स्तुता ? ॥५७॥

नाकारि केनापि मही स्वभोग्यता ?
नाधारि केनापि भुवोऽतिभारता ?
नाघ्रायि येनापि सुगन्धिमालिका
कण्ठस्थिता तेन यशःसमेधितम् ॥५८॥

नाऽबोधि येनापि निजस्वरूपता
नाऽऽवेशिनारायण आत्ममन्दिरे
लब्ध्वापि जन्मात्र निरर्थकं स्वकं
सामर्थ्यहीनः स भयाद् विकम्पते ॥५९॥

नीतिः प्रजारञ्जनमभ्युपेयतां
राष्ट्रे नवीना प्रतिभा प्रपद्यताम्
विज्ञानविद्याऽमलनैतिकं बलं
सर्वाष्ववस्थासु च संप्रकाशताम् ॥६०॥

सत्यं समे नेतृवराः प्रहर्षतः
पुत्रान् स्वशिष्यानपि शास्त्रमार्गतः
संस्कारशिक्षाव्रतमार्गदीक्षया
स्वञ्चापिसम्बोध्य भवन्तु सेवकाः
(सुशिक्ष्य स्वञ्चापि भवन्तु शासकाः) ॥६१॥

मतप्रदानाय जना न शिक्षिताः
प्रत्याशिनां नैव च योग्यतावृता
न वा चरित्रं विदितं कथञ्चन
निर्वाचितास्ते नहि सत्पथाश्रिताः ॥६२॥

कथं भवेद्धर्ममयं प्रशासनं
प्रजाहिताय विहिताः सुनीतयः
विश्वम्भराविश्रुतप्राणिरक्षिका
मनुष्यता लोकहिताय रक्ष्यताम् ॥६३॥

देवाऽसुरैरत्र मनोऽभिरामता
प्रकीर्तिताद्यापिजनैरुदाहृता
सैवात्रसंसारगतिष्वनादृता
स्वप्नायिताभाति निकृष्टशासकैः ॥६४॥

सुधारवद्भिर्धनधान्यरक्षकैः
लब्ध्वा पदं मन्त्रिवरस्य भाग्यतः
प्रजार्थमेव प्रवरं हि सार्थकं
कृतं यदि प्राणपणेन शोभितम् ॥६५॥

तदाप्रतिज्ञाशपथानुरोधतः
पदे नु तस्मिन् स्थितिकालगौरवम्
प्रतिज्ञताबद्धजनस्य सर्वतः
संरक्षणं सर्वजनै प्रशंस्यते ॥६६॥

नक्षत्रताराग्रहराजदेवता
ग्रामाधिपानागरिकाः परायणाः
सर्वे कलाकान्तमनोहराजनाः
समादृतास्युश्शुभशासके सति ॥६७॥

ध्रुवं धराभंगभयेनधातृतः
हरेर्हरस्यापि सुरर्षिहर्षितः
प्रासंगिकेनाप्रतिमेनहेतुना
संस्थापितेयं जलशेषपीठगा ॥६८॥

वैधानिकं वा सहजं सुभाषितं
सत्संविधानं जनताहितौषधम्
संशोधनम्वा समयप्रभावतः
संयोज्यधर्मेणभवेद्धितावहम् ॥६९॥

दलेनकेनापिमतं न शोधनं
स्वार्थप्रसंगेनविधेरनादरम्
विधायदेशोन्नतिपक्षशून्यतां
दण्ड्यार्हतां देववरेण यास्यति ॥७०॥

न क्वापि भाषावचनं न मर्षितं
नवास्वरूपंधनसम्पदाऽऽहृतम् (सम्पदादृतम्)
प्रजाहिते राजनये समर्थितं
विधानतोराज्यहितं विधीयताम् ॥७१॥

न तु प्रजावर्गपथाधिकारतः
स्वल्पप्रसंगेनधनाधिकव्ययः
ससांसदैर्मन्त्रिवरैरभीप्सितः
प्रकृष्टशोभान्वितवाहनादिकः ॥७२॥

वीथीवधूपास्यसमस्तसाधनं
ध्वजप्रभूतांगविभिन्नमण्डनम्
सभावितानं नवमण्डपाभिधं
दलप्रचाराय न वा प्रियं मतम् ॥७३॥

दलस्य कस्यापि जनस्य वा भवेत्
प्रशासनस्यापि यदिप्रभावकृत्
धनव्ययोनैवजनोपकारकः
धनोपयोगस्स सदासमीक्ष्यताम् ॥७४॥

स्वल्पेन सद्द्रव्यव[illegible]
संसाधनेन व्रतिनेव शिक्षया
समीहितार्थे प्रियभाववर्धने
विधीयतां सर्वजनस्य योग्यता ॥७५॥

जलप्रकाशौषधिवस्त्रभोजनं
सप्रेमभाषामनसिप्रसन्नता
समानरूपेण सदैक्यमीक्षितं
निर्बाधतस्सर्वदलैरुपास्यताम् ॥७६॥

तदैवराष्ट्राऽभ्युदयस्वतन्त्रता
सदर्थशिक्षाव्रतिनां प्रशासने
निर्भीकताधर्ममयी प्रजार्थिता
कुटुम्बभावानुगता भविष्यति ॥७७॥

प्रशासकीयं धनमात्मरक्षणे
यानं तथोद्योगपदं कुटुम्बिने
संसाधनं वान्यविधं कदाचन
न धारणीयं न च तद् विभज्यताम् ॥७८॥

प्रजेश्वरस्येव पुरातनस्य वै
प्रजार्थभूतिर्विधिना सुरक्षिता
प्रजाभ्य एवेतिविचार्य धर्मतः
प्रदीयतामेषनयस्सनातनः ॥७९॥

एवंविधस्याखिलशासकस्य या
स्वकर्मपारायणनैतिकीक्रिया
वैधानिकीलोकहिताय वर्णिता
सा पालनीयाऽनुगतैश्चमन्त्रिभिः ॥८०॥

परिस्थितीनामवधारणाऽऽदृतः
समन्ततोराजधनस्य संचयः
सुभिक्षदुर्भिक्षकृते व्यवस्थया
सम्पादनीयश्च विधायकैस्सदा ॥८१॥

सर्वत्र सामर्थ्ययुतैरभीप्सितः
धनागमोराज्यसुनीतिसम्मतः
सुसांसदानाममितप्रयासतः
स्वतन्त्रतायाः प्रथमो नियामकः ॥८२॥

नियामकैर्नीतिवरैरमोजनाः
सल्लोकतन्त्रानुगतास्स्वराष्ट्रके
सुतोर्थभूमावविभारभूषिताः
सभाजनीया जनतन्त्रशासकैः ॥८३॥

तदैव सत्तन्त्रमयी मनुष्यता
सत्प्रेमभावग्रहिलाविधिज्ञता
चिराय सद्भावयुतेव सक्षमा
सुपद्धती राज्यधुरीव राजते ॥८४॥

समीक्षिता सर्वपथप्रदर्शिका
संशोधनाय त्रुटिभावसंहतेः
कलिप्रभावेपि समर्प्यभावना
फलत्यवश्यं शुभकर्मसन्ततिः ॥८५॥

न कापि हिंसा जनतन्त्रमानसे
स्वप्नेपि वाचा मनसापिकीर्तिता
धनापहारोपि तथावमानता
शस्त्रास्त्रघातेन समं हि हिंसनम् ॥८६॥

न प्राणदेहादिदरीदरिद्रता
सम्भासिता केवलमत्रनिन्दिता
शरीरसंयोगवियोगनामतो
जन्मान्तधाराधरणीसु वर्धते ॥८७॥

कष्टाधिकं वात्रपराभिवञ्चनं
यशोऽपहारेण धनापहारतः
मिथ्याच निन्दास्तुतिकामना सतां
दुःखाधिकस्यैव विधायिकावृता ॥८८॥

कष्टाधिकं वात्र पराभिवञ्चनं
यशोऽपहारेण विपक्षमर्दनम्
मिथ्याविनिन्दास्तुतिकामनावतां
दुःखाधिकस्यैव हि जन्महेतवः ॥८९॥

वाणीप्रियानैव यदा जगद्धिते
क्रियावरानैव महास्तुतिप्रदा
सेवापवित्रा न सुधापगास्मृता
व्यर्था प्रसूतिर्नरजन्मकल्मषा ॥९०॥

वर्णाश्रमाचारविनिन्दनेन वा
प्रथापुराणाधिगता हितैषिणी
तिरस्कृता वापि जनैर्विमोहतो
न सौख्यशान्त्यै विहिता मनीषिभिः ॥९१॥

परस्परं प्रेमदयानुरोधतः
सेवोपकारेण सदाविबोधतः
प्रजाहिते चिन्तनमेव मुख्यतः
सुसांसदानां महती प्रवीणता ॥९२॥

धन्योऽधिकारार्थमहाव्रतप्रदः
महोत्सवो राष्ट्रहितावहश्शुभः
सत्यानृतप्राणिमनोऽनुरूपतः
लोकत्रयेपि प्रणयप्रवर्धकः ॥९३॥

यतो यतो राष्ट्रसमृद्धिरक्षणे
प्रजाधिकाराहितनीतिशिक्षणे
प्रशासनेनापि सदाहितेक्षणे
समीक्षणं साधुमतं प्रपद्यते ॥९४॥

तेनैव कल्याणकरी सुयोजना
चतुष्पदाऽऽधारवती सुसाधना
प्रभावतीवार्थमहाप्रकाशना
प्रान्तस्य राष्ट्रस्य महीयते स्तुता ॥९५॥

यथामतिप्रौढविचारनीतितः
सदर्थगामी जनमानसप्रियः
राष्ट्रीयकोषानुमतेऽनुमानतः
सुरक्ष्यतां पूर्णविचारवैधता ॥९६॥

वैचारिकश्शान्तिकरस्सदास्तुतः
उपायभूतो महिमा सभासदाम्
यशोऽमलं भासयितुं विधानतः
सनातनः पुण्यपथप्रदर्शकः ॥९७॥

या राजनीतिर्न मनोरथप्लुता
प्रजाजनानामनुरोधकर्मणा
समाश्रिता संगतिमन्त्रणादृता
स नैवलोकाऽभ्युदयप्रभाविनी ॥९८॥

राज्ञां प्रजानामनुभावभाविता
श्रद्धास्पदाऽऽराधनरञ्जनात्मिका
रक्षावहाराष्ट्रसमग्रबन्धुता
सुजीविता वै जननीव रक्षिका ॥९९॥

स सामदण्डाश्रितदानभेदतः
चतुष्टयी वेदविदां शुभक्रिया
यथाक्रमं पक्षमता यथाक्षणं
प्रपद्यतां पूर्वपवित्रनीतिका ॥१००॥

नवीनतायाश्शुचितापुरातनी
विभीषिकेव प्रखराऽपराधिनाम्
सुधारिकेव प्रमितास्त्रधारया
प्रसह्यवेगाधिगताऽभिमन्त्रिका ॥१०१॥

द्विधात्रिधाचार्थकरी प्रतारणा
तुरीयता नैव सुखाभिमानता
सुनीतिकायाः नियमेनपालनं
भवेद् यदा राष्ट्रहितं तदेप्सितम् ॥१०२॥

सुशिक्षया सर्वविभागनिष्ठया
विशुद्धभावाभिमतेन रक्षया
नयाधिकारेण विभावयन् जनान्
नीतिज्ञनेताऽभयदायको मतः ॥१०३॥

कलंकिता नैव कदा प्रशासकाः ?
प्रान्तेषु राष्ट्रे च विभिन्नसंस्थया
कृतार्थतां ते कलहायमानसाः
विषादमाप्ताश्च कथं हि रक्षकाः ? ॥१०४॥

जातास्स्वयं नीतिभयप्रगुण्ठिताः
कथावशिष्टा भुविभाग्यभञ्जकाः
क्रोधान्धगर्ते पतनप्रधावतः
जनान् कथं पालयितुं समर्पिताः ? ॥१०५॥

स्वयं स्वराष्ट्रस्य चरित्रनायकः
स्वजन्मभूमेश्च महाभिभावकः
स्वधर्मनीतेश्च सदाऽभिधायकः
शुभाचरन् दर्पणमात्मदर्शनम्
(शुभावहोलोकहिते समर्पितः) ॥१०६॥

भजन्नहोरामविभोश्चरित्रतां
वदन्नभीष्टार्थपथे पवित्रताम्
भजन्नहो सर्वजनावधानतां
प्रशासको लब्धयशो भविष्यति ॥१०७॥

भूयाद् विभूतिर्हरिशम्भुसम्मता
यायाद् यशोमूर्ध्नि महत्वमात्मनि
कूर्यात्कलावन्तमभीष्टपूरकं
प्रजाजनं रञ्जयतु प्रशासनम् ॥१०८॥

लोकोपकारः स्वकुलोपहारतः
मनोविहारः स्वजनोपकारतः
शरीरसौन्दर्यविधिश्च योग्यता
स्वजीवनस्य प्रणये सुभाविताः ॥१०९॥

श्रद्धोन्नतिः प्राणिसुयज्ञयाजना
कर्मोन्नतिः कीर्तिकलाप्रकाशिनी
स्वात्मोन्नतिर्धर्ममयीसनातनी
शिक्षोन्नतेः सर्वफलं समीरितम् ॥११०॥

को वा जनो नैव सुखं प्रतीक्षते ?
किं वा मनो नात्र मुदं समीक्षते ?
वचो न किं वा शुभदं प्रभाषते ?
सद्यो हि यस्यास्ति समानभावना ॥१११॥

धन्यस्सुजन्माभुविभारतस्य वै
मान्योवरेण्यश्च जनस्स धार्मिकः
स्वमातृवत्सर्वंजनस्य मातरम्
बन्धूपमान् सर्वजनांश्च पश्यति ॥११२॥

सम्भावयन् धर्मदिशा च पालयन्
समादरेणापिमुदाप्रसादयन्
प्रजास्समस्ताश्च कुटुम्बभावतः
स्वयं प्रसन्नो भवतीह शासकः ॥११३॥

समर्थसंघर्षरताः प्रजाहिताः
समृद्धिसम्भारविवर्धनोत्सुकाः
सौविध्यसंक्रायवितानमानसाः
प्रजाहिताय प्रथिताः प्रशासकाः ॥११४॥

भयावहादुःखघनामहीपता
दरिद्रता राज्यनयस्य दोषतः
पतिव्रतानां प्रणयप्रधानता
न साधुवादेन भवेत्सुखावहा ॥११५॥

विधायकेषु सहजा सुनम्रता
स्वजीवने स्वक्षपदेच दक्षता
न सञ्चयोऽधर्मनयेन सम्पदा—
मित्येवराज्याधिपसत्यमान्यता ॥११६॥

बुभुक्षितःकोऽवसनः स्वराज्यके
प्रपीडितश्चापि विनौषधिं जनः
नभोगृहीछादनपत्रयाचकः
सीदत्यहो चेन्नृपतेरयोग्यता ॥११७॥

सुरक्षितास्सर्वप्रजाः सुसाधनैः
सुशिक्षिताः पूर्णनयेन विद्यया
समेधमानाः जनतन्त्रशासने
प्रयान्ति सन्नीतिपथं प्रसादिताः ॥११८॥

परिश्रमाधारसमीहितार्थया
बुद्ध्या सुधृत्यावनिभाग्यपुण्यया
निर्वाचिताः शुद्धमतेन संयताः
ससांसदामन्त्रिवराः प्रकीर्तिताः ॥११९॥

विदिता गदिता श्रुतिसारतमा
निहिता हृदिभक्तिवराद्य हरेः
प्रथिताग्रथितारचनारसिता
हरिपादनतेव कलाकविता ॥१२०॥

दयिता ललिता सहजासलिला
समताऽननताजनतापहरा
कलया कलिताऽवनिता ध्वनिता
भयतापहरी कृपया नु हरेः ॥१२१॥

कमलाविमला परमात्मकला
प्रणताऽमरताननमन्त्रवरा
धरणीधरभूषणमौलिनिभा
शरणाश्रयपालनपूर्णदया ॥१२२॥

जनवारणदुःखनिवारणता—
ऽभयदानियता प्रभुता परितः
सवितेव करग्रहभूतिकरा—
प्रहरप्रहरीव दिशो जयताम् ॥१२३॥

सुघना सुधना शुभगाशुभदा
सुखशान्तिनदीव महावरदा
सहसारभसाभवमोचनिका
कृपया परयापरमार्थपथा ॥१२४॥

भवदीयतयामहिमामिलिता
प्रमिता प्रभुतावशगोचरगा
हरिभक्तिधृताविभृताप्रभुता
विबुधान्वयवोधनमेव भवेत् ॥१२५॥

परिहासविकाससमाश्वसिता
भवभीतिविभञ्जननीतिनता
विबुधाननकाननकल्पलता
प्रियवागमृतालसितावसतिः ॥१२६॥

रमतामधुनाऽमरलोकरुचिः
शुचिता सुहृदामभिराममयी
प्रणतिः प्रगतिः प्रमितिः प्रसृतिः
भवसिन्धुतरीव सदाजयति ॥१२७॥

कलिकालकुठारभयग्रसिता
जनताजनतन्त्रमतानियता
प्रणता सततं शमशान्तिरता
निजधर्ममुखानुलभतेसुखताम् ॥१२८॥

प्रणिपातविधेरमिताप्रभुता
जनमानसशान्तिकरी शुभदा
जननीव सदीशकृपासबला
सजलाऽनयना वरदा भवति ॥१२९॥

नहिमानमहोहृदिधर्मदया
मतिमन्दजनस्य कथाकलिता
भवभीतिहरा प्रभुदृष्टिवरा—
ऽसुरभावनिवारणशक्तिवरा ॥१३०॥

आत्मनिवेदनम्

नान्यं जानेत्वदन्यं पतितजनहिते शास्त्रगीते प्रवन्धे
वेदेवेदान्तमूले श्रुतिनिकरवृते ब्रह्मविद्यावधाने
सर्वत्रैवं तवेदं पदकमलयुगं ध्यानगम्यं मुनीन्द्रै-
रद्याप्येवं विमूढः प्रणतिपरवशः प्रार्थये दर्शनेच्छुः ।।१।।

सिद्धैरर्थैरथांगप्रथितकरधृतो दैत्यदर्पान्तिहेतोः
सेतुस्संसारसिन्धोरखिलभुवनपस्स्वांशजीवोपकारे
सद्यस्सञ्जातभावो निखिलजनमनो मोहमायापहारी
यस्य प्रौढप्रभातस्तिमिरलहरिकां नश्यतीवात्रवन्द्यः ।।२।।

विद्यानद्या नवीनः कलिमलमथने कोपि भावस्त्वदीयः
पारन्नेतुं प्रसक्तस्त्रिभुवनविदितः कोस्तिनाथ ! त्वदन्यः
आशाबद्धः प्रवुद्धः कथमिह भवतः पादपद्मैकनिष्ठो
मग्नो नित्यं भवाब्धौ तवपदनिरतस्स्यां तदा जन्मधन्यम् ।।३।।

सेवाभावोजगत्यां तववरकृपयापूर्णकालावधिर्यः
यस्यास्त्येवं त्रिसन्ध्यं जननिजनकयोः पुण्यराशिर्यथा वा
रक्ष्यः पुत्रप्रवृद्धैस्सुपथरुचिवरैर्भाग्यतो जन्मभूमौ
साफल्यन्तद्विचार्य नयनपथगतो नाथ ! तेऽस्तुप्रसादः ।।४।।

विप्रैः क्षिप्रं प्रपञ्चं हरिपदरसिकैश्शोधयित्वास्वधर्मै
वर्णानन्यान् विमुग्धान् नियतिपरवशैरादतानन्दरूढान्
श्रद्धावद्भिस्सुभिक्षं जगतिजननिभूमौ कथञ्जायतां वै
सत्यं विद्या विदग्धैर्नवनिधिपथिकैर्भुज्यतां भाग्यलक्ष्मीः ।।५।।

सन्तश्शक्ताः प्रबुद्धाः भवभयहरणे भक्तिभावप्रपूताः
सीताभीतेवलंका सदनुजनगरी रावणासक्तिमूला
यावद् रामो निषंगादमितशरगणैरर्पिता मुण्डमाला
रक्षोनिर्व्यूहमूलेतिसुविदितदिशा भावयन्तो भवन्तु ॥६॥

नीरक्षीरप्रबोधे नियति नियमतो भातिविद्यायदीया
तीव्रैरुग्रैस्तपोभिर्विविधविधिरतैं रामकृष्णांघ्रिपूतैः
सर्वानर्थप्रशान्त्यैसहजमतिभरैरर्थसिद्ध्यै विशुद्धा
तेषामेवप्रकर्षा जनिरिहभुवने मन्यते पुण्यमूला ॥७॥

भाग्येनैवात्रपूर्णा नयनपथगता भावमूर्तिर्भवान्या
मान्या मातुस्तवैव प्रविरलदृशिताऽऽनन्दिनीवान्तरा मे
कल्याणायप्रणम्या कलिकलुषहरा सर्वदाप्रेमभक्त्या
जायाद् देवि त्वदीया निजजनविहिताऽऽनन्दसिन्धुरिवाद्य ॥८॥

वृद्धानामाशुविद्या प्रतिपदमधुना धारणीया प्रबुद्धैः
श्रद्धाभक्त्यागृहीता निजपरजनतो भेदबुद्धिर्विशोध्या
सेवाभावोदयायव्यथितजनहिते कर्मणा प्रेमभावात्
लब्धाभर्त्री भवित्री प्रणतजनमनः प्रीतयेऽस्तु प्रणम्या ॥९॥

निद्रातन्द्रे विसर्ज्य श्रुतिरवशुचिता नैव सायं प्रभाते ।
ब्राह्मे काले सुषुप्तिः कलियुगफलिता सर्वपुण्यप्रणाशे
कालो नीतः कुबुद्ध्या न च मनसिगतो भक्तिभावार्थलेशः
जाने नैव प्रसिद्धं तवचरणरजः सर्वपापक्षयाय ॥१०॥

रक्षोपायस्तवात्र प्रलयभयहरः कीर्तितः प्रेमबन्धः
जीवोब्रह्मैवशेषो विविधमतिदृशा तथ्यवादप्रकर्षः
सेव्यस्स्वामीस्वरूपः श्रुतिगणवचनैरर्थतो मुक्तिलाभे
वादे वादे प्रबोधो भवतिजनिभृतांमत्र सिद्धान्तमूलः ॥११॥

विद्यामुक्तिप्रकाशे यतिवरवचसां वेदमन्त्रस्वरूपा
सर्वज्ञानप्ररोहे हरिहरविधिभिस्संस्तुतासर्वकाले
ध्येयागेयामनीषा सुरमुनिनिकरैश्चन्द्रिकेवप्रशस्ता
सर्वैराचार्यवर्यैः प्रतियुगममला वेदवाणी कलास्यात् ॥१२॥

पूर्णो ब्रह्माण्डभूमागिरिवरगहने ब्रह्मविद्याऽभिभूतः
देहोगेहप्रकल्पो मणिवरनिलयो विष्णुपादप्रपूतः
भक्ताधीनो रमेशस्स्वजनहितरतो भक्तदेहावधूतः
यो वा को वा प्रसन्नः प्रभुपदरसिको रासलीलाभिनीतः ॥१३॥

नित्यानीतिर्नवीना नवनिधिनिहिताबन्धुभावप्रभावा
प्रीत्यारीतो रमायाँ भुवि ममजननीवात्रवाभास्यमाना
भूयाद्भूयोऽनवद्या सविधि सुमनसा सर्वदा शान्तिमूला
ब्राह्मे वंशे जनित्वा भवभयरहितो मे तदा जन्मधन्यम् ॥१४॥

नायं ज्ञानीसुकर्मा न च विधिविहिते शास्त्रसेवाप्रवृत्तः
तीर्थे मान्ये त्वदीये विषयरुचिधरः पूर्णधर्मच्युतश्च
ईर्ष्याद्वेषप्रसङ्गात् स्वजनहितपरः सर्वसामर्थ्यहीनः
क्षुब्धोलुब्धश्चपंके धृतपदनियतस्तावकं धाम याचे ॥१५॥

दुःखग्रस्तं शरीरं कुमतिहतधनो दीर्घकालाच्चनिन्द्यः
आसंसारं भयार्तो न च निजमनसाप्यद्यधाम्नित्वदीये
रन्तुं योग्यः कदाचिद् यदि न तवकृपावर्षिणीदृष्टिरत्र
प्रार्थ्यं याचेविनीतः कुपथमतिहरं नैतिकन्ते प्रभावम् ॥१६॥

सत्यं श्रद्धाविमुक्तस्त्वयिसहजगुणास्स्वाश्रितेभ्योवरार्हाः
नित्यंरक्षारतास्ते धृतनरतनुताः सर्वशिक्षाहितार्थाः
शक्ता रक्ताकृतार्थाः प्रतियुगमधुनाप्यन्ततः किं दयायाः
पात्रन्नास्मित्वदीयः कथमिह भवतामोच्यते भोग्यलीनः ? ॥१७॥

दृष्टिर्भोगावनद्धा यदपिममसदा धर्मवैर्यप्रणाशात्
इष्टापूर्तिस्तवैव प्रकृतिपरवशा येन जाताविशुद्धा
सद्यस्सन्धार्यमाणाप्यमित मधुरिमा यत्र सानन्द भाषा
सेयं प्रेम्णावधानानिखिलजनमनोमोहदूरीकरोतु ॥१८॥

शापोद्धार: कथञ्चिद् वर-मुनिवचसा मेऽस्ति जन्मान्तेरपि
दैवाधीनोऽथवाते पदकमलरतश्चेद्दयाधीनदेही
कल्पे कल्पे विकल्प:प्रभवति भुवने कर्मभोगोपयोगे
भोग्यो भोक्ता प्रयोक्ता प्रभुपदनिलये भान्तु कल्पावधिर्वै ॥१९॥

देवो न: पूर्णभारं जननमरणकं स्वल्पलीलायितस्सन्
सोढ्वा ससारसारं सुमतिकरपथं दापयित्वाऽऽश्रितेभ्य:
श्रद्धावद्धान् समस्तान् निजपदभुवने स्थाययित्वा कृपालु:
लक्ष्मीनारायणोवै सविधिशुभकरं मंगलं सन्तनोतु ॥२०॥

क्रोधावेगादविज्ञस्सकलगुणगणैरप्यमुक्तोऽघयुक्त:
जातो भाग्यादवश्यंसुपथगतिहतो नास्तिदोषो विधातु:
मन्ये कल्पान्तभोगं त्रिदिवसुखहिते कोपि नैवात्रयोग:
दु:खाधिक्यं जगत्यां सततमधिगतं त्राहि नाथ ! प्रपन्नम् ॥२१॥

कामोलोभश्च शक्तौ नरकगतिकरौ जीवराशेरवश्यं
ईर्ष्याद्वेषौसमोहौत्रिविधविपदहोदु:खदारिद्र्यमूला:
वाल्येक्षीणांगहेतुर्न च सुखशुचितानन्दलाभाययोग:
यावन्नान्तं विपाकं नयति कुकृतिजं वृद्धरोगोपभोग: ॥२२॥

स्वार्थीवान्तर्निगूढ: कठिनपथगतोऽशान्तदु:खाब्धिमग्न:
त्राता नैवात्रधाता हरिहरकृपया भोगभाग्यप्रभावात्
पित्रोर्नास्तीहदोषो जगति जनिभृतोस्सर्वकर्मप्रसंगात्
इष्टं किं वा न जाने गुरुवरकृपया ज्ञानमेव प्रपाता ॥२३॥

सिद्धैश्वर्यप्रसंगे श्रुतिवचनवरैरात्मरूपं विशोध्य
वेदान्तोद्गारवाणी जगदवनविधा भारते भारतीयैः
गीता भीतैरवश्यं प्रतिपदमनिशं भोगमोक्षप्रसिद्ध्यै
येषामित्थं प्रबोधः प्रखरमतियुतास्तेऽत्रधन्याः प्रणम्याः ॥२४॥

धर्मधीराः प्रसन्नाः स्वजनपरिजने प्रीतिरीतिस्सहर्षं
सौहार्देनान्यभात्रं सदयहृदिगता वर्धयन्तः कियन्तः ?
सन्तस्सन्तीह भूमौ कतिपयमुनयो मौनमालम्ब्यमानाः
सिद्धारम्भाः परार्थे परिणतमनसो मंगलाय प्रसक्ताः ॥२५॥

भीताभूमौ हताशाः पतितपथगता वञ्चनाछद्मधूर्ताः
सत्यं जानेमदन्या इति न परिमिता वाचमन्वर्थतायै
मुञ्चन्तोदर्पगन्धां कलहकलियुगं पोषयन्तोऽन्धनेत्राः
लोकत्रासप्रशान्त्यै प्रभवतुमहिमा देवदेवस्य विष्णोः ॥२६॥

पूर्णः पूर्णार्थभावो भवविभवभुवो जन्ममृत्यूपरान्ते
सारस्सिद्धान्तनीतेश्श्रुति रववचसां चापि धर्मप्रणाल्या
धार्यस्सर्वैस्सहर्षं परहितनिरतैरर्थतो धर्मविज्ञैः
तेनैवात्रप्रसंगे विरतरथपथे मृग्यतां मादृशोऽन्यः ॥२७॥

को वा कल्पान्तयोद्धा समरभुविगतो न्यायमार्गे प्रगीतः ?
यो वा को वा स धन्यो यदि नियतिरथे रामकृष्णाविहाद्य
मान्यो वेदार्थवीथीगतविबुधवरो योऽल्पकालेन सर्वं
जित्वा हित्वा कुमार्गं गणयति नितरां सत्पथेऽनन्तधीरान् ॥२८॥

हर्षामर्षौ समीक्ष्य शुभगृहगमने संयतश्चात्मबोधे
लाभाऽलाभौ विचार्य जयविजयकृते नैव कोपि प्रवादः
सायं प्रातः सधर्मः सविधियजनमाशु प्रज्ञावधानैः
भाव्या भाग्योदयश्रीः कृतयुग इव या साऽद्यलभ्या कथं स्यात् ? ॥२९॥

विद्याऽविद्ये निवद्धे प्रणयविधिगते वेदवेदान्तशास्त्रे
वादे वादे स्वधर्मः करचरणफलोपाधि संस्कारगम्यः
धार्यस्सर्वैः प्रसन्नैर्यदिह्विहितमन्यप्रकाण्डैः प्रबुद्धैः
सोऽयं सिद्धान्तवादः प्रबलमतवरो धारणीयश्च सततम् ॥३०॥

पारावारन्नगन्तुं श्रुतिमुदधिमयोन्नापि मातुं समर्थः
शास्त्राब्धेर्वै विमर्शं सरसिजनिलया शारदा वा यथार्थम्
कर्तुं धतुं प्रसक्ते न च नरवपुषा तेपि मान्येऽतिधन्ये
बोद्धा विद्याप्रबुद्धः कथमिहनिपुणः कीर्तनीयस्तथार्थे ? ॥३१॥

साराऽसारं विचार्यं प्रणवविभवजं मन्त्रराशेरगम्यं
को वा सिद्धान्तवेदी दिविभुवमभितो व्याप्त मन्त्रार्थरूपम्
ब्रह्माण्डं यस्य लीलालव सुविलसितं पूर्णकल्पावलीढं
तस्यैवं कापिवाणो त्रिभुवनविदिता पातु विद्याधिदेवी ॥३२॥

मायामारीच भीतोऽमरगणविबुधोनैव सन्देहलेशः
मायामुग्धो स धन्यो यदि सहजतया रामभक्तप्रपन्नः
मायामन्त्रप्रभावं विफलमतिबलो कोपि रुद्रावतारः
कर्तुं हर्तुं समर्थो विनयमतिवरोरामनाम्नाभिभूतः ॥३३॥

धारा धर्मस्य शुद्धा निखिलसुखकरो कर्मणां कूलमूला
भावाऽभावौ भवाब्धौ नियतिपरवशौ भ्रान्तिमन्तो जनौघे
ध्येयाध्येयाः पदार्थाः प्रभुवरशरणैरक्षितास्स्युर्यथार्थाः
तद्वै ब्रह्मावबोधे विहितकरणकैरात्मभिरर्थसिद्धिः ॥३४॥

सन्तोषोनैव वेद्ये हरिहरवरगे धर्मतो ज्ञानमूले
विद्यायामर्थसिद्ध्यै वहुकृतमननाऽऽदर्श हर्षप्रसादे
भव्ये नव्येप्रकर्षे हरिपदनख भूर्भूमिसीमेव शान्ते-
राद्धान्तो यस्य सत्यं स हि जयतितरामज्ञता नाशविद्यः ॥३५॥

गंगागीता नवीना सततमधिगतानन्दमूला प्रत्यक्षा
सन्ध्यारात्रीर्दिवा वा क्षणमपि विदिताऽनर्थनाशे प्रशक्ता
चारित्रोद्धारविद्या प्रतिजनभरणे ब्रह्मज्ञानेपिहेतुः
सेतुस्संसारसिन्धोः परमशुचितटं नेतुकामाभिधा सा ॥३६॥

रामश्यामौ यथा वा ब्रजभूविपथिकौ पूर्णयोगेश्वरौ वै
सन्त्राणप्रयाणे वनमपिगहनं लक्ष्यभूतं यदर्थम्
कंसे दैत्येशनष्टे ब्रजभुविवनिताकृष्णपादाम्बुजार्था
सर्वं तथ्यं किमर्थं यदि नहि भविता भक्तिभूमिश्च राधा ॥३७॥

व्यर्थं सर्वं समीक्ष्यं हरिपदवरणं नैत्र चेद् धर्मतो वा
व्यर्थं जन्मप्रसंगो यदिनरवरता नैत्र साक्षीवधर्मे
पूर्णानैव प्रसन्नाद्युतिरपि मलिना नेत्रयोरस्तु धारा
भक्तेर्भावानुरुद्धा यदि न हरिकथाजन्य भावातिधन्या ॥३८॥

एवं तथ्यं मदीयं भवभयविधुरं मानसंप्रालभन्तं
ज्ञात्वा नाथ त्वदीया कथमिह न कृपा तावको प्रार्थनीया ?
नीत्वा गीत्वा तवेदं गुणगणनिकरं सर्वरक्षोपधानं
ध्यानं ज्ञानं मदीयं विविधविषयकं नारकीयं न नाश्यम् ? ॥३९॥

राधाकृष्णं जयन्तं सहजयमपुरो पार्षदा धर्मबन्धोः
भीता नेतुं न याताः हरिजनसन्निधे पापपुञ्जं वहन्तम्
किन्तेनाम्नः प्रभावो ममतनुवचसोर्नास्ति पापाद्रिनाशे ?
येनाहं सर्वकाले विपदि सुनिरतस्त्राणकामोविषण्णः ॥४०॥

राधाराधारटन्तं भवभयहरणं मन्त्रमूलं रहस्यं
सीतारामेति नाम्नः प्रसभमनिशमाधारमूलप्रभावम्
हृद्यं कृत्वा च सद्यो नरवरकृतिनो जन्मसाफल्यहेतोः
स्मारं स्मारं भवेस्मिन् निखिलमपिजनं प्रार्थये मंगलाय ॥४१॥

संसारेऽस्मिन् समग्रा नरवरवनिताः सर्वसौन्दर्यवलिताः
धर्मं प्रेम्णा सदर्थं पतिकुलशुचितादर्शनोर्ति विचार्यं
श्रद्धाभक्त्याऽनुरक्ता गृहधनमभितो रक्षणीयं स्वधर्मः
इत्थं नित्यं प्रकर्षं निजपदविधिना रक्षयन्त्यो जयन्ति ॥४२॥

भव्यं भाग्यावसानं कतिपयदिवसैः कैश्चिदेव प्रपन्नैः
साध्यं हृद्यं वदान्यं नियतिविधिभवं भारतीयप्रकर्षम्
श्रद्धावद्भिर्नवीनं नवनयविहितं पूर्णधर्माविरुद्धं
लक्ष्मीनाथप्रसादात् सकलजनकृते वर्धयन् सुप्रभातः ॥४३॥

मन्येभोग्या कदाचिन्मम जनिरपि सा तुच्छयोनौ निकृष्टा
कालेकाले प्रकृष्टा जलजजडगता शूद्रवैश्यादिरूपा
क्षात्राविप्रातथान्ते युगयुगकलिताज्ञानवत्या च तन्वा
लब्धा मुक्ता भवाब्धौ परमत इयती योनिरीतिस्समाप्या ॥४४॥

जाने नैवाहमत्र प्रथितकृतिपथं जन्ममृत्यूपहासं
भासं भासं सचित्रं चरमगतिपथं भावयन्तं निदानम्
धर्माचार्यप्रबोधो न च मयिरमते येन विश्रामलब्धः
स्तब्धो बद्धो विमुक्तः यतिपतिचरणैरक्षितस्स्याभिहार्तः ॥४५॥

दृष्टिर्दुष्टा विपन्ना कृशतनुकरणैर्नास्तिशुद्धप्रबोधः
नामीलोकाविशोकास्तवचरणवरं प्रार्थयन्तोरमन्ते
द्रष्टुं प्रष्टुं स्वरूपं सुललितवयसासर्वकालेषुखिन्नाः
छिन्नाभिन्नासमाजे निजकृतिनियमैर्वञ्चितादु.खभाजः ॥४६॥

मन्त्रैस्तन्त्रैस्स्वतन्त्राः प्रगतिपथधृता नैववात्सल्यभावा
सेवासांसिद्धिकीवा व्यथितजनकृतेनास्तिजीवोपकारः
गेहेग्रामेस्वराज्येस्वजनपरदृशास्वार्थपूर्णप्रयासः
भुक्तिर्मुक्तिः कथं वा विपदिविलसतां त्रातुमर्हः प्रभो ! तान् ॥४७॥

विद्यानद्याः प्रपातः सुरधुनितरलैः पापपुञ्जप्रणाशे
शैत्यैपावित्रवेगैः प्रवहतिनितरां प्राणिनां तारणाय
धन्यं जन्मप्रसूनं सुरुचिरगृहके पुत्रपौत्रादि रूपं
यस्येदानीं प्रपञ्चे न भवतिसुरुचिस्सोऽस्ति धन्यः प्रसन्नः ॥४८॥

सीमा भीमा भवाब्धेरखिलजनजनेरर्थतोऽपाररूपा
दीना हीनामनीषा न खलु नयनतो भावनीया सुनौका
यावन्नीशो रमेशः प्रणतजनकृते दूरभूतोऽप्रसन्नः
तावन्निष्टः पदार्थः करकिसलयगो नैव जीवः प्रसन्नः
(जीवप्रयासे) ॥४९॥

वाल्येकाले विमूढोनियतिकृतिवशोयौवने स्वार्थयुक्तः
भुक्तोभोगस्सतृष्णो नवनवरुचिरोदेहधर्मं विचार्य
वार्धक्येनापिमोहो धृतनिखिलनयैरन्ततोऽनर्थमूलः
नाश्योनारायणेनप्रवलरिपुरयं दोषसंघः समूलः ॥५०॥

मातापित्रोस्सुसेवा सविधि सुविहितानैव भाग्यप्रभावात्
नित्यं सायं प्रभाते नहिसहजतया साधितादूरवासात्
भाग्येनैवात्रयोगो जननिजनकयोर्लभ्यते धर्मशीलैः
सेवाभावोपहारे मनसि वचसि वा नैवदोषावधानम् ॥५१॥

देशे देशे विभिन्नो द्रुततरमधुनाधर्ममूलस्वभावः
भाव्यो भावोपनीतः प्रतिजनशुभदोरक्षणीयस्सदैव
जानन्नित्थं जनोऽयं न भवति नियतो धर्मलाभे समर्थः
नाथ त्वामेव मन्ये निखिलनियमतो रक्षकं शिक्षकञ्च ॥५२॥

देया सामर्थ्यशक्तिस्तव भजनकरी लोककल्याणमूला
धर्माम्नाये प्रशस्ताविवुधवरमतापूर्णशिक्षाभिधाना
नानारूपा सदिच्छा जगतिजनहिता सर्वरक्षावधाना
वेद्यावेदान्तमूला स्वपरजनसमा वर्धतां तावकीयम् ॥५३॥

पूर्णाविद्या कवीनां कलिमलहरणे स्तोत्रनारायणीया
भक्त्याधर्मस्वभावा विदितविधिमताऽनन्यभावोदयाय
नाथे नारायणेऽस्मिन् प्रणयनयदिशाऽऽदर्शरूपानवद्या
सेव्याश्रद्धावधानैर्नवनवकणिकाकीर्तिकुञ्जस्य विष्णोः ॥५४॥

विष्णुर्जिष्णुर्महेशस्सुरमुनिनिवहैरर्चितोयोपि को वा
धर्मप्राणप्रसंगे प्रतिहतगतयोव्रह्मभावान्विता वै
सत्याचारप्रभावाश्श्रुतिपथविदिताः केचनैव प्रवुद्धाः
कल्याणाय प्रणम्या ममनयनपुरः प्रार्थिता भान्तुनित्यम् ॥५५॥

राजारंकौ समानौ प्रभुपदरसिकौ धर्मभूमौ समीक्ष्यौ
लाभालाभौतयोर्वा न च सपदि निधेर्वर्णितौ कीर्तिभाजौ
सत्यं तत्रापि धर्मं समविषमतया तुल्यतामापकश्चेत्
लोके सर्वे समानाः प्रतिवचनयुताः पूज्यमानास्तदास्युः ॥५६॥

धर्मा वर्णाश्रमस्थाः प्रतियुगनिधयस्संप्रदायप्रधानाः
दैवाधीनास्त्रिलोकास्सुजनसुखभराजीवनत्राणहेतोः
सृष्टादृष्टाविधात्रा त्रिभुवननियमा नैष्ठिका मंगलार्थाः
ब्रह्माण्डाधीशमायाप्यखिलजनमनोमोहिनी दृष्टभोगा ॥५७॥

जातास्सन्त्राणरूपाः प्रकृतितनुभरानश्वरा नैव नित्याः
तस्मादस्य प्रभावो तनुधनविधया नात्मनिसंप्रविष्टः
हेया एते सुविज्ञैरमलपथयुतै रामकृष्णांघ्रि पूतैः
भावस्सोऽध्यात्ममूलः प्रणतिकरयुतैः प्रार्थ्यतेऽर्थसिद्ध्यै ॥५८॥

सोऽहंदासस्सदाते चरणकमलयोर्नास्ति सन्देहलेशः
देशोवासाय सोवै त्रिभुवनपतिना मण्डितोस्तिश्रिया यः
तत्रैवाशानिबद्धो नयनपथवृतः प्रार्थ्यमानो जनेन
प्रीत्यापन्थास्त्वदीयः करयुगलगतः पादपूतस्तवैव ॥५९॥

प्राप्यः केनाप्यगम्यो जननमरणयोर्भोगबीजप्रणाशे
देवेनात्रप्रपञ्चे नवनिधिवशिता वञ्चितोनस्समाजः
चेदत्रापि प्रकर्षे भगवदधिगतो भाग्यत एव सद्यः
मूलं सर्वस्य धर्मः प्रभुवरकृपया लभ्यते साधुवर्गैः ॥६०॥

हानिर्लाभोऽथवावा नियतिवशगतो दुःखदारिद्र्ययोगः
सर्वाम्नाये प्रसिद्धो जलचरतनुभिर्नित्यसाधर्म्यभोगः
भोगोरोगस्वरूपो दिविभुविविहितोब्रह्मभावातिरिक्तः
पापंपुण्यं विशोध्य हरिपदरसिको याति धामत्वदीयम्
(नारायणत्वम्) ॥६१॥

नाथे नैराश्यभावो न कथमपिमतो नैव सेवा विकल्पः
शेषोजीवस्तदीयो यजनभजनयोस्तस्य नित्योऽनुबन्धः
शेषी नारायणोपि प्रणतिपरवशो जीवराशेस्समक्षम्
भोगानेतान् विदग्धुं हरिहरशरणं वर्णितं वैष्णवाग्रैः ॥ ६२॥

दीनोद्धारव्रती वै यतिपतिचरणोभागवत्वप्रकाशे
स्वान्तर्यामीनिदेशे श्रुतिसरसवचो मंत्रनारायणीयम्
ध्यायं ध्यायं समक्षं परमसुमनसां मोक्षमूलं विदिश्य
तापःपुण्ड्रोऽथनामप्रथितपदयुगे ज्ञापयित्वा च विष्णोः ॥६३॥

यज्ञेनाराध्यदेवं त्रिदिवपथगतैं रंगनाथं प्रपूज्य
गीत्वास्मृत्वा समग्रं निखिलमपिधनं पादपद्मप्रसूतम्
तस्मै देवायसद्यो विगतकुशलभारोऽर्पयित्वाप्रसन्नो
भक्तोभोग्यस्वभावस्त्रिभुवनविदितोवन्दितोस्तिप्रपञ्चे ॥६४॥

निन्द्योनिद्रानिलीनः कलुषितहृदयोभक्तिभावप्रमुक्तः
संगस्संसारबन्धो भवविभवयुषो ब्रह्मणः पुण्यलाभे
जायेद् यस्य प्रधानो द्रुतमिहमनसा भक्तिभावप्रकृत्या
सोवैनारायणीयः प्रणयपटुदृशा पूजनीयोजविष्ठः ॥६५॥

हार्दोभावोभवेऽस्मिन् परमसुहृदयेभासमानोऽनवद्यः
भाषाभूवे पवित्रे वचसिमनसिवा नैवमिथ्याऽभिमानः
दोषोद्भाव: परेषां न च निजनिपुणैस्तर्कजालप्ररोहै—
र्भूयोभूयो विमर्शः प्रभवतुसुतरान्तर्हि सिद्धप्रयासः ॥६६॥

कासीवासोभवेद् वा व्रजभुविमथुराऽऽयोध्यमाया पुरीवा
सत्यं श्रीरंगधाम्नि प्रतियुगमखिलं मन्दिरं देवधाम
लक्ष्मीनारायणोऽसौव्रजभुविविदितः कृष्णरूपस्सराधः
गावोगोपाङ्गना वा विपुलसुकृतिनस्सन्तु भव्यायलोके ॥६७॥

लीलामाधुर्यमुग्धा व्रजभुविवनिताः कृष्णप्रेमाभिलाषाः
नृत्यन्तीस्तास्सराधा गुरुवर यतिभिस्तर्जितात्यक्तगेहाः
लीलाधारीमुरारिर्व्रजजनयुवतीः तोषयित्वा वचोभि:—
सन्तापाग्नि शमित्वा प्रियवचनकरः पातु तासां मनांसिः ॥६८॥

धीरावीराः स्वधर्मे प्रथितपदरता रंजनेलोकबन्धोः
कल्पानन्तप्रसन्नाः प्रणतिफलयुतासंयताः संकटेपि
सर्वापद्भ्यो विमुक्ता न च कलिमलता तेषु सूक्ष्मापि भाव्या
विद्यावन्तो महीय्यां शुभगतिनियताऽऽदर्शभूमिं प्रयाताः ॥६९॥

धाराधर्मस्य धार्या धरणिधरधृताधान्यधन्याधरण्याः
प्रेम्णापूर्तिप्रभावा परहितपरमानन्दपूजोपमानाम्
गीतागंगेव गेया गरलधरविभोगौरिदेवीव गम्या
नम्यानारायणीया नरहरिनिलयापातु पापान्वितान्नः ॥७०॥

दोषैर्दुष्टोऽस्मिदासः सदयतनुयुतो नास्ति नैराश्यभासः
मोहो मर्मान्तिकारी मनसिजइव वै पूर्णवेगेननीतः
क्रीतो मन्ये विजल्पन् नवनवकलयाकल्पितोनन्तकाले
मुग्धो विज्ञानशून्यः पतितइवजनः पालनीयस्सदैव ॥७१॥

ग्रामे-ग्रामे निवासोविधिपरवशतो मेऽत्र नास्ति स्वधर्मः ।
कल्पकल्पे विदग्धः पशु खगतनुधृद् दुःखितो भोगभुक्तः ।
जातोभूमेर्हि भारस्तवचरणगतो धर्मतोऽनर्हं निन्द्यः
याचे क्षुब्धो निदानं भवभयविदितस्सर्वतोरक्ष मां त्वम् ॥७२॥

यज्ञो दानन्नधर्मश्शुभपथरहितस्स्वार्थलीनोपिदीनः
मंत्रोजापो न भक्तिर्हरिपदयुगले प्रेमभावातिरेका ।
सर्वैश्शान्तोपरागैरवनिगततनुः पीड्यमानामदीया
रक्ष्याधर्माभिधानैस्वगतसुखकृतेऽनर्थतोऽनल्पकालात् ॥७३॥

सीतारामोऽभिरामः परमगतिकरो भक्तयूथस्य नित्यं
सत्यं नामाभिधानं त्रिभुवनवरणं लोकशोकापनोदे
राधाकृष्णप्रपन्नः परिणतवयसानन्द पुत्रप्रसादात्
कारागारे प्रपञ्चे कनकनिगडतोप्यत्र बद्धोपि मुक्तः ॥७४॥

शम्भूर्धातातथेन्द्रः सुरमुनिनिवहा यस्य शक्तेः प्रभावं
सद्योंज्ञातुन्नशक्ता न च विनयभरां प्रीतिमन्याञ्चदिव्याम्
नित्यं देवासुराणां विचलितमनसां सर्वमान्यं नितान्तं
पन्थानं प्रेमभाजं वितरतिनियतं सोऽत्र देवस्त्वधीशः ॥७५॥

हृद्योरागोऽनुवन्धस्स्वजनपरिजने तुल्यभावोपनीतः
शुद्धाचारप्रकर्षः श्रुतिवरविहितः पालनीयः प्रबुद्धैः
दीनोहीनोधनार्थो पतितजनगणः कर्मणावारणीयः
नित्यं दुःखाब्धिमग्नोप्रभवतु भुवने तीरगामीव सद्यः ॥७६॥

दिव्यादृष्टिः पुराणी प्रवलतरकृपैवात्रहेतुर्मुरारेः
लोकक्षोभप्रकाशे झटितिहरिदयामूललीलेवलीना
दैवाधीना समस्या नु निखिल जगतामत्र विश्वासजन्या
श्रीमन्नारायणेन प्रणतहिततया रक्ष्यता सा समस्या ॥७७॥

गीता भाष्यं वितन्वन् श्रुतिगणपरमं भाष्यवेदान्तमूलं
सौत्रं श्री जैमिनीयं ऋपि मुनिविहितं सांख्यसूत्रञ्चसर्वम्
न्यायोपेतं विचार्यं विधिहरिहरकं तत्त्वमाख्यातुमुक्त
सिद्धान्तं ब्रह्मवेद्यं यतिपतिवरः ख्यापयन्नस्तु दृश्यः ॥७८॥

श्रीश्रीभाष्यं नवीनं यदिह यतिपतेरर्थतोब्रह्मसिद्ध्यै
वेदव्यासोपगूढं मतमतिशयितं शंकराचार्यभाष्ये
वादेवादे प्रचण्डं मतमतिकृपयाखंडयित्वा सुयुक्त्या
वेदोद्धारप्रमाणे श्रुतिनिकरमतैरक्षितं वेदभाष्यम् ॥७९॥

ज्ञात्वा श्रुत्वाथविज्ञै र्यतिपतिपदनिष्ठैर्वैष्णवैर्ब्राह्मभाष्यं
श्रीश्रीभाष्यं यतीनां श्रुतिरसरचितं ब्रह्मवत्पूज्यमानम्
जीवोब्रह्मैव नास्ति प्रखरतममतेर्मण्डितो ब्रह्मशेषः
शेषी ब्रह्मैवसिद्धं प्रकृतितनुगतं जीवदेही च नित्यम् ॥८०॥

स्थूलं सूक्ष्मञ्चतद्वं निखिलजगतिकं कारणं कार्यजातं
शेषीशेषांगभावश्चिदचिदखिलजो नैवतत्त्वन्तथैव ।
मायाबीजञ्चतद्धिप्रकटनरतनुर्ब्रह्मभावाधिगूढं
ब्रह्मैवान्तर्वहिश्च निरवधिमहिमा ज्ञापनीयं विशिष्टम् ॥८१॥

ज्ञाताज्ञेयश्च सिद्धौ श्रुतिसहजदिशावेदवेदान्तवेद्यौ
सेव्यो विष्णुः प्रबुद्धैः परिकरनिवहैर्वैष्णवैरेषगीतः
स्वामीस्वाचार्यरूपः कुपितकलियुगेभक्तिभावावतारी
पूर्णः पूणर्थिगामी नयनपथगतश्शीघ्रमेनं प्रपश्य ॥८२॥

नाहञ्जानेतवेदं द्रुतमिहनिग[illegible]द्रष्यभूतं
जाने किञ्चित्तथापि प्रतिपदविहितं भ्रश्यमानं स्वरूपम्
तथ्यं किन्तत्रवेद्यं नहिममहृदये भाति रूपन्त्वदीयं
मन्ये भाग्यं विरुद्धं न च मयि शुचिता येन दुःखी पुरस्ते ॥८३॥

सत्यं दुःखान्तबीजं तवपदमिलितं तीर्थहृद्यं नवीनं
विप्रश्क्षात्रोऽथवैश्यश्श्वपचजनयुतो वा सदाभावपूर्णः
हृद्यास्सर्वेतवैत्र प्रणधरचरणैः पाविताःस्तेपिधन्याः
मान्याविष्णोरवश्यं त्रिभुवनमखिलं पावयन्तो जयन्ति ॥८४॥

राधावाधावसानं प्रियजनसुहृदां गोपगोपीगणानाम्
कृष्णेलब्धास्पदा सा विहरतिविपदाग्रस्तमानावधाना
कालिन्दीतीरधामा विलसितवचना कुर्वती प्रेमरूपा
साक्षात्सौन्दर्यमूर्तिर्व्रजजनममता देवतापातुलोकम् ॥८५॥

त्रस्त्रोग्रस्तोपि भौग्यैर्भवविभवरतैस्सर्वलोकोवलिष्ठैः
धर्मेऽधर्मे च विज्ञो भयमिहविविधं प्राप्य विद्यानिदानम्
धावं धावं जगत्यां हतगतिचरणः पूर्णतोऽधर्मभीतः
नीतो रामाश्रयत्वं सपदिसुखयुतो भावनीयो भवान्या ॥८६॥

देव्या कारुण्यमूर्त्या ममहृदिवसतिस्साधनीया सहर्षं
देवश्श्रीचक्रपाणिः परिणतवयसि प्रेमभावप्रकर्षम्
वर्षं वर्षं भवेस्मिन् सुनयनजलदैर्विन्दुधारामृतं वै
सर्वं मांगल्यमूलं प्रतिजननयनं नन्दयन्नस्तु नित्यम् ॥८७॥

प्रेमप्राणप्रधानः सकलजनमनः पावनः पूर्णचन्द्रो
दिव्यं देहं दधानो नयनपथगतोनारदप्रेमधामा
शम्भुब्रह्मादि देवैस्स्तुतपदकमलोलीलयानन्तरूपैः
धर्मक्षेत्रे सुधन्यः स्वजनजनजितो मंगलाय प्रणम्यः ॥८८॥

पूर्णस्सौन्दर्यराशिर्जगदखिलरुचिर्यत्र सिद्धिः कलानां
नित्यं सत्ताभिमान्या नरवरमहिता प्रीयमाणा जनानाम्
शास्त्रे काव्यात्मके वै मुनिगणविहितानन्द सन्दोहपूर्त्यै
सोऽहं सोऽहं रसो वै नियति नियमतो नृत्यतां रासमूर्तिः ॥८९॥

मन्त्रैर्वेद्यैर्मनीषा मधुकरकविता कल्पनास्यूतविद्या
नित्यादित्यारविन्दा विधिमतलहरीलोनलुब्धा च भृंगी
नन्दीभृंगी नताङ्गी करकमलगतालोकनाथस्य सद्यः
हृद्याग्न्यातिमान्या दिविभुविललिताप्रार्थ्यते भारतीया ॥६०॥

शोभाधाम प्रकृत्या सरिसिजनयनाः संग्रहाशास्त्रसाराः
देवी नीलाच भूर्वा भयभवहरणे श्रीस्सदाशान्तिभासा
यासां लीला सुशीलाः प्रणतजनकृतेऽनर्थनाशायगीताः
सीता लक्ष्मीस्त्वनेका ममनयनगता प्रार्थ्यमाना भवन्तु ॥६१॥

गाथाभव्या भवाब्धेस्सुविधि सुरसता तारतम्येन पूर्णा
देवैस्साङ्गोपनीता बुधवररसिकैर्गीयमानानुबन्धा
संसारे शारदीया सहृदयहृदयेशाश्वतीया मुरारेः
धार्या नित्यं प्रपन्नैर्जनहितविधिनाहार्दिकी मंगलाभा ।
(मंगलाय) ॥६२॥

हेयादोषा ममैते युगयुगजनिता बन्धनाय प्रसिद्धाः
मुक्त्यै मायानदीतो ग्रहवरसुवृताः धारणा विष्णुमूले
धर्मरक्षाभिधाने हरिहरवरणेश्रद्धयाबुद्धिरेषा
सर्वं तथ्यं विचार्य प्रभवतुनियताभाग्यतो दोषनाशे ॥६३॥

सर्वं पापं विचिन्वन् तनुधनवयसाऽनिष्ट मूलंच जानन्
पुण्यं कल्याणबीजं क्षणमपि सहसा नैवबुद्धौ प्रविष्टम्
तीर्थे स्नानं न दानं जपयजनयुतं नैव पर्वप्रयाते
दीनो हीनो विमूढः कथमिह भवतः पादमूलं प्रपद्ये ॥६४॥

वाणीरुक्षा निषिद्धा प्रतिजनविपदां भाजनं जन्मकालात्
मातापित्रोस्स्वपत्न्याः सुखदवचनतो नास्मि सेवाव्रतीवा
भ्रातुष्पुत्रादिकस्य प्रथितगुणकृते नैव संस्कारसिद्धिः
सृष्टाऽऽदिष्टाः समेपि प्रवलमतयुता भाग्यभोगावसन्नाः ॥६५॥

ग्रामं ग्रामं च गत्वात्वरितमिह मृषावर्द्धयन्धर्मभावं
साफल्यन्नैवसत्यं प्रचलित हृदयश्चिन्तयाग्रस्त एव
धर्मक्षेत्रे विपन्नः प्रतिपल पतितः प्राणिरक्षावियुक्तः
मन्ये लोके कथं स्यान् ममसमगलितो भाग्यहीनो नरः कः ॥९६॥

स्वस्मिन्नैवास्ति भारस्तवपदयुगले स्वर्पितो मे समस्तः
वंशे को वा मदीयः ? कृशतनुसहितो यावदस्तिप्रपञ्चे
सर्वं सत्यन्तवैव प्रतियुगनियतं वैमतन्नास्तिशास्त्रे
तेनैवास्था सुरक्ष्यात्वयि मम विनयप्रार्थना सार्थिकी स्यात् ॥९७॥

धर्माचार्यास्सशिष्याः गुरुकुलनिलयास्सर्वविद्यावयोभिः
शुद्धाचारप्रकृत्या प्रणतिपरवशाश्श्रेष्ठ सेवास्स्वधर्माः
भाग्याल्लोके विशिष्टाः कतिपययुगतो नैवसर्वेतथेष्टाः
भाग्यं स्वस्य प्रवर्ध्यं प्रतिजनविपदं हर्तुकामा भवन्ति ॥९८॥

सर्वमेतच्छुभाय त्रिभुवननिहितं नैकतः प्राप्तुमर्हो
जीवसर्वोप्यसंख्यो नरकभिदिसमर्थे विष्णुपादारविन्दे
सव्येऽसव्येद्वयेवा विनयविधिपुरस्स्वात्मलाभप्रकर्षे
क्षिप्त्वा स्वात्मानमत्र प्रविशतुमनसा ब्रह्मणि प्रेमपूर्णे ॥९९॥

राधा वाधावसाने हरिपदनिरताजीवलोकस्य सद्यः
सीताभीता स्वयं वा दनुजकुलविनाशे सदारामभक्तान्
लक्ष्मीस्साक्षात्प्रसन्नाः प्रभुपदनिलयन्नेतुमर्हास्स्वतन्त्रा
रामश्यामौ हरिर्हि प्रकृतिकृतिहितौ प्रार्थये ब्रह्मरूपौ ॥१००॥

नित्यं सायं प्रभाते श्रवणयुगलकं वेदमन्त्रप्रधानं
शब्दं पौराणिकं वा श्रुतिरवमधुरं सर्वशास्त्रावतारम्
श्रावं श्रावं च मुग्धं परमरसनयाव्यक्तमांगल्यमूलं
सर्वेषामत्र भाग्यात् भवति यदि मनो धन्यमेवात्र जन्म ॥१०१॥

सर्वार्थदा भगवती भुवनं पुनाना
नित्यानुबन्धविदिताखिलधर्ममान्या
रक्षाधिभारमखिलं वहतीव धन्या
मान्यानिदानमधुना विपदां हि लोके ॥१०२॥

हे नाथ ! दासशरणम्भवमुक्तिमार्गे
नारायणोसिनरतारणलब्धसंज्ञः
देवाधिदेवसुरसिद्धमुनीन्द्रवन्द्यः
किम्मेकृतं श्रुतिगतं भवताविमृष्टम् ? ॥१०३॥

इष्टन्नमेत्रिदिवभोगकरं प्रणष्टं
नेदन्वनंभुविगतं कृषिकर्मजातम्
नाऽहं कलत्रसुतपुत्रिकुटुम्बवृद्धं
याचे त्वदीयशरणं परमं प्रशस्तम् ॥१०४॥

भोगा न मे जगति भक्तिविरुद्ध विष्णोः
हृद्यापि मे वसुमती महतीसमृद्धा
वेद्या न मे सुरतटीवृहती प्रवृद्धा
त्याज्या न मे यमपुरी यदि भक्तिरम्या ॥१०५॥

प्रज्ञा च मे नव पदाम्बुजलीनभावा
यायात्कदाकलियुगेभवभोनिमुक्त्यै
कर्माभिगम्यभवभोगगतं विचार्य
किन्नप्रथाप्रणतिमान्यजनेष्वभीष्टा ? ॥१०६॥

सर्वं कृतं प्रतिपदं विफलं मदीयं
सर्वं हृतं श्रुतिगतं भुवने विधात्रा
कल्पायुतं नरकमेव मया सुसृष्टं
मोक्तुं प्रभावमहिता भवतो दया स्यात् ॥१०७॥

किं रामकृष्ण जननी वसुधा यशोदा ?
किं वा हि कंसभगिनी वसुदेवपत्नी ?
पुत्रत्वभावविहिता प्रतिपालनाय
त्वामेवलोकसुखदं दययापुपोष ? ॥१०८॥

यद्येवमस्ति नियतो जगतोऽस्यगोप्ता
सत्यं भवान् विधिहरप्रणयोपनीतः
गीतश्च देवमुनिभिः प्रणतार्तिहारी
तर्हि प्रभो! कथय दासजनो न रक्ष्यः ॥१०९॥

हा हन्त सन्तनिवहैरपिनिन्दनीयो
विप्रोतिनिन्द्यपथमिष्टमतं विसृज्य
यातस्त्वदीय कृपया तमजामिलोपि
लोकं परं ममकृते न कथन्दया ते ? ॥११०॥

सा द्रौपदीकुरुकुले भृशमर्षितापि
दुश्शासनादिपतितैर्बलिभिर्निपृष्टा
यस्याभिमानपदवीं भवतासभायां
संरक्ष्यधर्मदयितां च न मेऽस्तिवेद्यः ? ॥१११॥

सत्यं ममेह निखिलान्तकरञ्चपापं
वाणीमृषाच्छलकरी विहितात्रिसन्ध्यम्
पादौ करौ च विहितौ कुपथे सदैव
नायं कदापि भवतश्शरणं प्रयातः ? ॥११२॥

कीटोपितिर्यगखिलो भवताऽनुकम्प्यः
मुक्तोगजेन्द्र इति शापयुतोपि कष्टात्
किन्नास्मिपात्रमिह पापमतिर्विमूढो
रक्षाधिकारि नियतः प्रणतो विपन्नः ? ॥११३॥

सर्वायदा भगवती भुवनं पुनाना
नित्यानुबन्धविदिताखिलधर्ममान्या
रक्षाधिभारमखिलं वहतीव धन्या
मान्यानिदानमधुना विपदां हि लोके ॥१०२॥

हे नाथ! दासशरणम्भवमुक्तिमार्गे
नारायणोसिनरतारणलब्धसंज्ञः
देवाधिदेवसुरसिद्धमुनीन्द्रवन्द्यः
किम्मेकृतं श्रुतिगतं भवताविमृष्टम् ? ॥१०३॥

इष्टन्नमेत्रिदिवभोगकरं प्रणष्टं
नेदन्धनंभुविगतं कृषिकर्मजातम्
नाऽहं कलत्रसुतपुत्रिकुटुम्बवृद्धं
याचे त्वदीयशरणं परमं प्रशस्तम् ॥१०४॥

भोगा न मे जगति भक्तिविरुद्ध विष्णोः
हृद्यापि मे वसुमती महतीसमृद्धा
वेद्या न मे सुरतटीवृहती प्रवृद्धा
त्याज्या न मे यमपुरी यदि भक्तिरम्या ॥१०५॥

प्रज्ञा च मे नव पदाम्बुजलीनभावा
यायात्कदाकलियुगेभवभोतिमुक्त्यै
कर्माभिगम्यभवभोगगतं विचार्य
किन्नप्रथाप्रणतिमान्यजनेष्वभीष्टा ? ॥१०६॥

सर्वं कृतं प्रतिपदं विफलं मदीयं
सर्वं हृतं श्रुतिगतं भुवने विधात्रा
कल्पायुतं नरकमेव मया सुसृष्टं
मोक्तुं प्रभावमहिता भवतो दया स्यात् ॥१०७॥

किं रामकृष्ण जननी वसुधा यशोदा ?
किं वा हि कंसभगिनी वसुदेवपत्नी ?
पुत्रत्वभावविहिता प्रतिपालनाय
त्वामेवलोकसुखदं दययापुपोष ? ॥१०८॥

यद्येवमस्ति नियतो जगतोऽस्यगोप्ता
सत्यं भवान् विधिहरप्रणयोपनीतः
गीतश्च देवमुनिभिः प्रणतार्तिहारी
तर्हि प्रभो! कथय दासजनो न रक्ष्यः ॥१०९॥

हा हन्त सन्तनिवहैरपिनिन्दनीयो
विप्रोतिनिन्द्यपथमिष्टमतं विसृज्य
यातस्त्वदीय कृपया तमजामिलोपि
लोकं परं ममकृते न कथन्दया ते ? ॥११०॥

सा द्रौपदीकुरुकुले भृशमर्षितापि
दुश्शासनादिपतितैर्बलिभिर्निपृष्टा
यस्याभिमानपदवीं भवतासभायां
संरक्ष्यधर्मदयितां च न मेऽस्तिवेद्यः ? ॥१११॥

सत्यं ममेह निखिलान्तकरञ्चपापं
वाणीमृषाच्छलकरी विहितात्रिसन्ध्यम्
पादौ करौ च विहितौ कुपथे सदैव
नायं कदापि भवतश्शरणं प्रयातः ? ॥११२॥

कीटोपितिर्यगखिलो भवताऽनुकम्प्यः
मुक्तोगजेन्द्र इति शापयुतोपि कष्टात्
किन्नास्मिपात्रमिह पापमतिर्विमूढो
रक्षाधिकारि नियतः प्रणतो विपन्नः ? ॥११३॥

नारायणस्य भवतः कृपया भवेस्मिन्
नानापवर्गनियताः प्रथिताविमुक्ताः
संसारिणः प्रतियुगं नरकप्रपञ्चात्
तेष्वेवकोपि पवितश्शरणं तवाद्य ॥११४॥

दीर्घावधिप्रविलपन् विविधान्ययोनौ
जातोऽद्यमानववपुः कृपया तवैव
द्रष्टुं त्वदीयचरणौ ममचक्षुसी वै
लालायिते प्रतिपलं विफले प्रयाते ॥११५॥

हे नाथ ! देवधुनिराशु तवैव पुण्या
पादावनेजनमयोविधिनाऽभिपूज्या
साशम्भु मौलिनिहिता भुवि संप्रयाता
भोगापवर्गजनिका मम वन्दनीया ॥११६॥

सर्वार्थदः प्रतिपदं जनताय हारी
नारायणो नरहरिः करुणानिकेतः
सर्वान्तरात्मनिलयः प्रभुताप्रवीणः
आतुञ्चदातुमखिलं दर्शनं स्वम् ॥११७॥

सत्यं सदा कलियुगे निखिलाद्यकर्मा
नैवास्तिधर्मकणिका ममजीवनेऽस्मिन्
क्रोधाभिमर्शचरितः जगदल्पहेतो
पातं मदीयमधुना जगति प्रपञ्चे ॥११८॥

भक्तिस्तवेह नरजन्मनि [illegible]स्तशुद्धा
किंवा पशुत्ववपुषा शुचिता भवित्री ?
धर्मांशतो च तदपि प्रथितो न देही
मुक्तिः कथन्तव कृपामतिरिच्य भूयात् ॥११९॥

भोग्यावशेषवशगं यदिमेऽत्र जन्म
दूरं कथन्तवदयान्वितपादपद्मे
दुःखोपलब्धिभवतः पतितः पुरोऽग्रे
सद्दर्शनेन भवतो न कृती कथं स्याम् ॥१२०॥

धीराभवन्ति सुधियो न च मादृशा किम्
जन्मान्तरेपि भवतः कृपया प्रत्यक्षम्
कृत्वापि तुष्टमनसा विचरन्त इत्थं
भाग्येन तेपि नियतास्तवधामवासाः ॥१२१॥

किं वा भवेऽत्र मम जन्म तथाविधम्वा ?
जाने न मन्दमतिरम्बुजपादचिह्नम्
दिव्यं पवित्रपथमङ्कितमर्थयन् वा
साकेतधाम मधुरार्पितमेव याचे ॥१२२॥

किम्वा प्रचण्डमहिषासुरपापपुञ्जः
मामेवनाशयितुमाशु सदाप्रवृत्तः
शक्तिस्तवेह ममनाथवरा ! कथञ्च
प्राप्या सुदर्शनदया भवति प्रसन्ना ॥१२३॥

मोहान्धकारमलिना दृशिरत्र मुग्धा
जाने कथं भवनिधे ! तव दिव्यलीलाम् ?
दिव्यान दृष्टिरधुना भवतः कृपातः
किं वा कलौ न नियता निजदासहेतोः ॥१२४॥

रामाभिरामरसिता प्रथिता कृपा वा
कृष्णाधिधाम वसतिश्शुचिता शुभा सा
दिव्यातिदिव्यनगरी भुवने प्रशस्ता
वैकुण्ठनाथलसिताप्रणता कदा स्यात् ? ॥१२५॥

प्रेमातिभारवहने प्रशभं मनो मे
नास्त्येव नाथ ! पदपंकजमूलधाम्नः
नाम्नस्त्वदीयवचनप्रथनेन मुक्ता
संकीर्तनेपिरसना रमतं च नित्यम् ॥१२६॥

श्रद्धातिरेककलयाकलितं मनो मे
त्वामेवलक्ष्यमधिगम्य कथन्नजातम् ?
भावस्स्वभावविषये प्रबलप्रपञ्चे
जातोऽत्र भाग्यविधुरो भवतव रक्ष्यः ॥१२७॥

सामर्थ्यशक्तिरहितो भवतः प्रसादं
यावन्न मानवतनुस्त्वरितं स्वधर्मे
सारल्यभावमभिगम्य भवेत्कृतार्था
तावन्न जन्म सफलं विहितन्नराणाम् ॥ १२८॥

नारायणी नरहरे ! करुणासहाया
जीवावनाय विदिता भवदीय शक्तिः
जन्मोपरान्तजननीव सदा जगत्यां
सम्प्राथ्यतेऽघशमने तव दर्शनाय ॥१२९॥

धैर्यन्नमेस्ति युगतो भवभोगभीत्या
स्थैर्यं लभे कथमहो सततं विपन्नः
शौर्यञ्च नास्ति मयि भाग्यहते कुबुद्ध्या
वैरस्यमेवन्निखिलं भुविजन्मकालात् ॥१३०॥

भारायिता च पृथिवी ममपाप पुञ्जैः
धारायिते च नयने ममजन्मदात्याः
दौर्भाग्यमेवयदिदं नहिवन्धुसेवा
दृष्ट्वा च धर्मरहितं नितरां विमूढम् ॥१३१॥

नैराश्यमेव विदितं प्रथमं विमृश्य
जातोऽधुना प्रतिपदं विफलस्स्वधर्मे
वाचा छलेन च सदा निजमात्मबन्धं
कृत्वा विषण्ण इहशोकरतस्सुरक्ष्यः ॥१३२॥

नायं निदानसमयो ममशक्तिलभ्यः
सद्यस्तवेह कृपया परया सहाया
साऽऽराधिता न जननी भवदुःखलीना
त्रस्तो विदीर्णहृदयो भवतैवरक्ष्यः ॥१३३॥

ब्रह्माभिमानरचिता प्रतिभा न मातः
श्री वैष्णवो जगति दासजनस्त्वदीयः
श्रीविष्णुपादशरणः पतितोऽपि जन्तुः
रक्ष्योऽधुनात्र कृपया भवभोगलीनः ॥१३४॥

सूक्ष्मा कृपा भगवतो यदि दुःख भाजां
मुक्तिप्रदाप्रतिभटा जनजन्ममुक्त्यै
धर्मार्थमोक्षविधया विदिता मुनीन्द्रै
स्तर्त्तर्हि पूर्णकलया दययातु सद्यः ॥१३५॥

मोक्षोपहारभजतां प्रणतां मुनीनां
रोगोपचारमुषतां वसतां च लोके
शोकोपयोगदिशतां निखिलत्रिसर्गे
दृश्योहरिर्भवतु भक्तहितेऽर्थसिद्ध्यै ॥१३६॥

भोगोपकार कृतिना हरिणा प्रसाध्या
प्राधान्यतो विधिहरावविसृष्टिमूला
मुक्तिस्सदाचरणयोगविनाशरूपा
भव्यायलोकनिखिलस्य सदाऽभिमान्या ॥१३७॥

नान्यागतिः कलियुगेहरिकीर्तनाद्धि
विद्याभिमानरहितैर्विदितोऽन्तरात्मा
भक्त्यात्वनन्यविषया सजवं प्रसन्नैः
लभ्यो हरिर्निखिलतापहरस्सदैव ॥१३८॥

मंगलभूमिः

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे
हे नाथ नारायण वासुदेव
हरे मुरारे मधुकैटभारे
निराश्रयं मां जगदीश ! रक्ष ॥१॥

श्रीनाथ नारायणदिव्यदेहो
लक्ष्मीवरश्रीनिधि रामभद्रः
सीतावर श्रीरघुनन्दनोऽयं
श्रीद्वारकाधीशपदप्रणम्यः ॥२॥

सर्वत्र सम्प्राप्तमनोहरत्वं
सम्बोध्यसर्वत्रजगद्धितार्थम्
दृप्तातिभक्तस्य मनोरथश्च
लोकोपकाराय सदाऽवतीर्णः ॥३॥

भूगर्भसञ्चारमयस्सदन्ने—
ष्वानन्यशक्तीधरपुष्पपत्रैः
भोगर्द्धिसाध्यस्य विकाशनाय
क्षित्यङ्कुरादेः प्रभवे नमस्ते ॥४॥

सृष्टिस्समग्रातवपूर्णलीला
ब्रह्माण्डभाण्डे प्रणयप्रधाने
शक्तिस्स्वयञ्चात्र निषेव्यमाणौ
दृग्गोचरौ मे भवतां प्रसन्नौ ॥५॥

पूर्णोऽवधिर्जन्मगतस्य जन्तोः
पूर्णप्रयासेन यदा कदा वा
ध्याने न योगे मम मानसीया
पूर्णास्थितिर्नैव तवानुकूला ॥६॥

प्रार्थी सदास्वार्थपरः प्रपञ्चे
नार्थी परस्यार्थकृते कथञ्चिद्
गेहे तथा ग्रामगते समाजे
नालक्षितोऽस्मिप्रणयेन पूर्णः ॥७॥

जानेकथञ्जन्मनिरीहकल्पे
दुःखीममाभूतप्रपञ्चमग्नम्
स्वल्पेनकालेनविमर्ज्यधर्मान्
मार्गविरुद्धं भवतो गृहीतम् ॥८॥

वैधर्म्य भाग्यस्य जनस्य भाव्यं
दुःखं महाभोगकृते विचित्रम्
कायेनवाचा मनसेन्द्रियैर्वा
पापाधिकस्य प्रवलं फलं स्यात् ॥९॥

स्वाधीन मायाभवतो जगत्यां
विभ्रामयन्तीव समस्तजन्तून्
वद्ध्वासमाकर्षणशीलशक्तिः
सम्प्रापयन्तीनिरयं प्रसन्ना ॥१०॥

मुक्तिस्तयानन्यतवेहभक्त्या
प्राप्तुं हि शक्या शरणागतैस्तैः
यैरर्थतोधर्मरतैर्नितान्तं
तानेवधर्माचरणान् प्रपद्ये ॥११॥

भाषा न मे पुण्यवती मनोषा
सेवा न वा साधुपदारविन्दयोः
रूपन्नवा पार्षदपुण्ययोग्यं
धामत्वदीयं कथमद्य याचे ॥१२॥

यद्यस्ति सत्यं मम कर्म किञ्चित्
मिथ्याकुवाणी वहुजन्मकालात्
स्नेहो न जन्तौ विदितोपि शास्त्रैः
याचे कथं धाम जनस्त्वदीयम् ? ॥१३॥

नैवम्मनो मे भवति प्रसक्तं
नेदं वचो मे हरिनामलग्नम्
जिह्वामदीया रसपानमग्ना
पादौ करौ नैव सदा कृतार्थौ ॥१४॥

सर्वेन्द्रियाणां विषयावमानं
स्वभाविकं वा नरकप्रदानम्
मत्वा जनो नापि मतप्रधानं
शास्त्रे त्वदीयं प्रथितन्न भुक्तम् ॥१५॥

हे नाथ नारायणवासुदेव !
गोविन्द ! गोपाल ! हरे ! मुरारे !
भक्तास्त्वदीयाः कलिकाल दन्तैः
ग्रस्तास्समन्ताद् भयमभ्युपेताः ॥१६॥

सम्प्रार्थयन्ति प्रबलप्रभावं
नारायणं सर्वभयापनोदम्
त्वामेव गायन्ति हसन्तो वा
मायप्रभावं तवमन्दिरस्थाः ॥१७॥

साक्षीत्वमेवासि समग्रधर्मं
वाचामनोयोगधृते विधाने
मायाभिभूतेनजनेन नित्य
स्वल्पन्नकर्मप्रणतेनजातम् ॥१८॥

धन्यं हि जन्मात्र तवप्रसादात्
वंशेप्रशस्तेऽमरवृन्दपूज्ये
अद्यापि गोत्रोद्भवभारतेऽस्मिन्
धर्मप्रचाराय जगद्धिताय ॥१९॥

भाग्यञ्च तस्य प्रथमं प्रशस्तं
येनात्रधर्मार्थियुतप्रयासः
सर्वोपकाराय विधीयमानः
सन्धार्यते शान्तिकरोऽभिमर्शः ॥२०॥

राजाप्रजाभिस्सततं विचार्यं
सन्नीतिसंकाय शुभोदयाय
धर्मं प्रजातन्त्रहितं प्रवृद्धं
सर्वोपकाराय इति प्रबोधः ॥२१॥

सच्छास्त्रभावोहितशासको वै
संन्याय संसाधनतामुपेतः
सल्लोकनिर्माणपथं प्रवृत्तः
सत्कीर्तिमाधाय सदाप्रसन्नः ॥२२॥

सर्वैस्सहानन्दयुतः प्रशस्यः
कल्याणकृत्कर्मरतश्च भूमौ
आदर्शनेता जगतः प्रणेता
सम्मान्यते देशविदेशतन्त्रे ॥२३॥

सत्यं सखाशासकवर्गमान्यः
लोकेधुना सर्वहिताय दृष्टः
दैवापदि प्राणिजनस्य सेवा
निःस्वार्थमूला विहिता स्वतन्त्रे ॥२४॥

दुःखत्रये धर्मपुनीतदृष्ट्या
कौटुम्बिकेनेव सदादरेण
संसेवनीया विधिना प्रजास्ताः
याश्शास्यवर्गस्य नये प्रवृत्ताः ॥२५॥

वृणीतधर्मास्सकलाः प्रजा वा
सच्छाशकावा प्रभुतामुपेताः
दम्भाऽहिताये प्रखराः प्रपञ्चे
ते सर्वथाऽयोग्यतमाश्च हेयाः ॥२६॥

निर्वाचिता ये जनताभिमान्याः
मिथ्याप्रलोभेन महाच्छलेन
स्वातन्त्र्यमार्गप्रवरान् विजित्य
धूर्तायितास्ते निरयं (नरकं) व्रजन्ति ॥२७॥

इत्येव नारायणबीजमन्त्रः
प्राधान्यतायं जनसेवकानाम्
सम्बोधितोऽद्यापि जनार्दनेन
सम्पालनीयो मनसाऽऽदरेण ॥२८॥

प्रजास्वनन्यः प्रभुतां गतो वा
धर्मश्रिया धन्यतमोऽभिधानः
रक्षाधिकारी स्वजनस्य शश्वत्
संकीर्त्यते वै प्रणयावधानात् ॥२९॥

सेवावधिप्राणिजनस्य कीर्तिः
परस्परं भावयतो विधानात्
प्रेम्णा सदा संकटकालमग्ना—
दुर्द्धर्नमेवाखिलप्रयासः ॥३०॥

यस्यास्ति सत्यं मनसाभिपूतः
धर्मोऽखिलोलोकहिताय सद्यः
सौभाग्यशाली प्रथमोऽभिधायां
स एव सम्पूगगणस्य मुख्यः ॥३१॥

कामायमानो हृगिरद्य भक्तै—
राराध्यमानश्च सदामुनीन्द्रैः
समाश्रितैरन्यमतप्रपञ्चै—
विमुक्तिमार्गः प्रणतैश्चलभ्यः ॥३२॥

सनातने ब्रह्मणिलीनदृष्टि—
र्योगीवरो नैव जनः प्रबुद्धः
मनुष्यदेही विरलः कदाचित्
सुमार्गगामी कलिकालमुक्तः ॥३३॥

मन्वन्तरात्माप्रतिकल्पमादौ
बीजं जगत् सर्गकृते विचित्रः
मत्स्यादिरूपमधिकृत्यदिव्यं
धामस्वकीयं प्रथमं विधत्ते ॥३४॥

तत्रैव जम्भूस्सुरकार्यहेतो—
र्ब्रह्माजगद्योनिगृहीतमायौ
लक्ष्मीपतेर्लक्ष्मविलीनदेहौ
सृष्टिनवीनारमथारभन्तौ ॥३५॥

प्रारम्भकाले प्रतिराज्यतन्त्रं
प्रजापशूद्यानलतौषधीनाम्
प्राधान्यतोऽधर्मपथानुसारं
संरक्षणे पूर्णकृतीव जातम् ॥३६॥

कालक्रमेणाद्यवृते स्वतन्त्रे
जातेस्वदेशे जनतन्त्रमान्ये
जनस्समग्रोपि यतः प्रवुद्धः
स लोकतन्त्रानुगतः प्रशस्यः ॥३७॥

तस्मिन् स्वतन्त्र प्रतिधर्मसास्था
स्वरूपतस्सर्वजनस्य रक्षा
वर्णाश्रमाधारवती व्यवस्था
समस्तलोकस्य सुमंगलाय ॥३८॥

निर्पेक्षधर्मविधिराजनीती
रीतीस्समालोच्य यदि स्थिरा स्यात्
प्रजानुरूपा सुखशान्तिवृद्ध्यै
गीतासुविज्ञैरपिधर्ममूला ॥३९॥

तदास्तुना राज्यभरा सुनीति—
र्यथावहा प्रेमपयोदवाहा
वर्षत्यहो सर्वसमृद्धिबिन्दून्
हितावहान् धर्ममयप्रवृद्धान् ॥४०॥

येनान्ततस्सर्वहितावधाने
सुवाच्यमानाप्रभुभावनायाः
क्रियाकलापावलिसंस्तुतायाः
नीतिर्नवानैव सुभाषितास्ति ॥४१॥

धर्मादृताः सत्यपराभिमर्शाः
सेवोपकारावधिसंगता वै
कुटुम्बभावेन जनास्समस्ताः
संरक्षणीया दययास्वराज्ये ॥४२॥

नीतेस्स्वरूपं प्रथनञ्च तस्याः
धर्माम्नायस्य विशुद्धवाचा
समीरितं स्वास्थ्यकरं पवित्रं
स्वतन्त्रलोके न च तत्र वादः ॥४३॥

यदीदृशन्नप्रथनं प्रशस्तं
तदार्थतो नैव विवेकशीलैः
धर्मस्य निर्पेक्षविधानमुक्तं
नीतौ विवादो नितरां विमृश्यः ॥४४॥

परामृशानीतिवरास्वराष्ट्रे
समानभावादरपर्वकल्पा
सौकर्य्यसौन्दर्यवतीववामा
भोगाश्रयाप्रेमवती सरामा ॥४५॥

प्रजाभिवन्द्याप्रभुतावती या
दीर्घायुषां राज्यभराप्रबन्धा
श्रद्धावतां कापि कलामयी ध्रुवं
भुवञ्च सा भूमिपतिं पुनाति ॥४६॥

प्रजाभिवृद्ध्यं नियतात्मशान्त्यै
स्वधर्मनीतिरखिलार्थपूर्णा
स्वराष्ट्ररक्षामधिगत्य सर्वैः
भाव्या सदा भारतभूमिभूषा ॥४७॥

यथाधुनाराष्ट्रहितस्सुरक्ष्यः
सा राजनीतिरधुना विमृश्या
विभिन्नलोकैरवधार्यं सर्वं
लोकोपकारं परमं निदानम् ॥४८॥

प्रासंगिकोऽयं विषयः प्रबुद्धैः
समग्रराष्ट्रस्य शुभोदयाय
संकीर्णभावं परिहृत्य तथ्यं
विचारणीयं निजकर्मसत्यम् ॥४९॥

धारायिता नीतिगतिर्विचित्रा
राष्ट्रेस्वप्रान्तेषु विचार्यमाणा
प्रभाष्यतां शास्त्रमतेन शुद्धा
यथाधुनासर्वजनप्रसादः ॥५०॥

लोके सदा शान्तिकरीवनीती
राजाप्रजासुप्रणयप्रधाना
संन्यायधर्माहितमान्यतायाः
भूयात्तदा भाग्यवतीप्रतिष्ठा ॥५१॥

सर्वास्समस्या समतानुबद्धाः
दुःखे सुखे वा सहयोगमूलाः
ध्येया यदि स्युः सहजप्रकृत्या
शान्तिप्रजासुप्रथिता भवित्री ॥५२॥

नानाविधा नीतिनदीष्णवोवै
नेतारएवात्र दयार्द्रभावा
भद्रं प्रजानां मनसा च वाचा
कुर्वन्तु सन्नीतिमताः सदैव ॥५३॥

तदैव शान्तिस्सुखदायिनीव
माता यथा पुत्रहिताय सद्यः
समादृता पुत्रवरप्रजाभिः
चिराय लोकस्य महोपलब्धिः ॥५४॥

नीतिर्नवा नैव नरप्रभावा
स्वस्थाग्रियापूर्णफलप्रधाना
आप्तैस्सदा धर्ममयीपुराणा
संकीर्तिता सर्वहिताय शुद्धा ॥५५॥

वर्णाश्रमाचारवती सुनीतिः
सन्धारितेवान्यतमा जगत्याम्
प्राणप्रतिष्ठावनिपुण्यबीजा
सल्लोलतन्त्रस्य सुखप्रदात्री ॥५६॥

धर्मायितो यो नृपतिः प्रजासु
कर्मप्रधानेन सदा प्रबुद्धः
पुत्रं यथा प्राणिगणं समीक्ष्य
लब्धप्रतिष्ठो जयति प्रपञ्चे ॥५७॥

सदाऽमृता संस्कृति भारती या
विद्याऽभिधाभाग्यकरी प्रजानाम्
सुसभ्यतायाः प्रहरीव दिव्या
लीलायमाना प्रतिकल्पमाद्या ॥५८॥

प्राचीनतायां समता न यस्याः
पावित्र्यसंस्कारकलायुतायाः
सद्योपकारप्रणयप्रथायाः
गीर्वाणवाण्यामहिमाहि तस्याः ॥५९॥

वेदेषु वेदान्तसमस्तशास्त्रे
विज्ञानविद्यानयनीतिके च
शास्त्रेष्वनन्ता महिमान आशु
जेगीयमानाः सुरभारतीयाः ॥६०॥

येरद्य सत्यं भुवि भारतस्य
देशेविदेशे प्रभुतामहत्त्वम्
चारित्र्यनिर्माणमतप्रकर्षैः
सम्बोध्यते संकटहारितत्त्वम् ॥६१॥

तैरेव सत्यं निखिले स्वराज्ये
संस्थापनायप्रणतैस्सहर्षम्
धर्माम्नायस्य महाविभूते—
गीर्वाणवाण्याश्च कृताप्रशंसा ॥६२॥

आश्चर्यमेतदधुनास्वराष्ट्रे
भाषाङ्गला पूर्णकलावभाषा
या भारती वेदमयी पुराणा
सा नादृता देवगणैरुपास्या ॥६३॥

नितान्तमेवात्र नयेन याचे
संपूर्णं राष्ट्रस्य समृद्धिमेनाम्
यया जना सर्वसुखोपलब्ध्या
धन्याः प्रतिष्ठामचिरं गतास्स्युः ॥६४॥

विहायविद्वेषकुबुद्धिबीजं
सद्बुद्धिमाश्रित्य जनानुकूलाम्
प्रवर्तयन्तो जनसेवकत्वं
बुधा भवेयुर्भुविशासकास्ते ॥६५॥

ये सन्त्यवश्यं करुणावतारा:
नेतार एवार्थकरा: प्रजासु
हृदिस्थितास्ते जनताभिमान्या:
नारायणस्यापिसदानुकूला: ॥६६॥

भवन्तु भाग्येन भुव: प्रशासका:
जनानुरागेन मन: प्रिया; वै
संस्कारसंवर्धनभाग्यदेहा:
कल्याणकल्पा: प्रतिभाप्रकाण्डा: ॥६७॥

सर्वे प्रधाना: कुशलाधिकारा:
जिलाधिकारिप्रखरा: प्रबुद्धा:
कर्तव्यनिष्ठा: परमार्थभावा:
स्वस्थाभवेयुर्निजकर्मदक्षा: ॥६८॥

यदा मन:पूतवचोनुसारं
क्षेत्रे स्वकीये प्रति कर्मबद्धा:
भक्तास्स्वराष्ट्रस्य भवेत्सुरक्षा
यदर्थंनिर्वाचनकार्यमास्ते ॥६९॥

राष्ट्रं समृद्धं च कुलं समृद्धं
नीतिस्समृद्धा स्वनयस्समृद्ध:
समृद्धराष्ट्रस्य जनास्समृद्धा:
समृद्ध देवस्य कृपासमृद्धा ॥७०॥

सम्प्रार्थ्यंतेद्यात्र दया[illegible]द्धा
सद्बुद्धिदानायविधायकेभ्य:
सम्पन्नतायै निखिले स्वराष्ट्रे
सम्पत्तिदेवी भवतु प्रसन्ना ॥७१॥

चौरास्तथाहिंसकभावयाताः
प्रबुद्ध दस्युप्रवराभिमानाः
सद्बुद्धिमाशुप्रगताः कृतार्थाः
भवन्तु सर्वे विमलस्वभावाः ॥७२॥

न कोपि कस्यापि जनस्य हन्ता
न वञ्चको नापि मृषाभिभाषी
न शोषकस्स्वार्थहिताय दोषी
भूयादहो मे सफलं हि कर्म (जन्म) ॥७३॥

निःस्वार्थ भावाश्रितमानवा ये
कृतार्थलाभः परकार्यकेपि
नित्यं रता सर्वहितायधर्मे
कष्टं सहित्वापि च तेऽग्रधन्याः ॥७४॥

सद्बुद्धिसद्भाव कृते प्रयासो
भावान्वितस्य प्रभुदासकस्य
पद्यात्मपुष्पावलिमालिकाभिः
प्रभुः प्रसन्नो भवतुप्रणम्यः ॥७५॥

नायं कविः काव्यकलाविधिज्ञः
बोधो न शास्त्रस्य कथादरिद्रः
तपो न विद्या ममतासु बद्धः
मानाभिमानी पटुताविरुद्धः ॥७६॥

सेवा न सेव्यस्य कृताभिधाना
दानं न दीनेभ्य इतो विशुद्धम्
परोपकाराय धर्मं न बोधः
सत्कर्मभूमौ हि कथं कृती स्याम् ? ॥७७॥

क्षन्तव्य एवास्मि यतो विपन्नो
विश्वासयोग्योपि न नाथदासः
स्वार्थीवलोके भ्रमतीवमूढः
सर्वात्मनारायणमाश्रयेऽहम् ॥७८॥

दिवानिशन्ते पदपंकजम्वा
द्वयं निदानं भवमुक्तिकम्वा
कृपावसानं करुणाकरस्य
सेवाभिमानाय सदा प्रपद्ये ॥७९॥

स्वर्णजयन्तीवर्षे भारतीमंगलायतनं समर्प्य
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र श्रीरामवदनशुक्लगुरवे
क्षमापराधं याचे काव्येऽत्रधृष्टतावशत्रुटीनाम्
विनयावनतो नित्यं भवतः पादपद्मयो रतः ॥८०॥

भाग्यौषधीयं भवतः कृपातः
प्राप्ता हि येन प्रणतेन भूमौ
धन्यं हि तस्य प्रथमं नृजन्म
मोक्षाधिकारी जनसेवनेन ॥८१॥

माता तदीया जनकश्च तस्य
भ्रातावधुस्सन्ततयः कुटुम्बे
सेवाधिकाराश्शुभगाः प्रशस्ताः
दयालुतायास्तवपात्रभूताः ॥८२॥

समेसुभीक्षार्थंपदं प्रयाताः
दसास्त्वदीया यदि भावितास्ते
विमुक्तिमार्गाश्रयिणस्सदार्त्ताः
पादारविन्दे भवतो भजन्ते ॥ ८३ ॥

संसारिणस्ते यदपि प्रशस्ताः
मायावितानात्मरताः पृथिव्याम्
दासानुदासास्तदपि प्रपन्नाः
भवाटवीं प्राप्य सदा प्रसन्नाः ॥ ८४ ॥

जगद्गुरूणां कृपया महीय्यां
लब्ध्वात्मबोधं भवभारमुक्ताः
लब्धार्थकामाबहुमानयुक्ताः
भक्ता न सीदन्ति सदा प्रसन्नाः
(यतो दयाते) ॥ ८५ ॥

शिक्षा यदि प्राणिहितप्रधाना
शास्त्रानुसारं शुभगा भवित्री
विद्यालयेषु प्रथमाप्रपूर्णा
संस्कारबीजाफलितोदयास्तु ॥ ८६ ॥

चारित्र्यनिर्माणकरी प्रशस्ता
सत्यार्थकामाभिमताप्रदत्ता
विद्या तदा भारतिभाग्यभूषा
सर्वार्थदासास्ति मनोऽनुरूपा ॥ ८७ ॥

द्वारन्तदामुक्तिकरं नराणां
सदा सतां भुक्तिभरं समानम्
सम्बन्धमीशस्य विचारकाणा-
माध्यात्मिकं विष्णुमतं दिशन्ति ॥ ८८ ॥

शास्त्राण्यनन्तानि विमर्शितानि
नारायणेनापि हिताहितानि
कल्पान्ततो भाग्यभृतां मतानि
प्रकाशितानि प्रतिजन्मजानि ॥ ८९ ॥

भोगक्षयेनाशुगतिः पवित्रा
लोकत्रये नाल्प मतिर्विचित्रा
प्रारब्धयोगेन कृता विधात्रा
प्रारब्धदेहस्य निदानमेतत् ॥ ६० ॥

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः
तृष्णा न जीर्णावय मेव जीर्णा
इत्येव शास्त्रेषु विभाष्यते यत्
तदेव रूपं परमं हि मन्ये ॥ ६१ ॥

पथा हि तेन प्रगतिः कथं स्यात्
विना प्रभो ! ते दयया जगत्याम्
कृतप्रयासस्य जनस्य भाग्ये
किं किं फलं ते कृपयाऽधिगम्यम् ॥ ६२ ॥

त्वामेवनाथप्रणताः प्रपन्नाः
याचन्त एवात्र दयाभिभूताः
पूता अपूता यदि वा विमूढाः
संरक्षणीयाश्चक्षमापराधाः ॥ ६३ ॥

सद्यो गुरोः पादनतो विनम्रो
निवेद्य तस्मै सुरभारतीन्ताम्
यामद्य भावानुगतां विधाय
सेवामिवोद्धारकरीं सुविद्याम् ॥६४॥

गर्गार्यवंशोदधिशीतरश्मी-
श्रीराकृष्णार्य प्रपन्नकानाम्
हारायमाणां पदमञ्जलीकां
पद्यावलिं कण्ठ सुभूषणाढ्याम् ॥६५॥

समर्प्यमाणां मणिमञ्जुभासां
शिष्यप्रशिष्यार्थमयीं प्रबोधाम्
सद्ज्ञानयज्ञात्मनवात्मरूपां
गुरोः कृपालम्बवतीं प्रपद्ये ॥९६॥

लक्ष्मीमिवानन्यगतिं विशुद्धां
गीर्वाणवाणीं महतीं सुविद्याम्
सद्धर्मपुण्यात्मवतीञ्च दिव्यां
विज्ञायपूर्णां हि कथं कृती स्याम् ? ॥९७॥

यद्यत्रकिञ्चिन्मनसाविचिन्त्यं
वाचातदेवात्र विनम्रतो मे
सेवानुरूपं प्रभुपादयुग्मे
समर्पितं स्यात्प्रणतस्य नित्यम् ॥९८॥

श्रीतीर्थराजप्रयागस्तवः

श्रीतीर्थराजनगरं प्रवरं त्रिलोक्यां
तीर्थास्पदेषु विदितं विहितञ्चशास्त्रे ।
ब्रह्मादिदेवनिकरैः कृतकल्पवासं
यत्राहितं सवनकं तमहं प्रपद्ये ॥१॥

सर्वात्मनां निखिलपापनिकुञ्जदाहो
जातोऽधुनापि वसतां प्रणतां सतां वा ।
सर्वापराधभजतामपि भुक्तिमुक्ती
यत्रास्त एव सततं तमहं प्रपद्ये ॥२॥

ब्रह्मादिदेवविहितो यजनप्रसङ्गो
नाद्यापि विस्मृतिपथं विविधप्रमाणैः ।
यज्ञस्थली दशमिता च दशाश्वमेधी
गंगातटी वितनुते जनपावनत्वम् ॥३॥

त्रैवेणिकाऽमलजला यमुनानदीनां
धारावलीप्रतिपदं प्रणतां पुनाना
यस्यास्ति मंगलकरी करुणार्द्रभावा
धारावराप्रणयिनां सुचिरं प्रकाशा ॥४॥

गंगाम्भसा सहजसंकटसर्वनाशो
गंगेति नाम जपतां स्मरतां सदैव
स्नानं सदा परममुक्तिपदप्रदायी
संकीर्त्यतेऽमरवरैरधुनाक्कृतज्ञैः ॥५॥

जन्मप्रपावनकरी भुवि भाग्यजन्तोः
नैर्मल्यजीवनभराभवमौलिधामा
गंगानिषङ्गमहिता यमुनापिधन्या
जाताऽत्र तीर्थमहिमागतिकाभिधान्या ॥६॥

तीर्थप्रयागनगरी कलिकालभीरो-
स्त्राणायपावनपुरीव सदास्तुता वै
गंगाप्रवाहनिहिता विहिता त्रिवेणी
यत्राघनाशनकरी करुणामयी सा ॥७॥

विद्याश्रमा विबुधधाममयी महीय्यां
ज्ञाताऽज्ञबोधनवृता त्रिदिवैरुपास्या
श्रीवासुकी प्रवरनागवतीन्दुभाला
श्रीसोमनाथकलितावरमाधवीया ॥८॥

स्वर्धामधन्यमहिमावलिसार्वभौमा
दुर्गावनैः प्रविहिता शुचितान्तराला
धारायितामृतरसैरथवीथिगीता
भागीरथी त्रिपथगा जयतीव यत्र ॥६॥

सिद्धापुरीसुरधुनिर्निखिलप्रपञ्चे
सिद्धान्ततश्शरणदाभयहारिजन्तोः
कल्पाधिवासमकराकंवतीप्रयागा
जेगीयते नु नगरी जनतापशान्त्यै ॥१०॥

समाधवोऽमरगुरुः करुणानिकेतः
श्रीतीर्थराजभवनं भजतामुपेतः
सत्तीर्थमक्षयवटः प्रणताञ्जनाना—
मद्यापि चामरमयो यमुनापुलीनः पुनीतः) ॥११॥

राधायिताहि यमुना परमप्रकीर्त्या
कृष्णायितस्य वटपर्णगतस्यशौरेः
मन्ये दिवाकरसुता वसुताऽत्रधाम्नि
मालायितेवनियता प्रणता प्रवृद्धैः ॥१२॥

किं द्वापरोऽत्र कलिकालजनस्य मुक्त्यै ?
सूर्यात्मजा पथमिषेण हरेः प्रभावात्
साक्षान्मनोरथरथीव दयाऽऽव्रवर्षी
प्रेमप्रवाहकलया विमलीकरोति ? ॥१३॥

सायञ्चिरं प्रणतपालनधर्मबद्धः
नारायणो नरवपू रमयासमेतः
भाग्याश्रितैस्स्वजनतारणहेतुगीतः
नीतोहि नेत्रपथिको नहि तत्र वादः ॥१४॥

प्रेमप्रभावविदितोविहितोऽमराद्यः
संकीर्तनेन कलिकालविशेषरूपः
दानाधियज्ञपरिपूर्णफलप्रदायी
योगीश्वरश्शरणबद्धजनस्य दृश्यः ॥१५॥

भक्तीश्वरीतपनपुत्रिवरा प्रिया वै
श्रीकृष्णपादरसिका शरणागतानाम्
तीर्थप्रयागनगरीप्रणताविमुक्त्यै
सद्योऽपराधनिखिलान् विफलीकरोति ॥१६॥

वृन्दावनाश्रमतटी तपनात्मजात्र
राधासखीसहचरीव सुसंगता वा
भागीरथी भुवनपावनलीलयाऽऽर्त्तान्
त्राणाय तीरवसतोपि जनान् प्रसक्ता ॥१७॥

सारस्वतीयविमलामतिदात्रधारा
नद्योर्द्वयोर्हि पिहिता विदितान्तराला
सत्सङ्गमाप्रवरनामवृतापुराणे-
र्वेदोपबृंहणमयैर्जनतारणाय ॥१८॥

राजर्षिपौरवकुलान्वयदूर्गतीरा
ब्रह्मर्षि देवकुलपूजितपुण्यनीरा
कल्पान्यतः प्रलयकालगतापिधीरा
देवीत्रिवेणिनगरी भयहारिधीरा ॥१९॥

सिद्धाश्रमावलिहिता भवसिन्धुपारं
नेतुं नितान्तपतितानपि सर्वदैव
नापि प्रयागमथुरावसर्ति विसर्ज्य
धाराभिभारभवती न गता परत्र ॥२०॥

हारायितात्रिपथगा नगरस्य यस्य
तत्तीर्थं मान्यविहितेषु मतंगतार्थम्
तेनप्रभावमहिमानियतोऽत्रकल्पे
मोक्षार्थिसाधनवरो विबुधैर्विमृश्यः ॥२१॥

जन्मान्तभारहरणेपरमप्रकर्षं
भोगापवर्गभरणे परमार्थहर्षम्
श्रद्धावतां सुमनसां सुखवारिवर्षं
तीर्थं विचार्य मनसा शरणं प्रपद्ये ॥२२॥

हृद्याद्यमूलमभितो नगरांगसीमा
धाराभिविक्तगरिमाऽमरधामनीतः
पातालधामनिखिलं त्रिपथेननीतं
गीतञ्चवेदनिखिलैरपि शास्त्रपुञ्जैः ॥२३॥

पौराणिकी भगवती नगराधिदेवी
रामायणीव चरिता फलितात्मबोधा
धर्माम्नायलतिका गतिकापुरारेः
चूड़ामणिस्सहजचान्द्रमसी कला वा ॥२४॥

धाराधरः प्रभुहरस्तवतीव्रवेगात्
हृष्टोजटावलिलयं तव स्रोतसो वै
नीत्वा ससर्ज परमार्थकरीं सुधारां
येनाद्यमान्यनगरी तवतीरगीता ॥२५॥

त्रेतायुगेनरवरः प्रभुरामचन्द्रः
पित्राभिषेक निरतो वनमभ्युगच्छन्
सीतासहायविधिनापरमानुजेन
प्राप्तः प्रयागनगरं प्रणतश्चत्वां वै ॥२६॥

तेनापि सत्यमहिमाऽमललक्ष्यसिद्ध्यै
तीर्थार्थिमानवगणाः प्रतिकल्पवासम्
ध्यात्वा तवैवचरितं नियतिप्रभावात्
धर्मार्थमोक्षगतयः परमप्रसन्नाः ॥२७॥

यस्याः प्रभावकलया यमराजदूताः
भीता असक्तगतयो गलितास्त्रहस्ताः
प्रारब्धभोगविरते भुविचान्तकाले
सा जाह्नवी जगति तीर्थमयीति वन्द्या ॥२८॥

यागक्रियापरमधामवती प्रशस्ता
मन्त्रोपहारविधिना फलतीव लोके
तेनप्रयागवरणं वचनं पवित्रं
गायन्ति भक्तिनिरतास्तवसुप्रभातम् ॥२९॥

नित्यं ममापि वसतिर्यदपिप्रयागे
सद्यःकृपावरवती भवती प्रसन्ना
मातः ! तथापि मम किं तवधामप्रीतिः ?
जाता समादरधिया ? ननु मे विषादः ॥३०॥

देवि ! त्वमेवजननी जनको गुरुर्वा
भोगापवर्गनिलया कलया जनानाम्
धान्यप्रदायि प्रथिता कृषिकर्मभूमौ
नित्यं स्मृता परम पूज्यतमाच विद्या ॥३१॥

अनन्तश्रीविभूषितानां वैकुण्ठवासिनां जगदाचार्याणां त्रिदण्डिदेवविष्वक्
सेनाचार्यश्री स्वामिपादानां प्रपत्ति वैभवचरितं सुप्रभातञ्च।।

बुद्धिंयोऽष्टगुणं ददाति सदयं भक्तायसक्तात्मने
तत्प्राप्त्या चिदचिद् विभागरहितं विश्वं समुद्भासते।
योऽन्तस्थो वहिरेत्य योगफलयातत्त्वान्तरङ्गत्रयं
दत्त्वापूतमनस्कतां वितनुतां नारायणः सोऽचिरात् ।।१।।

यावत्त्वां भजते जनो मधुरिपो! तावत्स भक्तो भवेत्
त्वं भक्तुं यतसे यदाकरुणया भक्तस्तदाशोच्यते।
स्वीयोक्तिं द्रढयन् दयस्च भगवँस्त्वल्लब्ध भावस्यमे
याचे नाथ पतँस्त्वदंघ्रिकमले मां तादृशंत्वं कुरु ।।२।।

ब्रह्मानन्दप्रकल्पे भवभयहरणे सर्वसामर्थ्य पूर्णे
हृद्याऽऽवेद्येऽनवद्ये कलिमलमथने प्रार्थितेऽनर्थनाशे
श्रद्धाभक्तिप्रवृद्धेऽमलगुणधरे रामकृष्णादिरूपे
सर्वैश्वर्यप्रबन्धे भवतुममसदा प्रेमपूर्णप्रणामः ।।३।।

श्रद्धावद्भिरमन्दो मनुहरिविहिते नारदीये प्रगीते
वेदान्ते सावधाने सुरमुनिहृदयेऽपारधाम्निप्रकृष्टे।
कल्पान्तेप्राणिवर्गं प्रणयन्वचसा सार्वभौमेप्रहर्षे
भूयादानन्दभूमा सहज रूचिरसः कोऽपि भावाऽभिव्यंग्यः ।।४।।

दिव्ये श्रीधाम्निमान्ये परमयतिवरो योगिवर्याग्रगण्यो–
मासानां मार्गशीर्षे दशमतिथिवरेध्यानमालम्ब्य विष्णोः।
योगाभ्यासप्रशान्तो गुरुवरदिवसे पूर्ण भक्ति प्रपत्या
विष्वक्सेनार्यपादो हरिपदनिलयं प्राप्य गीर्वाणगीतः ।।५।।

धर्माचार्योजगत्यां प्रतियुगमखिलप्रेमभावप्रसंगात्
भक्तिं ज्ञानप्रधानो विहितविधिरतस्सर्वजीवोपकारी।
ब्रह्मानन्दप्रपूतो नश्वरवपुषाऽनन्यभावाऽभिभूतः
लक्ष्मीनाथप्रसादे निखिलजनमनो मन्त्रयित्वाऽभिनन्द्यः ।।६।।

जातोलीलाविभूतौयतिवर रसिकोऽनन्यरामानुजार्यः
लब्ध्वादीर्घोर्ध्वमायुः कृतभुवियजनो विष्णुधर्मावतारः।
साक्षादाचार्यरूपो निखिलमतजयी वेदवेदान्त विज्ञो
विष्वक्सेनस्त्रिदण्डी त्रिभुवनविजयीवात्रलब्धादरस्स्यात् ।।७।।

गोलोकोधामयस्य प्रभुवर विहितोऽनन्यसेवाप्रसादः
सद्यश्शोकापनोदेश्रुतिवर वचनैर्विष्णुपादाब्जलीनाः
शंकापंके निमग्नास्सपदिशुभदया दृष्टिपूताः प्रसन्नाः
भक्ताश्श्रीविष्णुररक्तास्सहज करुणया यस्यदासानुदासाः ।।८।।

जाताः मुक्ताः प्रपञ्चात् यतिवरशरणास्सोऽद्यवन्द्यस्सदार्यैः
लीनश्शीविष्णुपादोद्भवनिलयवरेधाम्निवैकुण्ठलोके
सालोक्यैसार्ष्टिरूपे नियति नियमतः पार्षदोदिव्यदेहः
लब्धोयोगीशवर्यो हरिपदरसिकोऽपूर्वयोगक्रियाभिः ।।९।।

स्वक्षादक्षाः विधिज्ञाः परमपदगताः दिव्यदेहाधिरूढाः
विष्णोः पादाब्जपूताः नयनपथगताः न्यास विद्यावधानाः।
श्रीमन्नारामणार्थे कृतविधिधकथा ज्ञानयज्ञाधिभाराः (काराः)
लोकाचार्यावताराः सुरमुनिविहिता वन्दितास्सन्तु शिष्यैः ।।१०।।

श्रद्धाबद्धावधानैः प्रतिपदमधुनानन्दमूर्तिर्हिशोर्मे
सत्यंवामासमानाः त्रिपथगतिमती जाह्नवीव प्रणम्या
भक्तानांपूर्णकामा कलिमलमथनेनात्र मन्त्रार्थसारा
धारा विष्णोर्दयायाः भवतुशुभफलासर्वभावानुबन्धा ।।११।।

धर्माचार्यैस्सदैव प्रणतिपरजनेभ्योऽर्थनारायणीयः
प्रोक्तः प्रारब्धमोक्षे श्रुतिरवविहितः सर्व विद्यारसौघः
जीवोद्धार प्रसंगे प्रभुचरणदयादृष्टिलीलायमानो
वेद्योनादः समाधौ स्वजनहितकरो दर्शितोयोगमार्गे ।।१२।।

लक्ष्मीनाथप्रपत्तिः पतित जन मनो मोहनाशायशक्ता
प्राणायामप्रभावः प्रभुवरवशगो (प्रणयपरवशे) रामकृष्णानुरूपः
लोकेशोकापहारे सजवगतिभरो ध्यानयोगावरूढः
मुक्तस्सद्योऽभिभाति प्रभुपदरजसाध्वंसपापौघमूलः ।।१३।।

ध्यायन्नित्यं समाधौ त्रिभुवनविजयं विष्णुपादाब्जद्वन्द्वं
श्रीमन्नारायणस्य प्रणतजनवरं मूलमन्त्रद्वयान्त्यम्
निद्रातन्द्रेविजित्य प्रतिदिनमखिलं विष्णुकैंकर्य गर्भं
दर्भं पाणौ गृहीत्वा श्रुतिवरवचनैः प्रार्थयन्नेष मुक्तः ।।१४।।

युक्तश्श्रीधाम्नि सत्यं प्रकृतिमधिगतोरामसीतानुवन्धे
गन्धश्श्रीपादसन्धे विर्दित इव मुदाकृष्णगीतार्थ वादे
स्वादस्संसार सारे हरिपद निहिते पूर्णधर्मावतारे
यस्यप्राधान्य इष्टः सुरमुनिविदितस्सोऽत्रबन्धोस्तु नित्यम् ।।१५।।

कृष्णेरामेऽभिरामे यतिपतिवरदे यामुनाचार्यवर्ये
श्री श्रीरामानुजार्ये श्रुतिनिकरमते चार्थ धीर्धर्मधाम्नि
मान्ये श्री श्री निवासे त्रिभुवनविदिते दिव्यलीलायमाने
लीना आचार्य वर्याः निगमपथमता भासमाना जयन्ति ।।१६।।

सिद्धारम्भाः क्रियाणां दिविभुविदिताः धर्मशास्त्रानुसाराः
यस्यासन्नाः समन्तात् प्रवचनरचनायोगिगम्यातिरम्याः
धन्याजीवा जगत्यां चरणकमलयोर्लब्ध सेवावधानाः
सोऽयं सिद्धार्थ योगी जगतिविजयतां मोहमाया निरस्तः ।।१७।।

ग्रस्तैरस्तैर्विपन्नैर्नयनपथकृतो धर्म विद्यावतारः
लब्धो बोधप्रकर्षः सहजरुचिकरोऽनर्थ-नाशाय सद्यः
येनार्तप्राणरक्षाऽभवदखिलजनैराशुमुक्तिश्चलब्धा
सोऽयंभाग्यप्रसादो विधिहखयसाऽनन्त लीलामयस्स्यात् ।।१८।।

नीरक्षीरेविमृश्य प्रथितनयवचो यस्यशास्त्रार्थ-पूर्ण
वादे वादे प्रचण्डः प्रखरमतियुतो हार्दभावानुभावः
प्रश्नं सत्तर्क-युक्तया परमतसहजं खण्डयित्वा स्वपक्षं
संस्थाप्येवं समन्तात् प्रतिपदमधिकं बोधयित्वा विमुक्तः ।।१६।।

सिद्धान्तंवेदमूलं निखिलजनहितं सर्वशास्त्रार्थसारं
सम्यक् श्रीभाष्यगम्यं परमतमथनं ज्ञापयित्वा सहर्षम्
द्वैताऽद्वैतप्रपञ्चं श्रुतिगणविधया भञ्जयन्नर्थगर्भं
विष्वक्सेनार्यवर्यः सहज समवतीर्यात्रलीलायमानः ।।२०।।

मोक्षेधाम्निप्रशस्ते प्रणतिपखशोऽध्यात्मविद्याविमुग्धः
गीतोध्यातः प्रबुध्दोजगदवनरतस्समर्थमाणस्सहर्षः
पूर्णः पूर्णर्थकामो विबुधजनवृतोऽनन्तरूपोपमोयः
श्रद्धानीतस्सुशिष्यैः प्रतिदिनमभितो विष्णुतेजोऽवतारः ।।२१।।

ऋद्धिस्सिध्दिस्समृद्धिस्सहजमनुगता चास्य योगाधिगम्याः
लीलाभूमौ सहासन् प्रभुवरवचनै र्भ्राम्भाणाइवान्याः
कल्याण्योऽमोघलीला नव नव रूचिराःसर्वदानन्दशीलाः
एवं वन्द्यो गुरुर्वै प्रणतजनहृदि भ्राजतां सार्वभौमः ।।२२।।

लीनोलीला विभूतौ यदपि कलियुगे पञ्चतत्त्वं विसर्ज्य
देहं दिव्यंदधानो हरितनुखि यःसाम्प्रतं भासमानः
भक्तौदार्य प्रकृत्या निखधिमहिमायोगभावानुगम्यः
भक्तैरद्यापि वेद्यः परमपदगतः कीर्त्यते भक्ति भावैः ।।२३।।

योऽयं सत्यं समाधौ सुविजितसुमनाः भासमानोयदासीत्
लोकेयज्ञं वितन्वन् निखिल फलभरं भावनीयं प्रतिष्ठम्
तीर्थं तीर्थी विधाय प्रभु चरणरतश्शान्तचित्तोवुधाग्र्यः
सायं प्रातोऽद्यवन्द्यो निजनिज भवने सोऽस्तुसर्वान्तरात्मा ।।२४।।

विद्याऽविद्ये विमृश्य निखिलजनमनोहारि वेदस्वरूपं
शुद्धंश्रीभाष्य सिद्धं वचनममलकं ज्ञापयित्वा नितान्तम्
द्वैताद्वैतप्रगल्भं श्रुतिवचन वरैश्शोधयित्वा विशिष्टं
सिद्धान्तं वैष्णवीयं सहजजनहितं बोधयन् सोऽस्तु नित्यम् ।।२५।।

सीतारामोऽभिरामो हृदयनिलयवासी दयायोगमूलः
मन्ये लक्ष्मीपतिर्यस्य सविधिकलयाऽऽचार्यवर्यं प्रसाद्य
राधाकृष्णस्वरूपः प्रवचनपटुतां पूर्णवेदान्तघोषे
दत्वायस्मै सहर्षं स्वयमभिमतदस्सोऽत्रलीनोवरेण्यः ।।२६।।

वेदव्यासप्रणीते निगमनियतके ब्रह्मसूत्रप्रवादे
दिव्यं श्रीभाष्यगम्यं श्रुतिनिकरमतं पूर्ण वेदान्त वेद्यम्
ध्यायं ध्यायं सहर्षं निजमतविपुलं मुक्तियोग्यं प्रबन्धं
श्री श्रीरामानुजीयं त्रिभुवनविजयीवात्रलीनस्स्वधाम्नि ।।२७।।

विद्यासर्वा यदीयाः सहज समरसाऽऽनन्द धामश्रयान्ता
योगाभ्यासावसाना हरिपदगता ये प्रेम भक्ति प्रधाना
विष्णोर्लीलानुभावाः प्रभुपदशरणे स्वाश्रितानां हिताय
प्राथ्र्या सैवात्र शुद्धा सदयहितकरो यस्य सोऽद्यापि पूज्यः ।।२८।।

गेयोध्योऽमराद्यैरपि हरिशरणश्शान्ति [illegible] मूलः
शिक्षा दीक्षा विधानैरनवरतदययामूल[illegible]ः विरक्ताः
श्रद्धाबद्धाविदग्धास्सहजरुचियुताः प्रेम भावाभिषिक्ताः
दृष्टाः यस्यप्रसन्नाः गुरुवरकृपया सोऽद्यमुक्तोपि हृद्यः ।।२९।।

नित्यं नारायणीयं हृदयपरवशं भक्ति भावाधिगम्यं
ज्ञानंध्यानं यदीयं स्मृतिपटलगतं सर्वासिद्धान्तासारम्
स्मारं स्मारं सदर्थं भवभयहरणं भाग्य गम्यं प्रपन्नाः
यस्याम्नायप्रबोधात् प्रणति परवशालब्धमोक्षा स वन्द्यः ।।३०।।

जीवोब्रह्मैव वोध्यं परमतविदितं शेषशेषीविरुद्धं
शूद्धपूर्णोऽशभूतश्श्रुतिवचनवरै ब्रह्मणश्शेषिकस्य
भेदाऽभेदो विशिष्टो निखिलमतयुतस्सर्वथा बोधगम्यः
सर्वं सत्यं विचार्य प्रणतनतवरान् बोधितमार्यवर्यैः ।।३१।।

मान्याचार्यः प्रबुद्धश्शरणमुपगतेभ्यो महामोक्ष बीजं
वेदान्तोद्धारवाचा कलिकलुषहरं पूर्णविद्यारहस्यम्
गीत्वादत्त्वानुभाव्यं हरिहरविधिभिः सर्वलीलामयत्वं
विष्वक् सेनस्त्रिदण्डी परमगुरुवरो नित्यवन्द्योस्तुविज्ञैः ।।३२।।

शम्भुस्सत्यं शिवायै प्रतिपदमखिलं पूर्वमेव प्रधानं
सिद्धान्तं वेदमूलं सरसवचनकं विद्यमानं विशुद्धम्
जिज्ञास्यं बोधयित्वा यतिवरवचनैरर्थतो मुक्तिबीजं
मायावादं निगूढं हरिपदरसिकान् ज्ञापयन्नेव भाति ।।३३।।

पाद्मे विष्णौ पुराणेहरिहरवचनैर्नारिदीये च सम्यक्
प्रोक्तश्श्री वैष्णवीयः परमनययुतो ब्रह्मणोर्धर्ममूलः
सिद्धान्तस्सार्वभौमश्श्रुतिगण विहितस्सात्त्विकस्सर्वमान्यः
विष्वक् सेनार्यवर्यैरभयमयनिधि दर्शितो मंगलाय ।।३४।।

द्वैताऽद्वैतोर्ध्वमाया विलसितवचनैर्वैदिकान्यैर्मतैर्वा
बीजं मायावृतानां श्रुतिमतनियतन्नैव वेदानुरूपम्
तत्त्वं तथ्यं कथञ्चित् परमगुरूवरै नैव गीतं विवाद्यं
सत्यं वैशिष्ट्य बोध्यं सविधिहरिमतं ब्रह्म जीवस्वरूपम् ।।३५।।

श्री श्रीरामनुजार्याः निखिलमतपंथं ब्रह्मजीवात्मवादं
सम्यक् वैशोधयित्वा निखधिमहिमानन्त भेदप्रकामम्
शुद्धं सिद्धान्तमूलं विधिहरि विहितं ब्रह्मजीवात्मकत्त्वं
संस्थाप्येवं विभिन्नं श्रुतिवचनमतं शाश्वतं भेदमाहुः ।।३६।।

जीवोब्रह्मैव नास्ति प्रबल मत मितं वेद भाष्यानुरूपं
भेदस्सिद्धो द्वयोर्वै न किमपिमतं द्वेष ग्रस्तं विचार्यम्
वेदान्ते सर्वशास्त्रे सविधिमतवरं प्रेमतः सन्निविष्टं
सद्योऽभेदप्रशान्त्यै यतिवररचितं ज्ञान गम्यं विचार्यम् ।।३७।।

सत्यं श्री भाष्यशुद्धं निगममतवरंतत्र सिद्धान्तरूपं
ध्येयंगेयं प्रपन्नै र्नव नव रुचिरं रामकृष्णमिधानम्
शेषीभावानुभाव्यं सुविदितशरणै स्स्वस्यस्वरूपंचशेषं
भेदाऽभेदौविशिष्टौ भवत इह महामन्त्रभावानुसारौ ।।३८।।

ज्ञात्वाध्यात्वासहर्षं प्रणतजनगणाः वैष्णवाब्रह्मशेषाः
ब्रह्मप्राधान्यतत्त्वं जगदवनकरं कर्मभोगानुरूपम्
देहं दत्त्वाऽऽश्रितेभ्यो भवभयहरणं न्यास विद्याविधानात्
मुक्त्यै–मुक्त्यैसदर्थान् विविधहितकरान् ज्ञापयन्तो जयन्ति ।।३६।।

सर्वं सत्यं महर्षेः प्रणतजनकृते माननीयस्य सद्यः
विष्वक्सेनस्यपूर्णं यजनमयविधिं विष्णु कैंकर्यमूलम्
दृष्ट्वाबुद्ध्वाशुशिष्याः सविधिपरिकराः धर्म सेवानुबद्धाः
ग्रामं ग्रामं भ्रमन्तो निखिलनगरकं चात्र धर्माधिकाराः ।।४०।।

लब्धास्सेवास्पदार्थाः यतिवरकृपया वैष्णवाः सिद्धपीठाः
आचार्याः शिष्य रूपाः परिणतविधया यज्ञयोगार्थ सेवाः
शिक्षादीक्षाविधिज्ञाः शरणमुपगतायेऽत्रशिष्यप्रशिष्याः
विष्वक्सेनार्यपादाश्रयं शुभगतयो वन्दितास्ते सदास्युः ।।४१।।

नित्यं साकेतधामा व्रजभुविनिरता भक्ति भावाभिभूताः
सिद्धास्सत्सप्रदाये स्थिरधियमनघं प्राप्यमोक्षाधिकाराः
विष्वक् सेनार्यवर्यं परम गुरुवरं श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं
श्रीमन्नारायणीयं विहितविधियुतं सर्वथामुक्तिभाजः ।।४२।।

नित्यंदत्वाजनेभ्यो निजशरणगतेभ्योऽत्र भावानुरूपं
धर्मस्वारस्यबीजं चरमपदगतं केवलं शान्तिमूलम्
विश्वंधर्मप्रभूतं नयनपथगतं यस्यलीलावभासं
ज्ञात्वा सद्यस्स सर्वं सहजरुचिमना जायतां वैष्णवाग्र्यः ।।४३।।

तीर्थे तीर्थे भ्रमन्तो जगति हरिपदामन्त्रणे मन्त्रमुग्धाः
सन्तस्सन्ति प्रसन्नाः यतिपतिपथिकाः धर्मधीरप्रभावाः
विष्वक्सेनाभिमान्या दिविभुवि विदिता वैष्णवाः सुप्रसन्नाः
रक्षा भारोपनीताः सुरमुनिसहिताः सर्वदा सन्तुपूज्याः ।।४४।।

श्रौतस्मार्ताभिमान्ये यतिवरयजनेऽनन्यतायाः प्रसंगे
केवाकस्य प्रवादेऽप्रतिहतगतयो ? वैष्णवीये स्वधर्मे
प्रौढास्सद्धर्म निष्ठाः अविचलितदयादृष्टि भावाभिगम्याः
विष्वक् सेनार्यवर्याः परमगतिकराः वन्द्यमाना जयन्तु ।।४५।।

नैराश्यन्नैव धर्मे नियतशुभफलै रर्थिताः पूर्णकामाः
यस्यप्रौढाः विचारा निखिल निगमतस्सर्व कल्याणमूलाः
भक्ति र्नारायणस्य व्यथित हृदिहिता शान्तिदायीतिमत्वा
सर्वस्यार्थे प्रवृत्तस्स नयनपथगो जायतां दिव्यदेहः ।।४६।।

सर्वा बाधानिरस्या हरिपदकृपयाऽनादि काल प्रवृत्ता
भोगार्थं लब्धदेहैरवनितलगतै र्मानवैस्सत्क्रियाभिः
सौभाग्येनैव सत्यं नरवरतनुराजन्म भोगाश्रयावा
लब्धादग्धाभवित्री यदि न करुणया रक्ष्यते धर्मनिष्ठैः ।।४७।।

नित्यं स्वाचार्यवर्यैर्हरि पदनिरतैर्न्यासदीक्षावधानैः
योगारूढ प्रभावैश्शरणमुपगतैः पूजितैरर्थसिद्धयै
लोकास्संबोध्यमाना स्सपदिहरिपदं प्रार्थयन्तः प्रसन्नाः
जाताःयेषां प्रसादात् निगमपथरतास्तेऽद्यधन्या जयन्ति ।।४८।।

मान्याश्श्रीस्वामिवर्याः जगदखिलवृतास्सर्वधर्मावताराः
विष्वक्सेनार्यपादाः नरवरगुरवो वेदवेदान्तनिष्ठाः
ब्रह्मध्यानावसानाः अविचलितदयादृष्टिपूताविपन्नाः
सद्यो जीवाननन्तान् प्रभुपद निरतान् पालयन्तो जयन्तु ।।४९।।

जीवोऽनादिः प्रकृत्यासहनियतकलः कर्मणालब्धदेहो
नित्यश्शेषश्शरीरं प्रकृतिवशगतो भोग्यभोक्तानुबन्धी
ईशस्याभारभूतो भवविभवयुतो लब्धसामर्थ्यसंघः
ज्ञानं लब्ध्वाततो वै सुविदितगतिभाग् जायते जन्मधन्यः ।।५०।।

यस्यानन्त प्रशिष्याः विगतभवभयाः भारते भासमानाः
विद्यौदार्य प्रभावा निखिलगुणयुता यज्ञदीक्षाविधानाः
तीर्थप्रायप्रधाने नियतिपरवशा विष्णुयागक्रियार्थाः
तस्यैवात्राभिवन्द्या प्रगतिपथगता मूर्तिराद्यास्तु पूज्या ।।५१।।

ध्यायं ध्यायं परेशं परमगुरु कृपाधारगम्यं दयालुं
साराऽसारप्रधानं त्रिभुवनविदितं रामनारामणीयम्
रूपंदिव्यं दधानं प्रणतजनहितं साधयन्तं प्रसन्नं
सत्यं यस्यप्रभावादखिल भुविगताश्शान्तचिन्ताः सधन्यः ।।५२।।

नित्यानन्द प्रसादो नयनपथगतः सर्वविद्याभिधानः
वेदे वेदान्तशास्त्रे श्रुतिगणविहिते चात्र नारायणस्य
सिद्धान्ते सर्ववादे हरिपदविषये वैदिके मन्त्रमूले
विष्वक् सेनार्य वर्यैः सुहृदयकमले लक्षितः सर्वसिद्धयै ।।५३।।

ब्रह्मानन्द प्रकाशः परिणतवचनैं रामकृष्णानुरूपः
सद्यश्चारित्र्य भाव्यश्श्रुतिपद पथिकैरर्थितः प्रेमपूर्णः
नीतोगीतश्चविज्ञै र्भवभय हरणेभक्तिं भावाभिव्यंग्यः
मान्यैराचार्यवर्यै रखिलजनहिते रक्षितश्चान्तकाले ।।५४।।

विद्यैश्वर्यप्रभावस्त्रिभुवनविदितोऽनन्यभक्ति प्रपत्त्या
लीलालीनैः प्रसन्नैः विदितहरिपदै रामनाराणीयः
लोकप्रासादमूलो ललितहरिकथा कुञ्जगुञ्जायमानः
विष्वक्सेनार्यवर्यैरधिगतवचनैरद्य गीतस्सुरक्ष्यः ।।५५।।

मन्येवैकुण्ठनाथः प्रतियुगमखिलां दिव्यलीलानुवन्धैः
विष्वक्सेनार्यरूपां प्रणतजनकृते स्वां विभूतिं प्रकृष्टाम्
सृष्ट्वा संसारसिन्धोः सुतरणसहजां ज्ञानयोगधिरूढां
जातस्सिद्धार्थभूमा निरवधिमहिमा मण्डितोमोक्षधाम्नि ।।५६।।

सत्यं संसार पारं प्रणतजनगणाः लब्धदीक्षाः प्रबुद्धाः
गन्तुं योग्यास्सदैव प्रतिदिनमधुनाप्यन्तकाले प्रसन्नाः
दुःखत्रासाद् विमुक्ताः प्रभुपद्सिकाः मन्त्रराजप्रसन्नाः
विष्वक् सेनार्य पादैरवनितलगता निम्नवर्गाश्च धन्याः ।।५७।।

ध्यायं ध्यायं पदाब्जं गुरुवरनिहितं रामपादाब्जलग्नं
मग्नं यस्यप्रसन्नं यतिपतिविदिते यन्मनोऽनन्तरूपे
विष्णौ तस्याद्य शिष्याः नियमपरिकराबद्धमूला भवाब्धौ
स्वाचार्यस्यैव दिव्याऽमलपथ गतिकाश्शुद्धभावा जयन्ति ।।५८।।

रक्षाभारोपनीतासस्दयहृदिगता नित्यलीलविभूतेः
सद्यो नारायणस्य प्रतिपदनियता विष्णु धामाश्रितावा
लीलावद्धाविमुग्धाः सहजरूचिवृताधर्म धीरामहान्तः
विष्वक्सेनार्यवर्याः हरिपदनिलया भान्तिशिष्याभिवन्द्याः ।।५९।।

ग्रामं ग्रामं भ्रमन्तः प्रभुपदशरणं वोधयन्तो दयार्द्राः
नित्यं दुःखाग्निदग्धान् सुमधुखचनै श्शान्तिमानीय सर्वान्
ह्यानाबालवृद्धान् द्विजकुल सहितान् प्रेमतोबोधयित्वा
धन्याः जाताः प्रणम्याः निज जनकरुणाधार देहा जयन्ति ।।६०।।

काशीवासी न योवै नहि निजमनसिब्रह्मरूपात्मबोधः
नाऽहंब्रह्मास्मि वादीप्रभुचरणरजोधारणेनात्मलाभः
सेवाभावोपनीतो नियतहरिदया पादयो र्भक्तिबद्धः
श्रद्धापूतः परात्मा त्रिभुवन विजयी जायतेयस्य भावः ।।६१।।

तस्यैवात्राधिकारस्स्वजनहितकरो वैष्णवानां प्रसादे
वादेनार्थप्रधाने परमतमथने वेदसिद्धान्तयुक्त्या
श्रीमन्नारायस्य प्रभवति महिमा सर्वलोकोदयाय
जीवोब्रह्मैव नास्ति प्रकृतियुततनूरक्षकस्यात्रसिद्धा ।।६२।।

नाऽहं शम्भुर्विरञ्चिर्न च सुरमुनिनिभो नास्मिरामश्च कृष्णः
श्रीश्री रामानुजार्य प्रभुपदवशगोदासदासानुरूपः
नित्यं सेवानुरक्तः प्रभुचरणदया दृष्टिपूतः कथञ्चित्
लीलाभूमौ विभूतौ हरिपदरसिकान् पूजयन्नेष वेशः ।।६३।।

मन्त्रोनारायणीयः परमहितकरः सर्वथाधारणीयः
मायामोहप्रकोपः कलिमलविषयो यत्नतोवारणीयः
शुद्धं बुद्धं मनोवै परमपदकृते प्रार्थ्यमानं सदैव
प्रायस्सर्वैस्स्वकीयं विमलवचनकं जीवने कल्पनीयम् ।।६४।।

नाऽयंब्रह्माण्डगोप्ता स्रजनकृतिकरो नास्ति संहारशीलः (शक्तः)
सर्वभेतद्धरेर्वै श्रुतिपदविदितं वेद वेदनान्तदृष्टम्
सत्यं प्रधान्यबीजं विविधगतिविधा वर्णितं ब्रह्मरूपं
स्वीयैस्सिद्धन्तनिष्ठै र्नियतमतदिशा बोध्यमानं विचार्य ।।६५।।

पूर्णे वेदान्तसूत्रे श्रुतिगणविहिते नैवसिद्धान्तभाजः
आचार्यास्तेपि विज्ञाः सुविदितमतयस्शास्त्रवादेऽनुरक्ताः
शक्ताब्रह्मात्मवादे प्रमुखमतहतास्स्वीय सिद्धान्तबद्धाः
ये वा सन्तोविमक्ताः कथमिहमनसा स्वात्मपक्षं दिशन्तु!? ।।६६।।

नीद्रासंसारलीनाः कलिमलवसनाः द्वेषभूताभिभूताः
कामक्रोधाभिमानाः नरकगतिभयाक्रान्त भावादिवान्धाः
सर्वान् स्वीयान् विमोक्तुं सरलपथयुता ब्रह्मरूपाब्रुवन्तो
मुग्धाव्यर्थ प्रपञ्चे विचलितगतयो वञ्चयन्तस्तपन्ति ।।६७।।

एवं व्यामोहलिप्ताः हरिहरपद भक्ता महासाधुभूषाः
श्रद्धाद्व्यावधाने निजहितकलिता भौतिकीं भोगसिद्धिम्
लब्ध्वाजाताः कृतार्थाः न च नरकभयं मन्वते मोहमुग्धाः
तेषामुद्धारमद्य प्रथयति सततं वन्द्यमानो गुरूर्मे ।।६८।।

इत्थं स्वाचार्य पादाः प्रतिपदमखिलं ज्ञाययित्वाजनेभ्यो
विष्णोर्धर्मप्रधानाः यतिपतिपतयो वैष्णवानां स्वरूपम्
सिद्धं सच्छास्त्रगम्यं नरतनुफलितं मन्त्रराजप्रयोज्यं
श्रीमद् रामानुजार्याश्शरणगतजनान् बोधयन्तो जयन्ति ।।६९।।

ध्येयाः गेयाः प्रसन्नाः नरहरिकलया क्रोधमाभासयन्तः
आचार्यास्सन्ति केचनविदित सहृदयाः सर्वदाने समर्थाः
लोकेयज्ञाभिषिक्ताअभयशरणदा विष्णुदीक्षासु दक्षाः
रक्षाभारे नियुक्ताः भवमयविदितान् पान्तुसर्वान् प्रपन्नान् ।।७०।।

विष्णोः पादाब्जजाताः विधिहर विहिता जाह्नवी जंगमाद्या
गंगादेवी त्रिवेदी सगरकुल दशा दर्शिनीवात्र वन्द्या
सद्यश्शप्ताभितप्ता हरिपदनयने सिद्ध सामर्थ्यशीला
मान्या मातृस्वभावा त्रिपथगतिवहा तीर्थराजप्रयागे ।।७१।।

भक्तिर्भूभारमोक्तुं नरक गतिजया शारदा वा रमावा
सिद्धार्थान्वा प्रदातुं हरिपद निलया वैष्णवी मान्यमाता
सत्यंभाग्य प्रभावात् यतिवरशरणं प्राप्य बुद्धवेतिसर्वं
विष्वक्सेनार्य देवैः सुविदितमधुना ज्ञापितं सर्वदैव ।।७२।।

सत्यं स्वाचार्यपादाः यतिवरनियमान् पालयन्तः प्रपन्नाः
प्रायोगंगातटीकाः विधिनियमरतायोगयज्ञाधिरूढाः
त्यक्त्वामायाप्रपञ्चं विरतविविध भावाविष्णुपादाब्जतीर्थाः
विष्वक्सेनार्यवार्यायतिपतिशरणा विष्णुलीलालयस्थाः ।।७३।।

यातावैकुण्ठधाम्नि प्रगतिपथवरे दिव्यलीलाविताने
सिद्धैर्योगाधिरूढैः सुविदितवरदे ब्रह्मणि प्रार्थ्यमाने
शम्भुब्रह्मामुनीन्द्रैरपिसुविलसिते दिव्यसौन्दर्यशीले
येषामद्यापिभूमौ भवतिहरिकथा तेऽत्रधन्या जगत्याम् ।।७४।।

नित्यानन्द विदग्धमानसततः कल्पद्रुमः कामदः
प्रारब्धाऽध्वनिधावमान विबुधो नारायणे संरतः
कल्याणायकलालवेन विलसन् भक्त्यासुयुक्त्यादृतः
विष्वक्सेनगुरुस्सदा विजयतां श्रीविष्णुलीलाश्रयः ।।७५।।

सिद्धोदिव्यपथानुगः कलियुगे कारुण्यमूर्तीरथा
रक्षाबद्धमनो मुदावनितले योऽपालयत्प्राणिनः
शिक्षाश्रीपतिनामधाम विहिता सन्दर्शिताकर्मणा
सोऽयंसंस्कृतिपूर्णपावन पथे ब्रह्मप्रियो जायताम् ।।७६।।

योगध्यानधियादयापरिणतो नारायणेलीनधीः
भक्तानां भवभीतिवारणपटुः संकीर्तितोऽद्यापियः
द्रष्टव्यश्श्रुति सार साधनपथे लीलायमानोध्रुवं
सोऽयंवेदविधि प्रमोद विलसन् रामानुजार्योऽपरः ।।७७।।

मुग्धस्मेरमनोहराऽधर तटी नारायणप्रेमतो
भावावेशमनोमुदा विविधता स्वानन्दलीलार्पिता
दृष्टिस्सर्व सुधावहाऽमलकला लालायितामंगला
यस्यानन्यरतिस्सदाविजयते सोऽयं गुरुर्गीयते ।।७८।।

रामध्यानपरायणो दिविगतो वैकुण्ठमार्गक्रतुः
भावःकोपि हरेः सदासुविदितः संसारसारोद्धृतः
कोप्यन्यायपराभवाय नियतोनारायणोद्देश्यतः
यस्यादर्श चरित्रबोधनिरता जीवास्स शान्तिप्रभुः ।।७६।।

लोकाऽमंगल वेगनाशनहरिः सर्वत्रसर्वार्थदः
शिष्याणामपि मंगलायमनसा श्रीधामधर्मप्रियः
योगीशः कलि कल्मषाघ्न कृपयात्राणायलोकस्ययः
दुःखत्रासविपाटने स निरतः स्वाचार्यवर्यस्सदा ।।८०।।

मोक्षद्वारदयेक्षण प्रकृतिको भाग्यश्रयोवाऽथवा
श्रद्धानंत्यपरे महाप्रभुपदे प्रीतिस्सुधावर्षिणी
योवायस्यसदाव्रत प्रखरतो दिव्यस्तवप्रार्थितः
सोऽयं तस्य दयापि सर्वजगतो योगक्षेमाय स्तुता ।।८१।।

पाराशर्यवचः प्रथानुविभवो यस्याधुनासाधना
वेदान्तद्वयतत्त्वधारणधिया नारायणस्सादरम्
दृष्टो ध्यानपथे रमा च जननी लोकत्रयस्वामिनी
येनामोघवरप्रसादपावन हशोर्लब्धं फलं तं भजे ।।८२।।

येषांश्रीपदारविन्द मुगले भक्तिप्रपत्तीशुभे
स्यातां जीवनसंगिनीव विमले नारायणे प्रेमतः
मन्त्रे मन्त्रयुते गुरौ च नियता श्रद्धादराभावना
नित्यं सर्वमिति प्रवोधवचनैर्वन्द्या मुदाभान्तिते ।।८३।।

याऽयोध्याव्रजभूमिपुण्यनगरी श्रीरंगधामादिकं
पुण्यं वक्सर दिव्यधामदेववसतिर्गंगातटी तारिका
यस्यप्रौढतपः प्रभावजनता अद्यापिलब्धादराः
तस्यैवात्र च शान्तिसौम्य निधयो भक्तैस्समृताः भांन्तुवै ।।८४।।

इष्टानिष्टविवेककारणकलाकारूण्य लीलातनुः
प्राप्ताब्रह्म विवादवारणमतिश्श्रीवैष्णोद्धारिणी
नित्यानित्य पदार्थ वोधनपरागीर्वाणवाणीध्रुवं
येनाराध्यहरिं मुदाविजयते सर्वान्तरात्मा हि सः ।।८५।।

मोहाज्ञान भवाटवीविलसतां क्रोधाभिभूतात्मनां
दारापत्यनिधिप्रपूर्तिमखिलां साकांक्षमायादृशाम्
विष्णौ विष्णु जनेषु दोष विहितौ भावौरजस्तामसौ
दिव्यज्ञानदिशाविनाश्य जयति स्वाचार्य पादोध्रुवम् ।।८६।।

मायावादिनय प्रभावनिहितान् शास्त्रार्थतर्कान् सदा
मोहध्वान्तनिवारणे च सततं वेदान्तशास्त्रोक्तिभिः
सिद्धार्थ प्रतिपादनेन सहजं संशोध्यासिद्धान्तकं
संस्थाप्यप्रतिवाद वारणपटुर्नित्यंहृदि भ्राजताम् ।।८७।।

दीर्घायुर्भुविभारतस्यविमलं लब्ध्वादृतस्साधुसु
जीवोब्रह्ममतं विजित्य जगति प्रख्यात कीर्तिः स्वयम्
वेदान्तद्वयसार संचयमना रामानुजीयं मत
मुदघोष्यप्रणवार्थमेवमखिलं जेतासदा भासते ।।८८।।

वैकुण्ठेऽद्यहरेः पदाब्जरसिको लोकेपिकारूण्यया
वाचादिव्यकृपादृशा विचरतां मुक्तयै च सर्वात्मनाम्
आराध्यः प्रतिवासरं शरणगां पातुं मुदातत्परो
विष्वक्सेनगुरुस्सदाविजयते वन्द्यो महायोगिभिः ।।८९।।

श्रद्धेयेधाम्नि मान्ये निखिल निगमतो वैदिके मन्त्र मूले
मीमांस्येऽमोघतत्त्वे प्रपदन गहनेऽनन्त शक्ति प्रकर्षे
कस्यास्तिप्रौढवादो? नव नव निधिर्यो नामधामानुरूपः
व्यासोनारायणः को? दिविभुविविदितो नास्ति कोपि प्रसंगः ।।६०।।

रक्ष्यांराधावरेण प्रणयिजनगणोऽद्यापिकामं महीय्यां
सीतारामाश्रितोवा सुरुचिविधिमतो विष्णुपादाब्जलीनः
सत्यं श्री वेंकटेशप्रकटिततनुगः पूर्ण पूजाप्रबन्धै
रद्याप्यंगीकृतार्थो जयतु यतिवरो सर्वविद्यावतंशः ।।६१।।

शिक्षादीक्षाविधीनां निखिल कुमतिमायान्धकारप्रणाशे
विद्यामन्त्रोपदेशो मुनिवरनिवहैरर्थतोऽनर्थमोघे
ध्येयोगेयो मुरारे रनुदिनमलसैरानुपूर्वी स मन्त्रः
प्रार्थ्योमुक्तिप्रदायी प्रभवतु भुवने भाग्यतश्शान्तिदायी ।।६२।।

यस्यार्थेषुप्रमग्नाविबुधवरगणास्सर्व तन्त्रप्रपन्नाः
नीतागीतास्समीता भवभयविधुराः कीर्तितायत्प्रभावात्
विज्ञैर्वेदान्तनिष्ठैरवहितवचनैः प्रीयमाणाः प्रसन्नाः
सोद्याप्यर्थप्रसादं प्रथयतु सुचिरं वेदवेद्यस्वरूपः ।।६३।।

निद्रानन्द्रा प्रभुक्ताः हरिहरगतयो वीतमायाः प्रबुद्धाः
नित्यानन्दात्मधर्माः गिरिवर गहने रन्तुमीशा ब्रतेज्याः
त्यक्तस्वार्थाः परार्थाः सुपथपदवृता धर्मतोन्यायतश्च।
भाषन्तोऽनन्य भाषा विदधतु मनसा सर्वभूतोदयाय ।।६४।।

मन्त्रार्थे मन्त्रदेवे श्रुतिविधियुतोऽनन्यभावाऽभ्युपेता—
रक्ष्योपायान् विसर्ज्य स्वधनवलगता बुद्धि युक्तीतरांश्च
सर्वस्वाधारवीजं गुरुवर विहितं मन्त्रराज प्रभावं
लब्ध्वाजन्मान्तसारं प्रभुप्रदरसिकश्शस्यते शास्त्रनिष्ठः ।।६५।।

प्रज्ञासोपानलम्यो हरिपदनिहितः सर्वबोधोपयोगो
विघ्नात्यन्तोपघातः प्रभुचरणत प्राणिवर्गोपहासः
सिद्धैरन्यैरुपायै रभिमत बलयुतै र्नश्यते पापमूलः
भक्तानामाशुमोहः सदयगुरूवैरैर्नास्ति शंकावकाशः ।।६६।।

वैकुण्ठे सत्यलोके सहज समरसाः पार्षदासार्ष्टिभाजः
सामीप्यंशाश्वर्त वै हरिपदमनसां सम्यसारूप्यतायाः
सालोक्यार्थादि मुक्तिर्हिविविध विधयावर्णिता दर्शितात्र
भक्तानां भाग्यभूमि र्भवतु भयहरा पूर्ण विद्यौषधीव ।।६७।।

धर्मो धर्मीसहायोगुरुवरवचसा ज्ञापनीयोमनस्वी
वैरस्यं नास्ति लोके यदि समरसता प्रेमभावाभिगम्या
सर्वैरन्यैस्सहापि प्रवरपरिणतिस्साक्षिरूपेवगीता
धन्या मान्यावदान्याभवतु रूचिकरी तर्हि कीर्तिः सुधीनाम् ।।६८।।

श्रद्धावन्तो महान्तो प्रभुपदरसिका देवदेवेन मुग्धाः
सायंप्रातः प्रणम्याः कलिकलुषहरा वेदवेदान्तघोषैः
शिष्यैस्सर्वैस्सदैव प्रभुपदरसिकै रामभक्ति प्रपत्या
ध्येयागेभ्याः कथंस्यु र्यदितव करूणानाथन स्यादवश्यम् ।।६६।।

सम्यक् सौहार्दभावः सुकृतिविपिने योगसिद्धैरिवार्च्यः
सम्यैरार्द्रस्वभावैरमितवलयुतै रक्षणीयः प्रबुद्धैः
पूर्णो रामायणीयो भरतपदनयो नीयतेऽद्यापिचेद्धि
वंशेस्वीये परस्मिन् गुरुजनविहितस्सर्वदादर्शमान्यः ।।१००।।

अन्यः कश्चन स्वकीयः खलुलघुमनसां क्षुद्रभावाधिगम्यः
सत्यं स्वात्मीयभावः कथमपिसुपथं साधु संरक्षकानाम्
दृष्टस्सृष्टश्चलोके विनय नययुषां धर्म रक्षाव्रतीनां
रामः कृष्णोंहरिर्वा सुरमुनिनिवहैः सेव्यते सर्वधाम्नि ।।१०१।।

एवं देवस्त्रिदण्डी प्रभुचरणरतस्सर्व जीवाऽवनाय
श्रेष्ठं शास्त्रार्थ-सारं हरिशरणपरं पूर्णकारूण्यभावम्
प्रेम्णा भक्त्या च लभ्यं गुरुवरकृपया शुद्धसंस्कारमूलं
दत्त्वाभावानुरूपं निखिल जनकृते दिव्यदेहोऽत्रजातः ।।१०२।।

सूक्ष्मादृष्टिर्न शास्त्रे न च विबुधगणास्सेविताः शिष्यवृत्त्या
शास्त्राणामानुपूर्व्याः सुकृतविरहितो नैवपारायणेवा
संलग्नो वा न जातस्तपिसहजतश्शास्त्र गोष्ठिमुपेत्य
धन्यमात्मानमद्य प्रभुपद-कमले ज्ञापयित्वा शरण्यः ।।१०३।।

स्वामिन्नास्तीह वादो विमतपथगतः सर्वधर्माभिमुक्तः
मिथ्यातथ्यावभासे भ्रमितजनकृते प्रापयन्नात्मभावम्
स्वात्मश्लाघा विनोदे सुरचितवचनै रन्तरंगप्रभावैः
सद्यश्शोकापनोदे कथित सुचरितैरंशतोऽयं सुरक्ष्यः ।।१०४।।

जगदाचार्य १०८ श्रीविष्वक्सेनाचार्याणां संस्तवः

सर्वाम्नाये निविष्टा भवभयहरणे सर्वदानन्दलीना
प्रज्ञा विद्यावगाह्या शुभगतनुवराऽऽराध्य रामानुजीया
दिव्याऽमोघा सुवाणी भुविदिविरमतां रामरक्षेवयस्य
विष्वक्सेनो महर्षिर्जयति यतिवरः सोऽद्यधर्मावतारः ।।१।।

विद्या वेदान्तदीक्षा गलितकलिमला मोहशोकान्तनिष्ठा
भिक्षा सन्तोषशिक्षा प्रणतिपरवशेभ्यस्स्वयं स्वाश्रितेभ्यः
श्रीमन्नारायणार्था प्रतिपदमखिलाऽनन्यतायाः प्रकर्षा
यस्य प्रासाद्यभाषा प्रथयतु जनितान् सोऽभिरामानुजार्यः ।।२।।

रक्षारामाश्रितानां विदितमतिमतां सर्वविद्याधिगम्या
शास्त्रार्थे सत्य निष्ठा नवनववचसाऽनन्तयुक्तिप्रमाणैः
वादप्रासादभूमा सहजसुरगिरावेदसिद्धान्तमूला
यस्याद्यापि प्रशस्ता स जयति मतिमानद्यरामानुजार्यः ।।३।।

वेद्ये वेदान्तमान्ये श्रुतिगणवचनैरर्थिलोकोदयाय
भक्तिश्शक्याप्रपत्तिः. प्रणतजनदयादर्शिनीवामलाभा
नित्यं गीतानुगीता परमकरुणया यज्ञनारायणीया
विष्वक्सेनार्यवाग्भिः प्रसरतु भुवने सर्वदा सुप्रभाता ।।४।।

ध्यानं योगाधिरूढं सुतपसि मनसश्श्रीधरे श्रीसपर्य्या
शास्त्रोद्धारप्रचारः प्रखरमतिमतो ज्ञाऽयतेऽद्यप्रबुद्धैः
स्नानं दानं सहर्षं यदपिकलियुगे नैव पूर्ण व्रतीनां
विष्वक्सेनस्त्रिदण्डी तदपि यतिपदे सर्वयज्ञाभिषिक्तः ।।५।।

सिद्धैराराध्यमाने सुरमुनिनिलये ब्रह्मविद्यानुबन्धे
दिव्यैरर्थप्रबन्धैरनवरतजपैर्मूलमन्त्रद्वयन्तैः
नैकोयोगाभियागः परमपदपरः कीर्तितोऽद्यापि यस्य
विष्वक्सेनावतारः स जयति यतिवरो भासतेद्यद्वितीयः ।।६।।

सिद्धान्तार्यमूर्ती रुचिरखिलकला मण्डिता मंगलश्रीः
ब्रह्माडान्तप्रवादे विविधमतिमतां प्रार्थनेवाश्रितानाम्
सिद्धान्तोद्गारवाचा सहज सुरुचिरा सूक्तिराभाति यस्य
सोऽयं श्री भाष्यवक्ता नयनपथगतः सार्वभौमोस्तुपूज्यः ।।७।

भव्यैरज्ञप्रथानां कुटिलमतियुषां चापि दर्पापहारी
तर्कैर्युक्तिप्रमाणैश्चिदचिदमरताऽनित्यवादावसानं
श्रौतीं सच्छास्त्रगम्यां गुरुवरपदवीमीश्वरञ्चामिधाय
वेदान्ताचार्यवर्यः स हि जगदवने कीर्तितोऽन्योऽवतारः ।।८।

तीर्थ तीर्थी विधाने सुरमुनिनिवहैः स्मर्यमाणः प्रबन्धैः
यज्ञैराराध्यतायाः शमदमनिहितो यामुनार्यस्वरूपः
ध्येयो विद्याविभूतिः सविधि मतिमतां तत्त्वबोधप्रदायी
श्रीमानाचार्यवर्यः प्रभवतु परितश्शास्त्रगीर्वाणगीतः ।।६।।

यज्ञे श्रीवैष्णवीये निखिलनिगमवेद्येऽनवद्ये प्रबन्धे
सद्यश्शोकापनोदे हरिपदभजतां कल्पवृक्षे त्रिदण्डे
विष्वक्सेनेशवाणीं भवभयमनिशं वाराणाय प्रगल्भा
लब्ध्वा यैरद्यपुण्यैरभिमतविषया तेऽपिधन्याधरण्याम् ।।१०।

भाग्येनैवाप्तकामाश्श्रुतिरवगहना रामनाराणीया
पश्चात्सा भास्करीया तवपदरसिकाभक्तिमान्यासुतीर्था
रम्या गीर्वाणवाणी प्रभुपदविषयाऽऽभासमानासमन्तात्
तन्वीमूर्तिस्त्वदीया गिरिवरगुरुताधाररत्नाविभाति
यस्याः मूर्तेः प्रसादे प्रसरणरसना सापि पातु प्रपन्नान् ।।११।।

सर्वैराचार्यवर्यैः प्रणतजनगणैरर्च्यमानस्सुमन्त्रै—
र्नित्यं सायं प्रमाते ललितलहरिका भक्तिभावप्रपत्तिः
पुण्यश्लोकस्य सद्यः प्रणतजनमनश्शोधनाय प्रवृत्ता
विष्वकसेनः स देवो नु वरवरमुनिर्वन्द्यतां वैष्णवाग्रैः ।।१२।।

सर्वे स्वस्थाः प्रसन्नाः प्रभुपदरसिकाः स्वल्पकालेन धन्याः
लोके सद्धर्मनीतैर्यतिपतिवचनैर्वेदमूलप्रधानैः
पुण्यैश्शास्त्रार्थजन्यैरनुदिनमभितो विष्णुधर्मप्रचारैः
येषांध्यानावधानैर्बहुजनशुभदैस्ते दर्शनार्हाजयन्ति ।।१३।।

येषां लीलालयाङ्ग्त्रिभुवन जननीजन्मतोऽनन्तरूपा
स्वक्षादक्षाऽऽनवद्या सबलरिपुगणान् हन्तुमीशापिशान्ता
नानारूपाहितानां नरहरिवपुषां रामकृष्णादिकानां
तें वै ब्रह्माण्डदण्डास्त्रिभुवनविजये देवहस्ते विभान्ति ।।१४।।

नैवं जीवाः स्वतन्त्राः स्वपरमदगताः पूतदेहानुबन्धाः
सत्यं सर्वे वदन्तो गुरुवर कृपयालब्धकामाः सुतृप्ताः
सभ्या जाताःप्रबुद्धा परमसुखभराः सर्वतो भीतिमुक्ताः
येषामाशीर्वचोभिरभिमतवसुता प्राप्यते ते जयन्ति ।।१५।।

धर्मप्राणे सुतीर्थे विदितमतिमतां श्रद्धयासुप्रबोधे
विद्यामूले विदग्धे श्रुतिनिकरनये प्राणिनां धर्मवृद्ध्यै
ध्यायं ध्यायं भवाब्धौ विपदखिलहरं नारसिंहं दयालुं
लक्ष्मीनारायणाख्यं वपुरवनितले ते सर्वलोकोदयाय ।।१६।।

धर्माचार्यप्रसादे यतिवरशरणे पुण्यधाम्निप्रयागे
सर्वैराचार्यमान्ये बुधजनविदिते सार्वभौमे पवित्रे
भक्त्या दासानुदासेन चरणशरणे पद्मपुष्पाञ्जलीया
नित्याऽऽवेद्यासपर्याभवतु निपतिंता देहमूर्तिश्च मेऽद्य ।।१७।।

याऽद्या महादेवमहेश्वरीस्तुता
गीर्वाणवाणीन्दुमती कलावतः
शम्भोर्नवा संस्कृतपुण्यपर्वणः
तस्याः प्रसादोऽद्य मयाभिवन्द्यते ।।१८।।

जीवातुरस्यप्रणयप्रभायुषो
ब्रह्माण्डकस्य प्रथितासुभारती
गीर्वाणवाणी नियताऽऽगमामयी
सम्मान्यते संस्कृतवासरायिता ।।१९।।

ब्रह्मेशविष्णु प्रणय प्रपञ्चने
मोहान्धकारानृतवाणिवञ्चने
भाषाञ्जनेयं जननीव वाचां
विद्यासमानां जयतीह संस्कृता ।।२०।।

या वेदवाणी भुवनप्रभावती
लीलालवेनाल्प कलाकलावतः
पारायणा पूर्ण मनोरथप्लुता
कल्पद्रुमेवाश्रितरञ्जनाय सा ।।२१।।

महामनीषेव महेशमन्त्रिता
सर्वाङ्गसंस्कारकरीव जाह्नवी
वेदान्त वेदाङ्ग समग्रशास्त्रके
प्रवर्धतान्ते प्रकृतिः सुमङ्गला ।।२२।।

या संस्कृता देवगणैरुपासिता
देवर्षि राजर्षि महर्षि वन्दिता
लोकत्रयक्लेशविनाशनेस्तुता
विद्याऽमला मन्त्रमहौषधीव सा ।।२३।।

प्राख्धमूमावधिमातृनामतो
देवैस्ससिद्धैरवधीरिताऽऽदृता
वेदेषु विज्ञानविधाविधायिभि-
र्विद्यास्समस्तास्सुरभारती मताः ।।२४।।

श्री परमार्थभूषण गोविन्दाचार्य प्रपत्तिः

सर्वदेशदशाकालेष्वव्याहतपराक्रमा।
रामानुजार्यदिव्याज्ञा वर्द्धतामभिवर्द्धताम् ॥१॥

रामानुजार्यदिव्याज्ञा प्रतिवासरमुज्वला।
दिगन्तव्यापिनी भूयात् सा हि लोकहितैषिणी॥२॥

श्रीमन्नः श्रीरंग श्रियमनुपद्रवामनुदिनंसंवर्द्धय।
श्रीमन्नः श्रीरंग श्रियमनुपद्रवामनुदिनंसंवर्द्धय॥३॥

नमः श्रीशैलनाथाय कुन्तीनगरजन्मने।
प्रसादलब्ध परमप्राप्य कैंकर्यशालिने॥४॥

श्रीशैलेशदयापात्रं धीभक्त्यादिगुणार्णवम् ।
यतीन्द्रप्रवणं वन्द्रे रम्यजामातरं मुनिम् ॥५॥

लक्ष्मीनाथसमारम्भां नाथयामुनमध्यमाम् ।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥६॥

योनित्यमच्युतपादाम्बुजयुक्मरुक्म
व्यामोहतस्तदितराणि तृणायमेने।
अस्मद् गुरोर्भगवतोऽस्यदयैकसिन्धो
रामानुजस्यचरणौशरणं प्रपद्ये॥७॥

मातापितायुवतयस्तनयाविभूतिः,
सर्वं यदेव नियमेन मन्दन्वयानाम्
आद्यस्यनः कुलपतेर्वकुलाभिरामं
श्रीमत्तदंघ्रियुगलंप्रणमामि मूर्ध्ना॥८॥

भूतंसरश्च महदाह्वयभट्टनाथ
श्रीभक्तिसारकुलशेखरयोगिवाहान् ॥
भक्तांघ्रिरेणुपरकालयतीन्द्रमिश्रान्
श्रीमत्परांकुशमुनिं प्रणतोस्मि नित्त्यम् ॥९॥

गुरुमुखमनधीत्य प्राह वेदानशेषान्
नरपतिपरिक्लृप्तं शुल्कमादातुकामः।
श्वसुरममरवंद्यं रंगनाथस्यसाक्षाद्
द्विजकुलतिलकं तं विष्णुचित्तं नमामि॥१०॥

अस्मद्देशिकमस्मदीयपरमाचार्यानशेषान् गुरुन् ,
श्रीमल्लक्ष्मण योगिपुङ्गवमहापूर्णौ मुनिं यामुनम् ॥
रम्यं पद्म विलोचनं मुनिवरं नाथं शठद्वेषिणं,
सेनेशं श्रियमिन्दिरासहचरं नारायणं संश्रये॥।११।।

गर्गार्यवंश जलधीन्दुमनन्तभाजं,
श्रीरामसूरिपदवारिजभृङ्गराजम् ।
श्रीरङ्गयोगिसुचिरत्रसुधावलेऽहं,
गोविन्ददेशिकमुदारमतिं भजेऽहम् ।।१२।।

श्रीकान्यकुब्ज कुलावारिधिपूर्णचन्द्रं,
श्रीरामदेशिकपदाम्बुजभृङ्गराजम् ।
श्रीमन्नृसिंहपदपङ्कजचञ्चरीकं,
श्रीमाधवं गुरुवरं सततं भजामि ।।१३।।

श्रीव्यासगोत्रकुलवारिधिपूर्णचन्द्रं,
श्रीरङ्गदेशिकपदाब्जरसैकभृङ्गम् ।।
श्रीमच्छठारिकृपयाप्तसमस्तबोधं,
श्रीरामदेशिकमहंशरणं प्रपद्ये ।।१४।।

आचार्य-जन्म पद्यानि

वैशाखे सित रोहिण्यां गर्गगोत्रसमुद्भवम् ।
श्रीरामार्य गुरोःशिष्यं वन्देगोविन्ददेशिमम् ।।१५।।

तपत्योत्तर फाल्गुन्यां व्यासगोत्र समुद्भवम् ।
श्रीरङ्गार्यगुरोः शिष्यं वन्दे श्रीरामदेशिकम् ।।१६।।

श्रीवैकुण्ठधामवासिनां श्रीवैष्णवकमलकुल दिवाकराणां भगवद्भागवतकैकर्य्यपरायणानां विशिष्टाद्वैतवेदान्तरहस्यविदां तदनुकूलाचरणशीलानां परमार्थभूषणोपाधिभाजामनन्त-श्रीविभूषितानां १०८ श्रीस्वामि गोविन्दाचार्यवर्याणां श्री रामानुजकोटश्रीवैष्णवा-श्रमसंस्थापकमठाधीशानां श्रीरामदेशिक संस्कृतमहाविद्यालयप्रतिष्ठापकानां सादरं प्रपत्ति सुप्रभातं श्रीगुरूवर श्रीचरणयोर्भगवन्मुखोल्लासाय समर्पयति तदीयश्रीचरणा-श्रितश्श्रीरामानुजदासानुदासो रामनारायणाचार्यः।

श्रीगर्गगोत्रकुलवारिधिपूर्णचन्द्रः
श्रीरामदेशिकगुरोर्व्रतधर्मधीरः।
वैकुण्ठनाथपद सेवनदिव्यदेहो
गोविन्ददेशिकगुरो ! तव सुप्रभातम् ।।१७।।

श्रीवैष्णवाश्रमकृतीकरुणानिकेतः
गोलोकधामवसतिर्विदितो विशेषः।
साकेतधामफलितो ललितस्सुवेशः
गोविन्ददेशिक गुरो ! तवसुप्रभातम् ।।१८।।

श्रीरंगनाथनगरीप्रहरीवधन्यः
श्रीवेंकटाद्रिधरणीधरदिव्यदेशः
शेषाद्रिशान्तिनिलयाश्रितपुण्यवेशः
गोविन्ददेशिकगुरो तव सुप्रभातम् ।।१९।।

ब्राह्मेमुहूर्त्तवरदे शुभदेप्रभासे
संसारसिन्धुतरणायपदाश्रितास्ते।
श्रीवैष्णवाः परमभक्तियुताः प्रसन्नाः
गायन्तिमग्नहृदयास्तवसुप्रभातम् ।।२०।।

एलालवंगघनसारसुगन्धितानां
पूजोपचारकरमण्डितसंस्तुतानाम्
मंत्रोपहारपरिवर्धितवाक पवित्रैः
श्रद्धावतांपरमपावन सुप्रभातम् ।।२१।।

तीर्थप्रयागनगरे शुचिमाधवीये
श्रीवेंकटेशसविधेसहशिष्यवृन्दैः।
आचार्य सन्तनिवहैश्श्रुतिशब्दघोषैः
संगीयते प्रतिदिनं तव सुप्रभातम् ।।२२।।

श्रीवैष्णवाश्रमगताः प्रणयप्रधानाः
भक्तारमेशरसिका जपयज्ञशीलाः
वेदार्थभावहृदयाः सुहृदात्मभावाः
गायन्ति शांन्तहृदयास्तवसुप्रभातम् ।।२३।।

श्रीरंगनाथनगरीवशुभप्रभावा
तीर्थप्रयागवसुधा यमुनाप्रवाहा
गंगासुसंगतिवरा प्रथिता त्रिवेणी
प्रातर्दिशन्ति सततं तवसुप्रभातम् ।।२४।।

नीलाद्रिनाथ नगरीवपुरी समग्रा।
श्रीरामकृष्ण पदभूमिवरप्रसादाः
भक्त्यार्चिताः परमपावन दिव्यदेशाः
प्रासादयन्ति सकलास्तव सुप्रभातम् ।।२५।।

सर्वेऽप्यमीपरमवैष्णवधर्मनिष्ठाः
शास्त्रावगाहनपथेमतिमाश्रयन्तः
पंचोपचारविधिना हरिमर्चयन्तः
गायन्तिदेशिकवरास्तवसुप्रभातम् ।।२६।।

वृन्दावनस्थ हरिदेवदयादृशार्द्राः
श्रीवैष्णवाः परमभागवतप्रधानाः
श्रीरंगमन्दिरमहोत्सव संरताश्च
गायन्ति मुग्धमनसा तव सुप्रभातम् ।।२७।।

श्रीमत्स्यकच्छपवराहनृसिंहदेवाः
श्रीवामनादिनिखिलावनिमूर्तयश्च
संसारसिन्धुतरणायकृतावताराः
प्रासादयन्ति शुभदं तव सुप्रभातम् ।।२८।।

श्रीरंगदेशिक गुरोः कृपयाप्तबोधाः
श्रीरामदेशिकगुरोश्चदयावधानाः।
पंचस्तवी प्रवणतावचनप्रगीतैः
संकीर्तयन्ति सततन्तव सुप्रभातम् ।।२९।।
कैंकर्य्य भाव विधया विविधोपचारैः
नारायणस्यपदयुग्ममहाव्रतीनाम्
सर्वात्मना परमभागवतप्रजानां
संपूजनं सुविहितं तव सुप्रभाते ।।३०।।

तीर्थप्रसादविविधैर्हरिभक्तिभाजां
सेवाभृतो भगवतश्चरणव्रताश्च
गंगोदकेन निभृतं प्रभुभांग शुक्राः
दैनन्दिनं विदधति प्रति सुप्रभातम् ।।३१।।

रामानुजस्यचरणाम्बुजनित्यसेवां
सम्पादयन्त इयतीं च हरेस्सपर्याम्
श्रीवैष्णवा नियमतः कृतभक्तसेवाः
गायन्ति शुद्ध चरितास्तव सुप्रभातम् ।।३२।।

श्रीकुम्भपर्वमहिमण्डिततीर्थभाजः
भक्तिप्रपत्तिप्रणयाः भुवनं पुनानाः।
श्रद्धातिरेककलया प्रणतिप्रधानाः
देवादिशन्ति मुनयस्तवसुप्रभातम् ।।३३।।

श्रीवैष्णवाश्रमवराः परमार्थभावाः
सद्धर्मपालनहिते भवता प्रणीताः
संस्थापिताःपरमवैष्णवधर्मसिद्ध्यै
संस्मारयन्ति भवतश्शुभसुप्रभातम् ।।३४।।

श्रीरामदेशिकगुरोस्स्मृतिसारभूतः
विद्यालयोऽत्र शुभसंस्कृतनामरूपः
विद्याविवेकं परिवर्धनमानदण्डः
प्रस्तौति मंगलकरं तव सुप्रभातम् ।।३५।।

नारायणीव महिता वृहती सपर्या
रामानुजार्यविहिता रचिता विशुद्धा
श्रीवैष्णवी विविधयज्ञमयीवधन्या
मान्या दिभावयतिते शुभसुप्रभातम् ।।३६।।

देवर्षिनारदमुनिस्सनकादयश्च
श्रीव्यासदेवशुकदेवकथाप्रबन्धम्
श्रीविष्णुधामनिलयाः प्रभुनाम मन्त्रं
संश्रावयन्ति विधिनातव सुप्रभाते ।।३७।।

श्रीविष्णुचित्ततनयावररंगनाथः
श्रीरंगधाम्निवसतिं प्रथमाभिधानाम्
नीलाश्रयां सुभजतां प्रणतार्तिहारी
प्रेमास्पदां सुभजते तव सुप्रभाते ।।३८।।

श्रीयामुनार्यपदपंकजमाश्रयन्तः
रामानुजार्यचरणाम्बुजं चंचरीकाः
वेदान्तदेशिक गुरूत्तम लब्ध विद्याः
गायन्ति भक्ति विभवास्तव सुप्रभातम् ।।३९।।

वैकुण्ठनाथ निलये परमप्रसन्नः
सर्वैस्ससूरिवरदैस्सहदिव्यधामा
सेवारतोभगवतोवरपार्षदस्त्वं
गोविन्ददेशिकगुरोतव सुप्रभातम् ।।४०।।

लीलाविभूतिवरदः परमार्थभावः
नित्योत्सवयायरसिकोहरिभक्तिनिष्ठः
श्रीदेवराजनगरात् प्रथिते प्रयागे
लब्धस्तुतिर्विजयते शुभसुप्रभाते ।।४१।।

रामप्रपन्नवरदाश्रितधर्मधीरः
औदार्यभावमहिमावधि भक्तवीरः
वेदान्ततत्त्वमिखिलेकृत सर्व सेवः
गोविन्ददेशिकगुरो तव सुप्रभातम् ।।४२।।

श्रीरामदेशिकगुरोः कृपया प्रबुद्धो
वेदार्थभावभुवने शुभसुप्रयागे।
कैंकर्यनिष्ठसुधियासहजस्स्वभावः
संकीर्तितोऽस्ति भगवन् ! शुभ सुप्रभातम् ॥४३॥

रामानुजीयपदपीठगतस्समर्थः
सेवाविधिं विरचयन् हरिभक्तिभाजाम्
नाङ्गीकृतः परिणयो भवताभवाय
तेनात्रतेविमलकीर्तिमयप्रभातम् ॥४४॥

गायन्त एवविबुधा मनसाप्रसन्नाः
अद्यापि वैष्णवजनाः भवदीयभक्ताः
शक्तानिजाश्रमहिते प्रणताः सुकीर्त्या (स्वधर्मे)
सम्पादयन्ति सहजं तव सुप्रभातम् ॥४५॥

छात्राश्च सन्तनिकराजलकुम्भहस्ताः
सन्ध्याद्वये च विधिना गुरुभक्तिभाजः।
लब्धाश्रयाभरणपोषणभारमुक्ताः
गायन्तिशुद्धमतयस्तवसुप्रभातम् ॥४६॥

सुप्रभातम्

सम्प्राप्तघोर कलिकल्मषकल्पितायां
भूमौ भयार्तजनतापहरप्रभावः
वेदान्तवेद्यमहिमण्डितमानदण्डो
रामानुजस्य सततं जयतित्रिदण्डः॥२॥

वेदार्थसंग्रथहकृतेरवतारणायाः
श्रीभाष्यरत्नमणिमन्त्रसमाश्रितायाः।
लक्ष्मीवरस्य पदपंकजमागतायाः
भक्तेः प्रियो जयति कोपि यतीश्वराद्यः।।३।।

गद्यत्रयेत्रिविधतापनिवारणाय
भक्तिप्रपत्तिभजते हरिधामभाजे
नित्योत्सवाय विधिना निगमार्थभाषी
रामानुजो विजयते यतिराजराजः।।४।।

आचार्यः प्रणतार्तिवारणपटुर्विद्यार्थिविद्याप्रदः
नित्यं वैष्णवसाधुभक्तभरणे रामानुजार्योपमः
कल्याणं कलिकालदोषदहने यस्य प्रयासादिदं,
सञ्जातं बहुधा ससूरिसदृशो वन्द्यो भवोद्धारकः ।।४७।।

सेवांव्रती निगमबोध्यमतप्रदायी
श्रीवैष्णवार्यमहिमान्वितपुण्यदेही
स्वाचार्यवर्यपथिकोत्तमभावभूमा
वेदान्तवादविजयिन् ! तव सुप्रभातम् ।।४८।।

वेदार्थवाद विजयीव गुरोः प्रसादात्
विद्यावतां प्रथितवंशशुधांशुकल्पः
मोहान्धकारहरणे भुविकोपिमान्यो
लीलायतेस्म भवतापनिवारणाय ।।४९।।

हर्षध्वनिर्नयनलीनविभोः प्रकाशो
मुग्धाम्बुजाननमहो शुभमंगलाय
ब्रह्मोपदेशवचनं भवसागरेऽस्मिन्

सर्वोपकारकलयाभवतो विमर्शे।।५०।।

श्रीनाथधामपथिकस्य महाप्रकृत्या
दुःखाम्बुधेस्सहजपारमितोगतास्ते
भक्तास्त्वदीय पदपंकजमाप्यमुग्धाः
गायन्ति मन्त्रविधिनातव सुप्रभातम् ।।५१।।

मायाम्बुधेरवधनाथमनोः प्रसूतेः
सन्तारणाय वरदोरघुवंशदीप्तेः
सेतुश्शुभस्सदयदिव्यकलावधीशः
ईशस्स्वयं दिशति संस्नुतसुप्रभातम् ।।५२।।

भक्तावराः कमल पादपरागपूताः
लब्धास्पदा निखिलधर्मपथप्रयाताः
भोगापवर्गरचिताश्शुभतामुपेताः
गायन्त एव तव मंगल सुप्रभातम् ।।५३।।

हृद्यादृशो भुवनभासकृतास्त्वदीयाः
सिद्धाश्रमावधिवरा मनसोपचाराः
भावान्विता भवभिदः कृपयामुरारेः
पादाश्रितान् परमभागवतान् पुनन्तु ।।५४।।

गायन्ति सन्त निवहा विविधप्रबन्धै-
श्छात्रैरुपेत्य हरिमन्दिर मञ्जलीकाः
गीर्वाणवाणिवरभूषितभक्तिभावाः
स्वाचार्यदेव! वरदं तवसुप्रभातम् ।।५५।।

वैकुण्ठनाथनगरी तव वासभूमिः
श्रीविष्णुपादशरणं वरणं स्वराज्यम्
श्रीरामदेशिकगुरोर्व्रतपूर्णकारी
गोविन्ददेशिकमनास्तव सुप्रभातम् ।।५६।।

श्रीभक्तिभूमिवलयाश्रितबान्धवास्ते
विद्यालये विविधशास्त्ररताव्रताश्च
श्रीवैष्णवाश्रमसुभाषितपुण्यधाम्नो
गायन्ति भावविभवास्तव सुप्रभातम् ।।५७।।

श्रीरामदेशिकगुरोर्विहितात्मबोधे
श्रीपादतीर्थमखिलत्रयतापहारम्
लोकस्य शान्तिनिलयं भवधर्ममूलं
ध्यायन्ति शिष्यनिखिलास्तव सुप्रभातम् ।।५८।।

घण्टानिनादमणिमन्त्रमहाप्रभावै-
र्ब्राह्मे शुभेपि हरिबोधनपुण्यकाले
वेदस्तुतेरविपुराणमतानुमन्त्रै-
राराध्यते च भगवन् ! तव सुप्रभातम् ।।५९।।

गीतानुविद्धमहिमान्वितमानसस्य
श्रीभाष्यभावभजनप्रणयप्रथाभिः
आदाय पुष्पपरिपूरित सार्घ्यदीपैः
संस्तूयते नु भगवन् ! तव सुप्रभातम् ।।६०।।

सद्योऽभिधानभुवने भवतोऽभिधायाः
सीतापतेरवनिपालनपूर्णतायाः
पुण्याभिरामरसनाग्रकृतोत्तराया
आभासयन्ति मुनयस्तव सुप्रभातम् ॥६१॥

भाग्यावधेस्सहजसंयमसौम्यमूर्त्या
स्वाचार्य धर्मनिरतोऽप्रतिमप्रभावः
श्रीवैष्णवैस्सततमेवकृतप्रसन्नः
स्वामिन् त्वदीयममलं शुभ सुप्रभातम् ॥६२॥

वेदार्थकल्पकलया वचनप्रणाल्या
सत्योपकारविधया विविधोपचारैः
श्रीवैष्णवार्थमनिशं भवतः प्रकर्षं
भाषन्त एव विबुधास्तव सुप्रभातम् ॥६३॥

किं वा जनैरवधधामगतैः खगैश्च
संसारिभिस्सुगतिलाभरतैस्स्वतोपि
सम्भाव्यमाणममितं नवनीतमिष्टं
नाद्यापि कीर्तनपरं तव सुप्रभातम् ?॥६४॥

पौराणिकी विमलगीतिकथावलीभि-
र्भक्तिर्भवापहरिणी वरणी हरेश्च
सद्धर्मनीतिनिपुणा विपुलाप्रशस्ता
रासायनीव जगतान्तव सुप्रभातम् ॥६५॥

गङ्गाम्बुधारि करपल्लवपुण्यलोकाः
तीर्थप्रयागनगरे सगरार्थिदेव्याः

तीरे प्रसन्नविबुधाश्शुभदास्पदाश्च
ध्यायन्ति शुद्धमनसा तव सुप्रभातम् ।।६६।।

प्रज्ञेवधर्मभगिनी यमुनानुबन्धा
सारस्वती त्रिपथगांकितमध्यभागा
गुप्तानुभाग्यभवमुक्तिकरीव वाणी
नित्यं विभावयति शुभसुप्रभातम् ।।६७।।

रामानुजार्यपदवारिवरप्रसूतः
श्रीवैष्णवार्य पथपूजितसार्वभौमः
गोविन्ददेशिकदयाश्रितदिव्यदेहो
वैकुण्ठनाथ निललयस्तव सुप्रभातम् ।।६८।।

श्रीवेंकटाचलपतेर्महिषीव देवी
गोदाम्बिका सहजमातृवरा च नीला
भूदेविसाक्षिनिलयाकलया प्रपूर्णा
नित्यन्त्वदीयमतुलं दधतु प्रभातम् ।।६९।।

एलालवंगघनसारसुगन्धिभोगै-
राजानुबाहुवरभूषित दिव्यमूर्तिः
श्रीरंगनाथवरदस्सदयस्समन्तात्
पुण्यं सदा दिशतु ते शुभ सुप्रभातम् ।।७०।।

वृन्दावने निवसतां सुधियां सतां वै
कैंकर्य भाव भजतां रमताश्चरामे
कृष्णोऽनुरागरसिके प्रथितेरसौघे
सम्भाष्यतेऽद्य सततन्तव सुप्रभातम् ।।७१।।

सर्वाधिभारवहने गहने प्रपञ्चे
रक्षाधिकारचयने नयने हरेश्च
पूज्योपचार विधिना नियतं यदिष्टं
सर्वार्थभावविहितं तव सुप्रभातम् ।।७२।।

संकल्पसत्यवचनैरचनैश्च भव्यै-
र्गेयैस्सदास्तुतिवरैर्भवतस्सपर्याः
भोगप्रसाद विविधैर्विहिताश्रितानां
सम्भावयन्ति सुखदं तव सुप्रभातम् ।।७३।।

छात्राः पठन्तु गुरुभिश्श्रमसाध्यविद्याः
सन्तस्सदाभजनभावयुता भवन्तु
भक्तिप्रपत्तिविषये विदितात्मनेति
भक्ता द्रवन्ति भवतश्शुभसुप्रभाते।।७४।।

अष्टाक्षरप्रणवमूल महासुमन्त्रै-
स्तापोर्ध्वपूण्ड्रवरभूषितभालदेशाः
श्रीवैष्णवास्सहजसेवकभावयुक्ताः
दीक्षोहिताः दधति ते शुभसुप्रभातम् ।।७५।।

नारायणो नरवरः करुणानिकेतो
लोकोपकारविधयाजनपालनाय
सद्योऽवतीर्णनियमेन यथागुरुणां
सेवाव्रतीव विदितस्तव सुप्रभाते।।७६।।

अष्टाक्षरं सचरमं द्वयमन्त्रबीजं
वेदान्तवेद्यभवभीतिहरं प्रदाय
श्रीवैष्णवाय नियतं कृतपुण्यराशे!
आचार्य देव भगवन् तव सुप्रभातम् ।।७७।।

नैराश्यहारिपथगीतपवित्रगाथाः
श्रद्धास्पदाः स्वंजनबोधपरस्वभावाः
दासानुदासनिखिलैः पठिताः प्रसन्नैः
संस्मारयन्ति भगवन् तव सुप्रभातम् ।।७८।।

नारायणी सबलशक्तिवराच लक्ष्मीः
पारायणाभुवननाथ पदाब्जधाम्नि
लोकोदयाय विदिताश्रुतिभिः प्रबुद्धा
मांगल्यहेतु भवतो दिशति प्रभातम् ।।७६।।

श्रीवेंकटेशदयिताभुवन प्रतिष्ठा
श्रद्धातिरेकवचनैर्मुनिभिः प्रसाद्या
वेदान्ततत्त्वनिखिलैरखिलप्रसंगैः
सम्प्रार्थिताद्य सततं तव सुप्रभाते ।।८०।।

श्रीरंगभूमिमथुरान्वितपुण्यकाशी
कांचीपुरीन्ववधधाम च दिव्यदेशाः
धर्मप्रचारविधयाश्रित यज्ञकल्पाः
संस्मारयन्ति भगवन् तव सुप्रभातम् ।।८१।।

गोविन्दपादसरसीरुहभृंग यूथाः
भक्तास्त्वदीयवचनामृतपानमुग्धाः

अद्यापि ते सजल नेत्रकृतार्थ देहाः
गायन्ति पादरसिकास्तव सुप्रभातम् ।।८२।।

सौभाग्यमेवजगतो भवतिप्रशस्तं
श्रद्धास्तुतं सकलभक्तजन प्रसाद्यम् ।
धर्मार्थ जन्मजननी जनकश्च सर्वे
सन्धारयन्ति प्रथितं तव सुप्रभातम् ।।८३।।

काशीप्रयागमथुरावनिधामयज्ञै
रन्यैरहस्यविदितैरखिलैश्चधर्मै
श्रीवैष्णवैरमलकीर्तिवरैरुपेतैः
सम्माननाय विहितं तव सुप्रभातम् ।।८४।।

धर्माऽवतारवपुषो हरिनामधाम्नः
संसारिणामभयदानरतस्य विज्ञाः
भक्तावनद्ध हरिपादसरोजगन्धं
दीनार्तिहारि परमं परिभावयन्ति।।८५।।

सम्भाव्यमानपतने निजकर्मदोषात् ।
संसारिणां प्रतिदिनं कलहाश्रितानाम्
श्रीवासुदेवशरणं वरणं विमुक्तौ-
स्वाचार्यवर्य कृपया प्रणतः प्रपद्ये।।८६।।

धैर्यच्युताश्चरममन्त्रवशीकृतार्थाः
नारायणे निहितकर्मविधेरभीष्टाः
प्रीत्यैहरेरनुगताः विगताघमूलाः
पादाश्रिताः परमधाम समामनन्ति।।८७।।

कैवल्यमेव भजतान्तवपादपद्मं
जन्मान्तहानिफलक। शरणागतानाम्
धर्मोपदेशविधयेति नितान्तमीक्ष्य
भीतावयं निपतिताश्शरणं भजामः।।८८।।

रक्षोपकारनिहिता विहितोपचारै-
राधारमूलमभितस्सहसास्मदीयैः
पूजोपचारकलितं फलितञ्च दिव्यं
सन्तारणाय भवतश्शरणं प्रपद्ये।।८९।।

सम्पादक द्वारा मौलिक संस्कृत तथा हिन्दी में प्रकाशित ग्रन्थों व शोध निबन्धों का विवरण

1.	[illegible] मीमांसा [illegible]	1991 ई0	संस्कृत संस्थान, उत्तर [illegible]
2.	[illegible] (संस्कृत)	1992 ई0	संस्कृत संस्थान उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ।
	मानवता सन्देश [illegible]		
4.	(क) शाक द्वीपीय	1992 ई0	विद्वत्परिषद, जम्मू तवी
	मिश्र निबन्धावली (संस्कृत)		
	(शास्त्रीय शोध नि		
	मिश्र निबन्धावली		
	(शास्त्रीय शोध निबन्ध रत्नावली		
7.	मिश्र निबन्धावली	1997 ई0	राजस्थान संस्कृत अकादमी, राजस्थान
	(शास्त्रीय शोध निबन्ध रत्नावली)		
	भारतीय मंगलायननम् (संस्कृत		
9.	श्री वैष्णवाचार्य प्रपत्ति (संस्कृत) प्रथम सं0	1999 ई0	विशिष्ट विद्वानों द्वारा प्रशंसा पत्र प्राप्त
			संस्कृत संस्थान तिरुपति द्वारा प्रशं
	भारतीय संस्कृति गौरव (हिन		
11.	संस्कृत [illegible]भियानम (कारगिल विजय) सं0	2001 ई0	
12.	भगवदाराधन विधि (हिन्दी)	2002 ई0	
13.	आल्वार सरि [illegible]	2002 ई0	
14.	ब्रह्म कर्म भगवदाराधन विधि (हिन्दी)	2002 ई0	
15.	ब्रह्म विद्या प्रकाश दीक्षा विधि [illegible]		
	[illegible]ष्ट विद्वान पुरस्कार	2002 ई0	संस्कृत संस्थान लखनऊ उ0प्र0 शासन द्वारा प्र
			संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा प
18.	(ख) शाक द्वीपीय ब्राह्मण विमर्श		
	(द्वितीय संस्करण) (हि	2005 ई0	
19.	शोध निबन्ध प्रकाशित संस्कृत में	2005 तक	
20.	शाक द्वीपीय ब्राह्मण दर्शन	2006 ई0	

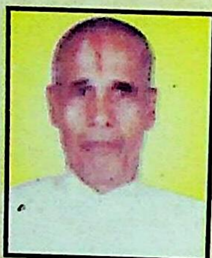
पुस्तक प्राप्ति स्थानम् :

डा0 रामनारायण मिश्र

भारतीय संस्कृति-संस्कृत निःशुल्क सेवा प्रतिष्ठानम्

11/90 गायत्रीपुरम्, पिड़रा, दक्षिण मार्ग, देवरिया (उ0प्र0) 274001

सम्पर्क :- मो0 : 9451802926, 9450682178



डा0 रामनारायण मिश्र

"परिचय"

नाम : डा0 रामनारायण मिश्रः (सेवानिवृत्त प्रोफेसर)

पितृनाम : स्वर्गीय श्री बुधिराम मिश्रः

जन्मस्थान : नरहरपुर, गोरखपुर

जन्म दिन : दिसम्बर मासस्य त्रयोविश्यति दिनांके चत्वारिशदुत्तरैकोन विंशतिः ईश्वीयाब्दः (23:12:1940)

वर्तमान स्थायी पता : वार्ड नं0 11, मकान नं0 -90 (11/90)
भारतीय संस्कृति-संस्कृत निःशुल्क सेवा प्रतिष्ठानम्
गायत्रीपुरम्, देवरिया (उ0प्र0)
मोबाईल : 9451802926

सेवानिवृत : दिसम्बर 2002 में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम् (मानित विश्वविद्यालय) गंगानाथ झा परिसर प्रयाग से प्रोफेसर पद से सेवानिवृत।

शैक्षिक योग्यता :
1. नव्य व्याकरणाचार्य, 1964 ई0 वाराणसेय संस्कृत वि0वि0 वाराणसी। (द्वितीय श्रेणी)
2. साहित्याचार्य, 1970 ई0 वाराणसेय संस्कृत वि0वि0, वाराणसी। (प्रथम श्रेणी)
3. पी0एच0डी0 1986 ई0 मुम्बई विश्व विद्यालय, मुम्बई।
विषय : अलंकारे शास्त्रे व्याकरण सिद्धान्त विमर्शः